थेरीगाथा

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा

अंतर्वस्तु

थेरिगाथा: संपूर्ण एवं विस्तृत संस्करण

थेरीगाथा (थेरी+गाथा) में थेरी (वरिष्ठ भिक्षुणियों) द्वारा रचित कविताएँ (गाथाएँ) शामिल हैं, जो बुद्ध के समय की सर्वोत्कृष्ट और पूर्णतः प्रबुद्ध (अरहत) थीं। ये असीम रूप से आत्मप्रबुद्ध भिक्षुणियाँ निर्वाण/निब्बान (दिव्य आयाम) के उस पार पहुँच चुकी थीं जहाँ शाश्वत आनंद और जीवन है। ये वृत्तांत उनके पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

कुछ उल्लेखनीय वृत्तांत इस प्रकार हैं:

6.6 महा-प्रजापति-गोतामी - भगवान बुद्ध की रानी, मौसी और पालक माता। उन्होंने भिक्षुणी संघ की स्थापना की।

यशोदरा - भगवान बुद्ध की पत्नी - उनका वृत्तांत। वे अनेक पूर्व जन्मों में भगवान बुद्ध के साथ रहीं, आदि।

1.13 विशाखा

5.10 पताचारा - एक पागल स्त्री जिसने विवेक प्राप्त किया और ज्ञान प्राप्त किया।

4.1 कपिलानी की भद्दा, जो कोसिया ब्राह्मण की पुत्री थी, सागला में रहती थी, महातीथ के पिप्पली कस्सपा (महा-कस्सपा) की पत्नी थी, जो पूर्व जन्मों को याद रखने वाले थेरियों में अग्रणी और एक विशिष्ट उपदेशक थी।

अध्याय 5: पाँच श्लोक
5.1 वद्धेसी, अज्ञात परिवार की, बुद्ध की पालक माता, महान प्रजापति गौतमी की धाय।
5.2 विमला, वैशाली की एक वेश्या की पुत्री, पूर्व वेश्या।
5.3 सिहा, वैशाली के सेनापति सिहा की भतीजी।
5.4 सुंदरी-नंदा, कपिलवस्तु की शाक्य गौतमों की महान प्रजापति गौतमी (रानी, बुद्ध की पालक माता) की पुत्री, बुद्ध की छोटी (सौतेली) बहन।
5.5 नंदुत्तरा, कम्मसदम्मा के एक ब्राह्मण की पुत्री, पूर्व जैन, महान मोग्गलाना की शिष्या।
5.6 मित्तकली, कम्मसदम्मा के एक ब्राह्मण (पुजारी) की पुत्री।
5.7 शकुला या पाकुला, श्रावस्ती की एक ब्राह्मण (पुजारी), 'दिव्य दृष्टि' की क्षमता रखने वाली थेरियों में अग्रणी।
5.8 सोना, 'बहुपुट्टिका', एक सावत्थी के कुलवासी, दृढ़ इच्छाशक्ति में अग्रणी थेरी
5.9 भद्दा कुंडलकेसा, पूर्व जैन, राजगृह के एक करोड़पति (सेठी) की पुत्री, एक ब्राह्मण सरदार की पत्नी, तीव्र अंतर्ज्ञान वाली थेरी
5.10 पताचारा, सावत्थी के एक करोड़पति (सेठी) की पुत्री, अपने पिता के सेवक की पत्नी, विनय में निपुण थेरी 5.11 एक प्रख्यात शिक्षिका और नेता
5.11 पताचारा के अधीन तीस थेरी अपने अन्न (प्रबुद्ध अवस्था) की घोषणा करते हैं
5.12 चंदा, एक गरीब ब्राह्मण की पुत्री
अध्याय 6: छह श्लोक
6.1 पताचारा की 'पाँच सौ' शोकग्रस्त माताएँ जिन्हें उन्होंने सांत्वना दी और दीक्षा दी।
6.2 वसित्थी, या वसेत्थी, वैशाली के एक कुल के सदस्य की पुत्री, एक ब्राह्मण की पत्नी, एक शिक्षिका।
6.3 खेमा, मगध के सगला में राजा के परिवार की पुत्री, राजा बिम्बिसार की पत्नी, राजगृह, अंतर्दृष्टि के लिए विख्यात थेरियों में अग्रणी, बुद्ध द्वारा एक आदर्श थेरी के रूप में स्थानित।
6.4 सुजाता, सकेता के एक करोड़पति (सेत्थी) की पुत्री, एक करोड़पति (सेत्थी) की पत्नी।
6.5 अनोपमा, सकेता के करोड़पति (सेत्थी) मज्झा की पुत्री।
6.6 महान महा-प्रजापति गौतमी, (बुद्ध की पालक माता, बुद्ध की दिवंगत माता की बहन और सहपत्नी, कपिलवस्तु की रानी और साथ ही भिक्षुणी संघ की प्रमुख)।
6.7 गुट्टा, एक ब्राह्मण की पुत्री। सवत्थी
6.8 विजया, राजगृह के एक कुल के व्यक्ति की बेटी

अध्याय 7: सात श्लोक
7.1 उत्तरा, सवत्थी कुल के व्यक्ति की बेटी, पटाचारा की शिष्या
7.2 चाला, नलका, मगध की ब्राह्मणी सुरूपासारी की बेटी, सारिपुत्त की बहन, भिक्खुओं (भिक्षुओं) के प्रमुख
7.3 उपाचला, चाला और सारिपुत्त की बहन
अध्याय 8: आठ श्लोक
8.1 शिशुपचला, चाला, उपचला और सारिपुत्त की बहन
अध्याय 9: नौ श्लोक
9.1 वद्धा की माँ, भरूकच्छ (भरूच) के एक कुल के व्यक्ति की बेटी
अध्याय 10: ग्यारह श्लोक
10.1 श्रावस्ती के गरीब लोगों की पुत्री किसा-गोतामी, खुरदुरे वस्त्र पहनने वाली थेरी कन्याओं में अग्रणी थी।
अध्याय 11: बारह श्लोक
11.1 उप्पलवन्ना, सावत्थी के एक करोड़पति (सेट्टी) की बेटी, इधि (जादुई क्षमता) रखने वाली थेरियों में अग्रणी, बुद्ध द्वारा खेमा के साथ भिक्कुनियों (ननों) में श्रेष्ठ स्थान दिया गया
अध्याय 12: सोलह श्लोक
12.1 पुन्ना या पुन्निका, जो सावत्थी के करोड़पति (सेठी) अनाथपिंडिका के घर में एक दासी की पुत्री थी, और जिसे उसने मुक्त कर दिया था।
अध्याय 13: बीस श्लोक
13.1 अम्बापाली, वैशाली की पूर्व दरबारी;

13.2 रोहिणी, वैशाली के एक ब्राह्मण (पुजारी) की पुत्री;
13.3 चापा, वंकाहारा के एक सिर काटने वाले (जेत्तकमिगलुद्दक) की पुत्री, उपक की पत्नी, पूर्व-आजीव (तपस्वी);
13.4 सुंदरी, श्रावस्ती के एक धनी ब्राह्मण सुजाता की पुत्री;
13.5 राजगृह की सुभा (सुनार की पुत्री)।

अध्याय 14
14.1 राजगृह के ब्राह्मण की पुत्री, जीवक के आम के बाग की सुभा
अध्याय 15
15.1 उज्जेनी के एक करोड़पति (सेट्ठी) की बेटी इसिदासी, साकेता (पटना) के एक करोड़पति (सेट्ठी) की पूर्व पत्नी
अध्याय 16: महान अध्याय
16.1 सुमेधा, कोंचा की बेटी, वारणावती के राजा
टिप्पणीकार-एनवोई

यशोदरा - भगवान बुद्ध की पत्नी - यह अपादान से लिया गया है। पूर्णता के लिए प्रदान किया गया है।

थेरिगाथा: पुराना अपूर्ण एटीआई संस्करण
नोट : पाली श्लोक संख्याएँ कोष्ठकों { } में दिखाई देती हैं।
अध्याय 1 — एकल श्लोक 1-18
थिग 1-18- अध्याय 1: एकल श्लोक (अंश)
अध्याय 2 — जोड़े
थिग 2 पीटीएस: थिग 19-38- अध्याय 2: छंदों के जोड़े (अंश) - अंततः अपने निर्लज्ज पति से मुक्त!
अध्याय 3 — तीन श्लोकों के समूह {थिग्वैद्युत 39-62}
थिग 3.2 पीटीएस: थिग 42-44- उत्तम - सात दिनों का निरंतर ध्यान। आठवें दिन: विजय!
थिग 3.4 अंक: थिग 39-62- दंतिका और हाथी - मन को वश में करना: "मैं सबसे पहले जंगल में क्यों गया था।"
थिग 3 पीटीएस: थिग 51-53- उब्बिरी: तीन छंदों के समूह (अंश) - एक माँ अपनी बेटी की मृत्यु पर अपने शोक पर विजय प्राप्त करती है।

अध्याय 4 — चार श्लोकों का समूह {थिग्वैथी 63-66}
थिग 4.1 पीटीएस: थिग 63-66- भद्दा कपिलानी - भद्दा अपने पूर्व पति (वेन. थेरा महा कस्सपा) को याद करती है, और गाती है कि कैसे अब वे दोनों कामवासनाओं से मुक्त हो गए हैं।
अध्याय 5 — पाँच श्लोकों के समूह {थिग्वैथी 67-126}
थिग 5.2 पीटीएस: थिग 72-76- विमला: पूर्व वेश्या - एक पूर्व वेश्या अरहंतों की श्रेणी में शामिल हो जाती है।
थिग 5.4 पीटीएस: थिग 82-86- नंदा: नंदा का दर्शन - शरीर की बुरी प्रकृति पर विचार करते हुए, नंदा सभी वासनाओं को जड़ से उखाड़ फेंकते हैं।
थिग 5.6 अंक: थिग 92-96- मित्तकली - लापरवाही का समय नहीं!
थिग 5.8 अंक: थिग 102-106- सोना: दस बच्चों की माँ - सोना बुढ़ापे पर विजय प्राप्त करती है: "मैं बुढ़ापे को थूकती हूँ!"
थिग 5.9 अंक: थिग 107-111- भद्दा कुंडलकेसा: पूर्व जैन तपस्वी - भद्दा पीछे मुड़कर देखती है और उस व्यक्ति को धन्यवाद देती है जिसने बहुत पहले उसे वस्त्र दिया था जब वह बेघर जीवन में निकली थी।
थिग 5.10 अंक: थिग 112-116- पटाकारा - "और एक पिन लेकर, मैंने बाती को बाहर निकाल दिया..."
थिग 5.11 पीटीएस: थिग 117-121- पटाकारा के तीस छात्र - पटाकारा के निर्देश उनके सभी छात्रों को अरहंत पद की ओर ले जाते हैं।
थिग 5.12 पीटीएस: थिग 122-126- कैंडा: भिखारी - एक पूर्व भिखारी अरिहंत बन जाता है।
अध्याय 6 — छह श्लोकों के समूह {थिग्वैथी 127-174}
थिग 6.1 पीटीएस: थिग 127-132- पंचासाटा पटाकारा: पटाकारा के 500 छात्र - शोक का शमन। एक माँ अपने बेटे की मृत्यु पर अपने शोक पर विजय प्राप्त करती है: "जैसा वह आया था, वैसा ही चला गया - तो शोक करने की क्या बात है?"
थिग 6.2 पीटीएस: थिग 133-138- वासित्थी पागल औरत - एक माँ अपने बेटे की मौत पर अपने दुख पर विजय प्राप्त करती है।
थिग 6.4 पीटीएस: थिग 133-138- भिक्खुनी सुजाता के अंतिम ज्ञान के श्लोक - जब संयोग से वह एक मठ के पास से गुजरी, तो उसका जीवन हमेशा के लिए बदल गया।

थिग 6.5 अंक: थिग 151-156- अनोपमा, करोड़पति की बेटी - एक धनी उत्तराधिकारी धम्म सुनती है और गैर-वापसी करने वाली बन जाती है।
थिग 6.6 पीटीएस: थिग 157-162 - महा पजापति (गोतमी) थेरी: एक माँ का आशीर्वाद - अर्हंतत्व प्राप्त करने के बाद, पजापति गोतमी (गौतम बुद्ध की चाची और सौतेली माँ) बुद्ध की स्तुति गाती हैं।
थिग 6.7 पीटीएस: थिग 163-168- गुट्टा - बुद्ध निःसंतान माँ को अमरता की खोज में प्रोत्साहित करते हैं।

अध्याय 10
थिग 10 अंक: थिग 213-223- किसागोतमी थेरी — मृत शिशु वाली स्त्री। किसागोतमी, जो अब एक अरहंत हैं, अपने लंबे, कठिन और दुख भरे जीवन को याद करते हुए कहती हैं: "तुम्हारे आँसू हजारों जन्मों के लिए बहे हैं।"
अध्याय 12 — सोलह श्लोकों का समूह {थिग् 236-251}
थिग 12.1 पीटीएस: थिग 236-251- पुन्निका: पुन्निका और ब्राह्मण - पुन्निका एक ब्राह्मण को अपने शुद्धिकरण जल-अनुष्ठानों को त्यागने के लिए मना लेती है - आखिरकार, अगर स्नान पवित्र होता, तो मेंढक, कछुए और मछली सभी शुद्ध होते!
अध्याय 13 — लगभग बीस श्लोकों के समूह {थिग् 252-365}
थिग 13.1 अंक: थिग 252-270 - अंबपाली - एक पूर्व दरबारी महिला - अब एक अरहंत - बताती है कि कैसे उम्र बढ़ने ने उसकी युवावस्था की सुंदरता को पूरी तरह से मिटा दिया है। उम्र बढ़ने के प्रभावों का एक उत्कृष्ट चित्रण।
थिग 13.2 पीटीएस: थिग 271-290- रोहिणी - दीक्षा से पहले, रोहिणी अपने पिता के इस आरोप का जवाब देती है कि भिक्षु आलसी होते हैं। वास्तव में, वह कहती है, "वे सबसे अच्छा काम करते हैं।"
थिग 13.5 अंक: थिग 339-367- सुभा: सुनार की बेटी - सुभा अपने परिवार के उसे कामुकता और धन की दुनिया में वापस लुभाने के प्रयासों का विरोध करती है, और जल्द ही एक ऐसा खजाना खोजती है जो किसी भी सोने या चांदी की मात्रा से अधिक मूल्यवान है।
अध्याय 14 — लगभग तीस श्लोकों का समूह {थिग् 366-399}
थिग 14.1 पीटीएस: थिग 366-399 - सुभा जीवकंबवनिका: सुभा और व्यभिचारी - जंगल में अकेली रहने वाली अरहंत भिक्षुणी सुभा को एक कामुक व्यक्ति परेशान करता है। सुभा द्वारा उसे दिया गया "विशेष उपहार" उसे तुरंत हृदय परिवर्तन करा देता है। एक शानदार कहानी।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा6.6
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ll55ll ------>>>> अगला

6.6 महान महा-प्रजापति गौतमी (बुद्ध की पालक माता, बुद्ध की दिवंगत माता की बहन और सहपत्नी, कपिलवस्तु की रानी और भिक्षुणी संघ की प्रमुख)
उनका जन्म उस समय हुआ जब पद्ममुत्तरा बुद्ध थे, हंसवती नगर में एक कुलवासी परिवार में। गुरु के उपदेश सुनकर और एक भिक्षुणी को अनुभव का प्रमुख स्थान देते हुए, उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन उन्हें भी ऐसा ही स्थान प्राप्त होगा। फिर, अनेक जन्मों के बाद, उनका पुनर्जन्म बुद्ध-शून्य युग में, कश्यप और हमारे बुद्ध के बीच, बनारस में 500 दासियों में से एक के रूप में हुआ। अब, जब वर्षा ऋतु निकट आई, तो पाँच मौन बुद्ध नंदमूलक पर्वत-गुफा से भिक्षा मांगने के लिए इसिपताना आए; और उन स्त्रियों ने अपने पतियों से वर्षा ऋतुओं के दौरान बुद्धों के लिए पाँच कुटियाएँ बनवाईं और उस दौरान उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की। बनारस के पास एक बुनकर के गाँव में मुखिया के परिवार में उनका पुनर्जन्म हुआ और उन्होंने फिर से मौन बुद्धों की सेवा की। अंततः, हमारे गुरु (बुद्ध) के हमारे पास आने से कुछ समय पहले, देवदहा में महा-सुप्पबुद्ध के परिवार में उनका पुनर्जन्म हुआ। उनका पारिवारिक नाम गौतमा था और वे महान माया (बुद्ध की माता) की छोटी बहन थीं। जन्मचिह्नों के व्याख्याकारों ने कहा कि दोनों बहनों की संतानें चक्र-चालक शासक (सम्राट) होंगी। अब, राजा सुद्धोदन (बुद्ध के पिता) जब वयस्क हुए, तो उन्होंने एक उत्सव आयोजित किया और दोनों बहनों का विवाह कराया। इसके बाद, जब हमारे गुरु (बुद्ध) का उदय हुआ और वे धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के उत्तम चक्र को घुमाते हुए आत्माओं का पालन-पोषण कर रहे थे, तब उनके पिता वैशाली, जो अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर चुके थे, का निधन हो गया।
तब महान प्रजापति ने संसार त्यागने की इच्छा से गुरु (बुद्ध) से दीक्षा मांगी, लेकिन उन्हें दीक्षा नहीं मिली। तब उन्होंने अपने बाल कटवाए, वस्त्र धारण किए और कलह और विवाद पर आधारित सुत्तंत के प्रवचन के अंत में, वे शीघ्र ही चली गईं और उन 500 शाक्य स्त्रियों के साथ, जिनके पतियों ने संसार त्याग दिया था, वैशाली गईं और आनंद थेरा के माध्यम से गुरु से दीक्षा प्राप्त करने का अनुरोध किया। उन्हें दीक्षा और भिक्षुणियों के लिए आठ अतिरिक्त नियम प्राप्त हुए।

इस प्रकार दीक्षा प्राप्त करने के बाद, महान प्रजापति आईं और गुरु को प्रणाम किया और एक तरफ खड़ी हो गईं। तब गुरु ने उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया; और उन्होंने अभ्यास और साधना से शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही उन्हें अंतर्ज्ञान और विश्लेषणात्मक ज्ञान भी प्राप्त हुआ। शेष 500 भिक्षुणियों को नंदक के प्रवचन के बाद अंतर्ज्ञान ज्ञान की छह शाखाओं से संपन्नता प्राप्त हुई।[1]

एक दिन, जब गुरु (बुद्ध) महान जेतवन वन विहार में आर्यों (भिक्षुओं और भिक्षुणियों) की सभा में विराजमान थे, तब उन्होंने महान प्रजापति गौतमी को ज्ञान में सर्वोपरि स्थान दिया। गौतमी, जो पूर्ण ज्ञान और निर्वाण के आनंद में लीन थीं, ने एक दिन गुरु के समक्ष अपनी अन्न (प्रबुद्ध अवस्था) की घोषणा करके और उनके सद्‌गुणों की प्रशंसा करके अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

बुद्ध, ज्ञान प्राप्त, महान!

सभी जीवित प्राणियों से श्रेष्ठ,

जिसने समस्त कष्टों और दुखों से मुक्ति दिलाई है

मैं और बहुत से पीड़ित लोग। (157)

अब मुझे समझ में आ गया है कि दुख कैसे आता है।

मेरे भीतर की लालसा, यानी कारण, सूख गई है।

क्या मैं नहीं चला, क्या मैंने अंत को नहीं छुआ?

आर्य (कुलीन) अष्टांगिक मार्ग पर कष्टों के बारे में? (158)

ओह! लेकिन मैं तो बहुत लंबे समय से इस राह पर भटकता आ रहा हूँ।

मां, पिता, भाई, पुत्र के रूप में जीवन जीना

और बीते युगों में (पिछले जन्मों में) दादा-दादी के रूप में—

चीजों की असलियत न जानना,

और मुझे जो चाहिए था वह कभी नहीं मिला। (159)

लेकिन अब मेरी आँखों ने भगवान बुद्ध के दर्शन कर लिए हैं;

और अब मुझे पता है कि यह जीवित शरीर आखिरी है,

और जन्मों का अंतहीन चक्र चकनाचूर हो गया है।

अब मैं कभी पुनर्जन्म नहीं लूंगा! (160)

उस मंडली को देखो जो उसके बारे में जानती है—

भाईचारे की सुखद सद्‌भावना में,

अत्यंत ऊर्जावान और दृढ़ निश्चयी,

निरंतर दृढ़ता से लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए—

यह बुद्धों को दी गई सबसे श्रेष्ठ श्रद्धांजलि है। (161)

ओह! निश्चित रूप से अनगिनत जिंदगियों के भले के लिए।

क्या माया बहन ने गौतम को जन्म दिया था?

हमारे दुखों के बोझ को दूर करने वाला,

जो रोग और मृत्यु के बोझ से दबे हुए पड़े थे! (162)

[1] इद्धि (जादुई क्षमता), किसी भी स्थान की शुद्ध श्रवण शक्ति, दूसरों के विचारों का ज्ञान, पूर्व जन्मों (पुनर्जन्मों) की स्मृति, अन्य प्राणियों के पूर्व जन्म, भीतर आसवों (इंद्रिय इच्छाओं) का निवारण, अर्थात् पवित्रता।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

प्रजापति गौतमी, रानी महा माया की छोटी बहन और राजा सुद्धोदन की दूसरी पत्नी थीं। उन्हें महा (महान) प्रजापति कहा जाता था क्योंकि ऋषियों ने भविष्यवाणी की थी कि वे एक विशाल अनुयायी समूह की नेता बनेंगी। जब उनकी प्रिय बहन ने राजकुमार सिद्धार्थ को जन्म देने के सात दिन बाद देहांत कर दिया, तो वे अत्यंत दुखी हुईं। वे बहनें बहुत करीब थीं। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपनी बहन के बच्चे को अपने बच्चे की तरह पालेंगी।

अपने पुत्र नंदा की देखभाल का जिम्मा नर्सों को सौंपकर, महा प्रजापति ने नवजात शिशु की देखभाल की। राजा सुद्धोदन और महा प्रजापति दोनों ही सौम्य राजकुमार को बहुत प्यार करते थे। राजकुमार सिद्धार्थ अपने सौतेले भाई और सौतेली बहन, महा प्रजापति के दो बच्चों, नंदा और नंदा के साथ विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत हुए।

जब बुद्ध कपिलवस्तु आए और उन्होंने राजा सुद्धोदन को धम्मपाल जातक का उपदेश दिया, तब महा प्रजापति ने संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्न प्राप्त की। राजा सुद्धोदन के देहांत के बाद, महा प्रजापति ने निश्चय किया कि वे भी दीक्षा ग्रहण करेंगी और बुद्ध के मार्गदर्शन में पवित्र जीवन व्यतीत करेंगी। उनके पुत्र नंदा और पोते नन्हे राहुल ने भी बुद्ध के मार्गदर्शन में दीक्षा ग्रहण कर ली थी। प्रजापति को सांसारिक सुखों की कोई इच्छा नहीं रही।

बुद्ध कपिलवस्तु में शाक्यों और कोलियों के बीच रोहिणी नदी के जल को लेकर हुए विवाद को सुलझाने के लिए आए थे, तभी महा प्रजापति ने उनसे महिलाओं को दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति देने का अनुरोध किया। बुद्ध ने कारण बताए बिना ही मना कर दिया और कहा, "हे गौतमी, यह तुम्हें भाए नहीं कि महिलाओं को ऐसा करने की अनुमति दी जाए।" लेकिन महा प्रजापति ने हार नहीं मानी। उन्होंने दूसरी और तीसरी बार भी महिलाओं के लिए दीक्षा का अनुरोध किया। हर बार बुद्ध ने एक ही उत्तर दिया।

इसके बाद बुद्ध वैशाली चले गए और कुटागारा हॉल में स्थित महावन में निवास करने लगे। दृढ़ निश्चयी महा प्रजापति हतोत्साहित नहीं हुईं। अपने बाल मुंडवाकर, उन्होंने भिक्षुणी के पीले वस्त्र धारण किए और शाक्य स्त्रीयों के एक बड़े दल के साथ 150 मील की दूरी तय करके वैशाली पहुँचीं। धूल से सनी, सूजे और लहूलुहान पैरों के साथ, वह हॉल के बाहर खड़ी रो रही थीं। जब बुद्ध के निजी सेवक आनंद ने उन्हें देखा और उनके दुःख का कारण सुना, तो उन्होंने उनकी ओर से बुद्ध से विनती करने का निश्चय किया।

करुणामय आनंद ने स्त्रियों की ओर से विनती की। जब बुद्ध ने इनकार कर दिया, तो आनंद ने उनसे पूछा कि क्या वे यह मानते हैं कि स्त्रियाँ आध्यात्मिक ऊँचाइयों और अरहंतत्व को प्राप्त करने में असमर्थ हैं? बुद्ध ने उत्तर दिया कि स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान आध्यात्मिक

विकास प्राप्त करने में सक्षम हैं। फिर उन्होंने महा प्रजापति के पिछले जन्मों को देखा। यह देखकर कि महा प्रजापति ने कई युगों पहले भिक्षुणियों के संघ की स्थापना की इच्छा की थी, जिसकी पूर्ति उनके शासनकाल में होनी थी, बुद्ध ने दया दिखाई, आनंद की विनती स्वीकार की और भिक्षुणियों के संघ की स्थापना की।

बुद्ध ने महा प्रजापति को शुरू में मना करने का कारण नहीं बताया। अतीत के सभी बुद्धों के साथ भिक्षुणियों का संघ था। गौतम बुद्ध ने इसे देखा होगा और महसूस किया होगा कि स्त्री संघ प्रत्येक बुद्ध के अनुयायी का अभिन्न अंग है। इसलिए, कुछ लोगों का मानना है कि वे प्रजापति के दृढ़ संकल्प और संकल्प की परीक्षा ले रहे थे, क्योंकि महिलाओं, विशेषकर राजपरिवार की महिलाओं के लिए पवित्र जीवन कठिन और कई कठिनाइयों से भरा होता है। कुछ का यह भी मानना है कि शुरू में मना करने का कारण उस समय समाज और महिलाओं के प्रति उसका व्यवहार था, और बुद्ध को स्त्री संघ की सुरक्षा की चिंता थी। सामान्य तौर पर, यह माना जाता है कि शुरू में मना करने का उद्देश्य कुलीन महिलाओं के दृढ़ संकल्प और संकल्प को मजबूत करना और उन्हें भविष्य में आने वाली कठिनाइयों के लिए बेहतर ढंग से तैयार करना था।

बुद्ध के समय भारत में महिलाओं को पुरुषों से हीन समझा जाता था। उन्हें ज्यादा स्वतंत्रता नहीं थी और अक्सर उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार नहीं किया जाता था। कुलीन परिवारों की महिलाओं को सावधानीपूर्वक एकांत में रखा जाता था और दुर्व्यवहार से बचाया जाता था। पुरुष महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करते थे। बुद्ध के शिष्य अक्सर जंगलों में ध्यान करते थे और सुनसान सड़कों पर अकेले ही एक शहर से दूसरे शहर पैदल चलकर धम्म का प्रचार करते थे। वे भिक्षुणियों की सुरक्षा और संरक्षण कैसे सुनिश्चित करते? वे यह कैसे सुनिश्चित करते कि उनके साथ सम्मान और निष्पक्षता से व्यवहार किया जाए? वे भिक्षुणियों की सुरक्षा का जिम्मा ब्रह्मचर्य का व्रत लेने वाले भिक्षुओं को कैसे सौंपते? क्या इससे भिक्षुओं के लिए अनुशासन बनाए रखना और भी कठिन नहीं हो जाता?

बुद्ध ने भिक्षुणियों के लिए आठ अतिरिक्त अनुशासनात्मक (विनय) नियम निर्धारित किए, जिनमें से अधिकांश इस बात से संबंधित थे कि उन्हें भिक्षुओं का सम्मान और आदर कैसे करना होगा, जिन्हें आवश्यकतावश उनकी रक्षा करनी होगी। उन्होंने यह भविष्यवाणी भी की कि भिक्षुणियों के दीक्षा लेने से पृथ्वी पर उनके उपदेशों का समय कम हो जाएगा।

आधुनिक जगत की कुछ महिलाओं को इनमें से कुछ नियमों को स्वीकार करना कठिन लग सकता है, लेकिन बुद्ध द्वारा शुरू किए गए साहसिक और क्रांतिकारी परिवर्तन को पूरी तरह से समझने के लिए हमें इन्हें बुद्ध के समय की महिलाओं की भूमिका और स्थिति के संदर्भ में देखना चाहिए।

महिलाओं पर लागू होने वाले आठ मठवासी नियम इस प्रकार थे:

1. एक भिक्षुणी को हमेशा भिक्षु का आदर करना चाहिए, भले ही वह संघ में उससे कनिष्ठ हो। भिक्षुओं में कनिष्ठ भिक्षु वरिष्ठ भिक्षुओं का आदर करते थे, ठीक उसी प्रकार जैसे कनिष्ठ भिक्षुणियां वरिष्ठ भिक्षुणियों का आदर करती थीं।

2. एक भिक्षुणी को वर्षा ऋतु ऐसे स्थान पर नहीं बितानी चाहिए जहाँ भिक्षु न हों। (बुद्ध के समय भारत में महिलाओं के प्रति प्रचलित दृष्टिकोण के कारण भिक्षुणियों की सुरक्षा के लिए यह सावधानी आवश्यक थी)।

3. महीने में दो बार भिक्षुणी को भिक्षुओं से मठवासी अनुशासन (उपोसथ) के पाठ का समय पूछना चाहिए और भिक्षुणियों (जो मठवासी नियमों से विचलित हो गई हैं) को सलाह और चेतावनी देने के लिए किसी भिक्षु को भेजने का अनुरोध करना चाहिए।

4. वर्षा ऋतु के दौरान हुए एकांतवास की समाप्ति पर, भिक्षुओं और भिक्षुणियों की एक सभा में अंतिम समारोह आयोजित किया जाएगा।

5. भिक्षुणियों द्वारा किए गए कुछ अपराधों का निपटारा भिक्षुओं और भिक्षुणियों दोनों की सभाओं द्वारा किया जाना चाहिए। भिक्षुणियों की सभा केवल छोटे-मोटे अपराधों और महिलाओं से संबंधित कुछ व्यक्तिगत मामलों पर ही विचार करती है।

6. एक नवदीक्षित भिक्षुणी को दो वर्ष के प्रशिक्षण के बाद उच्च दीक्षा प्राप्त होगी। ऐसे उदाहरण भी हैं जब भिक्षुओं को दीक्षा के तुरंत बाद उच्च दीक्षा दी गई थी।

7. किसी भी परिस्थिति में एक भिक्षुणी को किसी भिक्षु को फटकार नहीं लगानी चाहिए। 8.

यद्यपि भिक्षुणियां भिक्षुओं को उपदेश नहीं दे सकतीं, फिर भी एक भिक्षु उस भिक्षुणी को उपदेश दे सकता है जिसने मठवासी अनुशासन का उल्लंघन किया हो।

महा प्रजापति और उनकी शाक्य स्त्रियों के समूह ने आठ अतिरिक्त अनुशासन नियमों को स्वीकार किया और बुद्ध से दीक्षा प्राप्त की। बुद्ध भिक्षुणियों (भिक्षुओं) के संघ की स्थापना करने वाले पहले धार्मिक शिक्षक थे। भिक्षुणियों को भी भिक्षुओं के समान ही मठवासी नियमों का पालन करना सिखाया गया। बुद्ध ने अपनी बढ़ती हुई भिक्षुणी मंडली की सहायता के लिए दो प्रमुख महिला शिष्यों को नियुक्त किया (जैसे उन्होंने दो प्रमुख पुरुष शिष्यों को नियुक्त किया था)। इसके बाद, परिस्थितियों के अनुसार अनुशासन में नए नियम जोड़े गए। उदाहरण के लिए, भिक्षुणी उप्पलावन्ना से संबंधित एक घटना के बाद भिक्षुणियों को जंगलों में अकेले ध्यान करने और निवास करने की अनुमति नहीं थी।

भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए बुद्ध का मठवासी अनुशासन (पाँच ग्रंथ) एक अनुकरणीय लोकतांत्रिक व्यवस्था है जिससे हम आज भी सीख सकते हैं। संघ के असाधारण रूप से उच्च नैतिक मानक और बुद्ध द्वारा स्थापित अद्वितीय प्रशासनिक व्यवस्था सुविचारित और दूरदर्शी थी। भारत के पूर्व वायसराय लॉर्ड ज़ेटलैंड लिखते हैं, "और यह जानकर कई लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि दो हज़ार वर्ष और उससे भी अधिक समय पहले भारत में बौद्धों की सभाओं में हमारी वर्तमान संसदीय प्रणाली के मूल तत्व पाए जाते हैं।"

कुछ ही समय बाद, महा प्रजापति ने अरहंत पद के साथ-साथ अंतर्ज्ञान और विश्लेषणात्मक ज्ञान भी प्राप्त कर लिया। उनकी शाक्य स्त्रियों का समूह भी अरहंत पद प्राप्त कर चुका था। महा प्रजापति को वरिष्ठता और अनुभव में सर्वोच्च स्थान दिया गया।

कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, प्रजापति ने बुद्ध और अपनी प्रिय बहन माया को प्रणाम किया, जिन्होंने शिशु को जन्म दिया था।

महा प्रजापति ने पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय में भिक्षुणियों के संघ की स्थापना करने की इच्छा रखी थी। उन्होंने बुद्ध पद्ममुत्तरा को एक अन्य भिक्षुणी को इसी प्रकार की उपाधि प्रदान करते हुए देखा था। उस भिक्षुणी से प्रेरित होकर, उन्होंने भविष्य के किसी बुद्ध के समय में इसी प्रकार का पद प्राप्त करने की कामना की थी। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने पद्ममुत्तरा बुद्ध और उनके अनुयायियों को दान दिया और अपनी इच्छा व्यक्त की। बुद्ध ने उनकी इच्छा की पूर्ति को भांपते हुए भविष्यवाणी की थी कि गौतम बुद्ध के समय में वे भिक्षुणियों में वरिष्ठता और अनुभव में अग्रणी होंगी और भिक्षुणियों के संघ की स्थापना करेंगी। इस समय से महा प्रजापति ने पुण्य कर्म किए और धम्म का अभ्यास करने के लिए अथक प्रयास किया।

अगली प्रलेखित जन्म कथा उस समय की है जब कोई सर्वोच्च बुद्ध नहीं थे। प्रजापति का जन्म एक धनी परिवार में हुआ था और उनकी सेवा में 500 दासियाँ थीं। उन्होंने पाँच पच्चेक बुद्धों को बरसाती ऋतु में आश्रय की तलाश में शहर आते देखा था। अपनी दासियों के साथ मिलकर उन्होंने बुद्धों के लिए पाँच आश्रय स्थल बनवाए और उन्हें सुसज्जित किया। फिर उन्होंने पाँच पच्चेक बुद्धों को आमंत्रित किया और अपनी दासियों के साथ मिलकर वर्षा ऋतु के तीनों महीनों तक उन्हें भोजन कराया। ऋतु के अंत में, अपनी दासियों के साथ मिलकर उन्होंने बुद्धों को भेंट करने के लिए कथिना वस्त्र सिले। मृत्यु के बाद प्रजापति और उनकी पाँच सौ दासियाँ स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लेकर दीर्घकाल तक स्वर्गिक सुखों का आनंद लेती रहीं।

उनका अगला प्रलेखित जन्म महा प्रजापति के रूप में हुआ, जो राजकुमार सिद्धार्थ की पालक माता और मौसी थीं। दृढ़ संकल्प और अथक परिश्रम से उन्होंने एक लाख विश्व चक्र पूर्व की अपनी मनोकामना को पूरा करने के लिए असंख्य युगों तक धम्म का अभ्यास किया।

वैशाली के लिच्छवी राजाओं ने महा प्रजापति और उनके साथ आईं पाँच सौ शाक्य राजकुमारियों के लिए एक विशाल मठ बनवाया। प्रजापति सभी भिक्षुणियों के लिए, विशेष रूप से कुलीन वर्ग की अन्य महिलाओं के लिए एक आदर्श थीं। उन्होंने उन्हें भिक्षुणी के एकांत और संयमी जीवन में ढलने के लिए प्रोत्साहित किया और सहायता प्रदान की। उन्होंने ननदियों के अध्यापन और प्रशासन में भी सहयोग दिया। जब महा प्रजापति 120 वर्ष की आयु के निकट पहुँचीं, तो उन्हें अहसास हुआ कि उनके पास जीने के लिए अधिक समय नहीं बचा है। अब समय आ गया था कि वे बुद्ध को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करें, जिन्होंने उन्हें धम्म का अमृत सिखाया था और निर्वाण प्राप्त करने में उनकी सहायता की थी। बुद्ध के पास पहुँचकर उन्होंने कहा:
"हे प्रभु! मैंने आपका भौतिक शरीर तो उत्पन्न किया, लेकिन

आपने मेरे आध्यात्मिक शरीर का जिक्र किया।

मैंने तुम्हें अपना दूध पिलाया, लेकिन

आपने मुझे धम्म का दूध पिलाया।

दुख और संसार का नाश करने के लिए।

बुद्ध की प्रतिमा के दर्शन करने का यह एक दुर्लभ अवसर है।

मैं दर्शन करना और श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा।

आपके कमल जैसे चरणों में।

कृपया अपने पैरों को आगे की ओर फैलाएं।

बुद्ध ने करुणा से अपने चरण फैलाए, जो गुलाबी कमल के समान थे। उनके चरणों में गिरकर और प्रबुद्धता के प्रतीक महान चिह्नों का आदर करते हुए, प्रजापति ने उनकी आराधना की और अपनी किसी भी कमी के लिए क्षमा मांगी। फिर उन्होंने परलोक जाने की अनुमति मांगी।

प्रजापति के निकट परलोक जाने की खबर दूर-दूर तक फैल गई। भिक्षु और भिक्षुणियां उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एकत्रित हुए। सारिपुत्त, मोग्गलाना, नंदा, राहुल, आनंद, खेमा, उप्पलावन्ना और कई अन्य लोग वैशाली में एकत्रित हुए। आनंद, जो उस समय केवल सोतापन्ना थे, रोने लगे। प्रजापति ने उन्हें यह याद दिलाकर सांत्वना दी कि उन्होंने बुद्ध से उनकी ओर से भिक्षुणियों के संघ की स्थापना के लिए कहकर उनकी कितनी बड़ी सेवा की थी। फिर उन्होंने आनंद को धीरे से समझाया कि वे न रोएं, क्योंकि सबसे श्रेष्ठ भिक्षु का रोना उचित नहीं था।

बुद्ध ने स्त्रियों की बौद्धिक क्षमताओं को स्वीकार किया था, फिर भी अनेक पुरुष वर्षों से अपने अंतर्विचारों को बदलने को तैयार नहीं थे। बुद्ध ने प्रजापति को बुलाकर कहा, "हे गौतमी, आप जैसी स्त्री (पूर्व रानी) का ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत दुर्लभ है। उन मूर्ख पुरुषों के भ्रम को दूर करने के लिए कोई चमत्कार कीजिए जो स्त्रियों की आध्यात्मिक क्षमताओं के प्रति संशय में हैं।"

तब प्रजापति वायु में उठीं और फिर नीचे आकर बुद्ध की आराधना की। उन्होंने तीन बार इस प्रकार उन्हें प्रणाम किया, फिर वे अंतर्धान हो गईं और भीड़ के सामने पुनः प्रकट हुईं। अंत में बुद्ध से परिनिर्वाण प्राप्त करने की अनुमति स्वीकार करके, वे बुद्ध पर दृष्टि रखते हुए पीछे की ओर नन आश्रम की ओर चलीं। बुद्ध ने सभी को उनके अंतिम विदाई के लिए उनके पीछे चलने का निर्देश दिया। प्रजापति नन आश्रम में प्रवेश कर गईं और पद्मासन में बैठकर गहन ध्यान में लीन हो गईं, ध्यान अवस्था को प्राप्त किया और परिनिर्वाण के आनंद में विलीन हो गईं।

लिच्छवी राजाओं ने प्रजापति के अवशेषों को सोने के ताबूत में रखा और भव्य जुलूस के साथ शहर में घुमाया। महा प्रजापति के अंतिम संस्कार में बुद्ध का अपनी पालक माता और सभी माताओं के प्रति आदर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। बुद्ध, जो कभी किसी के पीछे नहीं चलते थे, उनके पार्थिव शरीर को ले जा रहे रथ के पीछे-पीछे चले। इस प्रकार, बुद्ध ने अपने उदाहरण से हमें दिखाया कि हमें अपनी माताओं का आदर और सम्मान करना चाहिए, क्योंकि जब हम छोटे थे और अपना ख्याल रखने में असमर्थ थे, तब उन्होंने हमारी देखभाल और प्यार किया। सैकड़ों भिक्षु और भिक्षुणियां श्मशान घाट तक रथ के पीछे-पीछे चले। फिर ताबूत को चंदन की चिता पर रखा गया और उस पर चमेली और अन्य सुगंधित तेल छिड़के गए। इसके बाद लिच्छवी राजाओं ने चिता को प्रज्वलित किया।

कहा जाता है कि महा प्रजापति के अवशेष चमकते मोतियों की तरह सफेद हो गए थे। आनंद ने अवशेषों को एकत्र किया और उन्हें बुद्ध को सौंप दिया, और बाद में लिच्छवी राजाओं को। राजाओं ने महा प्रजापति के अवशेषों को स्थापित करने के लिए एक स्तूप का निर्माण करवाया। विश्व भर की महिलाएं भिक्षुणी संघ की शुरुआत करने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए महा प्रजापति को सम्मान और श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 28.यशोधरा, भगवान बुद्ध की पत्नी

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

<<<< पिछला । अगला >>>>

यह पृष्ठ वास्तव में अपदाना ग्रंथ से संबंधित है। यह भगवान बुद्ध की पत्नी, यशोदरा के बारे में है, जिन्हें यशोवती, भद्धकंचना या बिम्बादेवी भी कहा जाता है। वे अपनी सास, रानी महा-प्रजापजी-गोतमी के साथ भिक्षुणी बन गईं और भिक्षुणियों के लिए बने अलग मठ में रहने लगीं। उन्होंने धम्म के मार्ग पर चलते हुए सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया। बुद्ध के परिवार के बारे में बौद्ध धर्म से संबंधित अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न 20 भी देखें ।
78 वर्ष की आयु में अपने शरीर त्यागने के दिन उन्होंने ये बातें कहीं:

28. यशोदरा (बुद्ध की पत्नी)

एक समय पुरुषों का नेता राजगाह शहर में एक पहाड़ी गुफा में ठहरा हुआ था।

जो सुंदर और समृद्ध था। [952]693

उस समय यही तर्क दिया गया था।

उस नगर में निवास करने वाली यशोधरा नामक भिक्षुणी द्वारा,

एक सुंदर मठ के अंदर [वहाँ]: [953]

"नंदा, राहुल (पुत्र) और भद्दा; साथ ही दो प्रमुख अनुयायी; सुद्धोदन महाराजा (राजा और ससुर)।"

और गोतमी प्रजापति (रानी, बाद में भिक्षुणियों की प्रमुख); [954]

महान ख्याति के महान थेरा; और महान शक्तियों वाली थेरी:694 वे शांतिपूर्ण [निर्वाण] में चले गए हैं, दीपक की लौ की तरह निशानहीन। [955]

जब तक संसार का स्वामी जीवित है, मैं भी उस शांतिपूर्ण मार्ग पर चलूंगा।" और इन सब बातों पर विचार करने के बाद,

उसने अपने जीवन के अंत का पूर्वाभास कर लिया था। [956]

यह पूर्वाभास करते हुए कि जीवन के सभी तत्व उसी दिन नष्ट हो जाएंगे, वह अपने आश्रम से निकल पड़ी।

अपना वस्त्र और कटोरा लिए हुए। [957]

एक लाख 695 भिक्षुणियों द्वारा सम्मानित, [यशोधरा नामक भिक्षुणी,] अत्यंत शक्तिशाली, अत्यंत बुद्धिमान,

[तब] संबुद्ध के पास गया। (1) [958]

संबुद्ध की पूजा करने के बाद,

पहिए के निशान वाले [पैरों के तलवों] पर, एक तरफ बैठे हुए [उसके बगल में]

उसने शिक्षक से ये शब्द कहे: (2) [959]

693 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

694 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

695 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

अब मेरी उम्र अठहत्तर वर्ष हो गई है, बुढ़ापे का अंतिम चरण आ चुका है;

मैं महान ऋषि को रिपोर्ट कर रहा हूँ:

मैंने गुफा में [संतत्व] प्राप्त किया है। (3) [960]

अब मेरे लिए बुढ़ापा परिपक्व हो चुका है;

सचमुच मेरा जीवन तुच्छ है। मैं तुम्हें सब कुछ त्यागकर चला जाऊंगा।

मेरी शरण स्वयं में ही बनी है। (4) [961]

बुढ़ापे के अंतिम दिनों में,

मृत्यु शरीर को टुकड़ों-टुकड़ों में तोड़ देती है;

आज रात को, महान नायक,

मैं निर्वाण प्राप्त करूँगा। (5) [962]

जहां न जन्म है, न बुढ़ापा, न बीमारी और न मृत्यु, हे महान ऋषि, मैं उस महान नगर की ओर जा रहा हूँ।

[जो,] बिना शर्त, उसकी कोई मृत्यु नहीं होती। (6) [963]

इस विशाल जनसमूह में,696 ये सभी शिक्षक का आदर करते हैं,697 और जानते हैं कि प्रत्येक अपूर्णता

आमने-सामने क्षमा की जाती है, ऋषि। (7) [964]

पिछले जन्मों में (पूर्व जन्मों में) एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना।

अगर मैंने कभी आपको परेशान किया हो,699

मैं इसकी घोषणा कर रहा हूँ, महान नायक;

कृपया मेरी अपूर्णता को क्षमा करें। (8) [965]

उसकी बात सुनकर ऋषियों के स्वामी (बुद्ध) ने 700 कहा: "मैं तुमसे इससे बेहतर और क्या कह सकता हूँ?

आप निर्वाण कब प्राप्त करेंगे? [966]

अब अपनी महाशक्तियों का प्रदर्शन करो, हे मेरे विधान के कर्ता;

व्यवस्था में संदेह को रहने दो

सभी सभाओं के लिए काट दिया जाए।"702 (9) [967]

696 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

697, अर्थात् तैंतीस देवता।

698 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

699 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

700 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

702 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

ऋषि के वचन सुनकर, बौद्ध भिक्षुणी यशोदरा ने ऋषियों के राजा की आराधना की।

[तब] ने [बुद्ध] से यह भाषण दिया: [968]

मैं यशोदरा हूं, हीरो;

घर में मैं तुम्हारी मुख्य रानी थी,703

शाक्य वंश में जन्मा,

महिलाओं के बीच स्थापित.704 (10) [969]

हे वीर, आपके घर में, मैं

वह नेता था, सबका स्वामी था।

वहाँ मौजूद [महिलाओं की संख्या]

एक लाख छियानवे. (11) [970]

वे सभी महिलाएं, जो सौंदर्य और शालीनता के गुणों से परिपूर्ण हैं, युवा और सुभाषी हैं, आदर करती हैं...

मुझे, जैसे लोग देवताओं की पूजा करते हैं।705 (12) [971]

शाक्यन पुत्र के घर में हजार कन्याओं की नेता,

सुख और दुख में वे एक समान हैं,706

जैसे देवता [उस बगीचे में जिसका नाम] "आनंद" है। (13) [972]

इच्छा के सार से परे, सौंदर्य के सार के रूप में स्थिर,

सुंदरता के मामले में उनका कोई मुकाबला नहीं है।

विश्व के नेता के अलावा।" (14) [973]

इन शब्दों से शुरू होने वाले शब्द बोलते हुए, आकाश में उठकर,

यशोदरा ने विविध प्रकार के प्रदर्शन किए।

बुद्ध की अनुमति से शक्तियाँ,707। [974]708

संबुद्ध की उपासना करते हुए, उसने गुरु को अलौकिक शक्तियाँ दिखाईं।

उसने असाधारण महाशक्तियों का प्रदर्शन किया।

703 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

704 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

705 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

706 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

707 puṇṇā ti nāmaŋ

708 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

709 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

710 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

विविध, विभिन्न रूपों वाला। (15)711

शरीर ब्रह्मांड जितना विशाल है,712

उसने उत्तर में महाद्वीप713 को अपना सिर बनाया; पूर्व और पश्चिम को अपने पंख; और भारत को अपना धड़ बनाया; (16) [975]

पूंछ के पंख: दक्षिणी महासागर; [अन्य] पंख: विभिन्न नदियाँ;

उसकी आंखें चांद और सूरज जैसी थीं।

[उसका] प्रतीक ब्रह्मांडीय माउंट मेरु था। (17) [976]

[उसकी] चोंच में, दुनिया के छोर पर स्थित पर्वत,714 [वह] एक पेड़715 को उसकी जड़ों सहित ले जा रही थी। उसके पास आकर, [उसे] पंखा झलते हुए,]

वह विश्व नेता की पूजा कर रही है। (18) [977]

उसने स्वयं को हाथी, घोड़ा, पर्वत, सागर, चंद्रमा और सूर्य, मेरु पर्वत का रूप धारण किया।

और शकरा, [देवताओं का राजा]। (19) [978]

उसने हजार गुना संसार को खिलते हुए कमलों से ढक दिया,717 [और फिर कहा,] “मैं यशोदरा हूँ, वीरांगना;

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे आँखों वाले।” (20) [979]

और ब्रह्मा (प्रधान देवदूत) का रूप प्रकट करते हुए, उन्होंने पुण्य के सिद्धांत का प्रचार किया;718 “मैं यशोदरा, वीरांगना हूँ;

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे दृष्टिपूर्ण।” (21) [980]

711 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

712 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

713 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

714 डांटो , या "वश में किया हुआ"

715 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

716 vimutt'o

717 सिंगी-निक्खा-सवण्णो , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

718 ये पंक्तियाँ (पीटीएस में 41 अक्षर, बीजेटीएस में 40 अक्षर [जो पुराणजतिलेहि के बाद 'च' को छोड़ देता है]) पीटीएस और बीजेटीएस दोनों द्वारा एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत की गई हैं, हालांकि वे दो पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ती हैं और मुझे यह समझ नहीं आ रहा है कि इस "श्लोक" को छंद के अनुसार कैसे समझा जाए। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण में विकृत हो गया है? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे सटीक अनुवाद का प्रयास किया है , अर्थात् 12-12-12-12 छंद (जो संचरण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों के लोप [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों के लोप [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले छंद-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूलभूत इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

मैंने “दिव्य श्रवण” जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (22) [981]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी “दिव्य दृष्टि” शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (23) [982]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

आपकी उपस्थिति में, हे महान नायक। (24) [983]

विश्व-स्वामियों, 719 सभी बुद्धों के साथ मेरी मुलाकात आप लोगों को अच्छी तरह से दिखाई दी; 720 उनके प्रति मेरी व्यापक सेवा

यह आपके लिए था, हे महान ऋषि। (25) [984]

हे ऋषि, मेरे द्वारा पूर्व में किए गए अच्छे कर्मों को याद कीजिए; उनसे मुझे पुण्य प्राप्त हुआ था।

हे महान नायक, आपके लिए। (26) [985]

मैंने कदाचार से परहेज किया, बाधा उत्पन्न की 721

[नौ] असंभव स्थान;722

मैंने जीवन का बलिदान दिया है।

हे महान नायक, आपके लिए। (27) [986]

मैंने स्वयं को पत्नी बनने के लिए समर्पित कर दिया।

कई दसियों अरब गुना। मुझे इस बात की कोई चिंता नहीं थी।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (28) [987]

मैंने स्वयं को सेवा में समर्पित कर दिया, कई दसियों अरब बार। मुझे इस बात का कोई दुख नहीं था।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (29) [988]

719 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

720 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"

721 #23, ऊपर

722 शाब्दिक अर्थ, " बीस मिलियन लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है " धम्म की अंतर्दृष्टि", " धम्म में प्रवेश ", " धम्म की समझ " , या "धम्म में प्रवेश " , शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

723 y'akkho

मैंने कई दसियों अरब बार भोजन उपलब्ध कराने के लिए खुद को समर्पित किया। मुझे इस बात का कोई दुख नहीं था।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (30) [989]

मैंने तुम्हें अपने सारे जीवन दे दिए हैं, कई दसियों अरब बार। मैं स्वयं को भय से मुक्त करूँगा।

मैं अपना जीवन [एक बार फिर] त्याग दूँगा। (31) [990]

हे महान ऋषि, आपके लिए मैं एक स्त्री की चीजों को नहीं छुपाती, विभिन्न प्रकार के कई वस्त्रों को छुपाती हूँ।

725 [मेरे] अंगों पर लगे आभूषण। (32) [991]

धन-दौलत और अनाज, गाँव और छोटे कस्बे भी त्याग दिए गए हैं।

खेत और बेटे और बेटियाँ [भी]

हे महान ऋषि, त्याग दिया गया है। (33) [992]

हाथी, घोड़े, गायें, गुलाम और नौकरानियाँ सभी को अनगिनत मात्रा में त्याग दिया गया है।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (34) [993]

मुझे जो भी देने को कहा जाएगा

मैं भिखारियों को दान के रूप में वह देता हूँ; मुझे किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं दिखती।

अंतिम उपहार देने से। (35) [994]

मुझे 727 बीमारियों का अनुभव हुआ है

इस बहुविविध अस्तित्व में अनगिनत प्रकार के लोग मौजूद हैं।728

हे महान नायक, आपके लिए। (36) [995]

मुझे सुख-सुविधाएं प्राप्त करने में कोई रोमांच नहीं मिलता;

मुझे 729 परेशानियों से कोई परेशानी नहीं होती। मैं हर जगह संतुलित रहता हूँ।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (37) [996]

[दोनों] का अनुभव करने के बाद

724 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, "वे लोग जिनके पास नहीं है"

725 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

726 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

727 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे bhikkhunī Sukkā पढ़ता है।

728 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

729 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ आप पढ़ रहे हैं

मार्ग में सुख और दुख दोनों का सामना करते हुए, महान ऋषि ने ज्ञानोदय प्राप्त किया।

वह शिक्षा जिसके लिए बुद्ध ने प्रयास किया। (38) [997]

आपके और मेरे द्वारा अन्य विश्व-स्वामियों से बहुत मुलाकातें हुईं, चाहे आप ब्रह्मा हों या कोई और।

गौतम बुद्ध, 733 विश्व के नेता। (39) [998]

मैंने बहुत सारी सेवाएँ कीं।

हे महान ऋषि, आपके लिए;

जब आप बुद्ध की शिक्षाओं की खोज कर रहे थे,734

मैं [हमेशा] आपका परिचारक था। (40) [999]

एक लाख युग [और]

चार अगणनीय [युग]

अतः, दीपांकर, महान नायक,

विश्व के नेता का जन्म हुआ। (41) [1000]

पास के किसी देश में, उसे आमंत्रित करते हुए, उस दिवंगत आत्मा के प्रसन्न मन वाले लोग सफाई कर रहे हैं।

जिस सड़क से वह आ रहा है। (42) [1001]

उस समय सुमेधा नाम का एक ब्राह्मण था। वह मार्ग तैयार करवा रहा था।

उस सर्वज्ञ के लिए जो आ रहा था। (43) [1002]

उस समय मैं एक कुंवारी लड़की थी, जो एक ब्राह्मण परिवार में जन्मी थी और सुमित्ता नाम से जानी जाती थी।

मैं उस सभा में गया। (44) [1003]

शिक्षक को अर्पित करने के लिए नीले कमल के आठ मुट्ठी भर फूल (735) के साथ

सभी लोगों के बीच

मैंने उस भयंकर [तपस्वी] ऋषि को देखा।736 (45) [1004]

730 शाब्दिक अर्थ, "भविष्य में" (एकवचन)

731 सम्मुखा , अर्थात् "एक साथ"

732 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

733 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca ("और आप सभी आपकी सेवा करेंगे")

734 में जटाम्हे का पाठ बीजेटीएस द्वारा पीटीएस अजता ("हम अजन्मे हैं;" इसका गलत अर्थ है अजतो "वह अजन्मा है")

735 °putta° शाब्दिक अर्थ, "पुत्र"

736 लिट., "हर समय हम नहीं हैं..."

उसे छाल के ऊपर बैठे हुए देखकर,737 उत्कृष्ट738 और मनमोहक,739 तब मैंने [अपने मन में इस प्रकार सोचा:]

"[यह] मेरा जीवन फलदायी हो रहा है।" (46) [1005]

उस समय मैंने उस ऋषि को देखा

वह प्रयास [जो उस समय] फलदायी हो रहा था;

पिछले कर्मों के कारण, मेरा

संबुद्ध में हृदय प्रसन्न हुआ। (47) [1006]

मेरे हृदय को और भी प्रसन्न करते हुए, मैंने कहा, "हे उच्च विचारों वाले ऋषि,

कोई और उपहार न देखकर [देने के लिए]

मैं तुम्हें फूल दे रहा हूँ, ऋषि।740 (48) [1007]

हे ऋषि, आपके लिए पाँच मुट्ठी भर हैं;

शेष तीन741 मेरे लिए हैं।

इस [उपहार] के माध्यम से सफलता मिले।

हे ऋषि, आपके जागरण के लिए। (49) [1008]

चौथा पाठ भाग

तब उस ऋषि ने, ज्ञानोदय के लिए, फूल लेकर लोगों के बीच पूजा की।

हे प्रसिद्ध, महान ऋषि 745 जो आ रहे थे। (50) [1009]

महान ऋषि [जिनका नाम] दीपांकर था, ने [उन्हें] लोगों के बीच देखकर [भविष्य में बुद्धत्व प्राप्त होने की] भविष्यवाणी की।746

[उस] ऋषि के लिए जिसका मन ऊँचा है। (51) [1010]

महान ऋषि दीपांकर ने भविष्यवाणी की कि मेरा कर्म असंख्य युगों तक जारी रहेगा।

737 रीडिंग cikkhallabhūmimasuciṃ with BJTS for PTS cikkhallabhūmiŋ gamanaŋ ("कीचड़ भरे रास्तों पर जाना")

738 reading pubbakammabalena no with BJTS for PTS pubbakammaphalan tato ("पिछले कर्मों के फल के बाद")

739 संसारपथ-नित्तिना

740 पाठ vītarāgā bhavāmase with BJTS (and PTS alt.) for PTS n'atthi dāni punabbhavo ("अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा")

741 t'ato tato

742 BJTS और PTS में वैकल्पिक रूप से saha के स्थान पर samā ("बराबर") पढ़ा जाता है ।

743 bodhanatthāya tavaŋ (PTS वैकल्पिक शब्द tava); इस वाक्यांश का अनुवाद "आपके ज्ञान के लिए" भी किया जा सकता है।

[मुझे]"

744 या, जैसा कि ऊपर बताया गया है, "मुझे जानने के लिए"

745 PTS mahā-isi (nom.) के लिए BJTS के साथ mahā - isiṃ (acc.) पढ़ना

746 शाब्दिक अर्थ, "महान नायक ने भविष्यवाणी की"

हे महान ऋषि, आपकी महिमा हो: (52)747

वह आपके जैसी ही स्वभाव और आचरण वाली पत्नी होगी; इसी कर्म के फलस्वरूप वह प्रेममय होगी।

हे महान ऋषि, आपके लिए।748 (53) [1011]

सुंदर दिखने वाली और बेहद प्रिय, आकर्षक, मीठी बातें करने वाली, वह एक प्यारी महिला होगी।

[और] आपके सिद्धांतों में एक उत्तराधिकारी। (54) [1012]

जिस प्रकार स्वामी अपने द्वारा संचित वस्तुओं की रक्षा करते हैं, उसी प्रकार यह भी उनकी रक्षा करेगा।

[सभी] चीजें जो स्वास्थ्यवर्धक हैं। (55) [1013]

आपके भविष्य के प्रति करुणा से भरी, वह आपकी सभी खूबियों को पूरा करेगी। पिंजरे से मुक्त हुए शेर की तरह,

वह जागृति प्राप्त करेगी।" (56) [1014]

बुद्ध के वचन से प्रसन्न होकर, मैंने उसी प्रकार व्यवहार करते हुए जीवन व्यतीत किया।

बुद्ध ने असंख्य युग पहले मेरे लिए भविष्यवाणी की थी। (57) [1015]

जब मैंने वह कर्म सफलतापूर्वक पूरा किया तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

मैंने अनगिनत गर्भाशयों का अनुभव किया है,

दैवीय [साथ ही] मानवीय [लोग]। (58) [1016]

देवताओं और मनुष्यों के बीच सुख और दुख का अनुभव करते हुए, जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ,

मैं शाक्यान वंश में पैदा हुआ था। (59) [1017]

सुंदर और अत्यंत धनी, प्रसिद्ध और उतनी ही गुणी; हर योग्यता से संपन्न।

मैं कुलों में बहुत सम्मानित हूँ। (60) [1018]

747 बीजेटीएस इस श्लोक को एक तारांकित फुटनोट में रखता है, यह मानते हुए कि यह इसके कई वैकल्पिक संस्करणों में आता है।

748 बीजेटीएस, पीटीएस से सहमत होते हुए इसे महा-इसे (वोक.) के रूप में प्रस्तुत करता है , लेकिन वैकल्पिक पाठ महा-इसी का संदर्भ देता है।

(नामवाचक), संभवतः बुद्ध द्वारा सुमेधा को "महान ऋषि" कहकर संबोधित करने से परेशान थे।

749 रीडिंग manāpā with BJTS for PTS manasā

750 पढ़ना यथा... पीटीएस यथा के लिए बीजेटीएस के साथ अनुरक्खंति 'सामिनो ... अनुरक्खति सामि नं ("जैसा कि हमारे गुरु रक्षा करते हैं")

धन-दौलत, शोहरत, आतिथ्य सत्कार,

और सांसारिक चीजों में लिप्त होना — ये मेरे मन को विचलित नहीं करते;751

मुझे किसी भी चीज से डर नहीं है। (61) [1019]

मुझे उपस्थित होने के लिए नियुक्त किया गया था

भगवान बुद्ध ने राजा के हरम में जो कहा था, उस पर

तब क्षत्रिय नगर में। (62)752

मैं एक नौकरानी हूं।

और [वह] जो सुख और दुख का अनुभव करती है, एक महिला753 जो तथ्यों की घोषणा करती है,

एक महिला754 जो दयालु है। (63)

मैंने पाँच अरब बुद्धों को, और नौ अरब अन्य बुद्धों को भी, विशाल दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के ऊपर देवता.755 (64)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

ग्यारह अरब [अन्य लोगों] के लिए

और पचास अरब [बुद्ध और]। (65)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (66)

बीस अरब [अन्य] बुद्ध और [एक और] तीस अरब –

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी देवता। (67)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

चालीस अरब [और बुद्धों के लिए,]

और [एक और] पचास अरब। (68)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

751 लिट., "मेरे मन में कोई हलचल नहीं है"

752 यह और इसके बाद के 19 श्लोक (कुल 20 श्लोक) बीजेटीएस में शामिल नहीं हैं। श्लोक (62) और (63) बीजेटीएस [1092]-[1093] में दिखाई देते हैं।

753 लिट., “और एक महिला”

754 लिट., “और एक महिला”

755 etesaŋ devedevānaŋ

756 अधिकारं सदा मयहं , शाब्दिक अर्थ: "मेरी सेवा निरंतर है" "मेरी सेवा दैनिक है"

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (69)

साठ अरब [अन्य] बुद्ध, [एक और] सत्तर अरब —

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी देवता। (70)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

अस्सी अरब [और बुद्धों के लिए,]

और [एक और] नब्बे अरब। (71)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (72)

लाखों-करोड़ों

जो विश्व के प्रमुख नेता थे; मैंने उन्हें व्यापक दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी देवता। (73)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

एक और नब्बे ट्रिलियन तक

जो विश्व के नेता भी थे। (74)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ (75)

महान ऋषियों को [जिनकी संख्या थी]

आठ सौ पचास ट्रिलियन, और सात सौ पचासी अरब [अतिरिक्त बुद्ध]। (76)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (77)

हे अकेले बुद्धों, वासना से मुक्त, छह सौ चालीस मिलियन; हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (78)

बुद्धों के अनगिनत अनुयायी,

मैं दोषों से मुक्त और निष्कलंक हूँ; हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (79)

मैं हमेशा शिक्षण का अभ्यास करता हूँ।

उन लोगों में से जो शिक्षाओं का अभ्यास करते हैं,759

शिक्षण का अभ्यास करते समय सहज महसूस करना,

इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में। (80)

शिक्षण-अभ्यास का अच्छी तरह से अभ्यास किया जाना चाहिए;

वह अभ्यास कुप्रथा नहीं है। [मैं] इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में शिक्षण का अभ्यास करने में सहज हूँ। (81)

पुनर्जन्मों से विरक्ति होकर, मैं हजारों भिक्षुणियों से घिरी हुई, निर्जनता (त्याग) की राह पर चल पड़ी।

कुछ भी त्यागने के बाद। (82) [1020]

अपना घर छोड़ने के बाद,

मैं बेघर हो गया।

जब आठ महीने 760 अभी बीते भी नहीं थे

मैंने चार [महान] सत्यों को प्राप्त किया। (83) [1021]

समुद्र की लहरों की तरह, लोग अनेक प्रकार के मठवासी वस्त्र और भिक्षा लेकर भोजन के लिए आ रहे हैं।

आवश्यकताएँ [साथ ही] आवास। (84) [1022]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (85) [1023]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (86) [1024]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान (महाशक्तियां) प्राप्त कर लीं।

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (87) [1025]

757 या करें: कारती से

758 सधम्म° , प्रकाशित "अच्छी शिक्षा"

759 धम्मेसु सीनानां सदा सद्धम्म-कारिनो

760 aṭṭhamāse , BJTS इसे addhamāse (“आधा महीना”) पढ़ता है

761 पीटीएस बुहुन एके के लिए बीजेटीएस के साथ बहु 'नेके पढ़ना

इस प्रकार अनेक प्रकार के दुख और अनेक प्रकार के सुख होते हैं;

अब शुद्ध जीवन प्राप्त हो चुका है।

मैंने सभी उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हैं। [1026]762

जो स्त्री स्वयं को महान ऋषि के पुण्य के लिए समर्पित करती है, उसे [उनका] साथ और [अपूर्ण निर्वाण] प्राप्त होता है। [1027]

अतीत पूरी तरह से नष्ट हो गया है, और वर्तमान और भविष्य भी; मेरे सारे कर्म नष्ट हो गए हैं:

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे दृष्टिपूर्ण।” [1028]

इस प्रकार भिक्खुनी यशोदरा ने ये श्लोक कहे।

यशोदरा थेरी763 की कथा समाप्त हुई।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.13
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||13|| ------>>>> अगला

1.13 विशाखा:
उनकी कहानी थेरी धीरा की कहानी से मिलती-जुलती है। अरहंत पद (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त करने के बाद उन्होंने ज्ञान के आनंद (विमुक्ति, विमुक्ति) पर चिंतन किया और इस प्रकार अन्न (प्रबुद्ध अवस्था) की घोषणा की।
बुद्ध की साधना पूरी हुई! ध्यान रहे कि तुम उनकी इच्छा का पालन करो।

और आपने यह कर दिखाया, अब कभी नहीं।

तुम्हें अपने कर्मों के लिए पश्चाताप करना होगा। इसलिए, जल्दी से धो लो।

अपने पैर फैलाकर एकांत में बैठ जाओ; अकेले (ध्यान करो) (13)

इसलिए उन्होंने दूसरों से भी उनका अनुसरण करने का आग्रह किया।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

मगध राज्य के भद्दिया नगर में मेंडका नाम का एक अत्यंत धनी व्यापारी रहता था। पिछले जन्म में, अकाल के समय, उसने और उसके परिवार ने अपना अंतिम भंडार पच्चेक बुद्ध को दे दिया था। इस भावपूर्ण दान के फलस्वरूप, मेंडका और उसके परिवार (जिन्हें कर्म ने पुनः एक साथ लाया था) के घर में इतना भंडार था कि वे कभी समाप्त नहीं हो सकते थे, इसके बावजूद कि वे अत्यंत उदारता का अभ्यास करते रहे। उसके पुत्र धनंजय और बहू सुमनदेवी की एक अत्यंत सुंदर पुत्री थी जिसका नाम विशाखा था। वे अत्यंत धन और सुख-सुविधाओं में रहते थे और अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध थे, जिसका वे सभी के प्रति अभ्यास करते थे।

एक दिन, जब विशाखा सात वर्ष की थी, बुद्ध भिक्षुओं के एक बड़े दल के साथ भद्दिया आए। जब मेंडका ने बुद्ध के आगमन के बारे में सुना, तो उसने अपनी युवा पोती को बुलाया और उसे अपनी दासियों को इकट्ठा करके बुद्ध का स्वागत करने के लिए बाहर जाने का निर्देश दिया। विशाखा ने आज्ञा का पालन किया। उन्होंने बुद्ध को प्रणाम किया और उनके उपदेश सुनने के लिए तैयार हुईं। बुद्ध ने विशाखा को धम्म का उपदेश दिया और उन्हें तथा उनकी 500 दासियों को संतत्व के प्रथम चरण, सोतापन्न में स्थापित किया। मेंडका, उनकी पत्नी, पुत्र, बहू और घर के अन्य कई सेवक जो उपस्थित थे, उन्होंने भी संतत्व का प्रथम चरण प्राप्त किया।

मगध राज्य पर धर्मात्मा राजा बिम्बिसार का शासन था। राजा पसेनादि कोसल ने यह महसूस करते हुए कि ऐसा उदार और सम्मानित परिवार उनके राज्य के लिए एक संपत्ति होगा, अपने मित्र राजा बिम्बिसार से पूछा कि क्या धनंजय और उनका परिवार कोसल में आकर बस सकता है, जहाँ वे उनकी प्रजा के लिए एक उदाहरण बन सकते हैं। राजा बिम्बिसार ने अपने मित्र के अनुरोध को स्वीकार कर लिया। धनंजय और उनका परिवार कोसल में बस गया, जहाँ उन्होंने धम्म का अभ्यास करते हुए एक अनुकरणीय जीवन व्यतीत किया। विशाखा का पालन-पोषण विलासितापूर्ण वातावरण में हुआ, जहाँ उन्हें उदारता और धर्म का अभ्यास करने का भरपूर अवसर मिला, जिसे वे अक्सर सुनती थीं।

उस समय, सावत्थी में मिगारा नामक एक धनी व्यापारी रहता था, जिसका एक पुत्र था जिसका नाम पुन्नवद्धन था। अपने माता-पिता के बार-बार आग्रह के बावजूद, पुन्नवद्धन ने विवाह करने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि उसकी दुल्हन अत्यंत सुंदर होनी चाहिए और उसमें पाँचों सुशोभित कन्या गुण होने चाहिए: बालों, दाँतों, त्वचा, यौवन और सुडौल शरीर। उसके बाल घने और चमकदार होने चाहिए, जो उसके टखनों तक पहुँचें। उसके दाँत सफेद और मोतियों की पंक्ति के समान होने चाहिए। उसकी त्वचा सुनहरे रंग की, कोमल और बेदाग होनी चाहिए। वह लगभग सोलह वर्ष की आयु की होनी चाहिए। उसका सुडौल शरीर सुंदर और स्त्रीत्वपूर्ण होना

चाहिए, न अधिक मोटा और न अधिक पतला। हताश होकर, मिगारा ने ब्राह्मणों का एक दल राज्य भर में ऐसी कन्या की खोज में भेजा जिसमें उसके पुत्र की सभी अपेक्षाएँ पूरी हों।

उस समय, अत्यंत सुंदर विशाखा अपनी दासियों के साथ नदी में स्नान करने जा रही थीं, तभी अचानक आए तूफान ने उन्हें घेर लिया। दासियाँ आश्रय लेने के लिए भागीं, जबकि विशाखा शांत और शालीनता से आश्रय की ओर चली गईं। मिगारा के ब्राह्मणों ने सुंदर विशाखा को देखकर उनसे पूछा कि वह भीगने से बचने के लिए क्यों नहीं भागीं। विशाखा ने मिगारा के पुरुषों को बताया कि इतने सुंदर वस्त्रों में सजी एक कन्या का भागना उचित नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे राजसी वस्त्रों में सजे राजा, जुलूस के लिए सजे हाथी या वस्त्रों में सजे शांत भिक्षु का भागना उचित नहीं होता। उनके उत्तर और उनकी असाधारण सुंदरता से प्रसन्न होकर वे वापस गए और मिगारा को सूचित किया कि पुन्नवद्धन के लिए एक उपयुक्त वर मिल गया है।

दोनों परिवार इस व्यवस्था से प्रसन्न थे। और इस प्रकार, भव्य समारोह के साथ, विशाखा का विवाह उनके पिता द्वारा पुन्नवद्धन से कर दिया गया। विशाखा के पिता, जो उससे बेहद प्यार करते थे, ने शादी के उपहार के रूप में उसे कई उपहार और एक बेहद खूबसूरत रत्नजड़ित मुकुट दिया, जो उसके लंबे बालों से होते हुए उसके पैरों तक पहुँचता था। उन्होंने उसे विवाहित महिला के उचित आचरण के बारे में भी सलाह दी। उन्होंने अपनी बेटी को निम्नलिखित सलाह दी:

1. जब तक तुम अपने ससुराल वालों के साथ रहती हो, अपने पति और ससुराल वालों की कमियों के बारे में दूसरों को मत बताओ।

2. यदि तुम्हारे पड़ोसी तुम्हारे पति या ससुराल वालों के बारे में बुरा-भला कहें, तो उसे बढ़ावा मत दो और न ही उन्हें बताओ।

3. पैसा और सामान उन्हीं को उधार दो जो उसे लौटा दें।

4. किसी को कुछ भी उधार मत दो जो उसे लौटा न दे।

5. जब कोई रिश्तेदार या दोस्त जरूरतमंद हो, तो बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा किए उसकी मदद करो।

6. जब तुम अपने पति या ससुराल वालों को आते हुए देखो, तो सम्मानपूर्वक खड़ी हो जाओ।

7. अपने पति या ससुराल वालों से पहले खाना मत खाओ।

8. अपने पति या ससुराल वालों से पहले बिस्तर पर मत जाओ।

9. तुम्हें अपने पति और ससुराल वालों को लौ के समान समझना चाहिए; सावधानी और आदर के साथ।

10. तुम्हें अपने पति और ससुराल वालों को देवता के समान सम्मान देना चाहिए।

हालाँकि धनंजय द्वारा अपनी पुत्री को दी गई यह सलाह आज की अधिकांश महिलाओं को स्वीकार्य नहीं होगी, लेकिन बुद्ध के समय में महिलाओं से यही अपेक्षा की जाती थी। विशाखा, जिन्होंने इस सलाह और निर्देश का पालन किया, एक आदर्श पत्नी मानी जाती थीं।

विशाखा की सुंदरता और उदारता सर्वविदित थी, इसलिए कई शुभचिंतक सुंदर दुल्हन को सम्मानित करने और उन्हें उपहार देने आए। अपनी उदारता के कारण, विशाखा ने इन उपहारों को सावत्थी के जरूरतमंदों में बाँट दिया। लोग उनके इस कार्य से इतने प्रसन्न हुए कि वे शीघ्र ही सबकी प्रिय बन गईं। उस समय की प्रथा के अनुसार, विशाखा अपने पति के परिवार के साथ रहती थीं।

विशाखा के ससुर, मिगारा, नग्न तपस्वियों के एक संप्रदाय के अनुयायी थे। यद्यपि बुद्ध और उनके शिष्य उनके घर के पास ही एक मठ में रहते थे, फिर भी उन्हें मिगारा के घर आमंत्रित नहीं किया जाता था। एक दिन मिगारा ने नग्न तपस्वियों को आमंत्रित किया और विशाखा से उनकी सेवा करने का अनुरोध किया। विशाखा उनकी लज्जाहीनता देखकर भयभीत हो गईं और उन्होंने इनकार कर दिया। इससे नग्न तपस्वियों में बहुत क्रोध उत्पन्न हुआ और उन्होंने मिगारा की निंदा की कि उन्होंने तपस्वी गौतम की एक महिला अनुयायी को अपने घर में बुलाया।

इस घटना के कुछ ही समय बाद, जब मिगारा एक सोने के कटोरे में लजीज चावल की खीर खा रहे थे, तभी एक बौद्ध भिक्षु भिक्षा मांगने आया। यद्यपि मिगारा भिक्षु को देख सकते थे, फिर भी उन्होंने उसे अनदेखा किया और अपना भोजन जारी रखा। अपने ससुर को पंखा कर रही विशाखा ने भिक्षु से यह कहते हुए जाने का अनुरोध किया, "आदरणीय महोदय, कृपया जाइए, मेरे ससुर बासी खाना खा रहे हैं।"

सोने के कटोरे में स्वादिष्ट और ताज़ा भोजन कर रहे मिगारा को ये शब्द अपमानजनक लगे और वे क्रोधित हो गए। उन्होंने विशाखा को अपना घर छोड़कर अपने माता-पिता के पास वापस जाने का आदेश दिया। लेकिन विशाखा ने अपने आचरण का न्याय करने के लिए एक स्वतंत्र मध्यस्थ को बुलाया। उन्होंने सलाहकार को समझाया कि उनके ससुर जो स्वादिष्ट भोजन कर रहे थे, वह उनके पिछले अच्छे कर्मों का फल था। इसलिए, निरंतर समृद्धि सुनिश्चित करने वाले अच्छे कर्म करने के बजाय, वे "बासी भोजन खा रहे थे"।

जब मिगारा को विशाखा के शब्दों का अर्थ समझ आया, तो उन्होंने उससे क्षमा मांगी। हालांकि, विशाखा ने फैसला किया कि वह अब अपने पति के परिवार के साथ नहीं रहना चाहती। यह पहली बार नहीं था जब मिगारा ने उस पर गलत आरोप लगाया था। उसने अपने माता-पिता के पास वापस जाने का फैसला किया। मिगारा, जिन्हें अंततः अपनी बहू के नेक गुणों का एहसास हुआ, भयभीत हो गए। मिगारा ने उनसे वहीं रहने की विनती की। विशाखा इस शर्त पर रहने को राजी हो गईं कि उन्हें बुद्ध और उनके अनुयायियों को अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित करने की अनुमति दी जाए। जब मिगारा मान गए, तो विशाखा ने बुद्ध और उनके भिक्षुओं के समूह को भोजन के लिए आमंत्रित किया और स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की।

भोजन के बाद बुद्ध ने धर्म का उपदेश दिया। मिगारा और उनकी पत्नी, जो अपने पूर्व पुण्य कर्मों के फलस्वरूप आध्यात्मिक रूप से विकसित हो चुके थे, दोनों ने संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्न, प्राप्त की। इसके बाद, मिगारा, जो विशाखा के प्रति अत्यंत कृतज्ञ थे, उन्हें मिगारा माता कहकर पुकारने लगे और उनका आदर अपनी माता के समान करने लगे। वे बुद्ध के भक्त भी बन गए।

अत्यंत प्रसन्नता से विशाखा बुद्ध और उनके भिक्षुओं के प्रति उदारतापूर्वक कार्य करती रहीं। उनके दस पुत्र और दस पुत्रियाँ थीं, जिनका उन्होंने धर्म के मार्ग पर पालन-पोषण किया। सुंदर वस्त्रों और आभूषणों की शौकीन विशाखा हमेशा उत्तम वस्त्रों से सजी-धजी रहती थीं। एक दिन गलती से उनका अनमोल रत्नजड़ित मुकुट जेतवन में छूट गया, जहाँ बुद्ध निवास कर रहे थे। यह सोचकर कि मठ में छूटी हुई वस्तु वापस नहीं ली जानी चाहिए, उन्होंने उसे बुद्ध को अर्पित कर दिया। जब उन्हें बताया गया कि बुद्ध के भिक्षुओं के लिए अनमोल खजाने का कोई मूल्य नहीं है, तो विशाखा ने रत्नजड़ित मुकुट को बेचने का प्रस्ताव रखा, ताकि उससे प्राप्त धन से मठों का निर्माण किया जा सके और आवश्यक सामग्रियाँ उपलब्ध कराई जा सकें। जब उन्हें कोई ऐसा खरीदार नहीं मिला जो उस उत्तम रत्नजड़ित मुकुट को खरीद सके, तो उन्होंने उसे स्वयं खरीद लिया और उस धन का उपयोग पुब्बाराम मठ (जिसे मिगारा की माता का महल भी कहा जाता है) के निर्माण में किया, ताकि बुद्ध और उनके भिक्षुओं और भिक्षुणियों के भरण-पोषण में सहायता की जा सके।

विशाखा बुद्ध को दिए अपने उपहार से अत्यंत प्रसन्न थीं। जिस दिन उन्होंने बुद्ध को मठ भेंट किया, उस दिन उन्होंने आनंद के गीत गाए और अपने बच्चों और पोते-पोतियों के साथ पुब्बाराम मठ की परिक्रमा की। बुद्ध ने लोगों को बताया कि विशाखा आनंद के गीत इसलिए गा रही हैं क्योंकि उन्होंने कई विश्व चक्र पहले की अपनी मनोकामना पूरी कर ली थी - बुद्ध की प्रमुख महिला शिष्या बनना।

बुद्ध ने पुब्बाराम मठ में नौ वर्षा ऋतुएँ बिताईं, इस दौरान उन्होंने अनेक सूत्र दिए और अनेक लोगों की सहायता की। एक बार वे पुब्बाराम में ही थे जब एक हलचल ने उनका ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने देखा कि विशाखा भीगे हुए कपड़ों में अस्त-व्यस्त होकर उनकी ओर रोती हुई दौड़ रही हैं। विशाखा नदी में स्नान कर रही थीं जब उन्हें अपने प्रिय पोते दत्ता की मृत्यु का समाचार मिला। अपने दुःख को सहन न कर पाने के कारण वे सांत्वना और दिलासा पाने के लिए बुद्ध के पास दौड़ीं।

बुद्ध ने विशाखा से उनके दुःख का कारण पूछा और उन्हें बताया गया कि यह उनके प्रिय पोते की मृत्यु के कारण है। उन्होंने आगे बताया कि उस बच्चे ने उन्हें कितना सुख दिया था। तब बुद्ध ने विशाखा से पूछा कि क्या वह प्रसन्न होंगी यदि उनके उतने ही पोते-पोतियां हों जितने सावत्थी के नागरिक हैं? विशाखा ने पुष्टि की कि वह वास्तव में बहुत प्रसन्न होंगी क्योंकि उनके पोते-पोतियों से उन्हें असीम आनंद मिलता है। फिर बुद्ध ने विशाखा से पूछा कि सावत्थी के कितने नागरिक प्रतिदिन मरते हैं? विशाखा ने उत्तर दिया कि प्रतिदिन बहुत से लोग मरते हैं। तब बुद्ध ने उन्हें जीवन की अनित्यता समझाई। उन्होंने कहा, "मृत्यु सभी जीवित प्राणियों के पास आती है। इसलिए सोचो कि तुम कितनी दुखी हो जाओगी, क्योंकि तुम्हारे इतने सारे पोते-पोतियां होंगे, जिनमें से कुछ प्रतिदिन मर जाएंगे। तब तुम्हें मुझसे सांत्वना पाने के लिए बार-बार आना पड़ेगा।"

विशाखा ने बुद्ध के वचनों पर मनन किया और यह महसूस किया कि उनका लगाव जितना प्रबल होगा, वियोग का दुःख उतना ही अधिक होगा। यह जानकर कि सभी वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं, उन्होंने स्वयं को संभाला और बुद्ध के पास से विदा ली। विशाखा यह इसलिए समझ पाईं क्योंकि उन्होंने बुद्ध की शिक्षाएँ सुनकर कम उम्र में ही संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्न, प्राप्त कर ली थी। विशाखा

ने कई कुलीन महिलाओं को धम्म के प्रचार में भी सहायता की। एक बार जब वे महिलाओं के एक बड़े समूह को धम्म सुनने के लिए ले गईं, तो यह देखकर उन्हें बहुत दुख हुआ कि उन्होंने बड़ी मात्रा में मादक पदार्थों का सेवन किया था और उनका व्यवहार अशोभनीय था। तब उन्होंने बुद्ध से पूछा कि मनुष्य सबसे पहले मादक पदार्थों के प्रति आसक्त कैसे हुए। तब बुद्ध ने कुंभ जातक कथा सुनाई, जिसमें एक व्यक्ति को एक पेड़ की दरार में किण्वित फल और पानी मिला और उसने झूठे सुख का अनुभव करने के लिए उस किण्वित तरल का सेवन करना शुरू कर दिया।

बुद्ध ने एक अन्य अवसर पर भी विशाखा की सहायता की, जब उन पर लगाए गए कुछ अनुचित करों से वे व्याकुल थीं। विशाखा ने अपने कुछ रिश्तेदारों को एक पार्सल भेजा था और सीमा रक्षकों ने उस पर अनुचित रूप से अधिक शुल्क लगा दिया था। विशाखा ने राजा से शिकायत की, लेकिन राजकीय मामलों के दबाव के कारण राजा ने उसकी शिकायत पर ध्यान नहीं दिया। नाराज़ और क्रोधित होकर विशाखा ने सांत्वना के लिए बुद्ध से प्रार्थना की। बुद्ध ने यह कहकर उसका मन शांत किया:
"सभी प्रकार की अधीनता कष्टदायक होती है।"

परमानंद का अर्थ है पूर्ण नियंत्रण।

लोग आम चिंताओं से परेशान हैं।

इन बंधनों से छुटकारा पाना मुश्किल है।

बुद्ध के इन ज्ञानवर्धक वचनों ने विशाखा को अपनी इस छोटी सी परेशानी को सही परिप्रेक्ष्य में देखने में मदद की। बुद्ध की सलाह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी 2500 साल पहले थी। लालसा और आसक्ति के बंधन इतने प्रबल होते हैं कि अक्सर हम छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित और विचलित हो जाते हैं, जिनमें से कई तो हमारे नियंत्रण से बाहर होती हैं और मानव जाति को प्रभावित करने वाली अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं की तुलना में तुच्छ होती हैं।

विशाखा अक्सर बुद्ध से उन विषयों पर प्रश्न पूछती थीं जिनमें उनकी रुचि होती थी, और अंगुत्तरा निकाय में तीन सूत्र हैं जो बुद्ध ने उनके प्रश्नों के उत्तर में उन्हें दिए थे। एक बार विशाखा ने बुद्ध से पूछा कि एक स्त्री में कौन से गुण होते हैं जो उसे इस लोक और परलोक दोनों पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं। बुद्ध ने उत्तर दिया:

"वह परिश्रम, अपने सेवकों की देखभाल, अपने पति के प्रति प्रेम और उसकी संपत्ति की रक्षा करके इस लोक पर विजय प्राप्त करती है। वह आत्मविश्वास, सद्गुण, उदारता और ज्ञान से परलोक पर विजय प्राप्त करती है।"

बुद्ध ने विशाखा को धार्मिक पर्वों (उपोसथा) को उचित तरीके से मनाने का भी निर्देश दिया। विशाखा ने धार्मिक पर्व मनाया था और पर्व मनाने के सर्वोत्तम तरीके के बारे में मार्गदर्शन लेने के लिए उनके पास आई थीं। पहले तो बुद्ध ने उन्हें त्योहार मनाने के गलत तरीकों के बारे में बताया, फिर उन्हें सही तरीका बताते हुए कहा कि उन्हें आठ नियमों का पालन करना चाहिए, बुद्ध, धम्म और संघ की महानता और अच्छे गुणों पर मनन करना चाहिए, देवताओं (देवदूतों) के गुणों पर मनन करना चाहिए और अपने गुणों पर भी मनन करना चाहिए। इसके बाद बुद्ध ने देवताओं के सुखी और चिंतामुक्त जीवन का वर्णन किया और अंत में कहा, "मनुष्यों का वैभव ऐसे स्वर्गीय आनंद के आगे तुच्छ है।" बुद्ध ने स्वर्गिक जन्म के चमत्कारों का वर्णन किया क्योंकि वे जानते थे कि विशाखा, जो एक सोतापन्न थीं, मृत्यु के समय ऐसे ही स्वर्गीय आनंद का अनुभव करेंगी।

एक दिन जब बुद्ध पुब्बाराम में निवास कर रहे थे, विशाखा बुद्ध के पास आईं और आठ वरदान मांगे। बुद्ध ने उन्हें बताया कि पूर्ण पुरुष वरदान देने की प्रथा से परे हैं। तब उन्होंने उन्हें बताया कि ये वरदान संघ के लिए बहुत लाभकारी होंगे और ये वरदान स्वीकार्य हैं। बुद्ध की अनुमति से, विशाखा ने संघ को निम्नलिखित उपहार देने की अनुमति मांगी:

1. वर्षा ऋतु के लिए वस्त्र, क्योंकि भिक्षु अपने वस्त्रों को सुरक्षित रखने के लिए कभी-कभी बारिश में आधे नग्न होकर दौड़ते थे, जो उचित नहीं था।

2. नए भिक्षुओं के लिए भोजन, क्योंकि लंबी यात्रा के बाद सावत्थी पहुंचे भिक्षु थके हुए थे और नगर से परिचित नहीं थे। ऐसे में उनके लिए भिक्षा मांगना कठिन होता।

3. यात्रा पर जाने वाले भिक्षुओं के लिए भोजन, ताकि वे आगे की यात्रा के लिए बलवान और पोषित रहें।

4. बीमार भिक्षुओं के लिए औषधि, क्योंकि बीमार भिक्षु पीड़ा और कष्ट में थे।

5. बीमार भिक्षुओं के लिए भोजन, क्योंकि बीमार भिक्षु भिक्षा मांगने की स्थिति में नहीं थे।

6. बीमारों की सेवा करने वाले भिक्षुओं के लिए भोजन, क्योंकि बीमारों की सेवा करने के बाद भिक्षा मांगने जाने के कारण उन्हें अक्सर भोजन नहीं मिल पाता था और वे भिक्षा मांगने में देर कर देते थे।

7. सुबह के लिए नियमित रूप से चावल का दलिया वितरित करना, क्योंकि यह संघ के लिए पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक था, जो दोपहर के बाद भोजन नहीं करते थे।

8. भिक्षुणियों के लिए नदी में स्नान करने हेतु स्नान वस्त्र, क्योंकि जिन भिक्षुणियों के पास स्नान वस्त्र नहीं होते थे, उन्हें अक्सर स्नान करते समय अपने शरीर को नंगा रखना पड़ता था, जो उचित नहीं था।

बुद्ध ने विशाखा से पूछा कि इन उपहारों से उन्हें क्या आंतरिक लाभ की अपेक्षा है। विशाखा ने उत्तर दिया कि अक्सर विभिन्न स्थानों पर वर्षा ऋतु बिताने वाले संघ के सदस्य बुद्ध के पास आते हैं और उनसे किसी दिवंगत भिक्षु (या भिक्षुणी) के बारे में पूछते हैं और उनके पुनर्जन्म स्थान के बारे में प्रश्न करते हैं। तब भगवान बुद्ध उनके (या उनके) जन्म और पुनर्जन्म स्थान के बारे में बताते हैं। मैं भिक्षु के पास जाकर पूछूंगा, "हे प्रभु, क्या वह भिक्षु (भिक्षुणी) कभी सावत्थी आए थे?" यदि वे हाँ में उत्तर दें, तो मैं यह निष्कर्ष निकालूंगा कि उस भिक्षु ने अवश्य ही किसी वस्त्र, आगंतुकों के भोजन, यात्रा पर जाने वाले व्यक्ति के भोजन, बीमारों के भोजन, बीमारों की देखभाल करने वालों के भोजन या चावल की दलिया का उपयोग किया होगा। और जब मैं ऐसा चिंतन करूंगा, तो मैं प्रसन्न और आनंदित होऊंगा। जब मेरा मन प्रसन्न होगा, तो मेरा शरीर शांत होगा। जब मेरा शरीर शांत होगा, तो मुझे आनंद का अनुभव होगा। जब मुझे आनंद का अनुभव होगा, तो मेरा मन एकाग्र हो जाएगा। इससे आध्यात्मिक शक्तियों और ज्ञानोदय की क्षमताओं का विकास होगा। हे प्रभु, यही वह लाभ है जो मैं अपने लिए देख रही हूँ।"

विशाखा द्वारा आठ वरदान माँगने की प्रशंसा करते हुए, बुद्ध ने उन्हें संघ को निवेदनानुसार दान देने की अनुमति दी। विशाखा द्वारा दान देने का तरीका उल्लेखनीय है। न केवल उनका इरादा प्रबल होता है, बल्कि वे दान की तैयारी (पहले), दान देते समय और दान के बाद चिंतन करते समय भी उस प्रबलता को बनाए रखती हैं। दान देने से पहले, दान देते समय और दान देने के बाद की यह प्रबल प्रसन्नता या इच्छाशक्ति अधिकतम फल सुनिश्चित करती है। स्वयं को शुद्ध करने, मन का विकास करने और ज्ञान प्राप्ति के इरादे से दान देना ही दान देने का उचित तरीका है और हम सभी को बुद्ध की प्रमुख महिला गृहस्थ परोपकारी विशाखा से उदारता का अभ्यास करने का उचित तरीका सीखना चाहिए।

बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति उनकी उदारता के कारण, बुद्ध ने विशाखा को अपनी प्रमुख महिला गृहस्थ परोपकारी घोषित किया। बुद्ध और संघ को आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करने के अलावा, विशाखा ने संघ के सदस्यों के बीच उत्पन्न होने वाले मुद्दों और विवादों को सुलझाने में भी सहायता की। भिक्षुणियों में से एक। उन्होंने लंबा और स्वस्थ जीवन व्यतीत किया और 120 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। विशाखा, जिनमें कुंवारी सौंदर्य के पांच गुण समाहित थे, अंत तक अत्यंत सुंदर थीं और अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भी उन्होंने अपनी युवावस्था और सुंदरता को बरकरार रखा।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.10
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||47|| ------>>>> अगला

5.10 पताचारा, सावत्थी के एक करोड़पति (सेत्थी) की पुत्री, अपने पिता के सेवक की पत्नी, विनय विद्या में निपुण थेरी में अग्रणी, एक प्रख्यात शिक्षिका और नेता।

उनका भी पुनर्जन्म हुआ, जब पद्ममुत्तरा बुद्ध थे, हंसवती में एक कुलवासी परिवार में। एक दिन वे गुरु का प्रवचन सुन रही थीं, और जब उन्होंने भिक्षुणियों को संघ के नियमों में पारंगत भिक्षुणियों में सर्वोच्च स्थान दिया, तो उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन वे भी इस पद को प्राप्त करेंगी। जीवन भर अच्छे कर्म करने और स्वर्ग-पृथ्वी में पुनर्जन्म लेने के बाद, उनका पुनर्जन्म उस समय हुआ जब कश्यप बुद्ध थे, काशी के राजा किकी की सात पुत्रियों में से एक के रूप में। उन्होंने 20,000 वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पवित्र जीवन व्यतीत किया और संघ के लिए एक कुटिया का निर्माण किया। जब तक पृथ्वी पर कोई बुद्ध नहीं थे, वे देवताओं (देवदूतों) के बीच महिमामयी निवास करती रहीं, और अंत में, इस बुद्ध युग में, उनका पुनर्जन्म सावत्थी में करोड़पति (सेठी) के घर में हुआ। बड़े होने पर, उनका अपने घर के एक सेवक से घनिष्ठ संबंध बन गया। जब माता-पिता ने उसकी शादी उसके ही दर्जे के युवक से तय करने का दिन तय किया, तो उसने मुट्ठी भर सामान लिया और अपने प्रेमी के साथ शहर के मुख्य द्वार से निकलकर एक वन-शाखापत्तनम गाँव में रहने लगी। (गर्भवती होने के कारण) जब प्रसव का समय निकट आया, तो उसने कहा: 'यहाँ मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं है; चलो घर चलते हैं, पतिदेव।' और वह टालमटोल करता रहा, कभी कहता रहा: 'आज चलेंगे; कभी कल चलेंगे', यहाँ तक कि उसने कहा: 'यह मूर्ख मुझे कभी वहाँ नहीं ले जाएगा'; और उसके जाने के बाद उसने अपने सारे काम निपटा लिए, अपने पड़ोसियों से कहा कि वे कहें कि वह घर चली गई है, और वह अकेले ही निकल पड़ी। जब वह वापस आया और उसे यह बात पता चली, तो वह चिल्लाया: 'मेरी वजह से एक उच्च कोटि की महिला असुरक्षित है,' और उसके पीछे दौड़ते हुए उसे पकड़ लिया। रास्ते में ही उसे प्रसव पीड़ा होने लगी, और जब वह संभली, तो वे वापस गाँव की ओर लौट आए। दूसरे बच्चे के जन्म पर सब कुछ पहले जैसा ही हुआ, बस एक फर्क था: जब कर्म (भाग्य) की हवाएँ उस पर चलीं, तो एक भयंकर तूफान आ गया और उसने कहा, 'पतिदेव, मुझे बारिश से बचाओ!' जब वह जंगल में घास और लकड़ियाँ काट रहा था, तो उसने चींटियों के टीले में खड़े एक पेड़ से एक डंडा काट लिया। तभी चींटियों के टीले से एक साँप निकला और उसे काट लिया, जिससे वह वहीं गिर पड़ा और मर गया। वह बहुत दुखी थी और उसके आने का इंतज़ार कर रही थी, जबकि दोनों बच्चे हवा और बारिश से रो रहे थे। उसने उन्हें अपनी गोद में लिया और ज़मीन पर उनके ऊपर लेटकर रात बिताई। भोर होते ही, एक बच्चे को अपनी गोद में लिए और दूसरे से कहते हुए, 'आओ, प्यारे, पिता तुम्हें छोड़कर चले गए हैं,' वह गई और उसे चींटियों के टीले के पास मृत पाया। 'ओह!' वह रो पड़ी, 'मेरे कारण मेरे पति की मृत्यु हो गई,' और पूरी रात रोती और विलाप करती रही। बारिश के कारण उसके रास्ते में बहने वाली नदी घुटनों तक उफान पर थी, और वह घबराई हुई और कमजोर होने के कारण दोनों बच्चों को लेकर नदी पार नहीं कर सकी। इसलिए उसने बड़े बच्चे को एक तरफ छोड़ दिया और दूसरे बच्चे को लेकर नदी पार कर गई। फिर उसने एक टहनी तोड़कर बिछाई और बच्चे को अपने सिर पर लपेटे हुए कपड़े पर लिटा दिया। लेकिन जब वह उस नन्हे बच्चे को छोड़कर जा रही थी,और नदी की ओर जाते समय वह बार-बार पीछे मुड़कर उसे देखती रही। जब वह आधे रास्ते पहुँच चुकी थी, तभी हवा में उड़ते एक बाज़ ने बच्चे को मांस का टुकड़ा समझकर झपट लिया। माँ ने उसे देखकर ताली बजाई और 'सू! सू!' चिल्लाई, लेकिन बाज़ ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वह उससे दूर थी, और बच्चे को हवा में उठा लिया। फिर बड़ा बेटा, यह सोचकर कि माँ उसके कारण चिल्ला रही है, घबरा गया और नदी में गिर गया; इस प्रकार माँ ने दोनों बच्चों को खो दिया और रोते हुए सावत्थी आ गई। वहाँ एक आदमी से मिलकर उसने पूछा, 'आप कहाँ रहते हैं?' उसने कहा, 'सावत्थी में, महोदया।' 'सावत्थी में फलाँ गली में फलाँ परिवार रहता है। क्या आप उन्हें जानते हैं, मित्र?' उसने कहा, 'मैं उन्हें जानता हूँ, महोदया; लेकिन उनके बारे में मत पूछिए; कुछ और पूछिए।' उसने कहा, 'मुझे किसी और बात से मतलब नहीं है। मैं उन्हीं के बारे में पूछ रही हूँ, मित्र।' उसने कहा, 'महोदय, क्या आप स्वयं बता नहीं सकतीं?' आपने देखा कि भगवान ने कल रात कैसे बारिश की?' वह बोली, 'हाँ, मित्र। मुझ पर पूरी रात बारिश होती रही। मैं अभी बताती हूँ। लेकिन पहले, मुझे उस करोड़पति (सेठी) के परिवार के बारे में बताओ।' वह बोला, 'महोदया, कल रात घर गिर गया और उन पर आ गिरा (वे सब मर गए) और अब वे सब जल रहे हैं, करोड़पति (सेठी), उसकी पत्नी और उसका बेटा एक ही चिता पर। महोदया, उसका धुआँ दिखाई दे रहा है।' उस दु:ख के कारण वह पागल हो गई, यहाँ तक कि उसे अपने कपड़े उतर जाने का भी पता नहीं चला। अपने दुख में विलाप करते हुए—
मेरे दोनों बच्चे अब इस दुनिया में नहीं हैं।

और झाड़ियों में मेरे पति मृत पड़े हैं;

एक ही चिता पर मेरी मां, मेरे पिता और मेरे भाई जल रहे हैं।

उस दिन से वह गोल-गोल घूमने लगी, और क्योंकि उसका लबादा उससे अलग हो गया था, इसलिए उसे 'लबादा-चालक' नाम दिया गया। लोग उसे देखकर कहते, 'जाओ, छोटी पागल औरत!' कुछ लोग उसके सिर पर कूड़ा फेंकते, कुछ उस पर धूल छिड़कते, कुछ उस पर मिट्टी के ढेले मारते। गुरु (बुद्ध), जेतवन वन में एक विशाल समूह के बीच धम्म का उपदेश देते हुए बैठे थे, उन्होंने उसे इस प्रकार गोल-गोल घूमते देखा और उसमें आई परिपक्वता पर विचार किया। जब वह विहार की ओर आई, तो वे भी उसी रास्ते से चले। भीड़ ने उसे देखकर कहा, 'कृपया उस छोटी पागल को यहाँ न आने दें।' भगवान बुद्ध ने कहा, 'उसे मत रोको,' और जब वह फिर से घूम कर आई, तो पास खड़े होकर उन्होंने उससे कहा, 'बहन, अपना होश संभालो।' बुद्ध की असीम शक्ति से, उसने होश में आकर अपनी दयनीय स्थिति को पहचाना, और शर्म और अंतरात्मा से प्रेरित होकर वह धरती पर गिर पड़ी। एक व्यक्ति ने उसे अपना बाहरी वस्त्र

दिया, और उसने उसे ओढ़ लिया, और गुरु (बुद्ध) के पास आकर उनके चरणों में प्रणाम करते हुए कहा, 'हे प्रभु, मेरी सहायता कीजिए। मेरे एक बच्चे को बाज़ ले गया है, एक को पानी बहा ले गया है; जंगल में मेरे पति मृत पड़े हैं; मेरे माता-पिता और भाई, ढहे हुए घर के नीचे दबकर एक ही चिता पर जल रहे हैं।' इस प्रकार उसने उन्हें अपने शोक का कारण बताया। गुरु (बुद्ध) ने उसे इस प्रकार समझाया: 'पटाचारा, यह मत सोचो कि तुम किसी ऐसे व्यक्ति के पास आई हो जो तुम्हारी सहायता कर सकता है। जिस प्रकार अब तुम बच्चों और अन्य लोगों की मृत्यु के कारण आँसू बहा रही हो, उसी प्रकार जीवन के अनंत चक्र में तुम बच्चों और अन्य लोगों की मृत्यु के कारण चारों सागरों के जल से भी अधिक आँसू बहाती रही हो।'
'महासागरों का जल चार गुना कम है'

आंसुओं में बहाए गए जल की सारी बर्बादी से भी कहीं अधिक।

दुःख से व्याकुल मनुष्य के हृदय द्वारा।

अपना जीवन कड़वे दुख के बारे में सोचकर क्यों बर्बाद करें?

इस प्रकार, गुरु (बुद्ध) के उन वचनों के माध्यम से, जो मोक्ष के मार्ग को छूते हैं, उसका दुःख सहना आसान हो गया। यह जानकर उन्होंने आगे कहा: 'हे पताकारा, परलोक जाने वाले के लिए न तो कोई बच्चा, न ही कोई रिश्तेदार आश्रय, छुपने की जगह या शरण बन सकता है। यहाँ भी वे ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए, जो भी बुद्धिमान हो, वह अपने आचरण को शुद्ध करे और निर्वाण की ओर ले जाने वाले मार्ग का अनुसरण करे।' इस प्रकार उन्होंने उसे उपदेश दिया और कहा:
'पुत्र न तो आश्रय होते हैं, न पिता, न ही कोई रिश्तेदार।'

मृत्यु ने तुम्हें घेर लिया है, तुम्हारे लिए रक्त संबंध कोई सहारा नहीं है।

इस सत्य को जानकर, सद्गुणों से परिपूर्ण बुद्धिमान व्यक्ति,

स्विफ्टली निब्बाना की ओर जाने वाली सड़क को स्पष्ट कर देता है।

जब उन्होंने बोलना समाप्त किया, तब वह सोतापना (प्रथम दिव्य जागृति) के फल में स्थापित हो चुकी थीं और उन्होंने दीक्षा का अनुरोध किया। गुरु (बुद्ध) उन्हें भिक्षुणियों के पास ले गए और उन्हें प्रवेश दे दिया।
वह अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में उच्चतर उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए अभ्यास कर रही थीं। एक दिन उन्होंने एक कटोरे में जल लिया और अपने पैर धोते हुए कुछ जल बहा दिया, जो थोड़ी दूर तक रिसकर गायब हो गया। उन्होंने और जल डाला, और वह और दूर तक गया। और तीसरी बार जल गायब होने से पहले और भी दूर तक गया। इसे अपने चिंतन का आधार बनाकर उन्होंने मनन किया: 'इसी प्रकार मनुष्य मरते हैं, या तो बचपन में, या मध्य आयु में, या बुढ़ापे में।' और गुरु, अपने 'सुगंधित कक्ष' में बैठे हुए, अपने तेजस्वी दिव्य रूप को प्रकट किया और मानो उनके सामने बोलते हुए प्रकट हुए, और कहा: 'इसी प्रकार, हे पताचारा, सभी मनुष्य मरने के योग्य हैं; इसलिए क्या यह बेहतर है कि हम इस तरह से जिएं कि पांचों खंधों (5 आंतरिक समुच्चयों) के आने-जाने को देख सकें, भले ही केवल एक दिन के लिए ही सही, एक पल के लिए ही सही, बजाय इसके कि हम सौ साल तक जिएं और उसे न देखें।
'वह व्यक्ति जो सौ वर्ष तक जीवित रहा,

वह कभी यह नहीं देखता कि चीजें कैसे उत्पन्न होती हैं और नष्ट होती हैं (भौतिक संसार का सत्य)।

एक दिन से अधिक न जीना ही बेहतर है।

अतः उस दिन उसे अनित्यता का सत्य दिखाई देता है।

और जब उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया, तो पताकारा ने अरहंत पद (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का रूप और अर्थ दोनों में पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। उस समय से, अपनी शिष्या अवस्था में ही इस उपलब्धि को याद करते हुए और इस आध्यात्मिक परिवर्तन को महत्व देते हुए, उन्होंने आनंदपूर्वक कहा:
हल से खेतों की जुताई करते हुए, बीज बोते हुए

धरती की गोद में बोए गए बीज से ही मनुष्य अपनी फसलें प्राप्त करते हैं।

उनकी कमाई का आनंद लें और पत्नी और बच्चे का पालन-पोषण करें। (112)

मैं, जिसका जीवन पवित्र है, जो खोजता है, क्यों नहीं कर सकता?

गुरु (बुद्ध) की इच्छा पूरी करने में मैं आलसी नहीं हूँ।

न ही घमंड से निर्वाण की प्राप्ति हो सकती है? (113)

एक दिन, अपने पैर धोते हुए, मैं बैठकर देखने लगा

ढलान से नीचे रिसता हुआ पानी।

इससे मैंने स्वयं को दृढ़ संकल्पित कर लिया था।

जैसे किसी श्रेष्ठ नस्ल के घोड़े को प्रशिक्षित किया जाता है। (114)

फिर मैं अपनी कोठरी में जाकर अपना लैंप ले लेता हूँ।

और मैं अपने सोफे पर बैठकर लौ को देखता हूँ। (115)

पिन को पकड़कर, मैं बाती को पूरी तरह नीचे खींच लेता हूँ।

तेल में. . . .

देखो! नन्हे दीपक का निर्वाण!

आत्मज्ञान (विमोक्खो, विमुक्ति) का उदय होता है!

मेरा मन अब मुक्त हो गया है (विमोक्खो, विमुक्ति, मोक्ष)! (116)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

पताकारा एक धनी सावत्थी व्यापारी की सुंदर पुत्री थी। जब वह बालिग हुई तो उसके माता-पिता ने उसके लिए उसी के समान प्रतिष्ठा और धन वाले एक पुरुष से विवाह निर्धारित कर दिया। परन्तु पताकारा अपने माता-पिता के घर के एक नौकर से प्रेम करती थी। उसने अपने प्रेमी के साथ भाग जाने का निश्चय किया क्योंकि उसे लगा कि नौकर से विवाह करने के लिए माता-पिता की सहमति प्राप्त करना असंभव होगा।

नौकरानी का वेश धारण करके और सिर पर पानी का घड़ा लेकर पताकारा अपने प्रेमी के साथ भाग गई। उन्होंने सावत्थी से कुछ दूरी पर स्थित एक गाँव में अपना घर बसाया। उसका पति खेत जोतता था और मामूली कमाई करता था। पताकारा चावल कूटने, खाना पकाने

और सफाई करने का काम करती थी - ये सभी काम पहले उसके माता-पिता के घर के नौकर किया करते थे। इस प्रकार उसने एक कठिन जीवन व्यतीत किया, और अपने भाग जाने के कारण माता-पिता को जो कष्ट पहुँचाया था, उसका प्रायश्चित इसी जन्म में कर रही थी।

कुछ समय बाद पताकारा अपने पहले बच्चे से गर्भवती हुई। रिवाज के अनुसार वह प्रसव के लिए अपने माता-पिता के घर वापस जाना चाहती थी। उचित समय आने पर उसने अपने पति से उसे अपने माता-पिता के पास वापस ले जाने का अनुरोध किया। उसने इनकार कर दिया, क्योंकि उसे यकीन था कि उसे उनसे दूर ले जाने के लिए उसके माता-पिता उसे यातनाएँ देंगे और मार डालेंगे। तब पताकारा ने अकेले जाने का फैसला किया। पड़ोसियों को यह बताकर कि वह अपने माता-पिता से मिलने गई है, पताकारा सावत्थी की ओर चल पड़ी।

जब उसका पति काम से लौटा और उसे पता चला कि पताकारा अपने माता-पिता से मिलने गई है, तो वह बहुत परेशान हुआ। उसके पीछे दौड़कर उसने उसे पकड़ लिया और वापस लौटने की विनती की। उसी समय प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। कुछ झाड़ियों की ओट में छिपकर पताकारा ने एक बेटे को जन्म दिया। अपने पति के आग्रह पर वह वापस लौट आई।

कुछ वर्षों बाद पताकारा अपने दूसरे बच्चे से गर्भवती हुई। जब बच्चे के जन्म का समय निकट आया, तो अपने माता-पिता के सहयोग से बच्चे को जन्म देने के दृढ़ संकल्प के साथ, वह अपने बड़े बेटे को लेकर सावत्थी की ओर चल पड़ी। वह आधी दूरी ही तय कर पाई थी कि उसका पति उसके पास पहुँच गया। उसने फिर से उसे जाने से मना किया। लेकिन इस बार पताकारा अपने माता-पिता के साथ रहने के लिए दृढ़ थी।

वे इसी तरह यात्रा कर रहे थे कि अचानक भयंकर तूफान आ गया। तेज हवाओं ने रास्ते को तहस-नहस कर दिया, पेड़ की डालियाँ इधर-उधर हिलने लगीं और मूसलाधार बारिश होने लगी। तूफान के बीच ही पताकारा को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। उसने अपने पति से मूसलाधार बारिश और हवा से बचने के लिए एक अस्थायी आश्रय बनाने को कहा। वह आश्रय बनाने के लिए कुछ उपयुक्त डालियाँ काटने चला गया। पताकारा अपने पति के लौटने का व्यर्थ ही इंतजार करती रही। फिर, अपने पहले बच्चे को यथासंभव बचाते हुए, उसने दूसरे बेटे को जन्म दिया। पताकारा ने रात एक झाड़ी के नीचे दुबककर सोई, अपने शरीर को इस तरह झुकाकर कि उसके दोनों बेटे तूफान से सुरक्षित रहें।

अगली सुबह जब वह अपने पति के पदचिह्नों पर चली तो उसने उनका अकड़ा हुआ शरीर पाया। आश्रय के लिए शाखाएँ काटते समय उन्होंने एक विषैले साँप को परेशान कर दिया था। मृत्यु दर्दनाक थी लेकिन क्षणिक थी। शोक में लीन, पताकारा ने अपने बेटों को इकट्ठा किया और सावत्थी में अपने माता-पिता के घर की ओर चल पड़ी।

रास्ते में उन्हें उफनती अचिरवती नदी पार करनी पड़ी। पानी कमर तक था और धारा तेज़ थी। तूफान और हाल ही में प्रसव पीड़ा से थकी हुई पताकारा जानती थी कि वह दोनों बच्चों को नहीं ले जा सकती। अपने बड़े बेटे को किनारे पर छोड़कर वह नवजात शिशु को दूसरी ओर ले गई। फिर वह अपने पहले बच्चे को लाने के लिए वापस चल पड़ी। वह आधे रास्ते में ही थी कि उसने एक बाज़ को नीचे झपट्टा मारते हुए देखा जो लाल मांस के टुकड़े जैसे दिखने वाले नवजात शिशु को उठाकर ले जा रहा था। पताकारा चीखी और अपने हाथ हिलाए, उम्मीद कर रही थी कि बाज़ उसके बच्चे को छोड़ देगा। बाज़ ने उसकी चीखों को अनसुना कर दिया, लेकिन उसका पहला बच्चा, यह सोचकर कि उसकी माँ उसे बुला रही है, नदी में दौड़ पड़ा और तेज़ बहते पानी में बह गया।

पताकारा शोक से टूट गई। एक ही दिन में उसने अपने पति और दो बेटों को खो दिया था। शोक से व्याकुल, उसके बाल बिखरे हुए थे, कपड़े भीगे हुए थे, आँसुओं से भीगी हुई पटाकारा सावत्थी पहुँची। वहाँ उसकी मुलाकात एक नगरवासी से हुई और उसने अपने माता-पिता के बारे में पूछा। अजनबी ने उससे उस परिवार के बारे में न पूछने की विनती की। उसने कहा, "किसी और के बारे में पूछो, लेकिन उस परिवार के बारे में नहीं।" लेकिन पटाकारा अड़ी रही। तब उसने उसे बताया कि पिछली रात तेज़ हवाओं ने उनका घर गिरा दिया था, जिससे उसके माता-पिता और भाई दोनों की मृत्यु हो गई थी। फिर, हवा में उठते नीले धुएँ की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "देखो, यह उन तीनों की चिता का धुआँ है जो मर गए। उनका अंतिम संस्कार एक साथ किया गया था।"

असहनीय शोक में पटाकारा अपना मानसिक संतुलन खो बैठी। दर्द से चीखती हुई वह शहर में इधर-उधर भागी, उसके कपड़े फटे हुए थे, बाल बिखरे हुए थे, वह अधनंगी थी। स्थानीय लोगों ने उसे गालियाँ दीं और अपशब्द कहे क्योंकि उन्हें यकीन था कि वह मानसिक रूप से विक्षिप्त है। दु:ख से व्याकुल और अधमरी अवस्था में पटाचारा जेतवन मठ के पास पहुँची, जहाँ बुद्ध निवास कर रहे थे। नगरवासियों ने उसे रोकने का प्रयास किया। परन्तु बुद्ध ने अपनी करुणामय दृष्टि से उसकी आंतरिक बुद्धि को पहचानते हुए उसे अंदर आने का

आदेश दिया। फिर उन्होंने अपनी करुणा और वचनों से उसे चेतना में वापस लाया। बुद्ध ने कहा, "बहन, अपनी चेतना को पुनः प्राप्त करो।" मानो उसके शरीर पर ठंडे पानी की बाल्टी उड़ेल दी गई हो। इन शब्दों ने उसके पूरे अस्तित्व को झकझोर दिया और उसके दुःख से व्याकुल मन को शांत कर दिया। किसी द्वारा फेंके गए एक लबादे को अपने ऊपर ओढ़कर पटाचारा ने बुद्ध को अपनी दुखमय कहानी सुनाई।

बुद्ध ने करुणा और धैर्य से उनकी बात सुनी और फिर उनसे कहा कि अब और परेशान न हों। "तुम उस परमेश्वर के पास आई हो जो तुम्हारे दुख को दूर कर सकता है। तुमने केवल आज ही पुत्रों, पतियों और माता-पिता को नहीं खोया है, बल्कि इस अनंत संसार चक्र में तुमने पुत्रों और अन्य प्रियजनों को खोया है।" उन्होंने कहा, "तुमने चारों सागरों के जल से भी अधिक आँसू बहाए हैं।" जैसे-जैसे वे बोलते गए, पताकारा का दुःख कम होता गया। बुद्ध ने अंत में निम्नलिखित श्लोक से अपनी बात समाप्त की:
चारों महासागरों में बहुत कम पानी है।

हमने जितने आंसू बहाए हैं, उनकी तुलना में

दुःख से व्याकुल, पीड़ा से विक्षिप्त

हे स्त्री, तुम अब भी क्यों लापरवाह हो?

आश्रय देने के लिए कोई पुत्र नहीं हैं

कोई पिता या रिश्तेदार नहीं

मृत्यु से घिरे व्यक्ति के लिए

रिश्तेदार आश्रय प्रदान नहीं करते।

इस तथ्य को अच्छी तरह समझ लेने के बाद

सद्गुणों से परिपूर्ण बुद्धिमान पुरुष

जल्दी ही स्पष्ट हो जाना चाहिए

निर्वाण की ओर जाने वाला मार्ग।

(धम्मपद 268, 288, 289)

जब बुद्ध ने अपना प्रवचन समाप्त किया, तब तक पताकारा वह उन्मादग्रस्त स्त्री नहीं रह चुकी थीं जो मठ में आई थीं। उन्होंने समस्त सांसारिक वस्तुओं की अनित्यता के सत्य को भलीभांति जान लिया था और संतत्व की प्रथम अवस्था, सोतापन्न प्राप्त कर ली थी। इसके बाद उन्होंने भिक्षुणी बनने का निवेदन किया। भिक्षुणी संघ में प्रवेश करने के बाद, पताकारा ने लगन से धम्म का अभ्यास किया। उनकी लगन शीघ्र ही फलदायी हुई, क्योंकि कुछ ही समय में पताकारा ने अरहंतत्व प्राप्त कर लिया।

पताकारा ने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया था। दीपक बुझने के साथ ही, उनका एकाग्र मन मोक्ष प्राप्त कर चुका था। बुद्ध ने पताकारा को विनय (भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए अनुशासन नियम) में अग्रणी भिक्षुणी के रूप में नामित किया था। बचपन में पताकारा अनुशासनहीन और चंचल थीं। उन्होंने अपने माता-पिता के अधिकार के विरुद्ध विद्रोह किया था और अपने विद्रोह का परिणाम भुगता था। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने अनुशासन के महत्व को समझा और विनय में अग्रणी भिक्षुणी बनीं।

पताकारा अपने पिछले जन्म की आकांक्षाओं और प्रशिक्षण के कारण ही इतनी जल्दी एक चंचल लड़की से संत बन सकीं। एक लाख विश्व चक्र पूर्व पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय, उन्होंने गुरु को एक भिक्षुणी को अनुशासन में अग्रणी की उपाधि प्रदान करते हुए देखा था। वह

उस भिक्षुणी से प्रेरित हुईं और भविष्य के किसी बुद्ध के अधीन अनुशासन में अग्रणी भिक्षुणी बनने की आकांक्षा रखने लगीं। बुद्ध पद्ममुत्तरा ने देखा कि पताकारा में अपनी आकांक्षा को पूरा करने की योग्यता और गुण हैं, इसलिए उन्होंने भविष्यवाणी की कि वह गौतम बुद्ध के समय में अनुशासन में अग्रणी भिक्षुणी होंगी। पताकारा ने अनेक बुद्धों के अधीन भिक्षुणी के रूप में जीवन व्यतीत किया और गौतम बुद्ध के मार्गदर्शन में उन्होंने जो अंतर्दृष्टि और ज्ञान अर्जित किया, वह फलीभूत हुआ।

पताकारा, जिन्होंने अपने अनुशासनहीन और लापरवाह व्यवहार के कारण बहुत कष्ट सहा, उन्होंने अपना जीवन अन्य युवतियों को मठवासी अनुशासन और अनुशासित मन के लाभों की शिक्षा देने में समर्पित कर दिया। उन्हें एक महान शिक्षिका और करुणामयी भिक्षुणी के रूप में सम्मान प्राप्त था, जिन्होंने अनेक महिलाओं को मुक्ति प्राप्त करने में सहायता की।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा10.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||62|| ------>>>> अगला

10.1 किसा-गोतमी, श्रावस्ती के गरीब परिवार की पुत्री, खुरदरे वस्त्र धारण करने वाली भिक्षुणियों में अग्रणी।
उनका जन्म पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय हंसवती नगर में एक कुलवासी परिवार में हुआ था। एक दिन उन्होंने गुरु को धम्म का उपदेश देते हुए सुना और भिक्षुणी को खुरदरे वस्त्र धारण करने के मामले में सर्वोच्च स्थान दिया। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन उन्हें भी यह स्थान प्राप्त होगा। बुद्ध युग में उनका श्रावस्ती में एक गरीब परिवार में पुनर्जन्म हुआ। उनका नाम गोतमी था और दुबले-पतले शरीर के कारण उन्हें दुबली-पतली गोतमी कहा जाता था। विवाह के बाद उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया गया और उन्हें तुच्छ पुत्री कहा गया। परन्तु जब उन्होंने पुत्र को जन्म दिया, तो उन्हें सम्मान दिया गया। फिर जब पुत्र खेलने-कूदने लायक बड़ा हुआ, तो उसकी मृत्यु हो गई और गोतमी देह से विक्षिप्त हो गईं। और, उसके जन्म के बाद से लोगों के व्यवहार में आए बदलाव को ध्यान में रखते हुए, उसने सोचा: 'वे मेरे बच्चे को भी छीनकर छोड़ देंगे।' इसलिए, शव को अपनी कमर पर उठाकर, वह शोक से पागल होकर घर-घर जाकर कहने लगी: 'मेरे बच्चे के लिए दवा दीजिए!' और लोग तिरस्कारपूर्वक कहते थे: 'दवा! इसका क्या फायदा?' वह उनकी बात नहीं समझ पाई। लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति ने सोचा: 'उसका मन अपने बच्चे के शोक से व्याकुल है। दस गुना शक्ति वाले परमेश्वर को उसके लिए कोई न कोई दवा अवश्य पता होगी।' और उसने कहा: 'हे प्रिय स्त्री, स्वयं बुद्ध के पास जाओ और उनसे अपने बच्चे के लिए दवा मांगो।' वह उस समय विहार (मठ) गई जब गुरु (बुद्ध) धर्मोपदेश दे रहे थे, और बोली: 'भगवान बुद्ध, मेरे बच्चे के लिए दवा दीजिए!' गुरु ने उसमें आशा देखकर कहा: 'जाओ, नगर में प्रवेश करो, और जिस भी घर में अभी तक किसी की मृत्यु न हुई हो, वहाँ से थोड़ा सा सरसों का दाना ले आओ।' उसने राहत की सांस लेते हुए कहा, 'हे प्रभु, यह ठीक है!' और नगर के पहले घर में जाकर बोली, 'मुझे थोड़ा सा सरसों का दाना दे दीजिए, ताकि मैं अपने बच्चे को दवा दे सकूँ। यदि इस घर में अभी तक किसी की मृत्यु न हुई हो, तो मुझे थोड़ा सा सरसों का दाना दे दीजिए।' 'कौन कह सकता है कि यहाँ कितने लोग नहीं मरे हैं?' 'तो फिर मुझे इतने सरसों के दाने की कोई आवश्यकता नहीं है।' इस प्रकार वह दूसरे और तीसरे घर में गई, जब तक कि बुद्ध की शक्ति से उसका उन्माद दूर नहीं हो गया, उसका स्वाभाविक मन शांत नहीं हो गया, और उसने सोचा: 'पूरे नगर में यही व्यवस्था रहेगी। भगवान बुद्ध ने मेरी भलाई के लिए दया करके यह पूर्वाभास कर लिया था।' और इस विचार से रोमांचित होकर वह नगर छोड़कर चली गई और अपने बच्चे को श्मशान भूमि में लिटाते हुए बोली:
'यह न तो किसी गांव का कानून है, न ही किसी शहर का कानून।'

इस कबीले के लिए या केवल उस कबीले के लिए कोई कानून नहीं है;

हाँ, पूरी दुनिया के लिए, और स्वर्ग में रहने वाले देवताओं (देवदूतों) के लिए भी।

यही नियम है: सब कुछ क्षणभंगुर है!

ऐसा कहकर वह गुरु (बुद्ध) के पास गईं। उन्होंने कहा, 'गोतमी, क्या तुम्हारे पास थोड़ी सी सरसों है?' उन्होंने कहा, 'हे प्रभु, कारण कर्मों में है, सरसों में नहीं। कृपया मुझे उपदेश दीजिए।' तब गुरु (बुद्ध) ने इस प्रकार कहा:
जिसका मन बच्चों और धन-संपत्ति पर लगा रहता है...

वह केंद्रित है, अपने विचारों में उनसे जुड़ा हुआ है।

मृत्यु रात में आई भीषण बाढ़ की तरह आती है।

सोते हुए गांव को छीन लेना।

जब उन्होंने बात पूरी की, तो वह प्रथम मार्ग (धारा-प्रवेश/सोतापना, प्रथम दिव्य जागृति) की सिद्धि में दृढ़ हो गईं और दीक्षा के लिए निवेदन किया। उन्होंने सहमति दी, और उन्होंने तीन बार दाहिनी ओर प्रणाम करके भिक्षुणियों के पास जाकर दीक्षा ली। और कुछ ही समय बाद, चीजों के कारणों का अध्ययन करते हुए, उन्होंने अपनी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) को विकसित किया। तब गुरु (बुद्ध) ने एक महिमापूर्ण श्लोक कहा:
'वह व्यक्ति जो सौ वर्ष तक जीवित रहा,

वह कभी भी अमृतमय मार्ग (शाश्वतता/अमरता का मार्ग) नहीं देखता।

एक दिन से अधिक न जीना ही बेहतर है।

अतः उसने उसी दिन मार्ग को देखा।

जब उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया, तो उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। और तपस्वी जीवन शैली में अग्रणी होकर, वे तीन प्रकार के खुरदुरे वस्त्र धारण करने लगीं। तब गुरु (बुद्ध), जेतवन वन (मठ) में एक सभा में बैठे हुए, भिक्षुणियों को उनके गुणों के अनुसार क्रम देते हुए, उन्हें खुरदुरे वस्त्र धारण करने वालों में प्रथम घोषित किया। और उन्होंने, अपनी उपलब्धियों को याद करते हुए, गुरु के समक्ष, चुने हुए लोगों के साथ मित्रता की प्रशंसा में यह भजन गाया:
विश्वभर के नेक लोगों के साथ मित्रता

ऋषि ने प्रशंसा की है। मूर्ख भी वास्तव में बुद्धिमान बन जाता है।

यदि वह किसी कुलीन मित्र का स्वागत करे। (213)

पवित्र लोगों के पास जाओ! उनमें जो जाते हैं

ज्ञान (पन्न) बढ़ता है; और उस पवित्र प्रेम में

तुम अपने सभी दुखों से मुक्त हो जाओगे। (214)

दुःख को अच्छी तरह से पहचानो; ध्यान दो कि यह कैसे आता है।

और यह कैसे गुजरता है; अष्टांगिक मार्ग को ध्यान से देखें

इससे दुखों का अंत होता है, ये चार महान आर्य सत्य हैं। (215)

उसने कहा है, स्त्री का भाग्य कितना दयनीय है!

पुरुषों को वश में करने वाला और उनका मार्गदर्शन करने वाला:

शत्रुतापूर्ण पत्नियों के साथ घर साझा करना कष्टदायक होता है।

प्रसव पीड़ा में असहनीय कष्ट होता है।

कुछ लोग मृत्यु की तलाश में हैं, अन्यथा उन्हें दो बार कष्ट भोगना पड़ेगा, (216)

गले को भेदते हुए; नाजुक जहर शरीर में प्रवेश करता है।

माँ की हत्या करने वाले भ्रूण के मामले में भी दुख की बात है।

जन्म नहीं होता, और दोनों की मृत्यु एक समान ही होती है। (217)

'अपने बच्चे को जन्म देने के लिए घर लौटना [2]

मैंने जंगल में अपने पति को मरते हुए देखा।

मुसीबतें आने से पहले मैं अपने माता-पिता तक भी नहीं पहुँच सका। (218)

मैंने अपने दोनों बेटों को खो दिया, अपने पति को भी।

और जब मैं विपत्ति में अपने घर पहुँचा,

देखो! जहाँ सब एक छोटी सी चिता पर एक साथ जल रहे थे,

मेरी माँ, मेरे पिता और मेरा भाई जल रहे हैं!' (219)

हे अभागी, बर्बाद स्त्री! यह सारा बोझ!

आपने जिन दुःखों को सहा है, उन्हीं से ये आँसू बहाए हैं।

हजारों जिंदगियों के थका देने वाले चक्र के माध्यम से। (220)

मैंने भी देखा है कि श्मशान भूमि में,

मेरे बेटे का कोमल मांस खा लिया गया [3]

(सफाई करने वाले जानवरों द्वारा)

उसके रिश्तेदार अब मर चुके हैं, वह खुद समाज से बहिष्कृत है।

उसके पति की मृत्यु हो चुकी है।

अब वह अमरत्व को प्राप्त हो चुकी है (221)

अब मुझे समझ आ गया है

आर्यों का मार्ग, अष्टांगिक मार्ग पर

वह अवस्था अमृतमय (शाश्वतता/अमरता) की ओर जाती है।

मैंने निर्वाण का अनुभव किया है और उसे निहार लिया है।

पवित्र धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के दर्पण में। (222)

मैं भी अपने दर्द से उबर चुका हूँ।

मेरा बोझ हल्का हो गया है, मेरा काम पूरा हो गया है।

मेरा मन पूरी तरह से स्वतंत्रता (विमुक्ति/विमुक्ति) के लिए तैयार है।

मैंने, थेरी किसा-गोतामी ने, यह कहा है! (223)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] यहाँ वह अपने भजन में पताचारा (अपने गुरु) की कहानी को शामिल करती है, मानो 'नारी' की दुर्दशा को और अधिक पूर्ण रूप से व्यक्त करने के लिए, 'नारी के भाग्य' में निहित दुखद संभावनाओं के तमाशे और त्रासदी को, जिसका उसका अपना मामला मात्र एक चरण था। आलोचना इसे छंदों और टीका के बीच ऐतिहासिक सामंजस्य में एक और 'दोष' के रूप में देख सकती है - भौगोलिक दृष्टि से। फिर भी, यहाँ एक ऐसी विशेषता है जो विशुद्ध रूप से साहित्यिक रचना वाले किसी भी छंद में कभी नहीं हो सकती। और सौंदर्यपरक तीव्रता में ये छंद किसा-गोतमी के अपने दुख के अंतर्निहित गहरे दुख की इस आधारभूत लहर और अंत में मिश्रित विजय के माध्यम से अद्‌भुत रूप से लाभ प्राप्त करते हैं।
[3] कुत्ते, सियार, बाघ, पैंथर, बिल्लियाँ, आदि, खुले शवों के सफाईकर्मी के रूप में।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

गौतमी एक गरीब आदमी की बेटी थी। दुबली-पतली होने के कारण उसे किसा गौतमी या "दुबली-पतली गौतमी" कहा जाता था। सौभाग्य से उसका विवाह एक धनी व्यापारी के पुत्र से हुआ। परन्तु ससुराल वालों का व्यवहार एक कुलीन महिला के लिए उचित नहीं था। उन्होंने उसे कभी भी उसकी साधारण पृष्ठभूमि नहीं भूलने दी।

कुछ ही समय में किसा गौतमी गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। वह अपने बच्चे से बहुत प्यार करती थी और उस पर अपना सारा स्नेह और स्नेह लुटाती थी। बच्चा चलना सीख ही रहा था कि एक जानलेवा बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई। किसा गौतमी, जिसने पहले कभी मृत्यु का अनुभव नहीं किया था, अत्यंत दुखी हुई। जिन ससुराल वालों ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था, उन्होंने पुत्र के जन्म के बाद उसे स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार उसने अपना सारा स्नेह अपने पुत्र पर लुटाया और अपना जीवन उस बच्चे के इर्द-गिर्द ही केंद्रित कर लिया, जिसके कारण उसे स्वीकार किया गया था। उसे पुनर्जीवित करने के लिए औषधि खोजने के दृढ़ संकल्प के साथ, उसने अपने मृत बच्चे को अपनी गोद में उठाया और एक कुशल चिकित्सक की तलाश में घर-घर भटकने लगी।

गाँव वाले उस पर हंसने लगे और उसे अपशब्द कहने लगे। क्या वह देख नहीं पा रही थी कि उसका बच्चा मर चुका है? लेकिन दुःख से व्याकुल गौतमी डटी रही। एक ज्ञानी व्यक्ति ने उस दुखी स्त्री पर दया करते हुए उसे बुद्ध के पास भेजा। बुद्ध को प्रणाम करके किसा गौतमी ने उनसे अपने बच्चे को पुनर्जीवित करने की प्रार्थना की।

बुद्ध ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा कि किसा गौतमी पिछले जन्मों के परिश्रम से आध्यात्मिक रूप से उन्नत थीं। परन्तु असहनीय दुःख के कारण उनका मन धर्म के लिए तैयार नहीं था।

यह देखकर कि किसा गौतमी ने पहले कभी मृत्यु का अनुभव नहीं किया था, बुद्ध ने उनसे कहा कि वे किसी ऐसे घर से कुछ सरसों के बीज लाएँ जहाँ मृत्यु न हुई हो। किसा गौतमी एक ऐसे गाँव में रहती थीं जहाँ संयुक्त परिवार साथ रहते थे। वह अपने मृत बच्चे को लेकर घर-घर गईं, लेकिन उन्हें कोई ऐसा घर नहीं मिला जहाँ मृत्यु न हुई हो। कुछ ही समय में किसा गौतमी को अहसास हुआ कि मृत्यु सभी प्राणियों के लिए सामान्य है। अपने मृत बच्चे का अंतिम संस्कार करके वह सांत्वना के लिए बुद्ध के पास लौट आईं।

बुद्ध ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें सरसों के बीज मिल गए हैं। गौतमी ने बुद्ध को बताया कि गाँव के हर परिवार में किसी न किसी की मृत्यु हो गई है। उन्होंने कहा, "मृतकों की संख्या जीवितों से कहीं अधिक प्रतीत होती है।"

यह देखकर कि किसा गौतमी धम्म के लिए तैयार हैं, बुद्ध ने उन्हें समस्त वस्तुओं की अनित्यता का उपदेश दिया। चार पंक्तियों के प्रवचन के अंत में, आध्यात्मिक रूप से परिपक्व किसा गौतमी ने संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्न प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने भिक्षुणी बनने की अनुमति मांगी।

भिक्षुणी किसा गौतमी बुद्ध की शिक्षाओं का पूर्ण आदर करती थीं। एक दिन, जब वे धम्म हॉल में दीपक बुझाने ही वाली थीं, तो उनकी नज़र लौ पर पड़ी। नाचती हुई लौ पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्होंने मन ही मन सोचा, "जिस प्रकार इस लौ का है, उसी प्रकार प्राणियों का भी है। कुछ प्रज्वलित होते हैं, तो कुछ बुझ जाते हैं। केवल वे ही जो निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं, फिर कभी दिखाई नहीं देते।"

बुद्ध ने यह जानकर कि किसा गौतमी अपने लक्ष्य के निकट हैं, अपना एक प्रकाशमान स्वरूप प्रकट किया और उनके प्रतिबिंबों का उपयोग करते हुए उन्हें इस प्रकार उपदेश दिया: "जिस प्रकार इस लौ का है, उसी प्रकार प्राणियों का भी है। कुछ प्रज्वलित होते हैं, तो कुछ बुझ जाते हैं। केवल वे ही जो निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं, फिर कभी दिखाई नहीं देते। इसलिए, जो क्षण भर के लिए ही सही, निर्वाण को देख लेता है, उसका जीवन सौ वर्ष तक जीवित रहकर निर्वाण को न देखने से श्रेष्ठ है।" प्रवचन के अंत में किसा गौतमी ने निर्वाण के परम आनंद को प्राप्त कर लिया।

कृतज्ञता व्यक्त करते हुए किसा गौतमी ने बुद्ध द्वारा दिए गए अपार आनंद का वर्णन किया और दूसरों को भी श्रेष्ठ पुरुषों के साथ संगति करने के लिए प्रोत्साहित किया।

निम्न कुल की एक गरीब महिला होने के कारण अत्यधिक कष्ट सहने वाली किसा गौतमी ने अन्य स्त्रियों के दर्द को समझा। एक स्त्री का जीवन कठिन और पीड़ा से भरा था। स्त्रियों को अक्सर संपत्ति की तरह समझा जाता था और उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। कई पुरुषों की एक से अधिक पत्नियाँ होती थीं। एक स्त्री होने के नाते कष्ट सहने वाली किसा गौतमी स्त्रियों के कष्टों के प्रति सहानुभूति रखती थीं। उन्होंने अपने परिचित स्त्रियों द्वारा झेली गई कुछ कठिनाइयों का वर्णन किया और कष्टों से मुक्ति पाकर अपनी राहत को व्यक्त किया। बुद्ध के समय भारत में स्त्रियों की दुर्दशा को समझने पर ही उनके द्वारा स्थापित आमूलचूल परिवर्तन और किसा गौतमी जैसी स्त्रियों द्वारा उनके प्रति व्यक्त की गई कृतज्ञता को सही मायने में समझा जा सकता है, क्योंकि बुद्ध ने स्त्रियों को पुरुषों के समान आध्यात्मिक रूप से सक्षम माना था।

एक बार दुष्ट मारा ने उन्हें बहकाने का प्रयास किया, लेकिन गौतमी बलवान और अदम्य थीं।

बुद्ध ने धम्म का उपदेश इसलिए दिया क्योंकि सभी वस्तुएँ अनित्य हैं, और यही अनित्यता दुख का कारण है। बुद्ध अक्सर प्रियजन की मृत्यु से होने वाले दुख का उदाहरण देकर सभी सांसारिक घटनाओं की अनित्यता को समझाते थे। फिर उन्होंने किसा गौतमी जैसी आध्यात्मिक रूप से उन्नत साधिकाओं को निर्वाण की परम आनंद प्राप्ति में सहायता की। किसा गौतमी ने तपस्या का मार्ग अपनाया और श्मशान घाटों से मिले पुराने कपड़ों से बने मोटे वस्त्र धारण किए। बुद्ध ने कहा कि गौतमी मोटे वस्त्र धारण करने वाली भिक्षुणियों में सबसे श्रेष्ठ थीं, जो तेरह तपस्याओं में से एक है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा13.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||65|| ------>>>> अगला

13.1 अंबपाली, वैशाली की पूर्व वेश्या:
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेकर और कई जन्मों में युगों तक प्रभावी रहने वाले अच्छे कर्मों का संचय करके सिख बुद्ध (एक पूर्व बुद्ध) के समय में संघ में प्रवेश किया। एक दिन, जब वे अभी नौसिखिया ही थीं, भिक्षुणियों के साथ जुलूस में एक मंदिर में दर्शन कर रही थीं, तभी उनके आगे चल रहे एक अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) थेरी ने मंदिर के प्रांगण में जल्दबाजी में थूक दिया। उनके पीछे आकर, थेरी के इस कृत्य पर ध्यान न देते हुए, उन्होंने फटकार लगाते हुए कहा, 'कौन सी गणिका (वेश्या) यहाँ थूक रही है?'
एक भिक्षुणी होने के नाते, नैतिक उपदेशों (शील) का पालन करते हुए, उन्हें गर्भ से पुनर्जन्म से घृणा थी और उन्होंने स्वतः पुनर्जन्म पर अपना ध्यान केंद्रित किया। अपने पिछले जन्म में वह वैशाली में राजा के उद्यानों में, एक आम के वृक्ष की तलहटी में अनायास ही प्रकट हुईं। माली ने उन्हें पाया और नगर ले आया। वे आम के रक्षक की कन्या के नाम से प्रसिद्ध हुईं। उनकी सुंदरता, आकर्षण और मोहकता

ऐसी थी कि अनेक राजकुमार उन्हें पाने के लिए आपस में होड़ करते रहे। अंततः, अपने झगड़े को समाप्त करने के लिए और कर्म के नियम के कारण, उन्होंने "सभी की संपत्ति" होने का वचन दिया और उन्हें गणिका (नृत्य करने वाली और क्रीड़ा करने वाली) नियुक्त किया। बाद में, गुरु (बुद्ध) में आस्था के कारण, उन्होंने अपने ही उद्यानों में एक विहार (मठ) बनवाया और उसे गुरु और संघ को सौंप दिया। (बाद में उनका अपना पुत्र भिक्षु बन गया) और जब उन्होंने अपने पुत्र, वरिष्ठ भिक्षु विमला-कोंडन्ना को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देते हुए सुना, तो उन्होंने भी दीक्षा ली और अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) का अभ्यास किया, और अपने ऊपर वृद्धावस्था के प्रभाव को देखकर, सांसारिक अनित्यता का नियम उनके मन में आया, प्रेरित होकर, उन्होंने निम्नलिखित श्लोक कहे:
कभी मेरे घुंघराले बाल मधुमक्खी के पंखों की तरह चमकदार और काले रंग के गुच्छों में गुच्छों की तरह हुआ करते थे।

समय के साथ वे बोरी या छाल के कपड़े की तरह हो जाते हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (252)

मेरे बाल इत्र की पेटी की तरह सुगंधित हैं, मीठे फूलों से भरे हुए हैं।

बीते वर्षों की बर्बादी अब खरगोश के फर की गंध के समान लगती है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (253)

घनी झाड़ियों की तरह, अच्छी तरह से लगाए गए पौधों से सुसज्जित, और कंघी, पिन और पार्टिंग से सुंदर।

वर्षों के बीतने से सुंदर चोटियाँ बिखर गईं और सब कुछ टूट गया।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (254)

काले रंग की चोटियाँ रत्नों और सोने से सजे सिर के आभूषणों में जगमगा रही थीं।

वर्षों की बर्बादी के साथ सब कुछ टूट गया है, और बालों की लटें अब पूरी तरह से झड़ गई हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (255)

किसी मूर्तिकार की शिल्पकारी की तरह सजी हुई मेरी भौहें चमक रही थीं, जिन्हें बारीकी से पेंसिल से उकेरा गया था।

वर्षों के बीतने के साथ-साथ वे झुर्रियों से भर गए हैं, लटकते हुए से।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (256)

मेरी आंखें रत्नों की तरह चमकीली और दमकती हुई थीं, गहरे नीले रंग की और लंबी पलकों वाली।

वर्षों की बर्बादी से वे पूरी तरह से नष्ट हो गए, अब उनमें कोई चमक नहीं बची।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (257)

बच्चों की तरह ही नाक के नथुनों का घुमाव नाजुक और चिकना होता है।

अब वर्षों की बर्बादी से नाक झुलस गई है और सिकुड़ गई है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (258)

मेरे कानों की बनावट इतनी सुंदर है मानो किसी सुनार ने इसे नाजुक कारीगरी से बनाया हो।

वर्षों के बीतने के साथ-साथ वे झुर्रियों से भर गए हैं और लटके हुए हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (259)

मेरी मुस्कान से मेरे दांत ऐसे चमक उठे जैसे केले के पेड़ की कलियाँ खिल रही हों।

वर्षों के बीतने से वे टूट-फूट गए हैं और जौ की तरह पीले पड़ गए हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (260)

मेरी आवाज इतनी मधुर थी मानो कोयल जंगल में उड़ते हुए घंटी की आवाज हो।

अब वर्षों के बीतने के साथ, आवाज टूट गई है और रुक-रुक कर निकल रही है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (261)

मेरे गले के सामने सीप की तरह कोमल चमक दिखाई दी।

अब वर्षों के बीतने से इसकी सारी सुंदरता मुरझा गई है और विकृत हो गई है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (262)

कभी मेरी भुजाएँ दो बेलनाकार स्तंभों की तरह चमकती थीं।

वर्षों के बीतने के साथ वे मुरझाई हुई शाखाओं की तरह कमजोर होकर लटक जाते हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (263)

पहले मेरे कोमल हाथ खूबसूरत थे, जिन पर चमकती सोने की अंगूठियां और चूड़ियां थीं।

वर्षों की बर्बादी के साथ वे उलझी हुई जड़ों की तरह हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (264)

मेरे छोटे स्तनों के सामने सुडौल और सुंदर आकृति में एक उभार आया।

वर्षों की बर्बादी के साथ वे ऐसे मुरझाए हुए हैं जैसे पानी के बिना (पानी ढोने वाली) खालें।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (265)

पहले मेरा शरीर अच्छी तरह से पॉलिश किए गए सोने की ढाल की तरह चमकता था।

अब उम्र के साथ-साथ शरीर झुर्रियों के जाल से ढक गया है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (266)

सांप की कुंडली की तरह, मेरी जांघों की पूरी सुंदरता समाई हुई थी।

वर्षों के बीतने के साथ-साथ वे बांस के तनों के समान हो गए हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (267)

सोने की चूड़ियों से सजी मेरी टखने पहले देखने में बहुत खूबसूरत लगती थीं।

वर्षों की बर्बादी से वे तिल के गट्ठों की तरह सिकुड़ गए हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (268)

मेरे पैर पहले इतने कोमल और प्यारे थे मानो उन पर रुई के गुच्छे लगे हों।

समय के साथ-साथ ये त्वचा फट गई है और अब झुर्रियों से भर गई है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (269)

इस शरीर की यही हालत रही है। अब यह उम्र से थका हुआ, कमजोर और बदसूरत हो गया है।

कई बुराइयों का घर; एक पुराना मकान जहाँ से गारा टपक रहा है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (270)

और यह देखकर कि थेरी ने अपने स्वयं के व्यक्तित्व में अनित्यता के प्रत्यक्ष संकेतों से तीनों लोकों की सभी घटनाओं में अनित्यता को पहचाना, और इसे ध्यान में रखते हुए, दुख और आत्माहीनता के सत्य को जाना, उसने अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में स्पष्टता प्राप्त करते हुए मार्ग पर प्रगति की और अरहंतत्व (बुद्ध के समतुल्य ज्ञान) प्राप्त किया।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> परिचय

श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 में किए गए पुरातन अनुवाद से रूपांतरित।
थेरिगाथा <<<<------ ||परिचय|| ------>>>> अगला

बुद्ध का जीवन और भिक्षुणियों के संघ की स्थापना
भिक्षुणियों के विभिन्न श्लोकों की व्याख्या को समझना आसान और अधिक सुगम हो जाएगा, यदि पहले उन परिस्थितियों का वर्णन किया जाए जिनके अंतर्गत आरंभ में भिक्षुणियों ने संसार त्याग कर संघ में प्रवेश लिया। अतः इसका संक्षिप्त विवरण दिया जाएगा।

जब जगत के स्वामी ने अष्टम तत्वों — मानवता और शेष बुद्धत्व — को समाहित कर लिया, जब उन्होंने बुद्ध दीपांकर के चरणों में अपना महान संकल्प लिया,[1] और उनके विषय में चौबीसवें बुद्ध की भविष्यवाणी के अनुसार सभी तीस सिद्धियों में समान रूप से निपुणता प्राप्त कर ली, और ज्ञान, संसार के ज्ञान और बुद्धत्व की ओर अपनी प्रगति के चरम पर पहुँच गए, तब उन्होंने आनंद के लोकों (तुषिता स्वर्ग) में पुनर्जन्म लिया। और वहाँ, जब उन्होंने ब्रह्मांडीय मंडलों के दस हजार देवताओं (देवदूतों) के बीच अपना जीवनकाल

व्यतीत कर लिया, तो उन्होंने उन देवताओं (देवदूतों) के अनुरोध को स्वीकार कर लिया कि वे मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लें ताकि वे उनके शब्दों के अनुसार बुद्ध बन सकें।
अब वह समय आ रहा है जब आप,

हे महानुभाव, मनुष्य के रूप में जन्म लेना चाहिए।

देवताओं (देवदूतों) और मनुष्यों दोनों को पार ले जाना,

अब आप ही शाश्वतता का मार्ग प्रकट करते हैं!

अतः उन्होंने पंचमार्थ का ध्यान किया, और फिर शाक्य वंश के राजा सुद्धोदन (बुद्ध के पिता और राजा) के घर में, सचेत और आत्म-जागरूक होकर, एक माता के गर्भ में प्रवेश किया; फिर सचेत और आत्म-जागरूक होकर, वे वहाँ दस माह तक रहे; फिर सचेत और आत्म-जागरूक होकर, वे वहाँ से निकले और लुम्बिनी वन में जन्म लिया।

अनेक दाइयों द्वारा पाले-पोसे गए और एक विशाल दल-व्यस्त जीवन से घिरे, वे समय के साथ बड़े हुए और तीन महलों में से एक में अनेक नर्तकियों के बीच रहते हुए, देवदूत के समान सम्मान भोगते रहे। फिर, एक वृद्ध, एक बीमार और एक मृत व्यक्ति को देखकर उनके मन में व्यथा उत्पन्न हुई। अपने पूर्व जन्मों के ज्ञान से उन्होंने इंद्रिय सुखों से भरे जीवन के खतरे को समझा और इसके त्याग के लाभ का विचार किया। अपने घोड़े कंथक पर सवार होकर और चन्ना को अपना साथी बनाकर, आधी रात को आत्माओं द्वारा खोले गए द्वार से होकर वे महान त्याग के लिए निकल पड़े। उस रात के शेष समय में उन्होंने तीन राज्यों की यात्रा की और अनोमा नदी के तट पर पहुँचकर, ब्रह्मा (प्रधान देवदूत) घटिकारा द्वारा दिए गए अरहंत के वस्त्र धारण करके उन्होंने संसार का त्याग कर दिया (तपस्वी बन गए)। इसके बाद, मानो वे आठ गुणों से परिपूर्ण, सुंदर और आकर्षक व्यक्तित्व वाले एक वरिष्ठ व्यक्ति हों, वे उचित समय पर राजगृह (उस समय मगध की राजधानी, वर्तमान में बिहार, भारत) पहुँचे और वहाँ भिक्षा माँगते हुए उन्होंने पांडव पर्वत की गुफा में भोजन किया। वहाँ मगध के राजा ने उन्हें अपना राज्य प्रदान किया। लेकिन उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया और भगव के आश्रम में जाकर उनकी साधना सीखी; वहाँ से वे अलारा और उद्दक गए और उनकी साधनाएँ सीखीं। जब उन्हें यह सब अपर्याप्त लगा, तो वे उरुवेला चले गए और वहाँ छह वर्षों तक तपस्या की। फिर, यह जानकर कि इससे आर्य धम्म (शाश्वत सत्य) का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ, उन्होंने कहा, 'यह ज्ञान प्राप्ति का मार्ग नहीं है,' और ठोस भोजन ग्रहण करके कुछ ही दिनों में वे पुनः स्वस्थ हो गए। अतः, मई माह की पूर्णिमा के दिन, उन्होंने सुजाता द्वारा दिए गए उत्तम भोजन को ग्रहण किया और स्वर्ण थाली को नदी में बहाते हुए, दृढ़ निश्चय के साथ, 'आज ही मैं बुद्ध बनूँगा!', संध्या में बोधि वृक्ष के आसन पर आरोहण किया — नागों के राजा काल द्वारा उनकी स्तुति की गई — और वहाँ, पूर्व दिशा की ओर मुख किए एक स्थिर स्थान पर, वे पद्मासन में विवश होकर विराजमान हुए। वहाँ, चार दिशाओं में अपनी इच्छाशक्ति को स्थिर करते हुए, उन्होंने सूर्यास्त से पहले ही मारा (राक्षस) की शक्ति को पराजित कर दिया। रात्रि के प्रथम पहर में उन्होंने अपने पूर्व जन्मों को याद किया; मध्य पहर में उन्होंने दिव्य दृष्टि प्राप्त की; अंतिम पहर में उन्होंने कर्म-कर्म के नियम के गहन ज्ञान का अवलोकन किया। और, कारण-कार्य संबंध के चरणों को प्रत्यक्ष और विपरीत क्रम में समझते हुए, उन्होंने अंतर्दृष्टि विकसित की और उस पूर्ण ज्ञान को प्राप्त किया जो सभी बुद्धों को प्राप्त होता है। वहाँ उन्होंने सात दिन निर्वाण की प्राप्ति में व्यतीत किए, और उसी प्रकार सात दिन बोधि वृक्ष के आसन पर व्यतीत करते हुए राजयतन वृक्ष के नीचे मधुर भोजन किया। फिर, बकरियों के बरगद के नीचे बैठकर उन्होंने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के सार की गहराई पर चिंतन किया। उनका मन परिश्रम करने के लिए अनिच्छुक था, जब तक कि ब्रह्मा ने उनसे विनती नहीं की; परन्तु तब उन्होंने बुद्ध-दृष्टि से संसार को देखा, औरसभी प्राणियों में मौजूद अनेक प्रकार की क्षमताओं को देखकर, उन्होंने परम ब्रह्मा से वादा किया कि वे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देंगे। यह सोचते हुए कि 'अब मैं सबसे पहले धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश कहाँ दूँ?' उन्हें पता चला कि अलारा और उद्दक का देहांत हो चुका है; परन्तु फिर उन्होंने सोचा, 'जब मैंने तपस्या त्यागी थी, तब मेरी सेवा में रहे पाँचों ने मेरी बहुत सहायता की थी। क्या होगा यदि मैं पहले उन्हें उपदेश दूँ?' अतः जुलाई की पूर्णिमा को वे महान बोधि वृक्ष से बनारस की ओर चल पड़े। अठारह मील की यात्रा करने के बाद, वे आधे रास्ते में तपस्वी उपक से मिले और उनसे वार्तालाप किया; और फिर इसिपताना पहुँचे, जहाँ उन्होंने 'धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का चक्र घुमाना' नामक प्रवचन के माध्यम से पाँचों को आश्वस्त किया, जिसकी शुरुआत इस प्रकार है:

'हे भिक्षुओं, दो चरम सीमाएँ हैं जिनका अनुसरण संसार त्यागने वाले व्यक्ति को नहीं करना चाहिए'...

इस प्रकार उन्होंने अन्नकोंडन्ना से प्रारंभ करते हुए अठारह असंख्य ब्रह्माओं (प्रधान देवदूतों) को सत्य-अमृत का पान (समझ) कराया। फिर अगले पखवाड़े के पहले दिन उन्होंने वरिष्ठ भद्दाजी को भी सोतापना (प्रथम दिव्य ज्ञान) के मार्ग पर स्थापित किया; दूसरे दिन वरिष्ठ वप्पा को; तीसरे दिन वरिष्ठ महानामा को; चौथे दिन वरिष्ठ असाजी को; और पाँचवें दिन, आत्माहीनता के उपदेश द्वारा, उन्होंने उन सभी

को अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) में स्थापित किया। उस समय से उन्होंने अनेक लोगों को आर्य मार्ग (महान मार्ग) में शामिल किया, अर्थात् यासा के नेतृत्व में पचपन युवकों को, कपास-वन में तीस भारद्वाजियों को और गया-शीर्ष की चोटी पर एक हजार पूर्व तपस्वियों को। जब उन्होंने बिम्बिसार के नेतृत्व में ग्यारह कन्याओं को सोतापना (प्रथम दिव्य ज्ञान) के फल में स्थापित किया, और एक कन्या को तीन शरणों में स्थापित किया, तब उन्होंने वेलुवन (बांस के वन) का उपहार स्वीकार किया और वहीं निवास किया। अब, जब सारिपुत्त और मोग्गलाना, असाजी के माध्यम से प्रथम मार्ग (सोतापना) में शामिल हुए, संजय (उनके गुरु) से विदा लेकर अपने-अपने अनुयायियों के साथ बुद्ध से जुड़ गए और सर्वोच्च फल प्राप्त कर लिया, तब उन्होंने उन्हें, जिन्होंने शिष्यत्व की पूर्णता प्राप्त कर ली थी, अपने सभी शिष्यों का प्रधान बना दिया। फिर, एल्डर कलुदयी द्वारा कपिलवस्तु के पास जाकर, उन्होंने जुड़वां चमत्कार द्वारा अपने रिश्तेदारों के घमंडी हठ को वश में किया, और अपने पिता को वापसी की अवस्था (अनगामी[2]) में स्थापित किया, और महान प्रजापति (बुद्ध की रानी और पालक माता) को धारा में प्रवेश करने की सफलता (सोतापना, पहला दिव्य जागरण) में स्थापित किया, और राजकुमार नंदा और पुत्र राहुल को संसार का त्याग (सन्यासी बनने) के लिए प्रेरित किया, और वह राजगृह वापस चले गए।

फिर उस समय से यह वृत्तांत चला कि जब गुरु (बुद्ध) वैशाली के निकट स्थित गैबल हाउस के हॉल में ठहरे हुए थे, तब राजा सुद्धोधन (बुद्ध के पिता) ने श्वेत छत्र के नीचे अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया और फिर उनका देहांत हो गया। तब महान प्रजापति (बुद्ध की रानी और पालक माता) के मन में संसार त्यागने का विचार आया। तब उन पाँच सौ युवा सरदारों की पत्नियाँ उनके पास आईं, जिन्होंने रोहिणी नदी के तट पर 'कलह और फूट के विषय में प्रवचन' सुनकर संसार त्याग दिया था, और उन्होंने उनसे कहा: 'हम सब गुरु (बुद्ध) का अनुसरण करने के लिए संसार त्याग देंगे।' और उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि वह उन्हें गुरु (बुद्ध) के पास ले चलें। महान प्रजापति ने एक बार गुरु (बुद्ध) से उनके संघ में प्रवेश के लिए निवेदन किया था, लेकिन उनकी सहमति नहीं मिली थी (क्योंकि उस समय तक महिला संन्यासिनों की कोई परंपरा नहीं थी); फिर उन्होंने अपने नाई से अपने बाल मुंडवा लिए और पीले वस्त्र पहनकर वे सभी साकिया स्त्रियों को अपने साथ वेसाली ले गईं। वहाँ उन्होंने बड़े आनंद के माध्यम से वेसाली से विनती की और महिला शिष्यों के लिए निर्धारित आठ अतिरिक्त नियमों को स्वीकार करके दीक्षा लेने और संघ में प्रवेश करने की अनुमति प्राप्त की। अन्य सभी स्त्रियों को भी उसी समय दीक्षा दी गई।

इस प्रकार दीक्षा प्राप्त करने के बाद, महान प्रजापति (बुद्ध की पालक माता और मौसी, और बाद में भिक्षुणियों की प्रमुख) गुरु (बुद्ध) के समक्ष आईं और उन्हें प्रणाम करते हुए एक तरफ खड़ी हो गईं। तब गुरु ने उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया। उन्होंने गुरु के मार्गदर्शन में अभ्यास विधि का पालन करते हुए अर्हंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। अन्य पाँच सौ भिक्षुणियों ने नंदक के प्रवचन के अंत में अर्हंतत्व प्राप्त किया। अब जब भिक्षुणियों का संघ सुस्थापित हो गया और विभिन्न गांवों, कस्बों, ग्रामीण क्षेत्रों और राजमहलों में फैल गया, तो कुलों की स्त्रियाँ, बहुएँ और युवतियाँ बुद्ध के महान ज्ञान, धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के सत्य और संघ के उत्तम आचरणों के बारे में सुनकर इस प्रणाली से अत्यंत प्रसन्न हुईं। पुनर्जन्म के चक्र से भयभीत होकर उन्होंने पति, माता-पिता और सगे-संबंधियों से अनुमति लेकर बुद्ध के मार्ग को हृदय में उतार लिया और संसार का त्याग कर भिक्षुणियाँ बन गईं। इस प्रकार संसार का त्याग करके और सदाचारी जीवन व्यतीत करते हुए उन्होंने गुरु (बुद्ध) और वरिष्ठों से शिक्षा प्राप्त की और परिश्रम एवं प्रयास से शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया। उनके द्वारा समय-समय पर उत्साहपूर्वक तथा अन्य प्रकार से गाए गए भजनों को बाद में संशोधकों ने संकलन में शामिल किया और ग्यारह अध्यायों में संकलित किया। इन्हें वरिष्ठ भिक्षुणियों के श्लोक (थेरी-गाथा) कहा जाता है, और इन्हें एक-एक श्लोक, दो-दो श्लोक आदि के अध्यायों में विभाजित किया गया है, जैसा कि नीचे दिया गया है:

[1] उत्तरकालीन बौद्ध धर्म के चौबीस बुद्धों में से एक। प्रारंभिक बौद्ध धर्म ने केवल सात को मान्यता दी।

[2] अनागामी - शाब्दिक अर्थ: गैर-वापसीकर्ता, निर्वाण से पूर्व की अवस्था, वह व्यक्ति जो ब्रह्मलोक (प्रधान देवदूत लोक) में पुनर्जन्म लेगा और फिर वहाँ से निर्वाण प्राप्त करेगा।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा1.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका की तुलना में
पिछला <<<<------ ||1|| ------>>>> अगला

1.1 वेसाली के एक कुलीन परिवार की एक थेरी, जिसे थेरिका के नाम से जाना जाता है।
थेरिका, चैन से सो जाओ, आराम करो।

अपने द्वारा स्वयं बनाए गए वस्त्र में लिपटे हुए, आराम से रहें।

भीतर जो भावनाएं उग्र रूप धारण कर लेती थीं, वे अब शांत हो गई हैं।

ओवन में सुखाई गई सब्जियों की तरह मुरझा गई। (1)

उसका पुनर्जन्म कैसे हुआ?
बहुत समय पहले, एक कुल की एक पुत्री बुद्ध कोनागमना की शिक्षाओं की परम अनुयायी बन गई, [1] और उसने उनका आतिथ्य सत्कार किया। उसने वृक्षों की शाखाओं से बना एक घर बनवाया, जिसकी छत पर कपड़ा लगा था और फर्श को चिकना किया गया था, और उसने फूलों और इत्रों से उनका सम्मान किया। अपने पूरे जीवन में पुण्य कर्म करते हुए, उसका पुनर्जन्म देवताओं (देवदूतों) के बीच हुआ, और फिर मनुष्यों के बीच तब हुआ जब कश्यप बुद्ध थे, जिनके अधीन उसने संसार का त्याग किया। इस बुद्ध काल तक स्वर्ग में पुनर्जन्म लेने के बाद, अंत में उसका जन्म वैशाली में एक महान कुलीन परिवार में हुआ। उसके मजबूत शरीर के कारण लोग उसे 'मजबूत स्त्री' कहते थे। वह एक युवा कुलीन की समर्पित पत्नी बनी। जब गुरु (बुद्ध) वैशाली आए, तो वह उनकी शिक्षाओं से प्रभावित हुई और एक गृहस्थ शिष्या बन गई। बाद में, जब उन्होंने महान प्रजापति (बुद्ध की पालक माता और चाची, साथ ही भिक्षुणी संघ की प्रमुख) को उपदेश देते हुए सुना, तो उनके मन में संसार त्यागकर भिक्षुणी बनने की इच्छा जागी और उन्होंने यह बात अपने पति को बताई। उनके पति सहमत नहीं हुए; इसलिए वे अपने कर्तव्यों का पालन करती रहीं, उपदेश की मधुरता को याद करती रहीं और अंतर्मन में लीन रहीं। फिर एक दिन रसोई में, जब करी पक रही थी, अचानक आग की एक प्रचंड लपट उठी और सारा खाना चटकते हुए जल गया। उन्होंने इसे देखकर समस्त वस्तुओं की पूर्ण अनित्यता पर गहन ध्यान का आधार बनाया। इससे उनका अंतर्मन ध्यान (विपश्यना[2]) बढ़ा और वे अनागामी[3] की अवस्था में स्थापित हो गईं। तब से उन्होंने गहने और आभूषण पहनना छोड़ दिया। जब उनके पति ने उनसे इसका कारण पूछा, तो उन्होंने बताया कि वे गृहस्थ जीवन जीने में कितनी असमर्थ महसूस करती हैं। अतः वह उसे, जिस प्रकार विशाखा धम्मदिन्ना को लाए थे, अपने अनेक अनुयायियों के साथ महान गौतमी प्रजापति के पास ले गए और कहा: 'आदरणीय थेरी उसे दीक्षा दें।' प्रजापति ने ऐसा ही किया और उसे गुरु (बुद्ध) के दर्शन कराए; और गुरु ने, अपनी प्रथा के अनुसार, यह स्पष्ट करते हुए कि उसने क्या प्राप्त किया है, ऊपर दिए गए श्लोक का उच्चारण किया।
अब, जब उसने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, तो थेरी ने अपने परमानंद में उस श्लोक को दोहराया, इसी कारण यह श्लोक उसका श्लोक बन गया।

[1] कोनागमना और कस्सपा क्रमशः गौतम बुद्ध से पहले बुद्ध बने।
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान विधि को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, मन, भावनाएँ और संवेदनाएँ) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[3] अनागामी - शाब्दिक अर्थ: वापस न लौटने वाला, निर्वाण से पूर्व की अवस्था, वह व्यक्ति जो ब्रह्मलोक (प्रधान देवदूतों का लोक) में पुनर्जन्म लेगा और फिर वहाँ से निर्वाण प्राप्त करेगा।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा1.2
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||2|| ------>>>> अगला

1.2 मुत्ता, सावत्थी के एक ब्राह्मण (पुजारी) की पुत्री
मुक्त रहो, मुत्ता, चंद्रमा की तरह मुक्त रहो

राहु (ग्रहण) के जबड़ों से निकलकर, आकाश में स्वतंत्र रूप से विचरण करता है।

अपनी चेतना को बाधित करने वाले ऋणों को मिटा दें, और इस प्रकार,

विमुक्ति की अवस्था में मन रखकर अपना व्रत तोड़ो। (2)

यह मुत्ता[1] नामक एक शिष्या का श्लोक है। पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेने वाली वह भी अनेक जन्मों में युगों-युगों तक पुण्य कर्म संचित करती रही। अंत में, इस बुद्ध काल में सावत्थी में एक प्रख्यात ब्राह्मण की संतान के रूप में उनका पुनर्जन्म हुआ और उनका नाम

मुत्ता रखा गया। बीस वर्ष की आयु में, जब उनका भाग्य पूर्णतः परिपक्व हो गया, तो उन्होंने महान प्रजापति गौतमी (बुद्ध की पालक माता और चाची तथा भिक्षुणियों के संघ की प्रमुख) के अधीन संसार का त्याग कर दिया, दीक्षा ली और अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[2]) का अभ्यास किया। एक दिन भिक्षा मांगने के बाद लौटकर, उन्होंने अपने वरिष्ठों के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया और फिर विश्राम करने के लिए एकांत में बैठकर मन की घटनाओं पर स्वयं अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[2]) करने लगीं। तब गुरु (बुद्ध), विहार (मठ) के 'सुगंधित कक्ष'[3] में बैठे हुए, अपने प्रकाशमान दिव्य रूप को प्रकट किया और मानो उनके सामने बैठे हुए, उपरोक्त श्लोक का उच्चारण किया। और वह, उस शिक्षा में दृढ़ होकर, थोड़े ही समय में अर्हंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, और इस प्रकार उस श्लोक के शब्दों में आनंदित हुई। अपनी शिक्षा पूरी करने और पूर्ण पद पर पदोन्नत होने के बाद, उन्होंने परलोक जाते समय फिर से उस श्लोक का उच्चारण किया।

[1] मुत्ता = मुक्ता या मुक्त (स्त्री)
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, मन, भावनाएँ और संवेदनाएँ) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[3] गंध-कुटी, बुद्ध के निजी कमरे के लिए पारंपरिक शब्द, विशेष रूप से सावत्थी के जेतवन विहार (मठ) में स्थित कमरा। इस कमरे को शिष्यों द्वारा प्रतिदिन सुगंधित फूलों से सजाया जाता था।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा1.3
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||3|| ------>>>> अगला

1.3 पुन्ना, श्रावस्ती के एक करोड़पति (सेठी) की पुत्री:
निम्नलिखित श्लोक पुन्ना नामक एक छात्रा का है।[1] पूर्व बुद्धों के अधीन अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित करने के कारण, जब संसार में कोई उद्धारक बुद्ध नहीं था, तब वह चंदाभागा नदी के किनारे एक परी के रूप में जन्मी। एक दिन उसने एक मौन बुद्ध (पचेकबुद्ध[2]) की सरकंडों की माला से पूजा की। उस पुण्य के फलस्वरूप स्वर्ग प्राप्त करने पर, वह इस बुद्ध-काल में श्रावस्ती के एक प्रमुख कुलीन परिवार की संतान के रूप में पुनर्जन्म लेकर पुन्ना नाम से जानी गई। बीस वर्षों तक इस प्रकार निवास करने के बाद, जब उसका भाग्य पूर्ण हो गया, तब उसने महान प्रजापति (बुद्ध की माता की बहन और सहपत्नी तथा भिक्षुणियों के संघ की प्रमुख) को उपदेश देते हुए सुना और संसार का त्याग कर दिया। एक छात्रा बनकर, उसने अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[3]) का अभ्यास करना शुरू किया। और सुगंधित कक्ष से गुरु (बुद्ध) ने अपना तेजस्वी दिव्य रूप प्रकट किया और यह श्लोक कहा:
हे पुन्ना, धम्म (पवित्र जीवन) से परिपूर्ण हो जाओ।

ठीक उसी प्रकार जैसे पंद्रहवें दिन पूर्णिमा का चंद्रमा होता है।

पन्ना (दिव्य समझ) के पूर्ण ज्ञान को परिपूर्ण करें।

और अज्ञानता के समस्त अंधकार को दूर भगाओ। (3)

यह सुनकर, उनकी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना) फलीभूत हुई और उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। यह श्लोक उनके आनंद की अभिव्यक्ति और उनके अन्न (प्रबुद्ध अवस्था) की पुष्टि है।[4]

[1] पुन्ना = 'पूर्ण', 'संपूर्ण' (पूर्णा)
[2] पच्चेक-बुद्ध का एक स्वतंत्र अनुवाद - वह जो केवल स्वयं के लिए प्रबुद्ध है, न कि विश्व-उद्धारकर्ता।
[3] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, मन, भावनाएँ और संवेदनाएँ) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[4] उच्चारण अन्या = शाब्दिक रूप से, उसका ज्ञान प्राप्त करना। अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञानोदय) का एक व्यक्तिपरक पर्यायवाची।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा1.4
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<------ ||4|| ------>>>> अगला

1.4 तिस्सा, शाक्य वंश की पुत्री, कपिलवस्तु:

निम्नलिखित श्लोक तिस्सा नामक एक शिष्या का है। पूर्व बुद्धों के अधीन पुण्य संचय करते हुए, तिस्सा का इस बुद्ध-काल में कपिलवस्तु में शाक्य वंश में पुनर्जन्म हुआ। बोधिसत्व के दरबार की महिला बनकर, उन्होंने महान प्रजापति गौतमी (बुद्ध की दिवंगत माता की बहन और सहपत्नी तथा भिक्षुणी संघ की प्रमुख) के साथ संसार का त्याग कर स्वयं को विपश्यना ध्यान में लगा दिया। [1] तब गुरु (बुद्ध), विहार (मठ) के अपने 'सुगंधित कक्ष' में बैठे हुए, अपने तेजस्वी दिव्य रूप को प्रकट किया, और मानो उनके सामने बैठे हुए, उपरोक्त श्लोक का उच्चारण किया:

हे तिस्सा! अपने आप को तीन प्रशिक्षणों में प्रशिक्षित करो[2].

अब आपके सामने मौजूद इस महान अवसर का लाभ उठाएं।

इसे अनदेखा मत करो! बाकी सभी बंधनों को तोड़ दो।

सांसारिक इच्छाओं से मुक्त। (4)

और जब उसने श्लोक सुना, तो उसकी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) बढ़ गई, और उसने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया। उस समय से वह पंक्तियों को दोहराने की आदी हो गई थी।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान विधि को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांत्विकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, मन, भावनाएँ और संवेदनाएँ) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।

[2] इसके तीन प्रशिक्षण हैं: i. शील (नैतिक उपदेश) ii. समाधि (ध्यान और समाधि अवस्था प्राप्त करना) iii. पन्ना (ध्यान की समाधि अवस्था से प्राप्त प्रत्यक्ष दिव्य बोध)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा1.5

श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,

www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<------ ||5|| ------>>>> अगला

1.5 एक और थेरी टिस्सा

तिस्सा! स्वयं को धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) से जोड़ो।

उस पल को आते हुए देखो! उस पल को यूं ही बीतने मत दो!

बहुतों के लिए, वे लोग जो बीते हुए क्षण के दुख में शोक मनाते हैं। (5)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.6

श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,

www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<------ ||6|| ------>>>> अगला

1.6 धीरा

हे धीरा, आओ, ऊपर पहुँचो और लक्ष्य को स्पर्श करो।

जहां सब कुछ समाप्त हो जाता है, जहां इंद्रियां शांत हो जाती हैं,

जहां आनंद का वास है; निर्वाण प्राप्त करो, निर्वाण प्राप्त करो

ध्यान की वह निश्चित दिव्य अवस्था (योगक्खेमा)

जिसकी कोई तुलना नहीं है। (6)
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा1.7
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका की तुलना में
पिछला <<<<------ ॥7॥ ------>>>> अगला

1.7 वीरा

वीर, वीर भिक्षुणी! जो साहसी है!

अपनी इंद्रियों को श्रेष्ठतम संस्कृति में प्रशिक्षित करें।

इस उद्देश्य के लिए अपने अंतिम अवतारित शरीर को धारण करो।

क्योंकि तुमने मारा (शैतान) और उसकी सेना पर विजय प्राप्त कर ली है। (7)
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.8
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ॥8॥ ------>>>> अगला

1.8 मिट्टा

मित्ता, आपने आस्था के साथ यह आदेश दिया है! सदा करुणामय रहो।

लाभकारी धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का अनुभव करें।

ध्यान की निश्चित दिव्य अवस्था (योगक्खेमा) में सदा बने रहो (8)
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.9
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ॥9॥ ------>>>> अगला

1.9 भद्रा

आस्था के साथ पुरोहित बने,

भद्रा, संतत्व की महानता को प्राप्त करो!

लाभकारी धम्म (शाश्वत सत्य) का विकास और अहसास करें।

और अतुलनीय योगाक्खेमा (ईश्वर से मिलन) प्राप्त करें। (9)
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.10
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ॥10॥ ------>>>> अगला

1.10 उपसमा

उपसमा! आप शांत और स्थिर रहें

वह भयंकर बाढ़ जिसमें मृत्यु का ही राज है।

इस उद्देश्य के लिए अपने अंतिम शरीर को धारण करो।

क्योंकि तुमने मारा (शैतान) और उसकी सेना को परास्त कर दिया है। (10)
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा1.11
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||11|| ------>>>> अगला

1.11 मुत्ता, कोसल के ब्राह्मणों की पुत्री और पत्नी:
मुत्ता ने पूर्व बुद्धों के अधीन अच्छे कर्मों का निर्वाह करते हुए, इस बुद्ध काल में कोसल देश में ओघटक नामक एक गरीब ब्राह्मण की पुत्री के रूप में जन्म लिया। जब वह वयस्क हुई, तो उसका विवाह एक कुबड़ा ब्राह्मण से हुआ; परन्तु उसने उससे कहा कि वह गृहस्थी का जीवन नहीं जी सकती, और उसे संसार त्यागने के लिए राजी कर लिया। उसने दीक्षा ली और अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) का अभ्यास किया, फिर भी उसके विचार बाहरी रुचि की वस्तुओं पर केंद्रित रहे। अतः उसने आत्म-संयम का अभ्यास किया, और अपने श्लोक को दोहराते हुए, अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) के लिए प्रयास किया जब तक कि उसने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त नहीं कर लिया; तब प्रसन्न होकर उसने दोहराया:
ओह, सचमुच आज़ाद! ओह, शानदार आज़ाद!

क्या मैं तीन कुटिल चीजों से मुक्त हूँ:—

मूसल से और मेरे कुबड़ा पति से!

और मैं पुनर्जन्म और मृत्यु से मुक्त हूँ, हाँ

जो भी चीज़ मुझे पीछे खींच रही थी, वह सब दूर फेंक दी गई है। (11)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा1.12
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||12|| ------>>>> अगला

1.12 धम्मदिन्ना, एक कुलवासी (कुलगेहे) की बेटी, एक करोड़पति (सेट्ठी) (विशाखा) की पत्नी, राजगृह के दोनों, बड़ी ननों में अग्रणी, जो उपदेशक थीं
अब, जब पद्ममुत्तरा बुद्ध थे, तब वह हंसावती में दासता का जीवन व्यतीत कर रही थीं; और जब उन्होंने अपने प्रमुख शिष्यों में से एक को ध्यान की समाधि अवस्था से उठते हुए पूजा-अर्चना और सम्मान दिया, तो उनका स्वर्ग में पुनर्जन्म हुआ और इसी प्रकार, फुस्सा बुद्ध होने तक वे देवताओं (देवदूतों) और मनुष्यों के बीच रहीं। फिर उन्होंने अपने पति द्वारा गुरु के सौतेले भाइयों को दिए गए दान को दुगुना करके पुण्य कर्म किया, जब वे एक सेवक के घर में रह रहे थे। और जब कश्यप बुद्ध हुए, तब उनका जन्म काशी के राजा किकी के घर में उनकी सात बहनों (पुत्रियों) में से एक के रूप में हुआ और उन्होंने 20,000 वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पवित्र जीवन व्यतीत किया। . . . अंत

में, इस बुद्ध युग में, उनका पुनर्जन्म राजगृह में एक कुलवासी परिवार में हुआ और वे एक प्रमुख नागरिक विशाखा की पत्नी बनीं। एक दिन उनके पति गुरु (बुद्ध) का प्रवचन सुनने गए और अनागामी (अवतरणकर्ता, जो देवदूतों के लोक में जाने के लिए नियत थे) बन गए। जब वे घर लौटे, तो सीढ़ियों से ऊपर जाते समय धम्मदिन्ना उनसे मिलीं; लेकिन उन्होंने न तो उनका हाथ थामा और न ही भोजन के समय उनसे बात की। तब उन्होंने पूछा: 'प्रिय महोदय, आपने मेरा हाथ क्यों नहीं थामा? आप मुझसे बात क्यों नहीं कर रहे हैं? क्या मैंने कुछ अनुचित किया है?' 'इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है, धम्मदिन्ना; लेकिन अब से मैं किसी स्त्री को छूने या भोजन में आनंद लेने के योग्य नहीं हूँ, क्योंकि यही सिद्धांत अब मुझ पर लागू होता है। तुम अपनी इच्छा अनुसार करो, या तो यहीं निवास करना जारी रखो, या अपनी आवश्यकता के अनुसार धन लेकर अपने परिवार के पास लौट जाओ।' 'नहीं, प्रिय महोदय, मैं ऐसा कोई वापसी नहीं करूँगी। मुझे संसार छोड़ने (त्याग करने और भिक्षुणी बनने) की अनुमति दें।' 'यह अच्छा है, धम्मदिन्ना,' विशाखा ने उत्तर दिया और उन्हें एक स्वर्ण पालकी में भिक्षुणियों के पास भेज दिया। संघ में प्रवेश पाने के कुछ ही समय बाद, उन्होंने अपने गुरुओं से एकांतवास में जाने की अनुमति मांगते हुए कहा: 'माताओं, भीड़-भाड़ वाली जगह में मेरा मन प्रसन्न नहीं होता; मैं किसी ग्रामीण आश्रम में जाना चाहती हूँ।' भिक्षुणियाँ उन्हें वहाँ ले गईं, और वहाँ रहते हुए, क्योंकि उन्होंने अपने पिछले जन्मों में विचार, वचन और कर्म की जटिलताओं को वश में कर लिया था, उन्होंने शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य) के रूप और अर्थ पर पूर्ण महारत हासिल कर ली। इस पर उन्होंने सोचा: 'अब मैं शिखर पर पहुँच गई हूँ। अब मुझे यहाँ क्या करना है? मैं राजगृह जाकर गुरु (बुद्ध) की आराधना भी करूँगी, और मेरे कई रिश्तेदार मेरे माध्यम से पुण्य अर्जित करेंगे।' अतः वे अपनी भिक्षुणियों के साथ लौट आईं। तब विशाखा (पति), उसके लौटने की खबर सुनकर, यह जानने के लिए उत्सुक हुए कि वह क्यों आई थी, उन्होंने उससे खन्धों और इसी तरह के विषयों पर प्रश्न पूछे। धम्मदिन्ना ने हर प्रश्न का उत्तर ऐसे दिया जैसे कोई कमल की डंठल को छुरी से काट रहा हो, और अंत में उन्हें गुरु के पास भेज दिया। गुरु (बुद्ध) ने उनकी महान बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की, जैसा कि लघु वेदल्ला (विविध) सूत्र में वर्णित है, और उन्हें उपदेश देने वाले थेरियों में सर्वोच्च स्थान दिया।
लेकिन जब वह ग्रामीण इलाके में रह रही थी, और अभी भी सबसे निचले मार्ग पर थी, तब उसने सर्वोच्च स्तर तक पहुँचने के लिए अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[2]) का अभ्यास किया, तभी उसने अपनी कविता कही:
जिनमें अंतिम विश्राम प्राप्त करने की इच्छा हो

यह उसके संपूर्ण मन में व्याप्त होकर जन्म लेता है,

जिसका मन अब इंद्रिय-इच्छाओं के आकर्षण से मुक्त है

धारा के विपरीत दिशा में जाने वाली, उसे यही कहा जाएगा। (12)

[1] अनागामी - शाब्दिक अर्थ: जो वापस नहीं लौटता, निर्वाण से पूर्व की अवस्था, वह व्यक्ति जो ब्रह्मलोक (प्रधान देवदूतों का लोक) में पुनर्जन्म लेगा और फिर वहाँ से निर्वाण प्राप्त करेगा।
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.13
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||13|| ------>>>> अगला

1.13 विशाखा:
उनकी कहानी थेरी धीरा की कहानी से मिलती-जुलती है। अरहंत पद (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त करने के बाद उन्होंने ज्ञान के आनंद (विमुक्ति, विमुक्ति) पर चिंतन किया और इस प्रकार अन्न (प्रबुद्ध अवस्था) की घोषणा की।
बुद्ध की साधना पूरी हुई! ध्यान रहे कि तुम उनकी इच्छा का पालन करो।

और आपने यह कर दिखाया, अब कभी नहीं।

तुम्हें अपने कर्मों के लिए पश्चाताप करना होगा। इसलिए, जल्दी से धो लो।

अपने पैर फैलाकर एकांत में बैठ जाओ; अकेले (ध्यान करो) (13)

इसलिए उन्होंने दूसरों से भी उनका अनुसरण करने का आग्रह किया।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

मगध राज्य के भद्दिया नगर में मेंडका नाम का एक अत्यंत धनी व्यापारी रहता था। पिछले जन्म में, अकाल के समय, उसने और उसके परिवार ने अपना अंतिम भंडार पच्चेक बुद्ध को दे दिया था। इस भावपूर्ण दान के फलस्वरूप, मेंडका और उसके परिवार (जिन्हें कर्म ने पुनः एक साथ लाया था) के घर में इतना भंडार था कि वे कभी समाप्त नहीं हो सकते थे, इसके बावजूद कि वे अत्यंत उदारता का अभ्यास करते रहे। उसके पुत्र धनंजय और बहू सुमनदेवी की एक अत्यंत सुंदर पुत्री थी जिसका नाम विशाखा था। वे अत्यंत धन और सुख-सुविधाओं में रहते थे और अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध थे, जिसका वे सभी के प्रति अभ्यास करते थे।

एक दिन, जब विशाखा सात वर्ष की थी, बुद्ध भिक्षुओं के एक बड़े दल के साथ भद्दिया आए। जब मेंडका ने बुद्ध के आगमन के बारे में सुना, तो उसने अपनी युवा पोती को बुलाया और उसे अपनी दासियों को इकट्ठा करके बुद्ध का स्वागत करने के लिए बाहर जाने का निर्देश दिया। विशाखा ने आज्ञा का पालन किया। उन्होंने बुद्ध को प्रणाम किया और उनके उपदेश सुनने के लिए तैयार हुईं। बुद्ध ने विशाखा को धम्म का उपदेश दिया और उन्हें तथा उनकी 500 दासियों को संतत्व के प्रथम चरण, सोतापन्न में स्थापित किया। मेंडका, उनकी पत्नी, पुत्र, बहू और घर के अन्य कई सेवक जो उपस्थित थे, उन्होंने भी संतत्व का प्रथम चरण प्राप्त किया।

मगध राज्य पर धर्मात्मा राजा बिम्बिसार का शासन था। राजा पसेनादि कोसल ने यह महसूस करते हुए कि ऐसा उदार और सम्मानित परिवार उनके राज्य के लिए एक संपत्ति होगा, अपने मित्र राजा बिम्बिसार से पूछा कि क्या धनंजय और उनका परिवार कोसल में आकर बस सकता है, जहाँ वे उनकी प्रजा के लिए एक उदाहरण बन सकते हैं। राजा बिम्बिसार ने अपने मित्र के अनुरोध को स्वीकार कर लिया। धनंजय और उनका परिवार कोसल में बस गया, जहाँ उन्होंने धम्म का अभ्यास करते हुए एक अनुकरणीय जीवन व्यतीत किया। विशाखा का पालन-पोषण विलासितापूर्ण वातावरण में हुआ, जहाँ उन्हें उदारता और धर्म का अभ्यास करने का भरपूर अवसर मिला, जिसे वे अक्सर सुनती थीं।

उस समय, सावत्थी में मिगारा नामक एक धनी व्यापारी रहता था, जिसका एक पुत्र था जिसका नाम पुन्नवद्धन था। अपने माता-पिता के बार-बार आग्रह के बावजूद, पुन्नवद्धन ने विवाह करने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि उसकी दुल्हन अत्यंत सुंदर होनी चाहिए और उसमें पाँचों सुशोभित कन्या गुण होने चाहिए: बालों, दाँतों, त्वचा, यौवन और सुडौल शरीर। उसके बाल घने और चमकदार होने चाहिए, जो उसके टखनों तक पहुँचें। उसके दाँत सफेद और मोतियों की पंक्ति के समान होने चाहिए। उसकी त्वचा सुनहरे रंग की, कोमल और बेदाग होनी चाहिए। वह लगभग सोलह वर्ष की आयु की होनी चाहिए। उसका सुडौल शरीर सुंदर और स्त्रीत्वपूर्ण होना चाहिए, न अधिक मोटा और न अधिक पतला। हताश होकर, मिगारा ने ब्राह्मणों का एक दल राज्य भर में ऐसी कन्या की खोज में भेजा जिसमें उसके पुत्र की सभी अपेक्षाएँ पूरी हों।

उस समय, अत्यंत सुंदर विशाखा अपनी दासियों के साथ नदी में स्नान करने जा रही थीं, तभी अचानक आए तूफान ने उन्हें घेर लिया। दासियाँ आश्रय लेने के लिए भागीं, जबकि विशाखा शांत और शालीनता से आश्रय की ओर चली गईं। मिगारा के ब्राह्मणों ने सुंदर विशाखा को देखकर उनसे पूछा कि वह भीगने से बचने के लिए क्यों नहीं भागीं। विशाखा ने मिगारा के पुरुषों को बताया कि इतने सुंदर वस्त्रों में सजी एक कन्या का भागना उचित नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे राजसी वस्त्रों में सजे राजा, जुलूस के लिए सजे हाथी या वस्त्रों में सजे शांत भिक्षु का भागना उचित नहीं होता। उनके उत्तर और उनकी असाधारण सुंदरता से प्रसन्न होकर वे वापस गए और मिगारा को सूचित किया कि पुन्नवद्धन के लिए एक उपयुक्त वर मिल गया है।

दोनों परिवार इस व्यवस्था से प्रसन्न थे। और इस प्रकार, भव्य समारोह के साथ, विशाखा का विवाह उनके पिता द्वारा पुन्नवद्धन से कर दिया गया। विशाखा के पिता, जो उससे बेहद प्यार करते थे, ने शादी के उपहार के रूप में उसे कई उपहार और एक बेहद खूबसूरत रत्नजड़ित मुकुट दिया, जो उसके लंबे बालों से होते हुए उसके पैरों तक पहुँचता था। उन्होंने उसे विवाहित महिला के उचित आचरण के बारे में भी सलाह दी। उन्होंने अपनी बेटी को निम्नलिखित सलाह दी:

1. जब तक तुम अपने ससुराल वालों के साथ रहती हो, अपने पति और ससुराल वालों की कमियों के बारे में दूसरों को मत बताओ।

2. यदि तुम्हारे पड़ोसी तुम्हारे पति या ससुराल वालों के बारे में बुरा-भला कहें, तो उसे बढ़ावा मत दो और न ही उन्हें बताओ।

3. पैसा और सामान उन्हीं को उधार दो जो उसे लौटा दें।

4. किसी को कुछ भी उधार मत दो जो उसे लौटा न दे।

5. जब कोई रिश्तेदार या दोस्त जरूरतमंद हो, तो बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा किए उसकी मदद करो।

6. जब तुम अपने पति या ससुराल वालों को आते हुए देखो, तो सम्मानपूर्वक खड़ी हो जाओ।

7. अपने पति या ससुराल वालों से पहले खाना मत खाओ।

8. अपने पति या ससुराल वालों से पहले बिस्तर पर मत जाओ।

9. तुम्हें अपने पति और ससुराल वालों को लौ के समान समझना चाहिए; सावधानी और आदर के साथ।

10. तुम्हें अपने पति और ससुराल वालों को देवता के समान सम्मान देना चाहिए।

हालाँकि धनंजय द्वारा अपनी पुत्री को दी गई यह सलाह आज की अधिकांश महिलाओं को स्वीकार्य नहीं होगी, लेकिन बुद्ध के समय में महिलाओं से यही अपेक्षा की जाती थी। विशाखा, जिन्होंने इस सलाह और निर्देश का पालन किया, एक आदर्श पत्नी मानी जाती थीं।

विशाखा की सुंदरता और उदारता सर्वविदित थी, इसलिए कई शुभचिंतक सुंदर दुल्हन को सम्मानित करने और उन्हें उपहार देने आए। अपनी उदारता के कारण, विशाखा ने इन उपहारों को सावत्थी के जरूरतमंदों में बाँट दिया। लोग उनके इस कार्य से इतने प्रसन्न हुए कि वे शीघ्र ही सबकी प्रिय बन गईं। उस समय की प्रथा के अनुसार, विशाखा अपने पति के परिवार के साथ रहती थीं।

विशाखा के ससुर, मिगारा, नग्न तपस्वियों के एक संप्रदाय के अनुयायी थे। यद्यपि बुद्ध और उनके शिष्य उनके घर के पास ही एक मठ में रहते थे, फिर भी उन्हें मिगारा के घर आमंत्रित नहीं किया जाता था। एक दिन मिगारा ने नग्न तपस्वियों को आमंत्रित किया और विशाखा से उनकी सेवा करने का अनुरोध किया। विशाखा उनकी लज्जाहीनता देखकर भयभीत हो गईं और उन्होंने इनकार कर दिया। इससे नग्न तपस्वियों में बहुत क्रोध उत्पन्न हुआ और उन्होंने मिगारा की निंदा की कि उन्होंने तपस्वी गौतम की एक महिला अनुयायी को अपने घर में बुलाया।

इस घटना के कुछ ही समय बाद, जब मिगारा एक सोने के कटोरे में लजीज चावल की खीर खा रहे थे, तभी एक बौद्ध भिक्षु भिक्षा मांगने आया। यद्यपि मिगारा भिक्षु को देख सकते थे, फिर भी उन्होंने उसे अनदेखा किया और अपना भोजन जारी रखा। अपने ससुर को पंखा कर रही विशाखा ने भिक्षु से यह कहते हुए जाने का अनुरोध किया, "आदरणीय महोदय, कृपया जाइए, मेरे ससुर बासी खाना खा रहे हैं।"

सोने के कटोरे में स्वादिष्ट और ताज़ा भोजन कर रहे मिगारा को ये शब्द अपमानजनक लगे और वे क्रोधित हो गए। उन्होंने विशाखा को अपना घर छोड़कर अपने माता-पिता के पास वापस जाने का आदेश दिया। लेकिन विशाखा ने अपने आचरण का न्याय करने के लिए एक स्वतंत्र मध्यस्थ को बुलाया। उन्होंने सलाहकार को समझाया कि उनके ससुर जो स्वादिष्ट भोजन कर रहे थे, वह उनके पिछले अच्छे कर्मों का फल था। इसलिए, निरंतर समृद्धि सुनिश्चित करने वाले अच्छे कर्म करने के बजाय, वे "बासी भोजन खा रहे थे"।

जब मिगारा को विशाखा के शब्दों का अर्थ समझ आया, तो उन्होंने उससे क्षमा मांगी। हालांकि, विशाखा ने फैसला किया कि वह अब अपने पति के परिवार के साथ नहीं रहना चाहती। यह पहली बार नहीं था जब मिगारा ने उस पर गलत आरोप लगाया था। उसने अपने माता-पिता के पास वापस जाने का फैसला किया। मिगारा, जिन्हें अंततः अपनी बहू के नेक गुणों का एहसास हुआ, भयभीत हो गए। मिगारा ने उनसे वहीं रहने की विनती की। विशाखा इस शर्त पर रहने को राजी हो गईं कि उन्हें बुद्ध और उनके अनुयायियों को अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित करने की अनुमति दी जाए। जब मिगारा मान गए, तो विशाखा ने बुद्ध और उनके भिक्षुओं के समूह को भोजन के लिए आमंत्रित किया और स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की।

भोजन के बाद बुद्ध ने धर्म का उपदेश दिया। मिगारा और उनकी पत्नी, जो अपने पूर्व पुण्य कर्मों के फलस्वरूप आध्यात्मिक रूप से विकसित हो चुके थे, दोनों ने संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्न, प्राप्त की। इसके बाद, मिगारा, जो विशाखा के प्रति अत्यंत कृतज्ञ थे, उन्हें मिगारा माता कहकर पुकारने लगे और उनका आदर अपनी माता के समान करने लगे। वे बुद्ध के भक्त भी बन गए।

अत्यंत प्रसन्नता से विशाखा बुद्ध और उनके भिक्षुओं के प्रति उदारतापूर्वक कार्य करती रहीं। उनके दस पुत्र और दस पुत्रियाँ थीं, जिनका उन्होंने धर्म के मार्ग पर पालन-पोषण किया। सुंदर वस्त्रों और आभूषणों की शौकीन विशाखा हमेशा उत्तम वस्त्रों से सजी-धजी रहती थीं। एक दिन गलती से उनका अनमोल रत्नजड़ित मुकुट जेतवन में छूट गया, जहाँ बुद्ध निवास कर रहे थे। यह सोचकर कि मठ में छूटी हुई वस्तु वापस नहीं ली जानी चाहिए, उन्होंने उसे बुद्ध को अर्पित कर दिया। जब उन्हें बताया गया कि बुद्ध के भिक्षुओं के लिए अनमोल खजाने का कोई मूल्य नहीं है, तो विशाखा ने रत्नजड़ित मुकुट को बेचने का प्रस्ताव रखा, ताकि उससे प्राप्त धन से मठों का निर्माण किया जा सके और आवश्यक सामग्रियाँ उपलब्ध कराई जा सकें। जब उन्हें कोई ऐसा खरीदार नहीं मिला जो उस उत्तम रत्नजड़ित मुकुट को खरीद सके, तो उन्होंने उसे स्वयं खरीद लिया और उस धन का उपयोग पुब्बाराम मठ (जिसे मिगारा की माता का महल भी कहा जाता है) के निर्माण में किया, ताकि बुद्ध और उनके भिक्षुओं और भिक्षुणियों के भरण-पोषण में सहायता की जा सके।

विशाखा बुद्ध को दिए अपने उपहार से अत्यंत प्रसन्न थीं। जिस दिन उन्होंने बुद्ध को मठ भेंट किया, उस दिन उन्होंने आनंद के गीत गाए और अपने बच्चों और पोते-पोतियों के साथ पुब्बाराम मठ की परिक्रमा की। बुद्ध ने लोगों को बताया कि विशाखा आनंद के गीत इसलिए गा रही हैं क्योंकि उन्होंने कई विश्व चक्र पहले की अपनी मनोकामना पूरी कर ली थी - बुद्ध की प्रमुख महिला शिष्या बनना।

बुद्ध ने पुब्बाराम मठ में नौ वर्षा ऋतुएँ बिताईं, इस दौरान उन्होंने अनेक सूत्र दिए और अनेक लोगों की सहायता की। एक बार वे पुब्बाराम में ही थे जब एक हलचल ने उनका ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने देखा कि विशाखा भीगे हुए कपड़ों में अस्त-व्यस्त होकर उनकी ओर रोती हुई दौड़ रही हैं। विशाखा नदी में स्नान कर रही थीं जब उन्हें अपने प्रिय पोते दत्ता की मृत्यु का समाचार मिला। अपने दुःख को सहन न कर पाने के कारण वे सांत्वना और दिलासा पाने के लिए बुद्ध के पास दौड़ीं।

बुद्ध ने विशाखा से उनके दुःख का कारण पूछा और उन्हें बताया गया कि यह उनके प्रिय पोते की मृत्यु के कारण है। उन्होंने आगे बताया कि उस बच्चे ने उन्हें कितना सुख दिया था। तब बुद्ध ने विशाखा से पूछा कि क्या वह प्रसन्न होंगी यदि उनके उतने ही पोते-पोतियां हों जितने सावत्थी के नागरिक हैं? विशाखा ने पुष्टि की कि वह वास्तव में बहुत प्रसन्न होंगी क्योंकि उनके पोते-पोतियों से उन्हें असीम आनंद मिलता है। फिर बुद्ध ने विशाखा से पूछा कि सावत्थी के कितने नागरिक प्रतिदिन मरते हैं? विशाखा ने उत्तर दिया कि प्रतिदिन बहुत से लोग मरते हैं। तब बुद्ध ने उन्हें जीवन की अनित्यता समझाई। उन्होंने कहा, "मृत्यु सभी जीवित प्राणियों के पास आती है। इसलिए सोचो कि तुम कितनी दुखी हो जाओगी, क्योंकि तुम्हारे इतने सारे पोते-पोतियां होंगे, जिनमें से कुछ प्रतिदिन मर जाएंगे। तब तुम्हें मुझसे सांत्वना पाने के लिए बार-बार आना पड़ेगा।"

विशाखा ने बुद्ध के वचनों पर मनन किया और यह महसूस किया कि उनका लगाव जितना प्रबल होगा, वियोग का दुःख उतना ही अधिक होगा। यह जानकर कि सभी वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं, उन्होंने स्वयं को संभाला और बुद्ध के पास से विदा ली। विशाखा यह इसलिए समझ पाईं क्योंकि उन्होंने बुद्ध की शिक्षाएँ सुनकर कम उम्र में ही संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्न, प्राप्त कर ली थी। विशाखा

ने कई कुलीन महिलाओं को धम्म के प्रचार में भी सहायता की। एक बार जब वे महिलाओं के एक बड़े समूह को धम्म सुनने के लिए ले गईं, तो यह देखकर उन्हें बहुत दुख हुआ कि उन्होंने बड़ी मात्रा में मादक पदार्थों का सेवन किया था और उनका व्यवहार अशोभनीय था। तब उन्होंने बुद्ध से पूछा कि मनुष्य सबसे पहले मादक पदार्थों के प्रति आसक्त कैसे हुए। तब बुद्ध ने कुंभ जातक कथा सुनाई, जिसमें एक व्यक्ति को एक पेड़ की दरार में किण्वित फल और पानी मिला और उसने झूठे सुख का अनुभव करने के लिए उस किण्वित तरल का सेवन करना शुरू कर दिया।

बुद्ध ने एक अन्य अवसर पर भी विशाखा की सहायता की, जब उन पर लगाए गए कुछ अनुचित करों से वे व्याकुल थीं। विशाखा ने अपने कुछ रिश्तेदारों को एक पार्सल भेजा था और सीमा रक्षकों ने उस पर अनुचित रूप से अधिक शुल्क लगा दिया था। विशाखा ने राजा से शिकायत की, लेकिन राजकीय मामलों के दबाव के कारण राजा ने उसकी शिकायत पर ध्यान नहीं दिया। नाराज़ और क्रोधित होकर विशाखा ने सांत्वना के लिए बुद्ध से प्रार्थना की। बुद्ध ने यह कहकर उसका मन शांत किया:
"सभी प्रकार की अधीनता कष्टदायक होती है।"

परमानंद का अर्थ है पूर्ण नियंत्रण।

लोग आम चिंताओं से परेशान हैं।

इन बंधनों से छुटकारा पाना मुश्किल है।

बुद्ध के इन ज्ञानवर्धक वचनों ने विशाखा को अपनी इस छोटी सी परेशानी को सही परिप्रेक्ष्य में देखने में मदद की। बुद्ध की सलाह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी 2500 साल पहले थी। लालसा और आसक्ति के बंधन इतने प्रबल होते हैं कि अक्सर हम छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित और विचलित हो जाते हैं, जिनमें से कई तो हमारे नियंत्रण से बाहर होती हैं और मानव जाति को प्रभावित करने वाली अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं की तुलना में तुच्छ होती हैं।

विशाखा अक्सर बुद्ध से उन विषयों पर प्रश्न पूछती थीं जिनमें उनकी रुचि होती थी, और अंगुत्तरा निकाय में तीन सूत्र हैं जो बुद्ध ने उनके प्रश्नों के उत्तर में उन्हें दिए थे। एक बार विशाखा ने बुद्ध से पूछा कि एक स्त्री में कौन से गुण होते हैं जो उसे इस लोक और परलोक दोनों पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं। बुद्ध ने उत्तर दिया:

"वह परिश्रम, अपने सेवकों की देखभाल, अपने पति के प्रति प्रेम और उसकी संपत्ति की रक्षा करके इस लोक पर विजय प्राप्त करती है। वह आत्मविश्वास, सद्गुण, उदारता और ज्ञान से परलोक पर विजय प्राप्त करती है।"

बुद्ध ने विशाखा को धार्मिक पर्वों (उपोसथा) को उचित तरीके से मनाने का भी निर्देश दिया। विशाखा ने धार्मिक पर्व मनाया था और पर्व मनाने के सर्वोत्तम तरीके के बारे में मार्गदर्शन लेने के लिए उनके पास आई थीं। पहले तो बुद्ध ने उन्हें त्योहार मनाने के गलत तरीकों के बारे में बताया, फिर उन्हें सही तरीका बताते हुए कहा कि उन्हें आठ नियमों का पालन करना चाहिए, बुद्ध, धम्म और संघ की महानता और अच्छे गुणों पर मनन करना चाहिए, देवताओं (देवदूतों) के गुणों पर मनन करना चाहिए और अपने गुणों पर भी मनन करना चाहिए। इसके बाद बुद्ध ने देवताओं के सुखी और चिंतामुक्त जीवन का वर्णन किया और अंत में कहा, "मनुष्यों का वैभव ऐसे स्वर्गीय आनंद के आगे तुच्छ है।" बुद्ध ने स्वर्गिक जन्म के चमत्कारों का वर्णन किया क्योंकि वे जानते थे कि विशाखा, जो एक सोतापन्न थीं, मृत्यु के समय ऐसे ही स्वर्गीय आनंद का अनुभव करेंगी।

एक दिन जब बुद्ध पुब्बाराम में निवास कर रहे थे, विशाखा बुद्ध के पास आईं और आठ वरदान मांगे। बुद्ध ने उन्हें बताया कि पूर्ण पुरुष वरदान देने की प्रथा से परे हैं। तब उन्होंने उन्हें बताया कि ये वरदान संघ के लिए बहुत लाभकारी होंगे और ये वरदान स्वीकार्य हैं। बुद्ध की अनुमति से, विशाखा ने संघ को निम्नलिखित उपहार देने की अनुमति मांगी:

1. वर्षा ऋतु के लिए वस्त्र, क्योंकि भिक्षु अपने वस्त्रों को सुरक्षित रखने के लिए कभी-कभी बारिश में आधे नग्न होकर दौड़ते थे, जो उचित नहीं था।

2. नए भिक्षुओं के लिए भोजन, क्योंकि लंबी यात्रा के बाद सावत्थी पहुंचे भिक्षु थके हुए थे और नगर से परिचित नहीं थे। ऐसे में उनके लिए भिक्षा मांगना कठिन होता।

3. यात्रा पर जाने वाले भिक्षुओं के लिए भोजन, ताकि वे आगे की यात्रा के लिए बलवान और पोषित रहें।

4. बीमार भिक्षुओं के लिए औषधि, क्योंकि बीमार भिक्षु पीड़ा और कष्ट में थे।

5. बीमार भिक्षुओं के लिए भोजन, क्योंकि बीमार भिक्षु भिक्षा मांगने की स्थिति में नहीं थे।

6. बीमारों की सेवा करने वाले भिक्षुओं के लिए भोजन, क्योंकि बीमारों की सेवा करने के बाद भिक्षा मांगने जाने के कारण उन्हें अक्सर भोजन नहीं मिल पाता था और वे भिक्षा मांगने में देर कर देते थे।

7. सुबह के लिए नियमित रूप से चावल का दलिया वितरित करना, क्योंकि यह संघ के लिए पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक था, जो दोपहर के बाद भोजन नहीं करते थे।

8. भिक्षुणियों के लिए नदी में स्नान करने हेतु स्नान वस्त्र, क्योंकि जिन भिक्षुणियों के पास स्नान वस्त्र नहीं होते थे, उन्हें अक्सर स्नान करते समय अपने शरीर को नंगा रखना पड़ता था, जो उचित नहीं था।

बुद्ध ने विशाखा से पूछा कि इन उपहारों से उन्हें क्या आंतरिक लाभ की अपेक्षा है। विशाखा ने उत्तर दिया कि अक्सर विभिन्न स्थानों पर वर्षा ऋतु बिताने वाले संघ के सदस्य बुद्ध के पास आते हैं और उनसे किसी दिवंगत भिक्षु (या भिक्षुणी) के बारे में पूछते हैं और उनके पुनर्जन्म स्थान के बारे में प्रश्न करते हैं। तब भगवान बुद्ध उनके (या उनके) जन्म और पुनर्जन्म स्थान के बारे में बताते हैं। मैं भिक्षु के पास जाकर पूछूंगा, "हे प्रभु, क्या वह भिक्षु (भिक्षुणी) कभी सावत्थी आए थे?" यदि वे हाँ में उत्तर दें, तो मैं यह निष्कर्ष निकालूंगा कि उस भिक्षु ने अवश्य ही किसी वस्त्र, आगंतुकों के भोजन, यात्रा पर जाने वाले व्यक्ति के भोजन, बीमारों के भोजन, बीमारों की देखभाल करने वालों के भोजन या चावल की दलिया का उपयोग किया होगा। और जब मैं ऐसा चिंतन करूंगा, तो मैं प्रसन्न और आनंदित होऊंगा। जब मेरा मन प्रसन्न होगा, तो मेरा शरीर शांत होगा। जब मेरा शरीर शांत होगा, तो मुझे आनंद का अनुभव होगा। जब मुझे आनंद का अनुभव होगा, तो मेरा मन एकाग्र हो जाएगा। इससे आध्यात्मिक शक्तियों और ज्ञानोदय की क्षमताओं का विकास होगा। हे प्रभु, यही वह लाभ है जो मैं अपने लिए देख रही हूँ।"

विशाखा द्वारा आठ वरदान माँगने की प्रशंसा करते हुए, बुद्ध ने उन्हें संघ को निवेदनानुसार दान देने की अनुमति दी। विशाखा द्वारा दान देने का तरीका उल्लेखनीय है। न केवल उनका इरादा प्रबल होता है, बल्कि वे दान की तैयारी (पहले), दान देते समय और दान के बाद चिंतन करते समय भी उस प्रबलता को बनाए रखती हैं। दान देने से पहले, दान देते समय और दान देने के बाद की यह प्रबल प्रसन्नता या इच्छाशक्ति अधिकतम फल सुनिश्चित करती है। स्वयं को शुद्ध करने, मन का विकास करने और ज्ञान प्राप्ति के इरादे से दान देना ही दान देने का उचित तरीका है और हम सभी को बुद्ध की प्रमुख महिला गृहस्थ परोपकारी विशाखा से उदारता का अभ्यास करने का उचित तरीका सीखना चाहिए।

बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति उनकी उदारता के कारण, बुद्ध ने विशाखा को अपनी प्रमुख महिला गृहस्थ परोपकारी घोषित किया। बुद्ध और संघ को आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करने के अलावा, विशाखा ने संघ के सदस्यों के बीच उत्पन्न होने वाले मुद्दों और विवादों को सुलझाने में भी सहायता की। भिक्षुणियों में से एक। उन्होंने लंबा और स्वस्थ जीवन व्यतीत किया और 120 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। विशाखा, जिनमें कुंवारी सौंदर्य के पांच गुण समाहित थे, अंत तक अत्यंत सुंदर थीं और अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भी उन्होंने अपनी युवावस्था और सुंदरता को बरकरार रखा।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.14
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||14|| ------>>>> अगला

1.14 सुमना
की कहानी थेरी तिस्सा की कहानी से मिलती-जुलती है। अपने तेजस्वी दिव्य रूप को प्रकट करते हुए, गुरु (बुद्ध) ने मानो उसके सामने बैठकर स्वयं को प्रकट किया और कहा:
क्या तुमने सभी में दुख और पीड़ा नहीं देखी?

जीवन के स्रोत? जन्म लेने के लिए वापस मत जाओ!

फिर से अस्तित्व में आने की तीव्र इच्छा को त्याग दो।

अतः तुम शांत और निर्मल होकर अपने मार्ग पर चलते रहोगे। (14)
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.15
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||15|| ------>>>> अगला

1.15 उत्तरा
की कहानी भी थेरी तिस्सा से मिलती-जुलती है। उन्होंने महान प्रजापति गौतमी (बुद्ध की पालक माता और चाची तथा भिक्षुणियों के संघ की प्रमुख) के अधीन संसार का त्याग किया। जब वह ध्यान कर रही थीं, तब गुरु (बुद्ध), विहार (मठ) के 'सुगंधित कक्ष' (उनकी कुटिया)

में बैठे हुए, ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए अपना प्रकाशमान दिव्य रूप भेजा, जिसके माध्यम से उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, जिसके बारे में उन्होंने परमानंद में बात की:
मैंने शारीरिक/क्रियात्मक रूप से स्वयं को अनुशासित किया है,

वाणी में और मन में, इरादे में और ध्यान में।

लालसा को जड़ से पूरी तरह से उखाड़ फेंका जाता है;

अब मैं शांत हो गया हूँ; मुझे निर्वाण की शांति का ज्ञान है। (15)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.16
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||16|| ------>>>> अगला

1.16 सुमना, कोसल के राजा पसेनादि की बहन
(जिन्होंने वृद्धावस्था में संसार त्याग दिया)।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और इस जीवन और पिछले जीवन में अच्छे कर्म संचित किए थे, और इसी बुद्ध काल में श्रावस्ती में कोसल के राजा की बहन के रूप में जन्मीं। गुरु (बुद्ध) द्वारा राजा पसेनादि को दिए गए उपदेश, 'चार ऐसे बालक हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती,' [1] को सुनकर, उन्होंने विश्वास किया और शरण और नैतिक उपदेशों (शील) में दृढ़ हो गईं। संसार त्यागने की इच्छा को उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक स्थगित कर दिया ताकि वे अपनी दादी की जीवन भर देखभाल कर सकें। दादी की मृत्यु के बाद, सुमना राजा के साथ विहार (मठ) गईं, और अपने साथ कालीनों और शॉलों का बहुत सारा खजाना लेकर गईं, और उन्हें संघ को भेंट कर दिया। और गुरु (बुद्ध) के उपदेश सुनकर, उन्होंने अनागामी[2] की अवस्था प्राप्त की और दीक्षा का अनुरोध किया। गुरु ने उनके ज्ञान की परिपक्वता को पहचानते हुए कहा:

हे आदरणीय महिला, सुखपूर्वक विश्राम करें!

आप स्वयं द्वारा निर्मित वस्त्र में लिपटे हुए विश्राम करें।

भीतर जो भावनाएं उग्र रूप से भड़क रही थीं, वे अब शांत हो गई हैं।

निर्वाण की शांति को जानकर अब आप शांत हो गए हैं। (16)

और जब उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया, तो उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त किया। अपनी परमानंदमय अवस्था में उन्होंने उसी श्लोक का उच्चारण किया, जिससे वह उनके अन्न (ज्ञानोदय की अवस्था) की घोषणा बन गया। उन्होंने तुरंत संसार त्याग कर संघ में प्रवेश किया।

[1] दृष्टांत में वर्णित 'युवा प्राणी' एक राजकुमार, एक सर्प, एक अग्नि और एक भिक्षु हैं। ये चारों ही अच्छे या बुरे के लिए महान संभावित कारक हैं, इसलिए इनका सामना होने पर इन्हें अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए।
[2] अनागामी - शाब्दिक अर्थ: जो वापस नहीं लौटता, निर्वाण से पूर्व की अवस्था, वह व्यक्ति जो ब्रह्मलोक (प्रधान देवदूतों का लोक) में पुनर्जन्म लेगा और फिर वहाँ से निर्वाण प्राप्त करेगा।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.17
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||17|| ------>>>> अगला

1.17 धम्म, सावत्थी के एक कुल के व्यक्ति की पुत्री।

उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और विभिन्न अवस्थाओं में पुण्य अर्जित करते हुए, इस बुद्ध काल में सावत्थी के एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लिया। उनका विवाह एक योग्य पति से हुआ, परन्तु उन्होंने बुद्ध के मार्ग में आस्था विकसित की और संसार त्यागने (भिक्षुणी बनने) की इच्छा की, परन्तु उनके पति सहमत नहीं हुए। अतः उन्होंने उनकी मृत्यु के बाद तक प्रतीक्षा की और फिर संघ में प्रवेश कर विपश्यना[1] (ध्यान) का अभ्यास किया। एक दिन भिक्षा माँगकर विहार (मठ) लौटते समय उनका संतुलन बिगड़ गया और वे गिर पड़ीं। केवल इसी बात को अपने ध्यान का विषय बनाकर उन्होंने विपश्यना[1] का अभ्यास किया और अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। और फिर उन्होंने यह श्लोक कहा:
मैं अपने दैनिक भोजन की तलाश में बहुत दूर तक भटकता रहा था;

कांपते हुए अंगों से थककर मैं अपने विश्राम स्थल पर पहुंचा।

अपने कर्मचारियों पर भरोसा करते हुए, जबकि वहाँ भी

मैं धरती पर गिर पड़ा। देखो! यहाँ कितना दुख है!

इस नश्वर शरीर पर मंडरा रहे दुख स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहे थे।

अंतर्मुखी दृष्टि की ओर। शरीर पेट के बल लेटा हुआ था;

मेरा मन स्वतंत्रता (विमुच्चि/विमुक्ति) में जागृत हुआ। (17)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 1.18
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||18|| ------>>>> अगला

1.18 संघा:
उनकी कहानी थेरी धीरा जैसी ही है, लेकिन उनका श्लोक इस प्रकार है:
मैंने अपना घर छोड़ दिया है, क्योंकि मैंने अपनी दुनिया छोड़ दी है!

मैंने अपने बच्चे को और अपने सभी प्रिय झुंडों को छोड़ दिया है!

मैंने वासना को त्याग दिया है, और द्वेष भी चला गया है।

और मैंने अज्ञान को अपने से दूर कर दिया है;

लालसा और लालसा की जड़ पर काबू पा लिया गया।

निर्वाण की शांति को जानकर अब मैं शांत हूँ। (18)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा2.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||19|| ------>>>> अगला

2.1 अभिरूपा-नंदा, शाक्य वंश की पुत्री, कपिलवस्तु में
जन्मीं। विपस्सी बुद्ध (पूर्ववर्ती बुद्ध) के समय में, उनके गृह नगर बंधुमती में एक धनी कुलीन परिवार में जन्मीं अभिरूपा-नंदा एक धर्मपरायण गृहस्थ अनुयायी बनीं। गुरु की मृत्यु पर उन्होंने उनकी अस्थियों के मंदिर में रत्नों से जड़ा एक स्वर्ण छत्र [1] अर्पित किया। इसके फलस्वरूप विभिन्न स्वर्गों में पुनर्जन्म लेकर, इस बुद्ध काल में उनका पुनर्जन्म कपिलवस्तु में शाक्य वंश के खेमक की प्रमुख पत्नी के रूप में हुआ और उनका नाम नंदा रखा गया। अपनी अत्यधिक सुंदरता, आकर्षण और मोहकता के कारण वे सुंदर नंदा के नाम से प्रसिद्ध हुईं।
अब, जिस दिन उन्हें अपने दूल्हों में से किसी एक को चुनना था, उसी दिन उनके युवा शाक्य संबंधी चरभूत का निधन हो गया। तब उनके माता-पिता ने उनकी इच्छा के विरुद्ध उन्हें संसार त्यागने के लिए विदा किया। लेकिन संघ में प्रवेश करने के बाद भी वह अपनी सुंदरता पर मोहित थी और गुरु (बुद्ध) की फटकार के डर से उनकी उपस्थिति से बचती रही। अब भगवान बुद्ध जानते थे कि वह ज्ञान ग्रहण करने के लिए परिपक्व हो चुकी है, और उन्होंने महान प्रजापति गौतमी (बुद्ध की पालक माता और चाची होने के साथ-साथ भिक्षुणी संघ की प्रमुख) को निर्देश दिया कि सभी भिक्षुणियों को उनके पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा जाए। नंदा ने उसकी जगह किसी और को भेजा। और भगवान बुद्ध ने कहा, 'किसी को भी प्रतिनिधि के रूप में न आने दें।' इसलिए उसे आना ही पड़ा। और भगवान बुद्ध ने अपनी जादुई शक्ति से एक सुंदर स्त्री को प्रकट किया और उसे वृद्ध और कमजोर होते हुए दिखाया, जिससे नंदा को पीड़ा हुई। और उन्होंने उससे इन शब्दों में बात की:
देखो, नंदा, यह गंदा परिसर, रोगग्रस्त है।

यह अपवित्र है! अपने मन को समझने के लिए विवश करो।

और एकाग्र मन से एकाग्र हो जाओ। (19)

अनिमित्तन[2] को समझें

अहंकार के हानिकारक पूर्वाग्रह को दूर भगाएं।

क्या मन ने व्यर्थ की कल्पनाओं पर विजय प्राप्त कर ली है?

तब आप शांत और निर्मल होकर अपने मार्ग पर प्रस्थान करें। (20)

और जब उन्होंने बोलना समाप्त किया, तो उन्हें अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त हुआ। उन्होंने मन ही मन उन श्लोकों को दोहराया और उन्हें अपने अन्न (ज्ञान की अवस्था) की घोषणा बना दिया।

[1] या टी, गुंबद के ऊपर। विपस्सी पिटक के सात बुद्धों में से प्रथम थे।
[2] अनिमित्तन, आदर्श जो क्षणभंगुर, दुःख उत्पन्न करने वाली या निरंतर आत्मा-सत्ता की उपस्थिति पर निर्भर नहीं करते।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 2.2
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||20|| ------>>>> अगला

2.2 जेंती (या जेंता), लिच्छवियों की पुत्री, वैशाली।
उनके अतीत और वर्तमान की कहानी सुंदर नंदा के समान है; लेकिन उनका पुनर्जन्म वैशाली में, लिच्छवियों के राजसी परिवार में हुआ था। एक और अंतर यह है: उन्होंने गुरु (बुद्ध) के धम्म उपदेश सुनने के बाद अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, और अपने भीतर आए परिवर्तन को याद करते हुए उन्होंने आनंद से ये श्लोक कहे:
जागृत मन के सात कारक [1]

सात तरीके जिनसे हम निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं —

मैंने सब कुछ विकसित किया है और उसे परिपक्व बनाया है।

बुद्ध के वचन के अनुसार भी। (21)

क्योंकि मैंने उसे अपनी आँखों से देखा है

महान, भगवान (भगवान बुद्ध)। [2] सभी जन्मों का अंतिम।

क्या यही मेरा निर्माण करता है? जन्मों का चक्र।

पराजित हो गया हूँ—अब मेरा पुनर्जन्म कभी नहीं होगा! (22)

[1] बोज्झंग या संबोज्झंग; शाब्दिक अर्थ, बोधि (जागृति) के भाग। वे थे सजगता, धम्म का अध्ययन, ऊर्जा, आनंद, शांति, एकाग्रता, समभाव।
[2] 'चूंकि भगवान बुद्ध स्वयं धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का शरीर हैं, इसलिए उनके आर्य धम्म को समझना ही उन्हें देखना है। बुद्धों और अन्य आर्यों को न केवल उनके दृश्य स्वरूप के दर्शन से, बल्कि आर्य धम्म की अंतर्दृष्टि से भी देखा जा सकता है, जैसा कि उन्होंने कहा: "यद्यपि, वक्खली, जो धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) देखता है, वह मुझे देखता है।"'
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा2.3
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||21|| ------>>>> अगला

2.3 सुमंगला की माता, गरीब परिवार की पुत्री, सरकंडा बुनने वाले की पत्नी, सावत्थी।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और इस जन्म-जन्मांतर में अच्छे कर्म संचित किए थे। उनका जन्म इसी बुद्ध काल में सावत्थी के एक गरीब परिवार में हुआ था और उनका विवाह एक सरकंडा बुनने वाले से हुआ था। उनका प्रथम पुत्र, अंतिम जन्म था, जो बड़ा होकर सुमंगला और अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) बना।[1] उनका नाम ज्ञात न होने के कारण पाली ग्रंथों में उन्हें एक अज्ञात थेरी कहा गया है और वे सुमंगला की माता के रूप में जानी जाती हैं। वह भिक्षुणी के रूप में दीक्षित हुईं, विपश्यना का अभ्यास किया और एक दिन, गृहस्थ जीवन में अपने द्वारा सहे गए सभी कष्टों को याद करते हुए, वे बहुत प्रभावित हुईं, और अपनी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना) में प्रगति करते हुए, उन्होंने धम्म के रूप और अर्थ के पूर्ण ज्ञान के साथ अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। इस पर उन्होंने कहा:
हे पूर्णतः स्वतंत्र स्त्री! मैं कितनी स्वतंत्र हूँ!

मूसल और मोर्टार से कितना पूरी तरह मुक्त![3]

मैं अपने खाना पकाने के बर्तनों के साथ काम करते हुए काला और गंदा था।

मेरे क्रूर पति का दर्जा तो और भी कम था।

वह धूप से बचने के लिए छांव में बैठता है और हमेशा बुनाई करता रहता है। (23)

अब मैं अपनी सारी पूर्व वासना और घृणा से मुक्त हो चुका हूँ।

मैं छाया में आराम से बैठकर चिंतन करता हूँ।

पेड़ की फैली हुई शाखाओं का — ओह, कितना आनंदमय!

मैं ध्यान में आनंदित हूँ (24)

[1] ये सुमंगला हैं, जिन्होंने अपने श्लोक (थेरागथा, 43) में तीन 'टेढ़ी चीजों' - हंसिया, हल और कुदाल से मुक्ति का जश्न मनाया है।
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएं, संवेदनाएं और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञान प्राप्त होता है।
[3] रसोई का श्रम (मुसला)।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा2.4
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||22|| ------>>>> अगला

2.4 काशी के करोड़पति (सेठी) की पुत्री अद्धकाशी, पूर्व वेश्या:
कश्यप बुद्ध के समय में एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्मी, उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया और नैतिक उपदेशों (शील) में स्थापित भिक्षुणी बन गईं। लेकिन उन्होंने एक अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) वरिष्ठ भिक्षुणी को वेश्या कहकर अपमानित किया, जिसके कारण उन्हें नरक भोगना पड़ा। बुद्ध काल में उनका पुनर्जन्म काशी राज्य में एक प्रतिष्ठित और समृद्ध नागरिक की संतान के रूप में हुआ। लेकिन अपने पूर्व के बुरे शब्दों के निरंतर प्रभाव के कारण, वे स्वयं वेश्या बन गईं। उन्होंने कैसे संसार का त्याग किया और विशेष दूत द्वारा दीक्षा प्राप्त की, इसका वर्णन चुल्ला वग्ग में किया गया है। वे भगवान बुद्ध से दीक्षा प्राप्त करने के लिए श्रावस्ती जाना चाहती थीं। लेकिन बनारस के अनियंत्रित लोगों ने उनका मार्ग अवरुद्ध कर दिया, इसलिए उन्होंने भगवान बुद्ध से परामर्श मांगा, और उन्होंने उन्हें एक दूत द्वारा दीक्षा प्राप्त करने की अनुमति दी। फिर उन्होंने अंतर्दृष्टि ध्यान (विपस्सना[1]) का अभ्यास करते हुए, कुछ ही समय बाद अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, जिसमें उन्हें धम्म का रूप और अर्थ का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ। इस पर उन्होंने कहा:
मेरी फीस काशी राज्य से कम नहीं थी।

राजस्व के रूप में भुगतान किया गया - यह उसी पर आधारित था।

मेरे लिए मूल्य के बदले मूल्य तय किया गया था। (25)

लेकिन अब मेरी सारी सुंदरता कष्टदायक हो गई है;

मैं इससे ऊब गया हूँ, मेरा मोहभंग हो गया है।

मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा, बार-बार, और फिर कभी नहीं।

पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र में दौड़ते रहो!

अब मेरे लिए वास्तविक और सत्य है त्रिविध ज्ञान.[2]

मैं भगवान बुद्ध के अनुशासन में सिद्ध हो चुका हूँ। (26)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] तिस्सो विज्जा: यह पन्ना की तीन उपलब्धियों पर लागू होता है, अर्थात् (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 2.5
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||23|| ------>>>> अगला

2.5 चित्त, राजगृह के महान अभिजात वर्ग की पुत्री।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेकर और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित करके 94वें युग (कप्पा/कल्प) [1] में एक परी के रूप में जन्म लिया। उन्होंने मौन बुद्ध (पचेकबुद्ध) की पुष्पांजलि अर्पित की। मनुष्यों और देवताओं (देवदूतों) के बीच अनेक जन्मों के बाद, इस बुद्ध-काल में उनका जन्म राजगृह में एक प्रमुख अभिजात वर्ग के परिवार में हुआ। जब वे समझदार हुईं, तब उन्होंने राजगृह के द्वार पर गुरु (बुद्ध) का उपदेश सुना और विश्वास की अनुयायी बनकर महान प्रजापति गौतमी (बुद्ध की दिवंगत माता की बहन और सहपत्नी तथा भिक्षुणियों के संघ की प्रमुख) द्वारा दीक्षा ली। और अंततः, अपने वृद्धावस्था में, जब उन्होंने गिद्ध शिखर पर चढ़ाई की और संन्यासी के अभ्यास किए, तब उनकी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[2]) में प्रगति हुई और उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। उस पर पीछे मुड़कर देखते हुए, उन्होंने इस प्रकार कहा:
हालाँकि मैं बीमार और कमजोर हूँ, और सब कुछ

मेरी जवानी का जोश भले ही बीत गया हो, फिर भी मैंने चढ़ाई जारी रखी है।

मेरी लाठी पर झुककर, पर्वत शिखर। (27)

मेरे कंधे से मेरा लबादा उल्टा लटका हुआ है।

मेरा छोटा सा कटोरा। इसलिए मैं चट्टान के सहारे झुक जाता हूँ।

और अपने इस स्व को सहारा दो, और टूटकर अलग हो जाओ

भीतर अज्ञान का अंधकार। (28)

[1] कल्प/कप्पा ब्रह्मांड के विस्तार और संकुचन के चक्र; इस वर्तमान युग से पहले।
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएं, संवेदनाएं और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा2.6
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||24|| ------>>>> अगला

2.6 राजगृह के एक ब्राह्मण की पुत्री मेत्तिका,
पूर्व बुद्धों के अधीन पुण्य संचय करते हुए, सिद्धार्थ [1] भगवान (भगवान बुद्ध) के समय में एक कुलीन परिवार में जन्मीं और उनके मंदिर में रत्नजड़ित कमरबंद अर्पित करके उनकी पूजा की। स्वर्ग और पृथ्वी पर अनेक जन्मों के बाद, उस पुण्य के फलस्वरूप, वह इस बुद्ध काल में राजगृह के एक प्रख्यात ब्राह्मण की संतान बनीं। अन्य मामलों में उनका मामला पिछले मामले के समान ही है, सिवाय इसके कि यह गिद्ध शिखर के समान एक अन्य पर्वत था जिस पर वह चढ़ीं। [2], और एक संन्यासी के अभ्यास करने से उनकी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना [3]) में प्रगति हुई और उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। उन्होंने भी, अपनी उपलब्धि को याद करते हुए, परमानंद में कहा:
भले ही मैं पीड़ित और कमजोर हूँ, और सब कुछ

मेरी जवानी का वसंत भले ही बीत गया हो, फिर भी मैं आ चुका हूँ।

मैंने अपनी लाठी का सहारा लिया और ऊपर चढ़ गया।

पर्वत शिखर। (29)

मैंने अपना लबादा उतार दिया,

मेरा छोटा कटोरा उलट गया: इसलिए मैं यहाँ बैठा हूँ

चट्टान पर। और मेरे मन पर छा जाता है

मैं स्वतंत्रता (विमुक्ति, मोक्ष) की सांस जीतता हूं

त्रिविध ज्ञान की विजय हुई! बुद्ध की साधना पूर्ण हुई!(30)

[1] चौबीस बुद्धों में से एक।
[2] राजगीर (प्राचीन शहर) लगभग सात पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
[3] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा2.7
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||25|| ------>>>> अगला

2.7 मित्त(2), शाकियों की पुत्री, कपिलवस्तु में
जन्मीं, विपस्सी बुद्ध के समय में एक कुलीन परिवार में जन्मीं और उनके पिता के दरबार की महिला बनीं, उन्होंने एक अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) वरिष्ठ भिक्षुणी को भोजन और कीमती वस्त्र भेंट करके पुण्य कर्म अर्जित किया। अंततः, इसी बुद्ध काल में, कपिलवस्तु में शाकियों के राजसी परिवार में जन्मीं, उन्होंने महान प्रजापति गौतमी (बुद्ध की दिवंगत माता की बहन और सहपत्नी तथा भिक्षुणी संघ की प्रमुख) के साथ संसार का त्याग किया, और अंतर्दृष्टि ध्यान (विपस्सना[1]) के लिए आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, कुछ ही समय में अरहंत पद (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया। उस पर पीछे मुड़कर देखते हुए, आनंद और प्रसन्नता ने उन्हें यह कहने के लिए प्रेरित किया:
पूर्णिमा के दिन और पंद्रहवें दिन,

और महीने के दोनों हिस्सों की आठवीं तारीख को,

मैंने उपवास रखने का भरसक प्रयास किया; मैंने आठ नियमों का पालन किया(31)

अतिरिक्त उपवास, जो देवताओं (देवदूतों) को आकर्षित करते हैं,

और स्वर्गिक घरों में खुशी से निवास करना।

आज एक ही भोजन, सिर मुंडा हुआ, पीला वस्त्र –

मेरे लिए इतना ही काफी है। मुझे देवताओं (देवदूतों) का स्वर्ग नहीं चाहिए।

मैंने हृदय के दर्द, हृदय की तड़प को प्रशिक्षण के माध्यम से दूर कर दिया है। (32)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा2.8

श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||26|| ------>>>> अगला

2.8 अभय की माता, पद्मावती, उज्जैनी की पूर्व वेश्या:
पूर्व बुद्धों के अधीन पुण्य संचय करते हुए, उन्होंने तिस्सा बुद्ध के समय में उन्हें भिक्षा मांगते हुए देखा और प्रसन्नतापूर्वक उनका कटोरा लेकर उसमें एक चम्मच भोजन डाला। इसके फलस्वरूप देवताओं (देवदूतों) और मनुष्यों के बीच पुनर्जन्म लेकर, उन्होंने इस बुद्ध काल में भी जन्म लिया और उज्जैनी नगर की सुंदरी पद्मावती बन गईं।[1] मगध के राजा बिम्बिसार ने उनके बारे में सुना और अपने पुरोहित से उन्हें देखने की इच्छा व्यक्त की। पुरोहित ने अपने मंत्रों की शक्ति से एक यक्ष को बुलाया, जिसने अपनी शक्ति से राजा को उज्जैनी ले आया। बाद में जब उन्होंने राजा को संदेश भेजा कि वे उनसे गर्भवती हैं, तो राजा ने उत्तर में संदेश भेजा, 'यदि पुत्र हो, तो मुझे उसके बड़े होने पर देखने दो।' और उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम अभय रखा। जब वह सात वर्ष का था, तब उसकी माँ ने उसे बताया कि उसका पिता कौन है, और उसे बिम्बिसार के पास भेज दिया। राजा को वह लड़का बहुत प्रिय लगा, और उसने उसे अपने दरबार के अन्य लड़कों के साथ पाला-पोसा। उसके धर्म परिवर्तन और दीक्षा का वर्णन वृहदों के भजनों (थेरागाथा) में मिलता है। बाद में, उसकी माता ने अपने पुत्र को धम्म का उपदेश देते हुए सुना, और उसने भी संसार त्याग दिया, भिक्षुणी बन गई और विपश्यना (अंतर्दृष्टि ध्यान) करने लगी, और फिर अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, जिसमें धम्म का रूप और अर्थ दोनों पूर्णतः ज्ञात थे। तब उसने उस श्लोक को याद किया और दोहराया जिससे उसके पुत्र ने उसे उपदेश दिया था, और उसमें अपना श्लोक भी जोड़ा:
'पैर के तलवे से ऊपर की ओर, हे प्रिय माता,

बालों के शीर्ष से नीचे की ओर इस शरीर को देखें।

क्या यह दुर्गंधयुक्त वस्तु अशुद्ध नहीं है?' (33)

मैंने इस पर विचार किया है। अभी भी ध्यान में डूबा हुआ हूँ।

जब तक कामवासना की हर नस जड़ से उखाड़ न दी जाए।

इच्छा की सारी उत्तेजना मिटा दी गई है।

अब मैं शांत हूँ और मैंने निर्वाण की शांति प्राप्त कर ली है। (34)

[1] यानी, कमल की तरह
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 2.9
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||27|| ------>>>> अगला

2.9 अभया, उज्जैनी के एक कुल के व्यक्ति की पुत्री।
पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेकर और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्मों का सदुपयोग करते हुए, सिख बुद्ध के समय में[1] उनका एक महान कुलीन परिवार में पुनर्जन्म हुआ और वे उनके पिता अरुणा की प्रधान रानी बनीं। एक दिन जब सिख बुद्ध भिक्षा के समय महल में प्रवेश कर रहे थे, तब उन्होंने राजा द्वारा दिए गए लाल कमलों का अर्पण करके बुद्ध की आराधना की। इस कर्म के फलस्वरूप देवताओं (देवदूतों) और मनुष्यों के बीच अनेक जन्मों (उच्च जन्मों) में जन्म लेने के बाद, उनका इस बुद्ध काल में उज्जैनी में एक प्रतिष्ठित परिवार में पुनः जन्म हुआ और वे अभया की माता की बहुत निकट हो गईं। जब उनकी माता ने संसार त्याग दिया, तो अभया ने भी उनके प्रेम के कारण संन्यास ले लिया। राजगृह में उनके साथ रहते हुए, एक दिन वह शीतल वन (सीतवनम) में संसार की कुरूपता के विचार पर ध्यान करने गईं। गुरु (बुद्ध), अपने सुगंधित कक्ष में विराजमान थे, उन्होंने उन्हें उस प्रकार की वस्तु दिखाई जिसे

उन्हें चुनने का निर्देश दिया गया था। उस दृश्य को देखकर वह भयभीत हो गईं। तब गुरु ने अपना प्रकाशमान दिव्य रूप प्रकट किया, मानो उनके सामने बैठे हों, और कहा:
हे अभय, शरीर तो नश्वर है,

जिससे सांसारिक व्यक्ति का सुख जुड़ा हुआ है।

मैं अपने इस नश्वर शरीर को त्याग दूंगा।

मैं जो कुछ भी करता हूँ, उसमें सचेत और आत्म-जागरूक रहता हूँ। (35)

अनेक प्रकार के कष्ट उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में संलग्न था।

मैंने आलस्य के बिना संघर्ष किया, उन सब चीजों से मुक्त होकर।

मैंने लालसा को नष्ट कर दिया है, और

बुद्ध की साधना पूर्ण हुई। (36)

और जब उन्होंने बोलना समाप्त किया तो उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। इससे प्रसन्न होकर उन्होंने श्लोकों को स्वयं को संबोधित करते हुए कहा।

[1] सात बुद्धों में से द्वितीय।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा2.10
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||28|| ------>>>> अगला

2.10 समा, कोसंबी के एक महान कुलीन परिवार की पुत्री।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित किए थे। सौभाग्यशाली परिस्थितियों में पुनर्जन्म लेकर, उन्होंने इस बुद्ध-काल में कोसंबी में एक प्रतिष्ठित कुलीन परिवार में जन्म लिया। जब उनकी प्रिय मित्र, गृहस्थ शिष्या समवती का निधन हुआ, तो उन्होंने व्यथा में संसार का त्याग कर दिया। परन्तु अपनी मित्र के शोक को वश में न कर पाने के कारण वे आर्य मार्ग (बुद्ध का मार्ग) को नहीं समझ पाईं। अब, जब वे बैठक कक्ष में बैठकर वरिष्ठ आनंद का उपदेश सुन रही थीं, तब वे अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में लीन हो गईं और सातवें दिन, उन्होंने धम्म (शाश्वत सत्य) को रूप और अर्थ में पूर्णतः समझकर अर्हंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया।
और अपनी इस उपलब्धि को याद करते हुए, उन्होंने इसे इस स्तोत्र में व्यक्त किया:
चार बार नहीं, पांच बार, मैं अपनी कोठरी से तेजी से बाहर निकला।

और मन की शांति की तलाश में भटकता रहा।

मैंने व्यर्थ ही प्रयास किया, और विचारों का शासन भी व्यर्थ रहा।

मैं उन्हें कैद में नहीं ला सका।

मुझे, यहाँ तक कि मुझे भी, उस आठवें दिन

यह आया: मेरे मन से सारी लालसा दूर हो गई। (37)

अनेक प्रकार के कष्ट उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में संलग्न था।

मैंने आलस्य के बिना संघर्ष किया, उन सब चीजों से मुक्त होकर।

मैंने लालसा को नष्ट कर दिया है, और

बुद्ध की साधना पूर्ण हो गई। (38)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

बुद्ध के समय में एक पुरुष और स्त्री रहते थे जिनकी एक सुंदर पुत्री थी जिसका नाम समावती था। वे अपने शहर में महामारी फैलने तक सौहार्द और सुख से रहते थे। अपने जीवन के भय से, उन्होंने वंश की राजधानी कोसंबी जाने का निर्णय लिया, जहाँ उन्हें राजा उदेना के वित्त मंत्री घोषक से सहायता मिलने की आशा थी, जो उनके पारिवारिक मित्र थे।

नगर पालिका ने महामारी के कारण बेघर हुए शरणार्थियों के लिए एक सार्वजनिक भिक्षागृह स्थापित किया था। समावती अपने माता-पिता और स्वयं के लिए भोजन लेने वहाँ गई। पहले दिन उसने तीन भाग भोजन माँगा, दूसरे दिन दो भाग और तीसरे दिन एक भाग।

भोजन बाँटने वाले मित्त ने व्यंग्यपूर्वक उससे पूछा कि क्या उसे अंततः अपने पेट की क्षमता का एहसास हो गया है। समावती ने शांत भाव से उत्तर दिया कि पहले दिन तो तीन लोग थे जिनके लिए वह भोजन ले जा रही थी। फिर उसके पिता महामारी से मर गए। दूसरे दिन वह अपनी माँ और अपने लिए भोजन ला रही थी। तभी उसकी माँ प्लेग की चपेट में आ गई और उसकी मृत्यु हो गई। इसलिए, आज उसे केवल एक भाग भोजन की आवश्यकता थी।

मित्त को अपने व्यंग्य और बिना सोचे-समझे की गई टिप्पणी पर बहुत बुरा लगा। उसने समावती को अपनी पालक संतान के रूप में गोद लेने का प्रस्ताव रखा। समावती मान गई। फिर वह अपने पालक पिता के साथ भिक्षा वितरण में मदद करने लगी। कुछ ही समय में, समावती, जो बहुत ही सक्षम और बुद्धिमान थी, ने अव्यवस्थित और शोरगुल वाले भिक्षागृह को एक सुव्यवस्थित और सुचारू रूप से चलने वाले केंद्र में बदल दिया। इतना कि वित्त मंत्री घोषक इस बदलाव को देखकर आश्चर्यचकित रह गए और उन्होंने मित्त की संगठन क्षमता की प्रशंसा की। मित्त ने विनम्रतापूर्वक इसका श्रेय अपनी गोद ली हुई बेटी को दिया और घोषक का परिचय समावती से कराया।

जब घोषक को पता चला कि समावती उनके दिवंगत मित्र की पुत्री है, तो उन्होंने उसे गोद लेने और अपनी बेटी की तरह पालने का निर्णय लिया। यद्यपि मित्त उसे बहुत प्यार करते थे और अपनी पालक पुत्री को खोना नहीं चाहते थे, फिर भी उन्हें यह एहसास था कि वित्त मंत्री की पुत्री होने के नाते उसे कई ऐसी सुख-सुविधाएँ मिलेंगी जो वे स्वयं नहीं दे सकते। समवती के सौभाग्य में बाधा न बनने की इच्छा से वह सहमत हो गया। घोषक की पुत्री होने के नाते, समवती एक विशाल संपत्ति की उत्तराधिकारी बनी और कुलीन वर्ग में विचरण करने लगी।

कोसंबी के राजा, उदेना की दो सुंदर पत्नियाँ थीं। उन्होंने पहली रानी, वासुलदत्ता से राजनीतिक कारणों से विवाह किया था, और दूसरी रानी, मगंदिया से उनकी बुद्धिमत्ता के कारण। हालाँकि, उनकी दोनों पत्नियाँ उन्हें वह प्रेम, करुणा और कोमलता प्रदान नहीं कर सकीं जो वे एक पत्नी से चाहते थे। वास्तव में, मगंदिया तो ठंडी, स्वार्थी और कठोर स्वभाव की थी।

एक दिन राजा ने सुंदर, सौम्य और दयालु समावती को देखा। उनकी सुंदरता और सौम्यता से मोहित होकर उन्होंने उन्हें अपनी तीसरी संगिनी बनाने का निश्चय किया। घोषक, जो अपनी दत्तक पुत्री से अत्यंत प्रेम करते थे और राजा के स्वभाव को भलीभांति जानते थे, ने इनकार कर दिया। राजा उदेना क्रोधित हो गए। उन्होंने घोषक को वित्त मंत्री के पद से बर्खास्त कर दिया और उनका महल जब्त कर लिया।

समावती अपने दत्तक पिता पर आई विपत्ति से व्याकुल थीं। यद्यपि वे राजा से विवाह नहीं करना चाहती थीं, फिर भी उन्होंने इस शर्त पर राजा का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि घोषक को उनके पद पर पुनः स्थापित किया जाए और उनका महल वापस दे दिया जाए। राजा मान गए। समावती शीघ्र ही राजा की प्रिय संगिनी बन गईं।

अपने पद के अनुरूप, समावती के पास सेवकों का एक बड़ा दल था जो उनकी हर इच्छा का ध्यान रखता था। उनमें से एक सेवक खुज्जुत्तारा था। रानी प्रतिदिन खुज्जुत्तारा को फूल खरीदने के लिए आठ सोने के सिक्के देती थीं। खुज्जुत्तारा प्रतिदिन चार सोने के सिक्के अपनी जेब में रख लेता था और शेष से फूल खरीदता था। एक दिन जब वह फूल खरीदने गई तो फूलवाले ने उसे बताया कि उसने बुद्ध और उनके भिक्षुओं को भिक्षा के लिए आमंत्रित किया है और पूछा कि क्या वह रुककर प्रवचन में भाग लेना चाहेगी।

खुज्जुतारा मान गई। वह मदद करने के लिए रुक गई और भोजन के बाद बुद्ध के प्रवचन को ध्यान से सुना। बुद्ध की शिक्षाओं से खुज्जुतारा का रूप बदल गया। अनगिनत वर्षों के ज्ञान से उसका मन तीव्र हो गया था। प्रवचन के अंत तक उसने संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्न, प्राप्त कर ली। अपने पूर्व छल पर पश्चाताप करते हुए, खुज्जुतारा ने रानी के लिए आठ सोने के सिक्कों के बराबर फूल खरीदे।

रानी समवती ने खुज्जुतारा को देखते ही एक बदलाव महसूस किया। खुज्जुतारा शांत और सौम्य लग रही थी और उससे एक आंतरिक तेज निकल रहा था। वह इस बात से भी हैरान थी कि फूलों की मात्रा दोगुनी क्यों थी। रानी ने खुज्जुतारा से उसके परिवर्तन और अतिरिक्त फूलों के बारे में पूछा। खुज्जुतारा ने सच्चाई और अपने पूर्व छल को स्वीकार किया और क्षमा मांगी। फिर उसने रानी को बुद्ध के उस उपदेश के बारे में बताया जिसने उसका जीवन बदल दिया था।

खुज्जुत्तरा के आंतरिक परिवर्तन से प्रभावित होकर रानी ने बुद्ध और उनकी शिक्षाओं के बारे में और अधिक जानने का निश्चय किया। उसने खुज्जुत्तरा को अपनी निजी सेविका नियुक्त किया और उससे प्रतिदिन मठ आने का अनुरोध किया। उसने उसे धम्म सुनने और वापस आकर रानी और उसके दरबार को जो कुछ सीखा है, उसे सिखाने का निर्देश दिया।

असाधारण स्मृति वाली खुज्जुत्तरा ने बुद्ध की शिक्षाओं को शब्दशः दोहराया। रानी और उसकी दासियाँ धम्म और खुज्जुत्तरा के इस उपहार से प्रेरित हुईं। उसे ऊँची कुर्सी पर बिठाकर और स्वयं नीची सीटों पर बैठकर, उन्होंने आदर और कृतज्ञता के साथ उसकी शिक्षाओं को सुना।

धम्म से पूर्णतः प्रेरित रानी समवती ने राजा से बुद्ध और उनके शिष्यों को अपने महल में दैनिक भोजन के लिए आमंत्रित करने की अनुमति मांगी। स्वयं उपस्थित न हो पाने के कारण बुद्ध ने आनंद को अपना प्रतिनिधि बनाकर महल भेजा। प्रतिदिन (जब तक बुद्ध कोसंबी में निवास कर रहे थे), आनंद रानी समवती से दोपहर का भोजन ग्रहण करते थे और उन्हें तथा उनके दरबार की महिलाओं को धम्म का उपदेश देते थे। शीघ्र ही रानी समवती ने संतत्व की प्रथम अवस्था, सोतापन्न, प्राप्त कर ली। दरबार की कई महिलाओं ने भी संतत्व की उच्च अवस्थाएं प्राप्त कीं। उनके पालक पिता, घोषक ने भी इस सिद्धांत को अपनाया और बुद्ध और उनके अनुयायियों के लिए कोसंबी में घोषिताराम नामक एक विशाल मठ का निर्माण करवाया।

रानी समवती धम्म में निरंतर प्रगति करती रहीं। उनका सबसे उत्कृष्ट गुण सभी प्राणियों के प्रति उनका अपार प्रेम और करुणा था। समवती करुणा और प्रेम की साक्षात मूर्ति थीं और जिनसे भी वे संपर्क में आती थीं, उन सभी में इसे फैलाती थीं।

हालांकि, रानी की लोकप्रियता और इस तथ्य से कि वह निस्संदेह राजा उदय की प्रिय थीं, रानी मगंदिया प्रसन्न नहीं हुईं। उन्होंने समवती को इसलिए स्वीकार किया था क्योंकि राजा के लिए एक से अधिक पत्नियां रखना सामान्य प्रथा थी। लेकिन वह समवती की बुद्ध और धम्म के प्रति श्रद्धा को स्वीकार नहीं कर सकीं।

बचपन से ही मगंदिया असाधारण रूप से सुंदर थीं। उनके माता-पिता ने उनके लिए एक उपयुक्त जीवनसाथी की तलाश की थी और एक बेहद सुंदर और सुसंस्कृत पुरुष की खोज की थी। एक दिन बुद्ध भिक्षा मांगने उनके घर आए। बुद्ध को पहचान न पाने के बावजूद, उनके व्यवहार और चेहरे से प्रसन्न होकर, उन्होंने मगंदिया का विवाह उनसे प्रस्तावित कर दिया। बुद्ध ने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और अनित्यता और शरीर की तुच्छता पर एक सूत्र का प्रवचन दिया, जिसकी उन्हें कोई इच्छा नहीं थी। हालांकि, अपनी सुंदरता पर घमंड और अभिमान करने वाली मगंदिया ने उनके प्रवचन को व्यक्तिगत रूप से लिया और अस्वीकार किए जाने पर अपमानित महसूस किया। समवती को बुद्ध का आदर करते देख, जिन्होंने कथित तौर पर उनका अपमान किया था, उन्हें पुराने घाव याद आ गए। उसने अपना क्रोध और ईर्ष्या समावती पर केंद्रित करने का निश्चय किया। उसने झूठे आरोप लगाकर राजा उदेना के समावती के प्रति प्रेम

और आस्था को भंग करने का अनेक प्रयास किए। परन्तु समावती शांत और करुणा एवं प्रेम से परिपूर्ण रहीं। मगंदिया के किसी भी कार्य से राजा का अपनी प्रिय रानी के प्रति अटूट प्रेम नहीं बदला।

हताशा में मगंदिया ने रानी को मारने का निश्चय किया। कुछ लालची रिश्तेदारों की सहायता से उसने उस दिन रानी के निवास में आग लगाने की योजना बनाई जब वह स्वयं शहर से बाहर थीं। मगंदिया राजा के क्रोध से भलीभांति परिचित थी और यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि किसी भी प्रकार का दोष उस पर न लगे। रानी समावती और उनके दरबार के अधिकांश सदस्य आग में जलकर मर गए। परन्तु रानी अंत तक करुणा एवं प्रेम से परिपूर्ण रहीं। उन्होंने अपनी दासियों को, जो लपटों में घिरी हुई थीं, यह कहकर प्रोत्साहित किया कि वे एकाग्र होकर धर्म का पालन करें:
"यह आसान मामला नहीं होगा।"

बुद्ध के ज्ञान के बावजूद भी,

ठीक-ठीक यह निर्धारित करने के लिए कि कितनी बार

इस प्रकार हमारे शरीर आग से जल गए हैं।

जैसे-जैसे हम जन्म-दर-जन्म आगे बढ़ते गए हैं

अस्तित्व के अनादि चक्र में।"

उनके वचनों से प्रेरित होकर दरबार की स्त्रियों ने ध्यान किया और मानसिक विकास प्राप्त किया, जिससे मृत्यु के समय वे सभी संतत्व की विभिन्न अवस्थाओं में प्रवेश कर चुकी थीं।

यह दुखद समाचार सुनकर भिक्षुओं ने बुद्ध से रानी और उनकी स्त्रियों के पुनर्जन्म स्थान और उनकी दुखद मृत्यु के कारण के बारे में प्रश्न किया। बुद्ध ने उन्हें बताया कि सभी स्त्रियाँ संतत्व की प्रथम, द्वितीय या तृतीय अवस्था में पहुँच चुकी थीं और इस प्रकार देव और ब्रह्म लोकों में पुनर्जन्म लेकर वहाँ से समय आने पर अर्हंतत्व प्राप्त करेंगी।

उन्होंने आगे बताया कि पिछले जन्म में समवती बनारस की रानी के रूप में जन्मी थीं और अपनी स्त्रियों के साथ नदी में स्नान करने गई थीं। ठंड लगने पर उन्होंने अपनी दासियों को चारों ओर की झाड़ियों में आग लगाने का आदेश दिया। उन्हें देर से पता चला कि पच्चेक बुद्ध वहाँ झाड़ियों के बीच छिपे हुए ध्यान कर रहे थे। पच्चेक बुद्ध के जीवित रहने और अपनी कहानी सुनाने पर अपनी लापरवाही के लिए फटकार का सामना करने के भय से उन्होंने अपनी दासियों को उन पर तेल डालने का आदेश दिया, इस आशा में कि वे मर जाएँगी। वे पच्चेक बुद्ध को मारने में सफल नहीं हुए थे, लेकिन सुनियोजित हत्या के कारण समवती और उनकी दासियों की मृत्यु हो गई।

मगंदिया की कुटिल योजना के बावजूद, राजा को यह एहसास हो गया कि समवती की हत्या के लिए उसी ने उकसाया था। अपने दु:ख से व्याकुल होकर उसने मगंदिया और उसके रिश्तेदारों को यातना देकर जलाकर मार डालने का आदेश दिया। बाद में राजा को अपने प्रतिशोध पर पछतावा हुआ। वह करुणामयी समवती को बार-बार देखता रहा और महसूस करता रहा कि प्रतिशोध के कारण वह उससे और भी दूर हो गया है, जितना कि उसकी मृत्यु के कारण हुआ था। उसने बुद्ध की उन शिक्षाओं को अपनाया जिन्होंने समवती का जीवन बदल दिया था और वह उनके शाही संरक्षकों में से एक बन गया। बुद्ध ने समवती को प्रेम और करुणा का अभ्यास करने वाली स्त्री शिष्याओं में सर्वोपरि घोषित किया।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा3.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||29|| ------>>>> अगला

3.1 एक अन्य समा, कोसंबी के एक कुलवासी की पुत्री।
वह भी, पिछली समा की तरह, पुण्य कर्मों से संपन्न होकर, विपस्सी बुद्ध के समय में चंदाभागा नदी के किनारे एक परी के रूप में जन्मी। परी के रूप में जीवन व्यतीत करते हुए, उसने एक दिन गुरु (बुद्ध) को नदी के किनारे चलते हुए देखा, ताकि वे प्राणियों में धर्म का बीज

बो सकें। अत्यंत प्रसन्नता से उसने पुष्प अर्पित करके उनकी पूजा की। इसके फलस्वरूप उसे देवताओं और मनुष्यों के बीच पुनर्जन्म प्राप्त हुआ, और इस बुद्ध काल में उसने कोसंबी में एक कुलवासी के परिवार में जन्म लिया। वह भी समावती की मित्र बनी और समावती की मृत्यु के दुःख से व्याकुल होकर संघ में प्रवेश किया। वह भी पच्चीस वर्षों तक आत्म-नियंत्रण प्राप्त नहीं कर सकीं, जब तक कि वृद्धावस्था में उन्होंने एक सामयिक उपदेश नहीं सुना, जिसके माध्यम से उनकी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में प्रगति हुई और उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, जिसमें धम्म का रूप और अर्थ दोनों पूर्ण रूप से ज्ञात था। उस पर पीछे मुड़कर देखने पर, उन्होंने कहा:
मुझे पुरोहित बने पूरे पच्चीस साल हो गए हैं!

लेकिन मेरे परेशान मन में अभी तक ऐसा बिल्कुल नहीं है।

क्या मैं समभाव (समथा) प्राप्त कर सकता हूँ (39)

मन की शांति, विचारों का नियंत्रण

मैंने इसे प्राप्त करने का बहुत प्रयास किया, लेकिन यह नहीं मिला;

और फिर रोमांच के सैलाब के साथ,

मैंने विजेता (बुद्ध) के अनुशासन में निवास किया।148 (40)

मैंने स्वयं को सभी दुखों से मुक्त कर लिया।

मैंने बिना आलस्य के मेहनत की और जीत हासिल की!

लालसा का नाश हो गया है, और बुद्ध की साधना पूर्ण हो गई है।

आज से सात दिन हो गए हैं जब से मैंने

भीतर ही भीतर मुरझा गई, वह प्राचीन लालसा (भौतिक इच्छाओं की)। (41)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 3.2
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||30|| ------>>>> अगला

3.2 उत्तमा, श्रावस्ती के एक करोड़पति (सेठी) की पुत्री, पताचारा की शिष्या।
पूर्व बुद्धों के अधीन अच्छे कर्मों का संचय करते हुए, विपस्सी बुद्ध के समय में उनका जन्म बंधुमती में एक धनी जमींदार के घर हुआ और वे घरेलू सेविका बन गईं। बड़ी होकर उन्होंने अपने स्वामी के घर की देखभाल की। उस समय, राजा बंधुमा (विपस्सी के पिता) ने व्रत प्रथा को पुनः स्थापित किया और भोजन से पहले दान देते थे और भोजन के बाद प्रवचन सुनते थे। लोगों ने उनके इस नेक उदाहरण का अनुसरण करते हुए व्रत रखा, तो दासी ने सोचा: 'मैं भी क्यों न इन सबका अनुसरण करूँ?' व्रतों का पूर्ण पालन करने के कारण उनका पुनर्जन्म तैंतीस देवताओं (स्वर्ग में देवदूतों) के बीच और अन्य सुखी लोकों में हुआ, और अंत में, इस बुद्ध युग में, श्रावस्ती के एक करोड़पति (सेठी) के घर में हुआ। विवेक की आयु में आकर, उन्होंने पताकारा का उपदेश सुना और संघ में प्रवेश किया; लेकिन वे अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में प्रगति करने में असमर्थ रहीं, जब तक कि पताकारा ने उनकी मनस्थिति को देखकर उन्हें उपदेश नहीं

दिया। इससे स्थापित होकर, उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके वास्तविक रूप और अर्थ में पूर्णतः समझ लिया। और उस पर पीछे मुड़कर देखते हुए, उन्होंने आनंदपूर्वक इस प्रकार कहा:
चार बार नहीं, पांच बार, मैं अपनी कोठरी से तेजी से बाहर निकला।

और मन की शांति की तलाश में भटकता रहा।

विचारों के शासन को प्राप्त करने के व्यर्थ प्रयास लंबे समय से जारी हैं।

मैं उन्हें कैद में नहीं ला सका। (42)

वह महान भिक्षुणी मेरे पास आई।

धर्म में मेरी पालक माँ कौन थीं?

उन्होंने मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया, जिसे मैंने सीखा।

इस क्षणिक स्व की प्रकृति.[2] (43)

और मैंने उनकी सारी बातों का ध्यान रखा, यहाँ तक कि जब वह पढ़ा रही थीं तब भी।

मैं सात दिनों तक ध्यान की अवस्था (ध्यान में समाधि की अवस्था) के आनंद में बैठा रहा।

और आराम से, पालथी मारकर; अंततः आठवें दिन।

मैंने अपने हाथ-पैर फैलाए और शांति से अपने रास्ते चला गया।

क्योंकि मैंने चारों ओर फैले अंधकार को चीर डाला था। (44)

अब, यह उनकी अन्ना (प्रबुद्ध अवस्था) की पुष्टि थी।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] शाब्दिक रूप से, खंड, इंद्रिय-बोध की प्रकृति और आत्मा के तत्व।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा3.3
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||31|| ------>>>> अगला

3.3 एक अन्य उत्तमा, कोसल ब्राह्मण की पुत्री।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेकर और अनेक जन्मों में युगों-युगीन प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित करके, विपस्सी बुद्ध के समय में बंधुमती में एक गृहस्थी के रूप में जन्म लिया। एक दिन, गुरु के संघ के एक अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) को भिक्षा मांगते देख, उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें तीन मीठे केक भेंट किए। इस (अच्छे कर्म) के कारण उन्होंने अनेक बार सुखमय जन्म लिए और अंततः इस बुद्ध युग में कोसल देश के एक प्रख्यात ब्राह्मण के परिवार में जन्म लिया। जब वे समझदार हुईं, तो उन्होंने देश में भ्रमण करते हुए गुरु (बुद्ध) के उपदेश सुने और संसार को त्यागकर शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान प्रबुद्धता) प्राप्त कर लिया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके वास्तविक रूप और अर्थ में पूर्णतः समझ लिया। और उस पर विचार करते हुए, उन्होंने आनंदपूर्वक इस प्रकार कहा:

जागृत मन के सात कारक

सात तरीके जिनसे हम निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं —

मैंने सब कुछ विकसित किया है और उसे परिपक्व बनाया है।

बुद्ध के वचन के अनुसार भी। (45)

इच्छा पूरी हुई: मैंने शून्य (निर्वाण) को जीत लिया,[1]

मैं कारण-कार्य संबंध को समझती हूँ! बुद्ध की पुत्री,

मैं उनके मुख से, उनके पवित्र वचन से जन्मा हूँ, और मैं खड़ा हूँ।

निर्वाण के आनंद से सदा ग्रस्त। (46)

और वे सभी इंद्रिय-इच्छाएँ जो देवताओं (देवदूतों) को बांधती हैं,

जो भी बाधाएँ पुरुषों को रोकती हैं, उन्हें पूरी तरह से भगा दिया जाता है।

जन्मों का अनंत चक्र समाप्त हो गया है।

मेरे लिए पुनर्जन्म (पुनर्जन्म) कभी दोबारा नहीं आएगा। (47)

[1] 'शून्य,' यानी मैं लोभ, द्वेष और सुस्ती से मुक्त हूँ, जो सभी बुराइयों के तीन स्रोत हैं। 'निशानहीन,' यानी मैं किसी भी ऐसी चीज़ से लगाव से मुक्त हूँ जिसे क्षणभंगुर, बुरा या आत्मा वाला 'चिह्नित' किया गया हो।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा3.4
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ll32ll ------>>>> अगला

3.4 दंतिका, कोसल के राजा के ब्राह्मण पुजारी की पुत्री, सावत्थी।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और इस-उस जन्म में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित किए थे। जब संसार में कोई बुद्ध नहीं था, तब वे चंदाभागा नदी के किनारे एक परी के रूप में जन्मीं। एक दिन परियों के साथ खेलते हुए और कुछ देर भटकते हुए उन्होंने एक वृक्ष की तलहटी में बैठे एक मौन बुद्ध को देखा और श्रद्धापूर्वक पुष्प अर्पित किए। इस (अच्छे कर्म) के कारण उनका कई बार देवताओं और मनुष्यों के बीच पुनर्जन्म हुआ और अंत में, इस बुद्ध युग में, सावत्थी में, राजा के पुरोहित-ब्राह्मण के घर में जन्म हुआ। जब वे समझदार हुईं, तो वे जेतवन वन (मठ) में एक गृहस्थ बन गईं और बाद में महान प्रजापति गौतमी (बुद्ध की पालक माता और भिक्षुणियों की प्रमुख) के अधीन भिक्षुणी बन गईं। और एक दिन, राजगृह में रहते हुए, भोजन के बाद वे गिद्ध शिखर पर चढ़ गईं और विश्राम करते समय उन्होंने एक पालतू हाथी को अपने प्रशिक्षक के निर्देश पर अपना पैर फैलाते हुए देखा। यह देखकर उनकी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में वृद्धि हुई, जिससे उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके वास्तविक रूप और अर्थ में पूर्णतः समझ लिया। इसके बाद, अपनी इस उपलब्धि के विचार से प्रसन्न होकर उन्होंने आनंदपूर्वक कहा:
गिद्ध शिखर पर दोपहर के विश्राम के बाद,

मैंने एक हाथी को नहलाते हुए देखा।

नदी से निकला।, (48)

और एक व्यक्ति ने अपना अंकुश लेकर उस विशालकाय प्राणी को निर्देश देना शुरू किया।

अपना पैर फैलाते हुए: 'मुझे अपना पैर दो!' हाथी

आज्ञा का पालन किया गया, और ड्राइवर उसकी गर्दन पर झपट्टा मार उठा। (49)

मैंने जंगली को वश में होते देखा, मैंने उसे झुका हुआ देखा

स्वामी की इच्छा का पालन करते हुए; और मन ही मन ध्यान देते हुए,

मैं ध्यान लगाने के लिए जंगल की गहराई में चला गया और वहाँ

मैंने समाधि की अवस्था में मन पर विजय प्राप्त की। (50)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा3.5
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||33|| ------>>>> अगला

3.5 उब्बिरी, श्रावस्ती के एक महान कुलीन परिवार की पुत्री और राजा की पत्नी।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के समय में संकल्प लिया था और जन्म-जन्मांतर में एक युग तक मान्य अच्छे कर्म संचित किए थे। उनका पुनर्जन्म पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय में हंसवती नगर में एक कुलवासी के घर में हुआ। एक दिन जब वे समझदार हो गईं, तो उनके माता-पिता घर के भीतरी प्रांगण में एक भोज में व्यस्त थे, इसलिए वे घर में अकेली रह गईं। उन्होंने देखा कि एक अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) घर के द्वार की ओर आ रहे हैं, तो उन्होंने उनसे कहा, 'प्रभु, अंदर आइए,' और उन्हें प्रणाम करते हुए बैठने के लिए कहा; फिर उन्होंने उनका कटोरा लिया और उसमें भोजन भर दिया। अरहंत ने उन्हें धन्यवाद दिया और चले गए। फिर उनका पुनर्जन्म तैंतीस देवताओं (देवदूतों) के स्वर्ग में हुआ, जहाँ उन्होंने स्वर्गिक सुख भोगा और अनेक सुखमय जीवन व्यतीत किए। बुद्ध युग में उनका पुनर्जन्म श्रावस्ती में एक अत्यंत प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। वे अत्यंत सुंदर थीं और उन्हें स्वयं कोसल के राजा के घर लाया गया।[1] कुछ वर्षों बाद उनकी एक पुत्री हुई, जिसका नाम उन्होंने जीव रखा। राजा ने बच्ची को देखकर इतना प्रसन्न हुए कि उन्होंने उब्बिरी का राज्याभिषेक करवा दिया। परन्तु बाद में उस छोटी बच्ची का निधन हो गया और माता प्रतिदिन श्मशान घाट पर शोक मनाने जाती थीं। एक दिन वे वहाँ गईं और गुरु (बुद्ध) की आराधना की और बैठ गईं; परन्तु शीघ्र ही वे उठकर अचिरावती नदी के किनारे विलाप करने लगीं। तब गुरु ने उन्हें दूर से देखा और अपने 'सुगंधित कक्ष' से प्रकट एक अलौकिक आकृति के रूप में स्वयं को प्रकट किया और उनसे पूछा: 'तुम क्यों रो रही हो?' उसने कहा, 'मैं अपनी पुत्री भगवा (भगवान बुद्ध) के कारण रो रही हूँ।' बुद्ध ने कहा, 'इस श्मशान में तुम्हारी लगभग 84,000 पुत्रियाँ दफ़न हैं। तुम उनमें से किसके लिए रो रही हो?' और उस स्थान की ओर इशारा करते हुए जहाँ इसे और उसे दफ़न किया गया था, उन्होंने आधी बात कही:
हे उब्बिरी, जो जंगल में विलाप करता है,

'ओ जीवा! ओ मेरी प्यारी बेटी!' कहकर रोते हुए।

होश में आओ! देखो, इस कब्रिस्तान में

हजारों प्यारी बेटियाँ जलकर राख हो गईं।

और उन सभी का नाम उसी के समान रखा गया था।

अब तुम उन सभी जीवों में से किस जीव का शोक मनाते हो? (51)

और उसने गुरु (बुद्ध) द्वारा सिखाए गए धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) पर बुद्धिमत्तापूर्वक विचार किया, और विपश्यना[1] में इस प्रकार तल्लीन हो गई कि, उनके उपदेश और स्वयं विपश्यना[1] की प्राप्ति के फलस्वरूप, वह सर्वोच्च फल, यहाँ तक कि अरहंतत्व (बुद्ध के समतुल्य ज्ञान)[2] तक पहुँच गई। और अपनी प्राप्त उच्च विशिष्टता को दर्शाते हुए, उसने भजन का दूसरा भाग कहा:

देखो! मेरे हृदय से (दुख का) छिपा हुआ बाँट निकल गया है!

उसने वहां स्थित शाफ्ट को हटा दिया है।

और मेरे मृत बच्चे के लिए वह असहनीय शोक

जिसने मेरे पूरे जीवन को विषैला बना दिया था, वह मर चुका है। (52)

आज मेरा दिल ठीक हो गया है, मेरी तड़प अभी भी बाकी है।

और भीतर सब कुछ पवित्रता और शांति से परिपूर्ण है।

मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ।

धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) और संघ (व्यवस्था) के लिए।[3] (53)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान विधि को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] वह न केवल एक गैर-दीक्षित गृहस्थ महिला के रूप में इसे प्राप्त करती है।
[3] बौद्ध त्रिमूर्ति या त्रिरत्न
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 3.6
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||34|| ------>>>> अगला

3.6 सुक्का, राजगाह के एक महान कुलीन परिवार की पुत्री, धम्मदिन्ना की शिष्या, उपदेशक के रूप में विख्यात।
पूर्व थेरियों की तरह, वह भी अतीत में एक कुलवासी के घर में जन्मी थीं। जब वे समझदार हुईं, तो वे गृहस्थ महिला शिष्यों के साथ विहार (मठ) गईं, [1] और गुरु (बुद्ध) का उपदेश सुना। विश्वासी बनकर, उन्होंने संसार का त्याग कर दिया और विद्वान, धर्मशास्त्र में निपुण और कुशल वक्ता बन गईं। सदियों तक ब्रह्मचर्य का पवित्र जीवन व्यतीत करते हुए, [2] वे हृदय से सांसारिक ही रहीं और आनंद के स्वर्ग में पुनर्जन्म लिया। फिर, जब विपस्सी बुद्ध थे, और फिर जब वेसाभु बुद्ध थे, तब उन्होंने नैतिक उपदेशों (शील) का पालन किया और विद्वान एवं धर्मशास्त्र में निपुण रहीं। फिर, जब काकुसंध बुद्ध थे, और फिर जब कोनागमना बुद्ध थे, तब उन्होंने संन्यासी बन गईं और उनका आचरण शुद्ध, विद्वतापूर्ण और उपदेशात्मक था। अंततः, इसी बुद्ध युग में, उनका पुनर्जन्म राजगृह में एक प्रतिष्ठित कुलीन परिवार में हुआ और उन्हें सुक्का (उज्ज्वल, तेजस्वी) कहा गया। विवेक की आयु में आकर, उन्होंने अपने घर में ही गुरु (बुद्ध) में आस्था पाई और गृहस्थ शिष्या बन गईं। लेकिन बाद में, जब उन्होंने धम्मदिन्ना का उपदेश सुना, तो वे बहुत प्रेरित हुईं और उन्होंने संसार का त्याग कर दिया। और अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[3]) का अभ्यास करते हुए, उन्होंने कुछ ही समय बाद अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके वास्तविक रूप और अर्थ में पूर्ण रूप से समझ लिया।
इसके बाद, 500 भिक्षुणियों के साथ, वे एक महान उपदेशक बन गईं। एक दिन, जब वे राजगृह में भिक्षा मांगने गए और भोजन करके लौटे, तो वे भिक्षुणियों के आश्रम में गए। सुक्का ने अपने चारों ओर बैठी हुई भिक्षुणियों के एक बड़े समूह के साथ इस प्रकार उपदेश दिया कि ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह उन्हें मीठा शहद पिला रही हो और उन पर अमृत छिड़क रही हो। वे सभी एकाग्रचित्त होकर, बिना हिले-

डुले, ध्यानपूर्वक उनकी बातें सुन रहे थे। तभी भिक्षुणी की छत के अंत में स्थित वृक्ष में निवास करने वाले देवता उनके उपदेश से प्रेरित हुए और राजगृह जाकर सड़कों और चौकों पर घूम-घूमकर उनकी श्रेष्ठता का बखान करते हुए कहने लगे:
राजगाह के लोगों, आप क्या चाहते हैं?

तुमने क्या किया है? तुम यहाँ बिल्कुल चुप और निष्क्रिय बैठे हो।

तुम ऐसे लेटे रहते हो मानो शराब के नशे में चूर हो।

और सुक्का का इंतज़ार भी न करो, जब वह खुलासा करे

बुद्ध द्वारा दी गई अनमोल शिक्षा। (54)

मुझे लगता है कि बुद्धिमान लोग पीने में प्रसन्न होते थे।

जीवन का वह अमृत, एक बार प्राप्त हो जाए तो कभी खोता नहीं।

जो उसके मीठे शब्दों में हमेशा उभर कर सामने आता है,

जैसे राहगीर बारिश का स्वागत करता है। (55)

और वृक्ष-आत्मा की बातें सुनकर लोग प्रेरित हुए और थेरी के पास आकर ध्यान से सुनने लगे।

बाद के समय में, जब थेरी अपने जीवन के अंत में निर्वाण की अवस्था में थीं और यह दिखाना चाहती थीं कि उनके द्वारा सिखाई गई प्रणाली किस प्रकार मोक्ष की ओर ले जाती है, तो उन्होंने अपने अन्न (प्रबुद्ध अवस्था) की घोषणा इस प्रकार की:

हे प्रकाश के बालक! धम्म (शाश्वत सत्य) के प्रकाश से!

तीव्र इच्छाओं से मुक्त, दृढ़, आत्म-नियंत्रित, शांत।

अपने अंतिम नश्वर शरीर को इसी उद्देश्य के लिए धारण करो।

क्योंकि तुमने मारा (शैतान) और उसकी सेना पर विजय प्राप्त कर ली है। (56)

[1] प्राचीन काल में, बुद्ध या प्रमुख शिक्षक के लिए आरक्षित झोपड़ी या शैले, ऐसे ही कई झोपड़ियों के समूह में स्थित होते थे, जिनमें एक खुला हॉल और उससे सटा हुआ एक विश्राम कक्ष होता था।
[2] माना जाता था कि पूर्वकाल में मानव जीवन की अवधि बहुत लंबी होती थी।
[3] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान विधि को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा3.7
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||35|| ------>>>> अगला

3.7 सेला, 'अलवीका', अलवी के राजा की पुत्री।

वह भी पूर्व थेरी की तरह अतीत में रह चुकी थीं। उनका जन्म हंसावती में एक कुलवासी के घर में हुआ था और उनके माता-पिता ने उनका विवाह उसी कुलवासी के पुत्र से कर दिया था। उनके साथ वह उनकी मृत्यु तक सुखपूर्वक रहीं। फिर, वृद्धावस्था में, और अच्छे गंतव्य (परलोक) की खोज में चिंतित होकर, वह धर्म के शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से स्थान-स्थान, विहार-विहार भटकती रहीं। [1] फिर एक दिन वह गुरु के बोधि वृक्ष के पास आईं और बैठ गईं, यह सोचते हुए: 'यदि बुद्ध, भगवान, मनुष्यों में अद्वितीय और अतुलनीय हैं, तो यह मुझे बुद्धत्व का चमत्कार दिखाएँ।' यह विचार आते ही वृक्ष प्रज्वलित हो उठा, शाखाएँ मानो सोने की बनी हुई प्रतीत हुईं, और क्षितिज चारों ओर चमक उठा। उस दृश्य से प्रेरित होकर, वह नीचे गिर पड़ीं और पूजा की, और सात दिनों तक वहीं बैठी रहीं। सातवें दिन उन्होंने बुद्ध को भव्य भोज और पूजा अर्पित की। इस पुण्य कर्म के फलस्वरूप उनका पुनर्जन्म बुद्ध युग में, अलावी राज्य में, राजा की पुत्री के रूप में हुआ और उनका नाम सेला रखा गया। उन्हें 'अलवीका' के नाम से भी जाना जाता था। जब वे समझदार हुईं, तो उनके पिता गुरु (बुद्ध) के शिष्य बन गए, उन्होंने दीक्षा भी ली और उनके साथ अलावी नगर चले गए। सेला, जो अभी अविवाहित थीं, राजा के साथ गईं और गुरु (बुद्ध) के उपदेश सुने। वे विश्वासी और गृहस्थ शिष्या बन गईं। बाद में, जब उनके भीतर ज्ञानोदय की धाराएं प्रवाहित होने लगीं, तो उन्होंने दीक्षा ली, विपश्यना[3] में गहन साधना की और अपने भीतर की प्रतिभा और ज्ञान की परिपक्वता के कारण, उन्होंने विचार, वचन और कर्म के संस्कारों (इच्छाओं, भावनाओं, आदतों) को कुचलकर[4] शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया।
उस समय से, एक वरिष्ठ नागरिक के रूप में, वह सावत्थी में रहने लगीं। एक दिन वह सावत्थी से निकलकर अंधकारमय वन (अंध-वनम) में ध्यान करने गईं और एक पेड़ के नीचे बैठ गईं। तभी मारा (राक्षस), अकेला और उनकी एकांतता भंग करने की इच्छा से, एक अजनबी का वेश धारण करके उनके पास आया और बोला:
इस दुनिया में रहते हुए आपको कभी भी इससे छुटकारा नहीं मिलेगा!

फिर अकेलेपन से आपको क्या लाभ होता है?

जब तक संभव हो, जीवन की अच्छी चीजों का आनंद लें।

अन्यथा पश्चाताप करो, वरना बहुत देर हो जाएगी। (57)

तब थेरी ने मन ही मन सोचा, 'यह वही मूर्ख मारा (राक्षस) है जो मुझे प्रकट हुए निर्वाण से वंचित करना चाहता है और मुझे कामुक जीवन चुनने के लिए कहता है। वह नहीं जानता कि मैं अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) हूँ। अब मैं उसे बताकर उसे भ्रमित करूँगा।' और फिर उन्होंने निम्नलिखित पाठ किया:

भाले और बरछी की तरह ही इंद्रियों का आनंद होता है।

जो हमारे नश्वर शरीरों को भेदकर चीर-फाड़ देते हैं।

इन्हें ही आप जीवन की अच्छी चीजें कहते हैं।

उस वर्ग की अच्छाई मेरे लिए कुछ भी मायने नहीं रखती। (58)

हर तरह से सुख की लालसा दूर हो जाती है।

और भीतर का अज्ञान भाग दूर हो जाता है

हे दुष्ट, यह जान लो!

हे विनाशक, यहाँ तुम विजयी नहीं होगे। (59)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 3.8
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||36|| ------>>>> अगला

3.8 सोम, मगध के राजा (बिम्बिसार) के पुरोहित ब्राह्मण की पुत्री।

पूर्व थेरी की तरह, वह भी अतीत में जन्म ले चुकी थीं और सिख बुद्ध काल में [1] एक प्रतिष्ठित कुलीन परिवार में पुनर्जन्म लेकर बड़ी हुईं और राजा अरुणाव की मुख्य पत्नी बनीं। उनके अतीत की कहानी थेरी अभया के समान है। उनकी वर्तमान कहानी यह है कि इस बुद्ध युग में, उन्होंने राजगृह में राजा बिम्बिसार के पुरोहित की पुत्री के रूप में पुनर्जन्म लिया और उनका नाम सोम रखा गया। समझदार होने पर, उन्होंने अपने घर में ही गुरु (बुद्ध) पर विश्वास किया और एक गृहस्थ शिष्या बन गईं। बाद में, स्वयं प्रेरित होकर, उन्होंने भिक्षुणी संघ में प्रवेश किया और विपश्यना [2] का अभ्यास करते हुए, कुछ ही समय बाद अर्हंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को अक्षरशः और भाव से भलीभांति समझ लिया।

फिर, सावत्थी में ज्ञान के आनंद में लीन होकर, वह एक दिन अंधकारमय वन में ध्यान करने के लिए निकली और एक वृक्ष के नीचे बैठ गई। तभी मारा (राक्षस), अकेला, और कामवासना से उसे विचलित करने की इच्छा से, अदृश्य रूप से हवा में उसके पास आया और बोला:

ऋषियों को जिस श्रेष्ठ स्थान तक पहुंचना संभव हो, वह कठिन है।

पहुँचने के लिए। अपनी दो उंगलियों की चेतना के साथ

वह स्त्री लाभ प्राप्त करने में सक्षम नहीं है! (60)

सात या आठ साल की उम्र से ही महिलाओं को हर समय चावल उबालना पड़ता है, उन्हें यह पता नहीं होता कि चावल कब पक गया है, बल्कि उन्हें चम्मच में कुछ दाने लेकर दो उंगलियों से दबाना पड़ता है; इसीलिए 'दो उंगलियों से समझने' वाली कहावत प्रचलित है। तब बड़े ने मारा (शैतान) को फटकारा:

स्त्री की प्रकृति हमें किस प्रकार बाधित कर सकती है?

जिनके मन दृढ़ निश्चय वाले हों, जो हमेशा गतिशील रहें

क्या ज्ञान में वृद्धि के साथ-साथ हम इस मार्ग पर आगे बढ़ते रहेंगे?

इसका उस व्यक्ति के लिए क्या अर्थ हो सकता है जिसमें

क्या अंतर्दृष्टि वास्तव में धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को समझ सकती है? (61)

हर तरह से सुख की लालसा दूर हो जाती है।

और भीतर का अज्ञान भाग दूर हो जाता है

हे दुष्ट, यह जान लो!

हे विनाशक, यहाँ तुम विजयी नहीं होगे। (62)

[1] सात बुद्धों में से द्वितीय।

[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय होता है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा4.1

श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,

www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<------ ||37|| ------>>>> अगला

4.1 कपिलानी भद्दा, कोसिया ब्राह्मण की पुत्री, सगला में रहने वाली, महातीथ के पिप्पली कस्सपा (महा-कस्सपा) की पत्नी, पूर्व जन्मों को याद रखने वाले थेरियों में अग्रणी, एक विशिष्ट उपदेशक।

उनका जन्म पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय में हंसावती में एक कुलवासी के घर में हुआ था। जब वे समझदार हुईं, तो उन्होंने गुरु (बुद्ध) का उपदेश सुना और देखा कि उन्होंने पूर्व जन्मों को याद रखने वालों में एक भिक्षुणी को प्रथम स्थान दिया है। इससे प्रेरित होकर उन्होंने भी ऐसा ही स्थान प्राप्त करने का संकल्प लिया। जीवन भर पुण्य कर्म करते हुए, उनका पुनर्जन्म बनारस में एक कुलवासी के घर में हुआ, जब कोई बुद्ध प्रकट नहीं हुए थे, और समय आने पर उनका विवाह हो गया।

फिर एक दिन उनका अपनी भाभी से झगड़ा हो गया। जब भद्दा ने मौन बुद्ध को भोजन कराया, तो उसने सोचा, 'इससे उसे यश मिलेगा,' और उनके हाथ से कटोरा लेकर उसमें भोजन की जगह मिट्टी भर दी। लोगों ने कहा, 'मूर्ख स्त्री! मौन बुद्ध ने ऐसा क्या किया है जिससे तुम्हें ठेस पहुंची?' वह अपने आप पर लज्जित हुई, उसने कटोरा वापस लिया, उसे खाली किया और सुगंधित पाउडर से रगड़कर साफ किया, उसमें चार प्रकार के मीठे प्रसाद भरे और ऊपर से कमल के रंग का घी छिड़का। चमकते हुए कटोरे को मौन बुद्ध को लौटाते हुए उसने प्रार्थना की: 'काश मेरा शरीर भी इस कटोरे की तरह चमकता रहे!'

अनेक सौभाग्यशाली पुनर्जन्मों के बाद, वह कश्यप बुद्ध के समय में बनारस में एक धनी करोड़पति (सेठी) की पुत्री के रूप में पुनर्जन्म हुई। परन्तु अपने पिछले कर्मों के फल के कारण उसका शरीर दुर्गंधयुक्त था और वह दूसरों को घृणित लगती थी। इससे बहुत दुखी होकर, उसने अपने आभूषणों को सोने की ईंट में बदलवाकर बुद्ध के मंदिर में रख दिया और कमलों से सजे हाथों से प्रणाम किया। इस कार्य से उसका शरीर, उसी जन्म में भी, सुगंधित और मधुर हो गया। एक प्रिय पत्नी के रूप में उसने जीवन भर अच्छे कर्म किए, स्वर्ग में दिव्य सुखों के लिए पुनर्जन्म लिया और अंत में बनारस के राजा की पुत्री के रूप में जन्म लिया। वहाँ उसने मौन बुद्धों की सेवा करते हुए वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत किया। उनके देहांत से वह बहुत दुखी हुई और संसार त्याग कर तपस्या करने लगी। वनों में निवास करते हुए उसने ध्यान का अभ्यास किया और ब्रह्मलोक में पुनर्जन्म लिया, और वहाँ से सागला में कोसिया वंश के एक ब्राह्मण के परिवार में जन्म लिया। भव्य रूप से पली-बढ़ी, उसका विवाह महा-तीथ्थ गाँव में युवा कुलीन पिप्पली से हुआ। जब उसने संसार त्याग दिया, तो उसने अपनी अपार संपत्ति अपने रिश्तेदारों को सौंप दी ताकि वह भी वैराग्य का मार्ग अपना सके। और वह पाँच साल तक ननों के मठ में रहीं,[1] जिसके बाद उन्हें महान प्रजापति गौतमी (ननों के संघ की प्रमुख और बुद्ध की दिवंगत माता की बहन और सहपत्नी) द्वारा दीक्षा दी गई। अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[2]) में स्थापित होकर, उन्होंने जल्द ही अरहंत पद (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया।

और फिर वह अपने पूर्व जन्मों के ज्ञान में निपुण हो गईं, अपने संकल्प की प्रबल शक्ति के कारण (जो उन्होंने बीते युगों में किया था), और इस मामले में गुरु (बुद्ध) ने उन्हें प्रथम स्थान दिया, जब वे आर्यों के समूह के बीच जेतवन वन (मठ) में बैठे थे,[3] और उन्होंने भिक्षुणियों का वर्गीकरण किया। एक दिन उन्होंने अपने सभी अनुभवों को याद करते हुए, महान गुरु कश्यप के गुणों की प्रशंसा करते हुए एक भजन गाया,[4] इस प्रकार:

वह बुद्ध का पुत्र और उनका उत्तराधिकारी है।

महान कस्सपा, आत्म-स्वामी, शांत!

सुदूर बीते दिनों की कल्पना उनके मन में बसी है।

हाँ, स्वर्ग और नरक में उसके लिए कोई रहस्य नहीं है। (63)

उसने मृत्यु और पुनर्जन्म दोनों पर विजय प्राप्त की है।

संत वह होता है जिसे गहन रहस्यवादी ज्ञान प्राप्त हो।

सीखने की तीन शाखाओं द्वारा[5]

त्रिविध ज्ञानी (त्रे-विद्या) [6],

उन्हें ब्राह्मण कहा जाता है। (64)

वह भी, भड्डा द कपिलन- तीन बार बुद्धिमान[6]

और जन्म और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाली वही है।

इस उद्देश्य से वह अपना अंतिम अवतार धारण करती है।

क्योंकि उसने मारा (शैतान) और उसकी सेना पर विजय प्राप्त कर ली है। (65)

हम दोनों ने, उसने और मैंने, उस पीड़ा को देखा है।

और संसार पर दया करके वे आगे बढ़ गए।

हम दोनों ही अरहंत हैं और हमने अपने आत्म-नियंत्रण को भलीभांति सिद्ध कर लिया है।

हम दोनों शांत हैं, अब हमारा निर्वाण है! (66)

[1] तिथियाराम, सावत्थी में जेतवव उपवन के पास।
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोत्कृष्ट अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[3] पिटकों में इसका अर्थ बुद्ध, मौन बुद्ध और उनके शिष्य हैं।
[4] बुद्ध के निधन के बाद महा-कस्सपा बौद्ध संघ के नेता बने। अपादान के अनुसार, कस्सपा उनके पति पिप्पली के समान थे और तीन पूर्व जन्मों में उनके पति रहे थे। कस्सपा या तो पारिवारिक नाम था या व्यक्तिगत नाम; पिप्पली या तो व्यक्तिगत नाम था या स्थानीय नाम।
[5] तीन प्रशिक्षण हैं: i. शील (नैतिक उपदेश) ii. समाधि (ध्यान और समाधि अवस्था प्राप्त करना) iii. पन्ना (ध्यान समाधि अवस्थाओं से उत्पन्न प्रत्यक्ष दिव्य समझ)
[6] त्रिविध ज्ञानी: ज्ञानोदय के बाद की उपलब्धियाँ (i) पिछले पुनर्जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी स्वर्गीय आँख (या दिव्य दृष्टि) जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर सभी आसवों (इंद्रिय इच्छाओं) का विनाश, अर्थात् पवित्रता।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

भद्दा महा कस्सपा की पूर्व पत्नी थीं। अपने पति के साथ उन्होंने ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत किया और अंततः सत्य की खोज में तपस्वी जीवन व्यतीत करने के लिए अपनी सारी संपत्ति और सामर्थ्य त्याग दी। जब कस्सपा ने उन्हें गुरु की खोज में अलग होने का सुझाव दिया, तो वे सहमत हो गईं और मार्ग के बाईं ओर मुड़कर श्रावस्ती पहुँचीं। उन्होंने जेतवन में बुद्ध के धम्म का प्रवचन सुना, लेकिन चूंकि बुद्ध ने अभी तक नन-सांत्वना संघ की स्थापना नहीं की थी, इसलिए वे तपस्वियों के एक अन्य संप्रदाय के साथ नन-सांत्वना में रहीं।

लगभग पाँच वर्ष बाद बुद्ध ने नन-सांत्वना संघ की स्थापना की। भद्दा तब संघ में शामिल हुईं, ध्यान किया और अरहंतत्व प्राप्त किया। पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय, भद्दा ने अपने पति के साथ मिलकर कई पुण्य कर्म किए थे। कस्सपा, जिन्हें उस समय वेदेह के नाम से जाना जाता था, एक तपस्वी भिक्षु से प्रेरित थे, जबकि भद्दा एक ऐसी भिक्षुणी से प्रेरित थीं जो कई जन्मों को याद रख सकती थीं। अनेक पुण्य कर्म करने के बाद, उन्होंने जन्मों को याद रखने वाली अग्रणी भिक्षुणी बनने की इच्छा रखी। पद्ममुत्तरा बुद्ध ने उनकी इस इच्छा को पूर्ण होते देख घोषणा की कि गौतम बुद्ध के समय, जो भविष्य में एक लाख विश्व चक्रों के बाद होगा, वे जन्मों को याद रखने वाली अग्रणी भिक्षुणी होंगी।

महान अरहंतों की आकांक्षाओं और उनकी पूर्ति के प्रभावों को देखना रोचक है। यद्यपि भद्दा में अरहंत बनने की क्षमता थी और उन्होंने महा प्रजापति से पाँच वर्ष पूर्व ही संन्यासी जीवन व्यतीत कर लिया था, फिर भी उन्हें भिक्षुणियों का संघ स्थापित करने की कोई इच्छा नहीं थी। उनकी आकांक्षा तो जन्मों के युगों को याद रखने की थी। यही ज्ञान उनका बल था और इसी से वे अपने शिष्यों को प्रेरित करती थीं।

महान शिष्यों के इतिहास का अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि वे स्वभाव और रुचियों में कितने विविध थे, प्रत्येक शिष्य अलग-अलग गुणों से प्रेरित था, अपनी रुचि के अनुसार मार्ग चुनता था और फिर इस क्षमता का उपयोग दूसरों को सत्य का दर्शन कराने में करता था। भद्दा ने अपने पूर्व जन्मों के ज्ञान का उपयोग अपने शिष्यों को पुण्य कर्म करने और लगन से परिश्रम करने के लिए प्रेरित करने और उनमें रुचि जगाने के लिए किया।

भद्दा और कश्यप के बीच के संबंध भी रोचक हैं। बुद्ध पद्ममुत्तरा के युग में, भद्दा और वेदेह ने अनेक पुण्य कर्म किए और मृत्यु के बाद स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लिया।

अगला दर्ज जीवन वृत्तांत कई वर्षों बाद, बुद्ध विपस्सी के समय का है, जो बुद्ध गौतम से पाँचवें पूर्व बुद्ध थे, और बुद्ध गौतम से इक्यावन विश्व चक्र पहले के थे। उस समय भद्दा और कश्यप एक बार फिर पति-पत्नी थे, लेकिन वे अत्यंत गरीब थे। इतने गरीब कि उनके पास केवल एक ही उत्तम वस्त्र था। पति-पत्नी बारी-बारी से उस एक वस्त्र को पहनते थे।

उस समय विपस्सी बुद्ध विशेष प्रवचन दे रहे थे और भद्दा तथा उनके पति एकासतक दोनों ही उन्हें सुनना चाहते थे। उनके पास केवल एक ही वस्त्र था, इसलिए भद्दा दिन में और उनके पति रात में गए। प्रवचन सुनते-सुनते एकासतक के मन में दान और उदारता का भाव इतना गहरा बैठ गया कि वे अपना एकमात्र वस्त्र विपस्सी बुद्ध को अर्पित करना चाहते थे। लेकिन

यह विचार आते ही एकासतक के मन में शंकाएँ उत्पन्न होने लगीं। उनके मन में कई विचार उमड़ने लगे, "बिना वस्त्र के हम कैसे गुजारा करेंगे? हमारे पास बस यही है। क्या मुझे पहले अपनी पत्नी से सलाह नहीं लेनी चाहिए?" फिर इन शंकाओं को दरकिनार करते हुए उन्होंने अपना वस्त्र उतारकर विपस्सी बुद्ध के चरणों में रख दिया। ऐसा करते ही उन्होंने खुशी से ताली बजाई और पुकार कर कहा, "मैं जीत गया! मैं जीत गया!" जब राजा, जो वहाँ उपस्थित थे, ने विजय की यह पुकार सुनी, तो उन्होंने पूछा कि क्या हुआ है। राजा उस गरीब व्यक्ति की उदारता से अभिभूत हो गए। उन्होंने एकाशतक को दरबारी पुरोहित बनाकर उन्हें और उनकी पत्नी को कई वस्त्र भेंट किए।

इस प्रकार उस गरीब दंपति की स्थिति में सुधार हुआ। इस निस्वार्थ कार्य के फलस्वरूप, मृत्यु के समय एकाशतक का पुनर्जन्म स्वर्गलोक में हुआ। वहाँ वे वैभवशाली जीवन व्यतीत करते रहे, जब तक कि उनके पुण्य कर्मों का प्रभाव समाप्त नहीं हो गया, जिसके बाद उनका पुनर्जन्म एक धर्मात्मा राजा के रूप में हुआ और भद्दा उनकी मुख्य रानी बनीं।

कई अन्य पूर्व जन्म कथाएँ भी दर्ज हैं जिनमें कश्यप और भद्दा का संबंध रहा है। एक बार भद्दा और कश्यप आनंद के माता-पिता थे। आनंद के गुरु की वृद्ध माता को आनंद से इतना प्रेम हो गया कि उन्होंने अपने प्रेमी को पाने के लिए अपने गुरु, यानी अपने ही पुत्र की हत्या की योजना बनाई। इसके बाद भद्दा और आनंद दोनों ने संन्यासी जीवन व्यतीत किया।

एक अन्य घटना में कश्यप और भद्दा चार पुत्रों के ब्राह्मण माता-पिता थे। भद्दा के चार पुत्र बोधिसत्व, हमारे बुद्ध गौतम, सारिपुत्त, मोग्गलाना और अनुराधा थे (जातक 509)। उनके माता-पिता और संतान सभी ने तपस्वी जीवन व्यतीत किया था।

एक और रोचक तथ्य यह है कि भद्दा ने दो बुद्धों के बीच के समय में एक पच्चेक बुद्ध के साथ अन्याय किया था। उनका अपनी भाभी से झगड़ा हुआ था और यह देखकर कि उनकी भाभी ने अभी-अभी पच्चेक बुद्ध को सुगंधित भोजन अर्पित किया है, उन्होंने उनका कटोरा ले लिया, भोजन फेंक दिया और उसमें मिट्टी भर दी। लगभग तुरंत ही उन्हें अपने इस कृत्य पर पश्चाताप हुआ। कटोरा वापस लेकर उन्होंने उसे धोया और उसमें सुगंधित, उत्तम भोजन भर दिया।

इस कर्मफल के रूप में, अगले जन्म में भद्दा अपार धन और सौंदर्य के साथ जन्मीं, लेकिन उनके शरीर से असहनीय दुर्गंध आती थी। उनके पति, जो कि कश्यप थे, उस दुर्गंध को सहन नहीं कर सके और उन्हें छोड़कर चले गए। उनके धन और सौंदर्य के कारण उनके कई चाहने वाले थे, लेकिन उनकी दुर्गंध के कारण कोई भी उनके साथ नहीं रहा।

इस काल में, कश्यप नामक पूर्णतः प्रबुद्ध परम बुद्ध का संसार में आगमन हुआ। अपने जीवन को व्यर्थ समझते हुए, भद्र ने अपनी समस्त संपत्ति बेच दी, अपने आभूषणों को पिघलाकर एक स्वर्ण ईंट बनाई और उसे कश्यप बुद्ध के अवशेषों को रखने के लिए बन रहे मंदिर को दान कर दिया। इस कर्म के फलस्वरूप उनका शरीर फिर से सुगंधित हो गया और उनके पूर्व पति ने उन्हें वापस अपना लिया।

भद्र की अंतिम प्रलेखित जीवन कथा के अनुसार, वे बनारस की रानी थीं और उन्होंने अनेक पच्चेक बुद्धों का समर्थन किया था। पच्चेक बुद्धों की अचानक मृत्यु से व्याकुल होकर उन्होंने रानी का जीवन त्याग दिया और तपस्वी जीवन व्यतीत करने लगीं। अपने त्याग और

ध्यानमग्न जीवन शैली के बल पर उनका ब्रह्मलोक में पुनर्जन्म हुआ। उसी समय कश्यप का भी ब्रह्मलोक में पुनर्जन्म हुआ। इस जीवन के बाद उनका मानवलोक में पिप्पली कश्यप और भद्र कपिलना के रूप में पुनर्जन्म हुआ। ब्रह्मलोक के अनुभव ने ही उन्हें ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करने का निश्चय दिलाया।

अरहंत भिक्षुणी भद्दा ने अपना जीवन युवा भिक्षुणियों को मठवासी अनुशासन सिखाने में समर्पित कर दिया। थेरिगाथा में उनके पूर्व पति कश्यप की प्रशंसा और स्वयं की मोक्ष प्राप्ति का वर्णन मिलता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||38|| ------>>>> अगला

5.1 वड्ढेसी, अज्ञात परिवार की, बुद्ध की पालक माता, महान प्रजापति गौतमी की धाय।
वह भी पूर्व थेरी की तरह अतीत में रह चुकी थीं और इस बुद्ध युग में देवदहा (नेपाल) नगर में पुनर्जन्म लेकर महान प्रजापति गौतमी (बुद्ध की पालक माता और भिक्षुणी संघ की प्रमुख) की धाय बनीं। उनका नाम वड्ढेसी था, लेकिन उनके परिवार का नाम ज्ञात नहीं है। जब प्रजापति गौतमी ने संसार त्याग दिया, तो उन्होंने भी ऐसा ही किया। लेकिन पच्चीस वर्षों तक वे इंद्रियों की वासनाओं से ग्रस्त रहीं, एक क्षण के लिए भी उनका ध्यान नहीं लग पाता था और वे अपनी इस स्थिति पर बाहें फैलाकर रोती रहती थीं, जब तक कि अंततः उन्होंने धम्मदिन्ना को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देते हुए नहीं सुना। तब, इंद्रियों से ध्यान हटाकर, उन्होंने ध्यान साधना शुरू की और कुछ ही समय में अंतर्ज्ञान की छह शक्तियों को प्राप्त कर लिया।[1] और अपनी उपलब्धियों को याद करते हुए उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कहा:
मेरे पुरोहित बनने के बाद से पच्चीस वर्षों तक,

एक पल के लिए भी मेरा मन यह नहीं समझ सका।

शांत और निर्मल होने का सुख। (67)

मुझे मन की शांति नहीं मिली। मेरे हर विचार

इंद्रिय-इच्छा के नीच नशे में डूबा हुआ था[2].

बाहें फैलाकर और व्यर्थ आँसू बहाते हुए

एक दयनीय स्त्री के रूप में, मैं अपनी कोठरी में चली गई। (68)

फिर वह उस निर्धन भिक्षुणी के पास आई।

धर्म के संदर्भ में मेरी पालक माँ कौन थी?

उन्होंने मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया, जिसे मैंने सीखा।

इस आत्मा के कारक, अंग, आधार,

अस्थाई यौगिक। (69)

उसकी बातें सुनकर मैं उसके बगल में बैठकर ध्यान करने लगा।

और अब मुझे बीते दिनों की यादें ताजा हो गई हैं।

और मुझमें दिव्य नेत्र स्पष्ट रूप से चमकता है, (70)

मैं दूसरों के विचारों को जानता हूँ।

और असीम इंद्रियों से उन चीजों की ध्वनि सुनें जिनका वर्णन करना असंभव है।

मैं जादुई शक्तियों का प्रयोग करता हूँ;

और सभी घातक इच्छाएँ

वे सभी विषैले विचार दूर हो जाते हैं।

मेरे लिए एक जीवंत सत्य यह है कि छह प्रकार की (जादुई) शक्तियां[1]

और बुद्ध की साधना पूर्ण हो जाती है। (71)

[1] चलाभिन। पिछले स्तोत्र में अभिन को अंतर्ज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ये छह, जिन्हें पन्ना और विज्जा के रूप में भी परिभाषित किया गया है, हैं: इद्धि (जादुई क्षमता), किसी भी स्थान की शुद्ध श्रवण शक्ति, दूसरों के विचारों का ज्ञान, पूर्व जन्मों की स्मृति, अन्य प्राणियों के जीवन का विकास, भीतर आसवों (इंद्रिय-सुख) का निवारण, अर्थात् पवित्रता।
[2] शाब्दिक रूप से, 'इंद्रिय-सुख से लथपथ', और इसे ऐसे व्यक्ति के रूप में समझाया गया है जिसका मन अत्यधिक प्रबल झुकाव से, इंद्रियों द्वारा प्राप्त सभी सुखों के लिए अत्यधिक भावुक इच्छा से तर हो गया हो। 'लथपथ' (अवस्सुता) का रूपक आसवों (इंद्रिय-सुख) नामक प्रमुख दोषों के लगभग समान है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 5.2
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||39|| ------>>>> अगला

5.2 विमला, वैशाली की एक वेश्या की पुत्री, पूर्व वेश्या:
वह भी पूर्व थेरी की तरह अतीत में रह चुकी थी और बुद्ध युग में वैशाली में एक ऐसी स्त्री की पुत्री के रूप में जन्मी, जो अपनी सुंदरता से जीविका कमाती थी। उसका नाम विमला था। जब वह बड़ी हुई और बुरे विचारों में लीन थी, तो एक दिन उसने पूज्य महा-मोग्गलाना (भिक्षुओं के प्रमुख) को वैशाली में भिक्षा मांगते हुए देखा। उनसे आकर्षित होकर वह उनके निवास पर गई और उन्हें लुभाने का प्रयास किया। कुछ लोग कहते हैं कि उसे अन्य संप्रदायों के लोगों ने ऐसा करने के लिए उकसाया था। भिक्षुओं के स्तोत्र (थेरागाथा) में वर्णित अनुसार, वरिष्ठ भिक्षु ने उसके अनुचित व्यवहार की निंदा की और उसे फटकारा। वह लज्जा और आत्म-आलोचना से भर उठी और एक विश्वासी और गृहस्थ अनुयायी बन गई। बाद में उन्होंने संघ में प्रवेश किया, और कड़ी मेहनत और लगन से—क्योंकि सिद्धि का मूल उनके भीतर ही था—कुछ ही समय बाद उन्होंने अरहंत पद (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया। उस समय से, अपनी इस उपलब्धि को याद करते हुए, वे आनंदपूर्वक इस प्रकार कहती थीं:
एक समय मैं अपनी सुंदरता पर कितना गर्व करती थी, कितनी क्रोधित होती थी।

मेरी उत्तम आकृति, लोगों के बीच मेरी प्रसिद्धि और सफलता व्यर्थ है,

अपनी जवानी के अभिमान से भरा हुआ, सत्य से अनभिज्ञ और उदासीन! (72)

देखो! मैंने अपना शरीर बनाया, साहसपूर्वक सजाया, कुशलता से रंगा,

मैंने लड़कों से बात की, जबकि मैं वेश्याओं के दरवाजे पर था।

वह एक चतुर शिकारी की तरह खड़ा था, अपने जाल बुनता हुआ, हमेशा चौकस। (73)

हाँ, मैंने बिना किसी शर्म के अपने शरीर और अपने आभूषणों का प्रदर्शन किया;

मैंने अनेक छल किए, अनेकों के सद्‌गुणों को नष्ट किया। (74)

आज मुंडा सिर और लबादा ओढ़े हुए,

मैं प्रतिदिन भोजन के लिए भिक्षा मांगने निकलता हूँ;

और जंगल के वृक्षों की फैली हुई शाखाओं के नीचे

मैं बैठता हूँ और द्वितीय-ध्यान की परमानंद अवस्था (ध्यानमग्न अवस्था का आनंद) प्राप्त करता हूँ।

जहां तर्क-वितर्क (विचार) समाप्त हो जाते हैं। (75)

अब वे सभी बुरी जंजीरें जो देवताओं (देवदूतों) और मनुष्यों दोनों को गुलाम बनाती हैं

पूरी तरह से फाड़कर अलग कर दिए गए हैं।

जिन इच्छाओं ने मुझे मदहोश कर दिया था, वे अब दूर हो गई हैं।

मैं शांत और संतुष्ट होकर निर्वाण की शांति को जानता हूँ। (76)
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.3
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||40|| ------>>>> अगला

5.3 सिहा, सेनापति सिहा की भतीजी, वैशाली की।
पूर्व थेरियों की तरह ही, उनका भी अतीत में यही हाल रहा। बुद्ध युग में उनका जन्म वैशाली में सेनापति सिहा की बहन के पुत्र के रूप में हुआ। अपने मामा के नाम पर उनका नाम सिहा रखा गया। जब वे समझदार हुईं, तो एक दिन उन्होंने गुरु (बुद्ध) को सेनापति को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देते हुए सुना और अनुयायी बनकर उन्होंने अपने माता-पिता की सहमति से संघ में प्रवेश किया। जब उन्होंने विपश्यना (अंतर्दृष्टि ध्यान) का अभ्यास किया, तो उनका मन बाहरी आकर्षणों की ओर भटकने से नहीं रुका। सात वर्षों तक इस प्रकार व्याकुल होकर उन्होंने निष्कर्ष निकाला, 'मैं इस बुरे जीवन से कैसे मुक्ति पाऊं? मैं मर जाऊंगी।' और एक फंदा लेकर उन्होंने उसे एक पेड़ की शाखा पर लटका दिया और उसे अपने गले में बांधकर, अपने पूर्व प्रयासों के संचयी प्रभाव से, उन्होंने अपने मन को विपश्यना (अंतर्दृष्टि ध्यान) में लीन कर लिया। फिर, जो वास्तव में अपने अंतिम जन्म में आई थीं, उसी क्षण, अपने परिपक्व ज्ञान के माध्यम से, उनमें अंतर्दृष्टि का विकास हुआ और उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके वास्तविक रूप और अर्थ में पूर्णतः समझ लिया। अतः, उन्होंने अपने गले से रस्सी खोलकर वापस मुड़ गईं। अरहंत (बुद्ध के समान ज्ञानी) के रूप में स्थापित होकर, उन्होंने आनंदपूर्वक कहा:
विचलित, इंद्रियजन्य इच्छाओं से व्याकुल,

अधर्मी विचार रखते हुए, [2]

यादों से आहत और उत्तेजित

बीते दिनों की बात है, जिन पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था—(77)

मेरे दिमाग पर भ्रष्ट करने वाला नासूर फैल रहा है-

मैंने खुशी के बेपरवाह सपनों का पीछा किया,

और मुझे मन की शांति नहीं मिली।

सब कुछ इंद्रियों की पसंद के वश में है। (78)

इस प्रकार मैंने सात थकाऊ वर्ष बिताए।

अशांति के दुख में, मैं, दुखी,

दिन हो या रात, कोई सुख नहीं मिला, (79)

इसलिए उसने एक रस्सी ली और जंगल में कूद गया:

'मेरे लिए एक मित्रवत फांसी का पेड़ ही बेहतर है!'

मैं फिर से दुनिया का नीच जीवन जीऊंगा।' (80)

मैंने जो फंदा बनाया वह मजबूत था; और एक शाखा पर

मैंने रस्सी बांधी और उसे अपने गले में डाल लिया।

जब देखो! मेरा मन मुक्त हो गया (विमुच्चि/विमुक्ति)! (81)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] अयोनिसो-मानसिकरा, शाब्दिक अर्थ, अधर्मी सोच।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा 5.4
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||41|| ------>>>> अगला

5.4 सुंदरी-नंदा, महान प्रजापति गौतमी (रानी, बुद्ध की पालक माता) की पुत्री, शाक्य गौतम वंश की, कपिलवस्तु की, बुद्ध की सौतेली बहन।
उनका जन्म पद्ममुत्तरा बुद्ध (पूर्व बुद्ध) के समय में हंसवती नगर में हुआ था। जब वे समझदार हुईं, तो उन्होंने गुरु (बुद्ध) को उपदेश देते हुए सुना और उन्होंने एक भिक्षुणी को ध्यान शक्ति में सर्वोच्च स्थान दिया। उस स्थान को प्राप्त करने का संकल्प लेकर, वे अच्छे कर्म करने लगीं। युगों-युगों तक देवताओं (देवदूतों) और मनुष्यों के बीच पुनर्जन्म लेने के बाद, उन्होंने इस बुद्ध युग में शाक्य वंश के शासक परिवार में जन्म लिया। नंदा नाम से वे सुंदर नंदा के नाम से प्रसिद्ध हुईं। जब हमारे भगवान (भगवान बुद्ध) ने सर्वज्ञान प्राप्त कर लिया, तो वे कपिलवस्तु गए और उन्होंने राजकुमार (चचेरे भाई) नंदा और (पुत्र) राहुल को संघ में शामिल कराया; जब राजा सुद्धोदन (बुद्ध के पिता) का निधन हुआ और महा प्रजापति (पालक माता और बुद्ध की दिवंगत माता की बहन एवं सहपत्नी) संघ में शामिल हुईं, तब नंदा ने सोचा: 'मेरे बड़े भाई (चचेरे भाई बुद्ध) ने साम्राज्य की विरासत का त्याग कर दिया है, संसार का त्याग कर दिया है और बुद्ध बन गए हैं,

एक महान पुरुष। 203 उनके पुत्र राहुल ने भी संसार का त्याग कर दिया है, मेरे भाई नंदा, मेरी माता महा-प्रजापति और मेरी बहन राहुल की माता ने भी। लेकिन अब मैं घर पर क्या करूँ? मैं संसार का त्याग कर दूँगी।' इस प्रकार वह आस्था से नहीं, बल्कि अपने रिश्तेदारों के प्रेम से प्रेरित होकर चली गईं। और इस प्रकार, अपने त्याग के बाद भी, वह अपनी सुंदरता के प्रति आसक्त थीं और गुरु (बुद्ध) के समक्ष नहीं जाती थीं, अन्यथा वे उन्हें फटकार लगाते। लेकिन उनके साथ भी वही हुआ जो थेरी अब्बिरूपा-नंदा, 204 के साथ हुआ था, बस एक अंतर था: जब उन्होंने गुरु (बुद्ध) द्वारा प्रकट की गई स्त्री आकृति को धीरे-धीरे वृद्ध होते देखा, तो जीवन की अनित्यता और दुख पर केंद्रित उनका मन ध्यान साधना की ओर मुड़ गया। और गुरु ने यह देखकर उन्हें उपयुक्त शिक्षा दी, इस प्रकार:
देखो, नंदा, यह गंदा परिसर, रोगग्रस्त है।

यह अपवित्र है! अपने मन को समझने के लिए विवश करो।

और एकाग्र मन से एकाग्र हो जाओ। (82)

इस शरीर के साथ जैसा है, वैसा ही आपके साथ भी है; जैसे

तुम्हारी सुंदरता, इसी के साथ—ऐसा ही होगा

इस दुर्गंधयुक्त, अप्रिय आकृति के साथ,

जिसमें केवल मूर्ख ही आनंद लेते हैं। (83)

इसलिए दिन-रात पूरी लगन से इस पर नज़र रखें।

अविचल दृढ़, अकेला,

दिव्य ज्ञान (पन्ना) द्वारा, मृगतृष्णा से मुक्त

सौंदर्य से आपको शांत दृष्टि प्राप्त होती है। (84)

तब उसने उपदेश को ध्यान में रखते हुए ज्ञान का संचार किया और प्रथम मार्ग की सिद्धि में दृढ़ रही। और उसे उच्चतर प्रगति के लिए अभ्यास कराने के लिए, उन्होंने उसे यह कहते हुए सिखाया: 'नंदा, इस शरीर में जरा सा भी सार नहीं है। यह तो केवल हड्डियों का ढेर है जो मांस और रक्त से लिपटा हुआ है और क्षय और मृत्यु के रूप में है।' जैसा कि धम्मपद:207 में कहा गया है।

हड्डियों से बना एक गढ़ बनाया है जिस पर लेप लगा हुआ है

मांस और रक्त के साथ, जहाँ कहीं भी क्षय का राज हो

और मृत्यु, और वह स्थान जहाँ अहंकार और छल का भंडार होता है।

फिर, जब उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया, तो उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। और जब उन्होंने अपनी इस विजय पर विचार किया, तो उन्होंने आनंदपूर्वक गुरु (बुद्ध) के शब्दों को दोहराते हुए कहा:

मैंने भी, अंदर और बाहर से सब कुछ देखा है।

यह शरीर, जैसा वास्तव में यह है,

किसने इसके 'क्या' और 'क्यों' को जानने की कोशिश की?

अटूट उत्साह और लगन के साथ। (85)

अब मैं शरीर की (इच्छाओं) से मुक्त हो गया हूँ।

और मेरी पूरी चेतना वासना से मुक्त है।

आलस्य के बिना उत्सुक, उदासीन,

शांत और निर्मल होकर मैं निर्वाण की शांति का अनुभव करता हूँ। (86)

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

नंदा राजा सुद्धोदन और रानी महा प्रजापति गौतमी की पुत्री और राजकुमार सिद्धार्थ की सौतेली बहन थीं। अपने माता-पिता को अपार प्रसन्नता और आनंद प्रदान करने के कारण उनका नाम नंदा रखा गया, जिसका अर्थ है आनंद और प्रसन्नता। नंदा अत्यंत सुंदर और आकर्षक थीं और उन्हें अक्सर सुनदारी नंदा या 'सुंदर नंदा' कहा जाता था।

जब उनकी माता, रानी प्रजापति, और कई अन्य शाक्य स्त्रियों ने गृहस्थ जीवन त्यागकर साधुत्व का मार्ग अपनाया, तो नंदा ने भी उनका अनुसरण करने का निर्णय लिया। हालाँकि, उन्होंने ऐसा बुद्ध या धम्म में आस्था के कारण नहीं किया। नंदा ने अपने उन रिश्तेदारों की इच्छाओं का पालन करने के लिए भिक्षुणी का दीक्षा संस्कार लिया, जिनसे वह प्रेम करती थीं।

सुंदर नंदा बहुत लोकप्रिय और सभी द्वारा सम्मानित थीं। बुद्ध की बहन, सुंदर राजपुत्री को भिक्षुणी के साधारण वस्त्रों में भिक्षा माँगते हुए देखकर लोग भावुक हो जाते थे। हालाँकि, नंदा का मन अपने मोक्ष पर नहीं था। वह अपनी सुंदरता और लोकप्रियता से मुग्ध थीं।

नंदा जानती थी कि वह पवित्र संघ के उच्च आदर्शों का पालन नहीं कर रही है। उसे डर था कि बुद्ध उसके घमंड और सौंदर्य के प्रति अत्यधिक लगाव के लिए उसे फटकार लगाएंगे, इसलिए वह उनसे मिलने से बचती रही।

एक दिन बुद्ध ने अपने सभी भिक्षुणियों को, जो उनके निवास में थीं, एक-एक करके उपदेश देने के लिए बुलाया। नंदा ने ऐसा नहीं किया क्योंकि वह अपराधबोध से ग्रस्त थी और बुद्ध का सामना नहीं करना चाहती थी। तब बुद्ध ने उसे बुलाया और उसे एक आध्यात्मिक संदेश दिया जिसमें उसके सभी अच्छे गुणों पर बल दिया गया था। यद्यपि इस प्रवचन से नंदा प्रसन्न हुई और उसका मनोबल बढ़ा, फिर भी बुद्ध ने महसूस किया कि नंदा अभी चार आर्य सत्यों पर प्रवचन के लिए तैयार नहीं थी।

यह देखकर कि नंदा अभी भी अपने सौंदर्य में मग्न थी, उन्होंने एक सुंदर कन्या का अद्भुत रूप प्रकट किया जिसकी सुंदरता नंदा की चमक से भी कहीं अधिक थी। फिर उन्होंने नंदा के सामने उस छवि को वृद्ध बना दिया। नंदा ने उस सुंदर कन्या को वृद्ध होते देखा, उसकी त्वचा बूढ़ी और झुर्रीदार हो गई और उसके बाल सफेद हो गए। उसने उस स्त्री को वृद्धावस्था के कारण कमजोर होते और अंततः मरते देखा। उसने शरीर को सड़ते और कीड़ों से भरे एक बदसूरत दृश्य में बदलते देखा। नंदा को इस शरीर की अनित्यता का अहसास हुआ, जिसके प्रति वह अत्यधिक चिंतित थीं। उनका मन अब शिक्षाओं को ग्रहण करने के लिए तैयार था। बुद्ध ने उन्हें अनित्यता का धर्म और इस शरीर की घृणा का उपदेश दिया। उन्होंने नंदा को शरीर की घृणा को ध्यान का विषय भी बनाया। अपनी सुंदरता के प्रति उनके प्रबल आकर्षण के कारण सत्य को जानने के लिए उन्हें अपने शरीर की घृणा पर चिंतन करना आवश्यक था। शीघ्र ही नंदा ने अरहंतत्व प्राप्त कर लिया।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.5
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||42|| ------>>>> अगला

5.5 नंदुत्तरा, कम्मसदम्मा के एक ब्राह्मण की पुत्री, पूर्व जैन, महान मोग्गलाना की शिष्या।

वह भी, उपर्युक्त थेरियों की तरह, अतीत में एक ब्राह्मण परिवार में जन्मीं। बुद्ध युग में उनका जन्म कुरु राज्य के कम्मसदम्मा नगर में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनसे कुछ कला और विज्ञान सीखने के बाद, उन्होंने निगंथों (जैनों) के संघ में प्रवेश किया और एक प्रख्यात वक्ता के रूप में, भद्दा घुंघराले बालों वाले की तरह, जामुन के पेड़ की शाखा लेकर भारत के मैदानों का भ्रमण किया। इस प्रकार उनकी मुलाकात महा-मोग्गलाना से हुई और वाद-विवाद में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद उन्होंने उनकी सलाह मानी, संघ में प्रवेश किया और कुछ ही समय बाद अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के उपदेश और अर्थ का पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त किया। अपनी विजय पर ध्यान करते हुए, उन्होंने आनंदपूर्वक कहा:
आग और चंद्रमा, सूर्य और देवता (देवदूत)

मैं एक समय पूजा करने का प्रयास कर रहा था,

मैं नदी के किनारों पर होने वाली बड़ी सभाओं में जाया करता था।

स्नान अनुष्ठानों के लिए जल में। (87)

मैंने कई (धार्मिक) अनुष्ठान किए

मुझ पर, क्योंकि मैंने अपने सिर के आधे बाल मुंडवा लिए थे।

और न ही मुझे धरती के अलावा कहीं और आराम करने के लिए लिटाया गया।

और मैंने कभी भी दिन के अंत में अपना उपवास नहीं तोड़ा। (88)

(पहले) मुझे खुद को सजाने-संवारने में आनंद आता था।

रत्नों और आभूषणों आदि के साथ।

मैंने इस शरीर को स्नान कराया, मलहम लगाया और मालिश की।

कामरागों की वासनाओं से प्रेरित होकर (89)

तब मुझे बुद्ध के मार्ग में आस्था मिली।

मैंने भिक्षुणी के रूप में दीक्षा ली, और तपस्वी जीवन में प्रवेश किया।

क्योंकि मैंने शरीर को उसके वास्तविक स्वरूप में (गंदा) देखा है।

और इंद्रियों की वासना अब कभी वापस नहीं आ सकती। (90)

पुनर्जन्म के सभी कारक (भाव) अच्छी तरह से नष्ट हो गए थे।

हर इच्छा और हर लालसा दूर हो गई है।

जिन चीजों ने मुझे बांध रखा था, वे सब ढीली पड़ गईं।

मैं पापों से मुक्त होकर शांत हो गया हूँ, और अब सदा सचेत रहता हूँ। (91)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.6
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||43|| ------>>>> अगला

5.6 मित्तकली, कम्मसदम्मा के एक ब्राह्मण (पुजारी) की पुत्री।
वह भी, उपर्युक्त थेरियों की तरह, अतीत में इसी बुद्ध युग में कुरु राज्य (अब पंजाब/हरियाणा) के कम्मसदम्मा नगर में एक ब्राह्मण (पुजारी) परिवार में जन्मीं। जब वे समझदार हुईं, तो उन्होंने महासतिपट्टाना सूत्र (मनोदशा के अनुप्रयोगों पर महान प्रवचन) की शिक्षा सुनकर आस्था प्राप्त की और भिक्षुणियों के संघ में प्रवेश किया। सात वर्षों तक वे उपहारों और सम्मानों के प्रति आसक्ति से ग्रस्त रहीं और संन्यासी के कर्तव्यों का पालन करते हुए वे कभी-कभी झगड़ालू भी हो जाती थीं। बाद में, जब वे बौद्धिक चिंतन में लीन थीं, [1] और आत्म-जागरूकता प्राप्त कर रही थीं, तब उन्होंने विपश्यना ([2]) में अंतर्दृष्टि स्थापित की और शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके वास्तविक रूप और अर्थ में पूर्ण रूप से समझ लिया। अपनी जीत को याद करते हुए उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कहा:
आस्था की पुकार पर अपना घर छोड़कर, मैंने खोज की

बेघर तपस्वी जीवन, और दृष्टिगत एकाग्रता के साथ निवास किया।

विश्वासियों की भेंटों और स्तुति पर

इसका और उसका आभार। (92)

मैंने अंतर्दृष्टि के जिस मार्ग की उपेक्षा की, वह मुड़ गया

सर्वोच्च भलाई से लेकर निम्नतम उद्देश्यों की पूर्ति तक।

मैं सांसारिक बुराइयों में लिप्त होकर पड़ा रहा और कुछ नहीं किया।

अपने उच्च शिक्षण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए। (93)

लेकिन मुझ पर पीड़ा हावी हो गई,

जब मैं अपनी छोटी सी कोठरी में बैठकर सोच रहा था:

मैं इस बुरी राह पर कैसे आ गया!

मैं लालसा की शक्ति में भटक गया हूँ! (94)

मेरे पास अभी जीवन का बहुत कम समय बचा है;

वृद्धावस्था, बीमारी, पतन के कगार पर हैं।

अब, इससे पहले कि यह शरीर नष्ट होकर घुल जाए,

स्विफ्ट, मुझे अकेला छोड़ दो; मेरे पास आलस्य के लिए समय नहीं है। (95)

और वे वास्तव में ध्यान कर रहे हैं,

जीवन के वे समूह जो आते-जाते रहते हैं,

मैं मन से मुक्ति (विमुक्ति/विमुक्ति) के साथ उठ खड़ा हुआ!

मेरे लिए बुद्ध की साधना पूर्ण हो गई है। (96)

[1] योनिसो उप्पज्जन्ति
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.7
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||44|| ------>>>> अगला

5.7 सकुला, या पाकुला, श्रावस्ती की एक ब्राह्मण (पुजारिन), जो 'दिव्य दृष्टि' की क्षमता रखने वाली थेरियों में अग्रणी थीं।
अब, जब पद्ममुत्तरा बुद्ध थे, तब उनका जन्म हंसावती में राजा आनंद की पुत्री और गुरु की सौतेली बहन के रूप में हुआ और उनका नाम नंदा रखा गया। एक दिन वे गुरु का प्रवचन सुन रही थीं और जब उन्होंने गुरु को 'दिव्य दृष्टि' की क्षमता रखने वालों में एक भिक्षुणी को शीर्ष स्थान देते हुए सुना, तो उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन यह स्थान उनका भी होगा। अनेक पुण्य कर्मों और उसके बाद के सुखी पुनर्जन्मों के बाद, वे कश्यप बुद्ध के समय एक ब्राह्मणी के रूप में पृथ्वी पर आईं और एक तपस्वी के रूप में संसार का त्याग कर एकांतवास का व्रत लिया। [1] एक दिन उन्होंने गुरु के मंदिर में रात भर भिक्षा अर्पित की। तैंतीस देवताओं (स्वर्ग में देवदूतों) के स्वर्ग में पुनर्जन्म लेकर, उन्हें दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई; और जब यह बुद्ध जीवित थे, तब उनका जन्म श्रावस्ती में एक ब्राह्मण के रूप में हुआ और उनका नाम पाकुला रखा गया। गुरु (बुद्ध) द्वारा जेतवन वन (मठ) के उपहार को स्वीकार करने में सहायता करते हुए, वह अनुयायी बन गईं; और बाद में, एक अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) भिक्षु के उपदेश से प्रभावित होकर, वह आत्म-जागरूक हुईं, संघ में प्रवेश किया, अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[2]) में प्रयास और संघर्ष किया, और शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया।
उस समय से, अपनी प्रतिज्ञा के फलस्वरूप, उन्होंने दिव्य दृष्टि में कौशल अर्जित किया, और गुरु (बुद्ध) द्वारा उन्हें उसमें सर्वोच्च स्थान दिया गया। और उस पर पीछे मुड़कर देखते हुए, आनंद से भर उठीं, उन्होंने परमानंद से इस प्रकार कहा:
जब मैं घर की मुखिया के रूप में रहती थी,

मैंने एक भिक्षु को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) की व्याख्या करते हुए सुना।

मैंने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग), शुद्ध, वासना रहित मार्ग को देखा।

मृत्यु और पुनर्जन्म से परे, निर्वाण का मार्ग। (97)

इसी वजह से मैंने अपनी बेटी को छोड़ दिया, अपने बेटे को छोड़ दिया।

मैंने अपने खजाने और अनाज के भंडार छोड़ दिए;

मैंने वस्त्र और रेजर मंगवाए, अपने बाल मुंडवाए,

और मैंने स्वयं को बेघर तपस्वी जीवन के लिए समर्पित कर दिया। (98)

और पहले एक नौसिखिए के रूप में, गुणी और उत्साही।

ऊपर की ओर बढ़ने वाले मार्ग को विकसित करने के लिए,

मैंने इच्छाओं को त्याग दिया और उसके साथ ही सभी दुर्भावनाओं को भी।

और उसके बाद, एक-एक करके, घातक इच्छाएँ। (99)

फिर परिपक्व शक्ति वाली भिक्षुणी की ओर

एक दिव्य दृष्टि में पिछले जन्मों की यादें उभर आईं।

स्पष्ट, पवित्र दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई।

निरंतर व्यायाम द्वारा। (100)

मैंने अपने कार्यों, वाणी और विचारों को अपने स्वयं के रूप में नहीं देखा।

कारण और परिणाम की संतान, क्षणभंगुर, अस्थाई।

और अब, हर जहरीली इच्छा को दूर कर दिया गया है,

शांत और निर्मल होकर, मैं निर्वाण की शांति देखता हूँ। (101)

[1] परिब्बजक
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.8
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||45|| ------>>>> अगला

5.8 सोना, 'बहुपुट्टिका', श्रावस्ती के एक कुल के व्यक्ति की पुत्री, जो दृढ़ संकल्प वाली भिक्षुणियों में अग्रणी थीं।
उनका जन्म भी उसी समय हुआ था जब पद्ममुत्तरा बुद्ध थे, हंसवती में एक कुल के व्यक्ति के परिवार में। एक दिन वे गुरु का प्रवचन सुन रही थीं, और जब उन्होंने एक भिक्षुणी को परिश्रम क्षमता में श्रेष्ठ भिक्षुणियों में सर्वोच्च स्थान दिया, तो उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन वे भी इस पद को प्राप्त करेंगी। अनेक जन्मों के सुखमय बाद, उनका जन्म उसी समय हुआ जब ये बुद्ध जीवित थे, श्रावस्ती में एक कुल के व्यक्ति के परिवार में। विवाह के बाद, वे दस पुत्रों और पुत्रियों की माता बनीं और 'अनेक संतानों वाली' के नाम से जानी गईं। जब उनके पति ने संसार त्याग दिया, तो उन्होंने अपने पुत्रों और पुत्रियों को गृहस्थी का कार्यभार सौंप दिया, अपनी सारी संपत्ति अपने पुत्रों को दे दी और अपने लिए कुछ भी नहीं रखा। उनके पुत्रों और बहुओं ने उनका भरण-पोषण करने के कुछ ही समय बाद उनका अनादर करना बंद कर दिया। और यह कहते हुए कि, 'मुझे ऐसे घर में रहने का क्या लाभ जहाँ मेरा कोई आदर नहीं होता?' उन्होंने भिक्षुणियों के संघ में प्रवेश किया। फिर उन्होंने सोचा: 'मैंने वृद्धावस्था में संसार का त्याग कर दिया है; मुझे परिश्रमपूर्वक काम करना चाहिए।' अतः, भिक्षुणियों की सेवा करते हुए, उन्होंने रात भर तपस्वी धम्म (ध्यान आदि) में स्वयं को समर्पित करने का संकल्प लिया। और उन्होंने इस प्रकार दृढ़ और अविचलित होकर तपस्वी धम्म (ध्यान आदि) का पालन किया, जैसे कोई बरामदे के खंभे या अंधेरे में किसी पेड़ से सिर

टकराने के डर से दृढ़तापूर्वक चिपका रहता है, कभी भी हाथ नहीं छोड़ता। इस पर उनकी अथक ऊर्जा प्रकट हुई, और गुरु (बुद्ध), उनके ज्ञान को परिपक्व होते देख, वहाँ अपने प्रकाशमान दिव्य रूप में प्रकट हुए, और उनके सामने बैठे हुए प्रतीत हुए, और इस प्रकार कहा: 'वह व्यक्ति जो सौ वर्ष तक जीवित रहता है,

वह कभी भी उस चीज को नहीं देखता जो सभी में सर्वश्रेष्ठ है, यानी धम्म (शाश्वत जीवन का मार्ग)।

एक दिन से अधिक न जीना ही बेहतर है।

अतः उस दिन के भीतर (ध्यान/पासाटो[1] में) यह देखा जाता है कि

जो कि सबसे श्रेष्ठ है, धम्म (शाश्वत जीवन का मार्ग)!

और जब उन्होंने ऐसा कहा, तो उन्हें अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त हुआ। अब, भगवान बुद्ध ने भिक्षुणियों को पुण्य क्रम देते समय, परिश्रम की क्षमता के आधार पर उन्हें प्रथम स्थान दिया। एक दिन, इस पर विचार करते हुए, उन्होंने आनंदपूर्वक कहा:

मैंने अपने गर्भ में दस पुत्र और पुत्रियों को जन्म दिया।

यह स्पष्ट रूप से क्षय का ढेर है। फिर कमजोर

और मैं वृद्ध भिक्खुनी के पास गया। (102)

उन्होंने मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया, जिसे मैंने सीखा।

इस आत्मा के कारक, अंग, आधार सब कुछ यही हैं-

अस्थाई यौगिक। उसकी बातें सुनकर,

और अपने बाल मुंडवाकर मैंने संसार का त्याग कर दिया। (103)

फिर जब मैंने त्रिगुणात्मक प्रशिक्षण[2] से जूझना शुरू किया,

[शील (सद्गुण), समाधि (ध्यान), पन्ना (प्रत्यक्ष दिव्य बोध)]

मेरे लिए दिव्य नेत्र स्पष्ट रूप से चमक उठा।

मुझे पता है कि मेरा जन्म कैसे और कब हुआ।

बहुत अतीत में (ज्ञात पूर्व जन्मों में), और जहाँ मैं रहता था। (104)

मैं कारण और परिणाम को समझता हूँ, और मेरा मन

अत्यंत शांत और एकाग्रचित्त अवस्था में।

मेरी मुक्ति का परमानंद (विमोक्ख/विमुक्ति) जीत गया है

मैं किसी भी चीज को न मानते हुए निर्वाण में रहता हूँ। (105)

मैंने इस पंचसमूह वाले अस्तित्व (स्वयं) को समझ लिया है।

पुनर्जन्म के मूल से काट दिए जाने पर, आगे की सारी वृद्धि रुक जाती है।

मैं भी रुका हुआ हूँ, विजेता इस विचार के आधार पर निश्चित है।

अविचल। पुनर्जन्म कभी नहीं होता। (106)

[1] पासतो: देखना, यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को भी संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है। यहाँ पासतो का अर्थ है - भीतर देखना (अंतर्दृष्टि), जो ध्यान का अभ्यास है।
[2] तीन प्रकार के प्रशिक्षण हैं: i. शील (नैतिक उपदेश) ii. समाधि (ध्यान और समाधि अवस्था प्राप्त करना) iii. पन्ना (ध्यान की समाधि अवस्था से प्राप्त प्रत्यक्ष दिव्य बोध)

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

बुद्ध के समय में, श्रावस्ती में सोना नाम की एक महिला रहती थी, जिसके दस बच्चे थे। उसने अपना पूरा जीवन अपने बच्चों के कल्याण में व्यतीत किया था। उसे उनकी देखभाल करना, उन्हें भोजन कराना, उन्हें शिक्षित करना और उनके बड़े होने पर उनके लिए उपयुक्त जीवनसाथी खोजना अच्छा लगता था। उसका पूरा जीवन अपने बच्चों के इर्द-गिर्द घूमता था और जल्द ही वह 'बहुत से बच्चों वाली सोना' के नाम से जानी जाने लगी।

सोना के पति बुद्ध के गृहस्थ भक्त थे। उनके सभी बच्चों का विवाह हो जाने और उनकी जिम्मेदारियाँ कम हो जाने के कारण, वे धम्म के अध्ययन और अभ्यास में अधिक से अधिक समय बिताने लगे। कुछ ही समय में वे शिक्षाओं से पूरी तरह प्रेरित हो गए। उन्होंने पवित्र संघ में शामिल होने का निर्णय लिया। सोना के लिए इस निर्णय को स्वीकार करना आसान नहीं था, लेकिन उन्हें रोकने के बजाय, उन्होंने भी अधिक धार्मिक जीवन जीने का निश्चय किया। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने अपनी संपत्ति और जमीन अपने बच्चों में बाँट दी और उनसे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करके उनका भरण-पोषण करने का अनुरोध किया। फिर उन्होंने बुद्ध की गृहस्थ भक्त के रूप में अपना समय धार्मिक कार्यों में व्यतीत किया।

कुछ समय तक सब कुछ ठीक रहा। फिर, एक-एक करके, उसके बच्चों और उनके जीवनसाथियों को लगने लगा कि वह उन पर बोझ है। उन्होंने अपने पिता के संन्यासी बनने के निर्णय को कभी स्वीकार नहीं किया था और वे अपनी माँ का भरण-पोषण करने से नाराज़ थे, जो अब अपना अधिकांश समय धार्मिक साधना में व्यतीत कर रही थी। माँ ने उनके लिए जो कुछ किया था, उसे भूलकर वे उसके भरण-पोषण और देखभाल के उचित बंटवारे को लेकर आपस में झगड़ने लगे। उन सभी को लगा कि यह एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था है जिसमें उनमें से प्रत्येक को माँ के भरण-पोषण का अनुचित हिस्सा वहन करना पड़ रहा है। उनके लिए, इतनी कुर्बानियाँ देने वाली माँ एक झंझट और बोझ बन गई थी।

इस कृतघ्न व्यवहार से सोना को बहुत पीड़ा हुई, जिसने अपना पूरा जीवन अपने बच्चों के लिए न्योछावर कर दिया था। वह कड़वी और क्रोधित हो गई। उसने अपने बच्चों से बुढ़ापे में सहारा देने की उम्मीद की थी, जैसा कि भारत में प्रथा थी। अपनी संपत्ति उनमें बाँट देने के बाद, उसके पास स्वयं का भरण-पोषण करने का कोई साधन नहीं बचा था। निराश होकर, उसने बुद्ध से सांत्वना पाने का निर्णय लिया।

बुद्ध की एक भिक्षुणी की बातें सुनने के बाद, सोना ने अपने बच्चों के प्रति अपनी भावनाओं और निराशा का विश्लेषण करना शुरू किया। क्या उसने उनके लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया और निस्वार्थ भाव से उनका पालन-पोषण किया, या उसने बदले में कुछ पाने की उम्मीद से ऐसा किया? क्या उसने अपने बच्चों को बिना शर्त प्यार दिया? उसकी भावनाएँ बुद्ध द्वारा प्रतिपादित करुणा और प्रेम से कितनी मेल खाती हैं?

सोना ने निस्वार्थ प्रेम और सद्गुणों का अभ्यास और विकास करने के लिए बुद्ध के भिक्षुणी संघ में शामिल होने का निश्चय किया। अपने पति के मार्ग का अनुसरण करते हुए, वह भिक्षुणी बन गईं। हालांकि, कुछ ही समय बाद, सोना को एहसास हुआ कि वह अपनी पुरानी आदतें अपने साथ संघ में ले आई हैं। वह एक ऐसी वृद्ध महिला थीं जो अपनी आदतों में दृढ़ थीं। संघ में शामिल होने से उनके

व्यक्तित्व में कोई परिवर्तन नहीं आया था। अक्सर युवा भिक्षुणियों द्वारा उनकी आलोचना की जाती थी क्योंकि उन्हें अपनी आदतों में बदलाव लाने में कठिनाई होती थी। सोना को एहसास हुआ कि आध्यात्मिक पवित्रता प्राप्त करना आसान काम नहीं है।

सोना ने गंभीरता से ध्यान और आत्म-अवलोकन का अभ्यास शुरू किया। उन्हें अपनी भावनाओं और कमजोरियों के प्रति सचेत रहना था और अपने मन को अनुशासित करना था। चूंकि उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में संघ में प्रवेश किया था, सोना जानती थीं कि उन्हें मेहनत करनी होगी। उन्होंने लगन से ध्यान का अभ्यास किया, अक्सर पूरी रात बैठकर और चलते हुए ध्यान में बिताती थीं। दूसरों को परेशान न करने के लिए, उन्होंने खंभों का सहारा लेकर अंधेरे में निचले कक्ष में ध्यान करना शुरू किया। कुछ ही समय बाद, उनके दृढ़ संकल्प और प्रयास के फलस्वरूप सोना ने अरहंत पद प्राप्त कर लिया। वह अपनी उपलब्धि का वर्णन अपने शब्दों में करती है:
फिर दूसरी भिक्षुणियाँ

मुझे कॉन्वेंट में अकेला छोड़ दिया।

उन्होंने मुझे निर्देश दिए थे

पानी से भरे बर्तन को उबालना।

पानी लाने के बाद

मैंने इसे कड़ाही में डाल दिया।

मैंने कड़ाही को चूल्हे पर रखा और बैठ गया।

तब मेरा मन शांत हो गया।

मैंने इन समूहों को अस्थाई माना।

मैंने उन्हें पीड़ित के रूप में देखा, स्वयं के रूप में नहीं।

मैंने अपने हृदय से सभी कलंक निकाल दिए हैं,

वहीं मुझे अरहंत पद प्राप्त हुआ।

(अपदाना 234-236)

जब अन्य भिक्षुणियाँ लौटीं तो उन्होंने सोना से गर्म पानी माँगा और उसे एहसास हुआ कि उसने अभी तक पानी उबाला नहीं था। अपनी अलौकिक शक्तियों और अग्नि तत्व का उपयोग करते हुए सोना ने पानी गर्म किया और भिक्षुणियों को दिया, जिन्होंने उसके इस असाधारण कार्य की सूचना बुद्ध को दी। बुद्ध ने सोना को उन भिक्षुणियों में श्रेष्ठ घोषित किया जिन्होंने अथक परिश्रम किया और उसके परिश्रम और उपलब्धि की प्रशंसा करते हुए कहा:
भले ही व्यक्ति सौ साल तक जीवित रहे

एक आलसी, सुस्त व्यक्ति के रूप में,

एक दिन जीना ही बेहतर है।

किसी की ऊर्जा को दृढ़तापूर्वक जागृत करना।"

(धम्मपद 112)

सोना की कहानी से हम सभी सीख सकते हैं। इसे पढ़ने वाले बच्चों को अपने माता-पिता के प्रति अपने दायित्वों पर विचार करना चाहिए। जब हम छोटे थे और अपना ख्याल खुद नहीं रख सकते थे, तब हमारे माता-पिता ने हमारा ख्याल रखा, हमें सही-गलत का ज्ञान दिया और धर्म का मार्ग दिखाया। बुद्ध ने कहा है कि अगर हम जीवन भर अपने माता-पिता का बोझ अपने कंधों पर उठाएं (उनकी देखभाल और आराम की जिम्मेदारी उठाएं), तब भी हम उनके प्रति अपने कर्तव्य को पूरा नहीं कर पाएंगे। माता-पिता के प्रति किए गए व्यवहार का प्रभाव बहुत गहरा होता है। माता-पिता के प्रति किए गए अच्छे और बुरे, दोनों ही कर्मों के गंभीर परिणाम होते हैं।

माता-पिता के लिए सोना से सीखने को बहुत कुछ है। हम अपने बच्चों के मालिक नहीं हैं। भला कैसे हो सकते हैं, जब हम खुद के ही मालिक नहीं हैं? बच्चों को अपने माता-पिता के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करना चाहिए। हमें उन्हें उदाहरण देकर सिखाना चाहिए। लेकिन पश्चिमी समाज में बच्चों का पालन-पोषण करना पूर्वी समाज की तुलना में कहीं अधिक कठिन है। अगर हमारे बच्चे अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि बुद्ध ने कहा था कि हम स्वयं अपने रक्षक हैं। उनकी गलतियों पर पछतावा करने और कड़वाहट व क्रोध से भर जाने से कुछ भी लाभ नहीं होता। लेकिन स्वयं को अनुशासित करने और अपने मन को शुद्ध करने से बहुत लाभ हो सकता है। दुख का कारण — लालसा — हमारे भीतर ही निहित है। हम केवल इतना ही कर सकते हैं कि हमने अपने बच्चों के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है। हम उन्हें नहीं बचा सकते, ठीक वैसे ही जैसे वे हमें नहीं बचा सकते। अंततः हममें से प्रत्येक स्वयं अपना उद्धारकर्ता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.9
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||46|| ------>>>> अगला

5.9 भद्दा कुंडलकेसा, पूर्व जैन, राजगृह के एक करोड़पति (सेठी) की पुत्री, एक ब्राह्मण सरदार की पत्नी, तीव्र अंतर्ज्ञान वाली थेरियों में अग्रणी।
उनका भी पुनर्जन्म पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय हंसवती में एक कुलवासी परिवार में हुआ था। एक दिन वे गुरु का प्रवचन सुन रही थीं, और जब उन्होंने एक भिक्षुणी को तीव्र अंतर्ज्ञान वाली भिक्षुणियों में सर्वोच्च स्थान दिया, तो उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन वे भी इस स्थान को प्राप्त करेंगी। अनेक पुण्य कर्म करने और देवताओं (देवदूतों) और मनुष्यों के बीच युगों-युगों तक पुनर्जन्म का अनुभव करने के बाद, जब कश्यप बुद्ध थे, वे काशी के राजा किकी की सात पुत्रियों में से एक बनीं। फिर बीस हजार वर्षों तक उन्होंने ब्रह्मचर्य का पवित्र जीवन व्यतीत किया और संघ के लिए एक कुटिया का निर्माण किया। अंत में, इस बुद्ध युग में, उनका जन्म राजगृह में राजा के कोषाध्यक्ष भद्दा के परिवार में हुआ। परिचारकों से घिरी हुई पली-बढ़ी भद्दा ने अपनी खिड़की से झाँकते हुए देखा कि राजा के आदेश पर नगर रक्षक सत्तुका, जो राजपुजारी का पुत्र और चोर था, को फाँसी के लिए ले जा रहे थे। उससे प्रेम हो जाने पर वह अपने पलंग पर गिर पड़ी और बोली, 'यदि मैं उसे पा लूँ, तो मैं जीवित रहूँगी; अन्यथा मैं मर जाऊँगी।' तब उसके पिता ने उसकी यह दशा सुनकर, अपने प्रेमवश, रक्षक को भारी रिश्वत देकर चोर को छुड़वा दिया, उसे सुगंधित जल से स्नान कराया, उसे आभूषणों से सुसज्जित किया और उसे वहाँ आने दिया जहाँ भद्दा, आभूषणों से सजी हुई, उसकी सेवा कर रही थी। तब सत्तुका ने शीघ्र ही भद्दा के आभूषणों की इच्छा व्यक्त की और कहा, 'भद्दा, जब नगर रक्षक मुझे लुटेरों की चट्टान पर ले जा रहे थे, तब मैंने चट्टान के देवता से प्रतिज्ञा की थी कि यदि मेरा जीवन बख्श दिया जाए तो मैं भेंट लाऊँगा। क्या आप एक भेंट तैयार कर देंगी?' उसे प्रसन्न करने की इच्छा से भद्दा ने ऐसा ही किया और अपने सभी आभूषणों से सुसज्जित होकर, भद्दा के साथ रथ पर सवार होकर चट्टान की ओर चल पड़ी। सत्थुका ने उसे अपने वश में करने के लिए सेवकों को रोक दिया; और भेंट लेकर वह अकेले उसके पास गया, लेकिन उससे स्नेह का एक शब्द भी नहीं बोला। उसके व्यवहार से ही वह उसकी साजिश समझ गई। फिर उसने उसे अपना बाहरी वस्त्र उतारने और उसमें अपने गहने लपेटने के लिए कहा। उसने उससे पूछा कि उसने क्या गलती की है, और उसने उत्तर दिया: 'अरे मूर्ख, क्या तुम्हें लगता है कि मैं यहाँ भेंट चढ़ाने आया हूँ? मैं तुम्हारे गहने लेने आया हूँ।' उसने पूछा, 'लेकिन फिर, प्रिय, गहने किसके हैं और मैं किसकी हूँ?' चोर ने कहा, 'मुझे इस विभाजन का कोई ज्ञान नहीं है।' उसने कहा, 'ठीक है, प्रिय; लेकिन मेरी एक इच्छा पूरी करो: मुझे अपने गहने पहने हुए तुम्हें गले लगाने दो।' उसने सहमति जताते हुए कहा, 'ठीक है।' इस पर उसने उसे सामने से गले लगाया, और फिर, मानो पीछे से गले लगाते हुए, उसे खाई में धकेल दिया। और पर्वत पर निवास करने वाले देवता ने उसका यह कारनामा देखा और उसकी चतुराई की प्रशंसा करते हुए कहा:
हर मामले में मनुष्य अधिक बुद्धिमान नहीं होता;

तेज बुद्धि वाली स्त्री भी उतनी ही चतुर साबित हो सकती है।

हर मामले में मनुष्य को ही बुद्धिमान नहीं माना जाता;

स्त्री भी चतुर होती है, वह बस एक पल के लिए सोचती है।

उस समय से भद्दा ने सोचा: 'इस परिस्थिति में मैं घर नहीं जा सकती; मैं यहीं से जाऊंगी और संसार त्याग दूंगी (तपस्वी बन जाऊंगी)।' इसलिए उन्होंने निगंथों (जैन) के संघ में प्रवेश किया। उन्होंने उनसे पूछा: 'आप किस स्तर का त्याग करती हैं?' उन्होंने उत्तर दिया, 'जिस भी स्तर का आपका नियम है, वही मुझ पर लागू कीजिए।' तब उन्होंने ताड़ के कंघे से उनके बाल नोच डाले। (जब बाल फिर से घने घुंघराले हो गए तो उन्होंने उन्हें घुंघराले बाल नाम दिया।) अपनी परीक्षा के दौरान उन्होंने उनके उपदेशों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि: 'वे जितना जानते हैं, उतना तो जानते हैं, लेकिन उससे आगे उनकी शिक्षा में कुछ भी विशिष्ट नहीं है।' अतः वह उन्हें छोड़कर, जहाँ कहीं भी विद्वान व्यक्ति होते थे, वहाँ जाकर उनसे ज्ञान की विधियाँ सीखती रही। जब उसे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो उससे वाद-विवाद कर सके, तब उसने किसी गाँव या कस्बे के द्वार पर रेत का ढेर बनाया और उसमें जामुन की एक शाखा स्थापित कर दी। उसने बच्चों को उसके पास पहरा देने के लिए कहा, "जो कोई भी मुझसे वाद-विवाद कर सके, वह इस शाखा को कुचल दे।" फिर वह अपने निवास स्थान पर चली गई और यदि एक सप्ताह बाद भी शाखा खड़ी रहती, तो वह उसे लेकर चली जाती।
उसी समय हमारे भगवान बुद्ध, उत्तम धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का प्रचार करते हुए, श्रावस्ती के निकट जेतवन वन में आकर निवास करने लगे, ठीक उसी समय जब घुंघराली ने उस नगर के द्वार पर जामुन की शाखा स्थापित की थी।
फिर आदरणीय धम्म के सेनापति (सारिपुत्त) अकेले नगर में आए और उनकी वृक्ष शाखा को देखकर उन्हें वश में करने की इच्छा हुई। उन्होंने बच्चों से पूछा, 'यह वृक्ष शाखा यहाँ क्यों अटकी हुई है?' बच्चों ने उन्हें बताया। बड़े ने कहा, 'यदि ऐसा है, तो इस शाखा को कुचल दो।' और बच्चों ने वैसा ही किया। फिर घुंघराले बालों वाली महिला नगर में भोजन करने के बाद बाहर आई और कुचली हुई वृक्ष शाखा को देखकर पूछा कि यह किसने किया है। जब उसने सुना कि यह बड़े ने किया है, तो उसने सोचा, 'बिना आधार के बहस प्रभावी नहीं होती,' और सावत्थी में वापस जाकर वह गली-गली घूमती हुई कहने लगी, 'क्या आप शाक्य तपस्वियों और मेरे बीच बहस देखना चाहते हैं?' इस प्रकार, बहुत से अनुयायियों के साथ, वह धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) के सेनापति के पास गई, जो एक वृक्ष के नीचे बैठे थे, और मैत्रीपूर्ण अभिवादन के बाद पूछा, 'क्या आपके आदेश पर ही मेरी जामुन की शाखा को कुचला गया था?' 'हाँ, मेरे आदेश पर ही।' 'ऐसा होने पर, आइए हम आपस में चर्चा करें।' 'चलिए, भद्दा।' 'कौन प्रश्न पूछेगा, कौन उत्तर देगा?' 'मुझसे प्रश्न पूछिए; आप जो चाहें पूछिए।' वे इस प्रकार आगे बढ़े, बड़े ने सभी प्रश्नों का उत्तर दिया, जब तक कि वह और प्रश्न न सोच पाने के कारण चुप नहीं हो गई। तब बड़े ने कहा: 'तुमने बहुत कुछ पूछा है; मैं भी पूछूंगा, लेकिन केवल यही प्रश्न।' 'पूछिए, स्वामी।' 'एक—वह क्या है?'[1] घुंघराले बालों वाली, इस प्रश्न का कोई अंत या उद्देश्य न देखकर, मानो अंधेरे में खो गई हो, और बोली: 'मैं नहीं जानती, स्वामी।' तब उन्होंने कहा, 'तुम इतना भी नहीं जानतीं। तुम्हें और क्या पता चलेगा?' और उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया। वह उनके चरणों में गिर पड़ी और बोलीं: 'स्वामी, मैं आपकी शरण लेती हूँ।' सारिपुत्त ने कहा, 'भद्दा, मेरे पास शरण मत लो; भगवान (बुद्ध) की शरण लो, जो मनुष्यों और देवताओं (देवदूतों) में सर्वोच्च हैं।' "मैं ऐसा ही करूंगी, प्रभु," उसने कहा; और उसी शाम, जब गुरु (बुद्ध) धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दे रहे थे, तब वह उनके पास गई और उनकी आराधना करते हुए एक तरफ खड़ी हो गई। गुरु ने उसके ज्ञान की परिपक्वता को भांपते हुए कहा:
'हजारों छंदों से बेहतर, जहाँ लाभ का कोई स्वार्थ न हो'

क्या एकाकी छंद सुनने पर शांति और सुकून मिलता है?

और जब उन्होंने बोलना समाप्त किया, तो उन्होंने अर्हतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही शास्त्र और भाव का पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त किया। अब उन्होंने अर्हत के रूप में संघ में प्रवेश किया, स्वयं गुरु (बुद्ध) ने उन्हें प्रवेश दिया। और भिक्षुणियों के निवास स्थान पर जाकर, वे निर्वाण और पूर्ण प्राप्ति के आनंद में लीन रहीं, और अपनी इस उपलब्धि से प्रसन्न होकर उन्होंने इस प्रकार कहा:
बाल रहित, धूल से लथपथ और अधनंगे कपड़ों में मैं रहता था।

पहले, यह मानते हुए कि हानिरहित चीजें

मुझे कोई नुकसान नहीं हुआ था, और न ही मुझे नुकसान की जानकारी थी।

कई ऐसी चीजों में, जिनमें वास्तव में हानि निहित है। (107)

फिर मैं अकेले छाया में ध्यान करने चला गया।

गिज्जाकुटा चोटी तक, और वहाँ मैंने देखा

बुद्ध, निष्कलंक, चारों ओर से घिरे हुए

और इसके बाद भिक्षु संघ का अनुसरण किया जाता है। (108)

मैं घुटनों के बल बैठकर दोनों हाथों से पूजा करता था।

आराधना. 'आओ, भद्दा!' गुरु (बुद्ध) ने कहा!

इसके द्वारा मुझे दीक्षा प्रदान की गई। (109)

देखो! मैं पचास वर्षों से तीर्थयात्री (तपस्वी) रहा हूँ।

अंग, मगध और वज्जी में,

काशी और कोसल की भूमि में,

कोई कर्ज नहीं, जनता की भीख पर जीवन यापन करता था। (110)

और उस आम आदमी ने बहुत पुण्य अर्जित किया।

बुद्धिमान व्यक्ति, जिसने भद्दा को वस्त्र दिया—

भद्दा जो अब

सभी आंतरिक बंधनों से पूर्णतः मुक्त (विमुत्त, विमुक्त)। (111)

[1] 'Ekan nama kin? या अधिक पूर्ण रूप से, 'वह क्या है जिसे "एक" कहा जाता है (नाम दिया जाता है)?'

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

बुद्ध के समय में, राजगृह नगर में एक धनी व्यापारी रहता था जिसकी एक बहुत सुंदर पुत्री थी जिसका नाम भद्दा था। उसके चंचल और भावुक स्वभाव के कारण उसके माता-पिता ने उसे सात मंजिला हवेली की सातवीं मंजिल पर कैद कर रखा था जहाँ वह अपनी दासियों के साथ एकांत में रहती थी।

एक दिन उसने शोर सुना और खिड़की से बाहर देखा तो उसे एक बहुत सुंदर युवक दिखाई दिया जिसे डकैती के आरोप में मुकदमे के लिए लाया गया था। भद्दा को तुरंत उस युवक से बेइंतहा प्रेम हो गया। उसके माता-पिता ने उसे यह कहकर समझाने की कोशिश की कि वह चोर है और उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता, लेकिन भद्दा ने उनकी सलाह नहीं मानी। इसके बजाय, वह अपने पलंग पर लेट गई और तब तक खाने-पीने से इनकार कर दिया जब तक कि उस युवक से उसकी शादी न हो जाए। हताशा में, भद्दा के माता-पिता उसकी बात मान गए। उसके पिता ने अधिकारियों को बड़ी रिश्वत दी जिन्होंने युवक के स्थान पर एक गरीब, निर्दोष व्यक्ति को नियुक्त कर दिया, और भद्दा के प्रेमी को रिहा कर दिया गया। भद्दा के माता-पिता ने उसकी शादी उस युवक से कर दी, इस उम्मीद में कि उसका प्यार और उसकी अच्छी किस्मत उसके सुधरने में मदद करेगी।

लेकिन वह युवक, जो दिल से चोर था, नहीं बदला। इसके बजाय, वह अपनी पत्नी के सुंदर विवाह आभूषणों के प्रति आसक्त हो गया, जिन्हें वह उससे चुराने की योजना बना रहा था। उसने भद्दा को बताया कि उसने पर्वतों के देवता से एक प्रतिज्ञा ली है। उसने प्रतिज्ञा की थी कि यदि उसका जीवन बचा लिया गया तो वह पर्वत की चोटी पर, जो देवता का निवास स्थान है, जाकर भेंट चढ़ाएगा। उसने कहा कि अब प्रतिज्ञा पूरी करने का समय आ गया है। भद्दा को अपने सारे आभूषण पहनने का निर्देश देकर वह उसे लेकर एक ऊंचे पर्वत की चोटी की ओर चल पड़ा।

रास्ते में वे एक खड़ी चट्टान पर पहुँचे, जिसे लुटेरों की चट्टान के नाम से जाना जाता था, क्योंकि उस समय के कानूनों के अनुसार चोरों को इस स्थान से चट्टान से नीचे धकेल कर मौत की सजा दी जाती थी। फिर उसने भद्दा से अपने सारे आभूषण सौंपने को कहा और उसे उसकी आसन्न मृत्यु के बारे में बताया क्योंकि वह उसे चट्टान से नीचे धकेल कर उसके आभूषण लेकर भाग जाना चाहता था। भद्दा को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। लेकिन अपनी सूझबूझ के चलते उसने अपने पति की योजना को नाकाम करने का एक उपाय सोच लिया।

उसने पति का अनुरोध मान लिया और उससे अपने प्रिय पति को प्रणाम करने की अनुमति मांगी। फिर घुटनों के बल बैठकर उसने दोनों ओर से उसे प्रणाम किया और जब वह ठीक उसके पीछे आ गई, तो उसे चट्टान से नीचे धकेल दिया।

दयालु और करुणामयी भद्दा अपने किए पर भयभीत हो गई। आत्मरक्षा में भी किसी की हत्या करने का डर उसके मन पर गहरा सता रहा था। अब उसे पुरुषों और सांसारिक सुखों में कोई आकर्षण नहीं रहा। संन्यासी जीवन जीने का निश्चय करके वह जैन धर्म में शामिल हो गई।

जैन धर्म की मान्यताओं के अनुसार प्रायश्चित के रूप में उनके बाल जड़ से उखाड़ दिए गए। उन्होंने जैन धर्म की शिक्षाओं का पालन किया और पूरी निष्ठा से धर्म का अभ्यास किया। हालांकि, उनके बाल फिर से उगने लगे, लेकिन इस बार वे घने घुंघराले बालों के रूप में थे। भद्दा को जल्द ही कुंडलकेशा या 'घुंघराले बाल' के नाम से जाना जाने लगा।

कुछ ही समय में कुंडलकेशा ने जैन धर्म के सभी ज्ञान में महारत हासिल कर ली। वह एक गुरु से दूसरे गुरु के पास जाती रहीं और उनके दर्शन और प्रथाओं को बहुत जल्दी आत्मसात कर लिया। कई आध्यात्मिक गुरुओं के अधीन अध्ययन करने के बाद कुंडलकेशा एक अत्यंत ज्ञानी और आध्यात्मिक व्यक्तित्व बन गईं। इतनी ज्ञानी कि उन्होंने धर्म और दर्शन के विषयों पर बहस करने में निपुणता प्राप्त कर ली।

कुंडलकेशा शहर-शहर घूमकर लोगों को बहस के लिए चुनौती देती थीं। जब भी वह किसी शहर में प्रवेश करतीं, तो वह रेत का एक छोटा सा टीला बनातीं और उसके बीच में गुलाब-खलिहान की एक शाखा लगा देतीं। फिर वह बहस करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति को रेत के टीले को कुचलकर उनकी चुनौती स्वीकार करने के लिए कहतीं।

एक दिन जब बुद्ध जेतवन मठ में निवास कर रहे थे, कुंडलकेशा श्रावस्ती पहुंची और उन्हें चुनौती दी। सारिपुत्त ने उनकी चुनौती स्वीकार कर ली। उन्होंने कुछ बच्चों को अपने नाम पर रेत का टीला रौंदने और कुंडलकेशा को अगले दिन मठ में आकर उनसे वाद-विवाद करने के लिए कहने का आदेश दिया।

अपनी जीत के प्रति आश्वस्त कुंडलकेशा अपने समर्थकों की एक बड़ी सभा के साथ मठ पहुंचीं। उन्होंने सारिपुत्त से प्रश्न पूछना शुरू किया। उनके हर प्रश्न का सारिपुत्त ने सही उत्तर दिया। कुंडलकेशा ने एक के बाद एक प्रश्न पूछे, जब तक कि उनके प्रश्न समाप्त नहीं हो गए। उनका प्रश्न चाहे जो भी हो, सारिपुत्त को उसका उत्तर ज्ञात था। अब सारिपुत्त की बारी थी उन्हें चुनौती देने की। कुंडलकेशा पहले ही प्रश्न पर अटक गईं। उत्तर न जानने के कारण उन्होंने सारिपुत्त से उन्हें सिखाने का अनुरोध किया। सारिपुत्त बुद्ध की उपस्थिति में प्रश्न का उत्तर देने के लिए सहमत हो गए।

सारिपुत्त उन्हें बुद्ध के पास ले गए और भद्दा ने उनका उपदेश सुना। भद्दा, जो अत्यंत बुद्धिमान थीं, ने पल भर में अरहंतत्व प्राप्त कर लिया। बुद्ध ने कहा कि भद्दा भिक्षुणियों में धम्म को शीघ्रता से समझने में अग्रणी थीं, क्योंकि उन्होंने भी भिक्षुणी बाहिया की तरह ही क्षण भर में ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

अपनी वाद-विवाद की कुशलता का उपयोग करते हुए, भद्दा ने दूर-दूर तक यात्रा की और दूसरों को धम्म का उपदेश दिया ताकि वे भी सत्य से लाभान्वित हो सकें।

5.10 पताचारा, सावत्थी के एक करोड़पति (सेत्थी) की पुत्री, अपने पिता के सेवक की पत्नी, विनय विद्या में निपुण थेरी में अग्रणी, एक प्रख्यात शिक्षिका और नेता।

उनका भी पुनर्जन्म हुआ, जब पद्ममुत्तरा बुद्ध थे, हंसवती में एक कुलवासी परिवार में। एक दिन वे गुरु का प्रवचन सुन रही थीं, और जब उन्होंने भिक्षुणियों को संघ के नियमों में पारंगत भिक्षुणियों में सर्वोच्च स्थान दिया, तो उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन वे भी इस पद को प्राप्त करेंगी। जीवन भर अच्छे कर्म करने और स्वर्ग-पृथ्वी में पुनर्जन्म लेने के बाद, उनका पुनर्जन्म उस समय हुआ जब कश्यप बुद्ध थे, काशी के राजा किकी की सात पुत्रियों में से एक के रूप में। उन्होंने 20,000 वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पवित्र जीवन व्यतीत किया और संघ के लिए एक कुटिया का निर्माण किया। जब तक पृथ्वी पर कोई बुद्ध नहीं थे, वे देवताओं (देवदूतों) के बीच महिमामयी निवास करती रहीं, और अंत में, इस बुद्ध युग में, उनका पुनर्जन्म सावत्थी में करोड़पति (सेठी) के घर में हुआ। बड़े होने पर, उनका अपने घर के एक सेवक से घनिष्ठ संबंध बन गया। जब माता-पिता ने उसकी शादी उसके ही दर्जे के युवक से तय करने का दिन तय किया, तो उसने मुट्ठी भर सामान लिया और अपने प्रेमी के साथ शहर के मुख्य द्वार से निकलकर एक वन-शाखापत्तनम गाँव में रहने लगी। (गर्भवती होने के कारण) जब प्रसव का समय निकट आया, तो उसने कहा: 'यहाँ मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं है; चलो घर चलते हैं, पतिदेव।' और वह टालमटोल करता रहा, कभी कहता रहा: 'आज चलेंगे; कभी कल चलेंगे', यहाँ तक कि उसने कहा: 'यह मूर्ख मुझे कभी वहाँ नहीं ले जाएगा'; और उसके जाने के बाद उसने अपने सारे काम निपटा लिए, अपने पड़ोसियों से कहा कि वे कहें कि वह घर चली गई है, और वह अकेले ही निकल पड़ी। जब वह वापस आया और उसे यह बात पता चली, तो वह चिल्लाया: 'मेरी वजह से एक उच्च कोटि की महिला असुरक्षित है,' और उसके पीछे दौड़ते हुए उसे पकड़ लिया। रास्ते में ही उसे प्रसव पीड़ा होने लगी, और जब वह संभली, तो वे वापस गाँव की ओर लौट आए। दूसरे बच्चे के जन्म पर सब कुछ पहले जैसा ही हुआ, बस एक फर्क था: जब कर्म (भाग्य) की हवाएँ उस पर चलीं, तो एक भयंकर तूफान आ गया और उसने कहा, 'पतिदेव, मुझे बारिश से बचाओ!' जब वह जंगल में घास और लकड़ियाँ काट रहा था, तो उसने चींटियों के टीले में खड़े एक पेड़ से एक डंडा काट लिया। तभी चींटियों के टीले से एक साँप निकला और उसे काट लिया, जिससे वह वहीं गिर पड़ा और मर गया। वह बहुत दुखी थी और उसके आने का इंतज़ार कर रही थी, जबकि दोनों बच्चे हवा और बारिश से रो रहे थे। उसने उन्हें अपनी गोद में लिया और ज़मीन पर उनके ऊपर लेटकर रात बिताई। भोर होते ही, एक बच्चे को अपनी गोद में लिए और दूसरे से कहते हुए, 'आओ, प्यारे, पिता तुम्हें छोड़कर चले गए हैं,' वह गई और उसे चींटियों के टीले के पास मृत पाया। 'ओह!' वह रो पड़ी, 'मेरे कारण मेरे पति की मृत्यु हो गई,' और पूरी रात रोती और विलाप करती रही। बारिश के कारण उसके रास्ते में बहने वाली नदी घुटनों तक उफान पर थी, और वह घबराई हुई और कमजोर होने के कारण दोनों बच्चों को लेकर नदी पार नहीं कर सकी। इसलिए उसने बड़े बच्चे को एक तरफ छोड़ दिया और दूसरे बच्चे को लेकर नदी पार कर गई। फिर उसने एक टहनी तोड़कर बिछाई और बच्चे को अपने सिर पर लपेटे हुए कपड़े पर लिटा दिया। लेकिन जब वह उस नन्हे बच्चे को छोड़कर जा रही थी,और नदी की ओर जाते समय वह बार-बार पीछे मुड़कर उसे देखती रही। जब वह आधे रास्ते पहुँच चुकी थी, तभी हवा में उड़ते एक बाज़ ने बच्चे को मांस का टुकड़ा समझकर झपट लिया। माँ ने उसे देखकर ताली बजाई और 'सू! सू!' चिल्लाई, लेकिन बाज़ ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वह उससे दूर थी, और बच्चे को हवा में उठा लिया। फिर बड़ा बेटा, यह सोचकर कि माँ उसके कारण चिल्ला रही है, घबरा गया और नदी में गिर गया; इस प्रकार माँ ने दोनों बच्चों को खो दिया और रोते हुए सावत्थी आ गई। वहाँ एक आदमी से मिलकर उसने पूछा, 'आप कहाँ रहते हैं?' उसने कहा, 'सावत्थी में, महोदया।' 'सावत्थी में फलाँ गली में फलाँ परिवार रहता है। क्या आप उन्हें जानते हैं, मित्र?' उसने कहा, 'मैं उन्हें जानता हूँ, महोदया; लेकिन उनके बारे में मत पूछिए; कुछ और पूछिए।' उसने कहा, 'मुझे किसी और बात से मतलब नहीं है। मैं उन्हीं के बारे में पूछ रही हूँ, मित्रा।' उसने कहा, 'महोदय, क्या आप स्वयं बता नहीं सकतीं?' आपने देखा कि भगवान ने कल रात कैसे बारिश की?' वह बोली, 'हाँ, मित्र। मुझ पर पूरी रात बारिश होती रही। मैं अभी बताती हूँ। लेकिन पहले, मुझे उस करोड़पति (सेठी) के परिवार के बारे में बताओ।' वह बोला, 'महोदया, कल रात घर गिर गया और उन पर आ गिरा (वे सब मर गए) और अब वे सब जल रहे हैं, करोड़पति (सेठी), उसकी पत्नी और उसका बेटा एक ही चिता पर। महोदया, उसका धुआँ दिखाई दे रहा है।' उस दुःख के कारण वह पागल हो गई, यहाँ तक कि उसे अपने कपड़े उतर जाने का भी पता नहीं चला। अपने दुख में विलाप करते हुए—
मेरे दोनों बच्चे अब इस दुनिया में नहीं हैं।

और झाड़ियों में मेरे पति मृत पड़े हैं;

एक ही चिता पर मेरी मां, मेरे पिता और मेरे भाई जल रहे हैं।

उस दिन से वह गोल-गोल घूमने लगी, और क्योंकि उसका लबादा उससे अलग हो गया था, इसलिए उसे 'लबादा-चालक' नाम दिया गया। लोग उसे देखकर कहते, 'जाओ, छोटी पागल औरत!' कुछ लोग उसके सिर पर कूड़ा फेंकते, कुछ उस पर धूल छिड़कते, कुछ उस पर मिट्टी के ढेले मारते। गुरु (बुद्ध), जेतवन वन में एक विशाल समूह के बीच धम्म का उपदेश देते हुए बैठे थे, उन्होंने उसे इस प्रकार गोल-गोल घूमते देखा और उसमें आई परिपक्वता पर विचार किया। जब वह विहार की ओर आई, तो वे भी उसी रास्ते से चले। भीड़ ने उसे देखकर कहा, 'कृपया उस छोटी पागल को यहाँ न आने दें।' भगवान बुद्ध ने कहा, 'उसे मत रोको,' और जब वह फिर से घूम कर आई, तो पास खड़े होकर उन्होंने उससे कहा, 'बहन, अपना होश संभालो।' बुद्ध की असीम शक्ति से, उसने होश में आकर अपनी दयनीय स्थिति को पहचाना, और शर्म और अंतरात्मा से प्रेरित होकर वह धरती पर गिर पड़ी। एक व्यक्ति ने उसे अपना बाहरी वस्त्र दिया, और उसने उसे ओढ़ लिया, और गुरु (बुद्ध) के पास आकर उनके चरणों में प्रणाम करते हुए कहा, 'हे प्रभु, मेरी सहायता कीजिए। मेरे एक बच्चे को बाज़ ले गया है, एक को पानी बहा ले गया है; जंगल में मेरे पति मृत पड़े हैं; मेरे माता-पिता और भाई, ढहे हुए घर के नीचे दबकर एक ही चिता पर जल रहे हैं।' इस प्रकार उसने उन्हें अपने शोक का कारण बताया। गुरु (बुद्ध) ने उसे इस प्रकार समझाया: 'पटाचारा, यह मत सोचो कि तुम किसी ऐसे व्यक्ति के पास आई हो जो तुम्हारी सहायता कर सकता है। जिस प्रकार अब तुम बच्चों और अन्य लोगों की मृत्यु के कारण आँसू बहा रही हो, उसी प्रकार जीवन के अनंत चक्र में तुम बच्चों और अन्य लोगों की मृत्यु के कारण चारों सागरों के जल से भी अधिक आँसू बहाती रही हो।'
'महासागरों का जल चार गुना कम है'

आंसुओं में बहाए गए जल की सारी बर्बादी से भी कहीं अधिक।

दुःख से व्याकुल मनुष्य के हृदय द्वारा।

अपना जीवन कड़वे दुख के बारे में सोचकर क्यों बर्बाद करें?

इस प्रकार, गुरु (बुद्ध) के उन वचनों के माध्यम से, जो मोक्ष के मार्ग को छूते हैं, उसका दुःख सहना आसान हो गया। यह जानकर उन्होंने आगे कहा: 'हे पताकारा, परलोक जाने वाले के लिए न तो कोई बच्चा, न ही कोई रिश्तेदार आश्रय, छुपने की जगह या शरण बन सकता है। यहाँ भी वे ऐसा नहीं कर सकते। इसलिए, जो भी बुद्धिमान हो, वह अपने आचरण को शुद्ध करे और निर्वाण की ओर ले जाने वाले मार्ग का अनुसरण करे।' इस प्रकार उन्होंने उसे उपदेश दिया और कहा:
'पुत्र न तो आश्रय होते हैं, न पिता, न ही कोई रिश्तेदार।'

मृत्यु ने तुम्हें घेर लिया है, तुम्हारे लिए रक्त संबंध कोई सहारा नहीं है।

इस सत्य को जानकर, सद्‌गुणों से परिपूर्ण बुद्धिमान व्यक्ति,

स्विफ्टली निब्बाना की ओर जाने वाली सड़क को स्पष्ट कर देता है।

जब उन्होंने बोलना समाप्त किया, तब वह सोतापना (प्रथम दिव्य जागृति) के फल में स्थापित हो चुकी थीं और उन्होंने दीक्षा का अनुरोध किया। गुरु (बुद्ध) उन्हें भिक्षुणियों के पास ले गए और उन्हें प्रवेश दे दिया।
वह अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में उच्चतर उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए अभ्यास कर रही थीं। एक दिन उन्होंने एक कटोरे में जल लिया और अपने पैर धोते हुए कुछ जल बहा दिया, जो थोड़ी दूर तक रिसकर गायब हो गया। उन्होंने और जल डाला, और वह और दूर तक गया। और तीसरी बार जल गायब होने से पहले और भी दूर तक गया। इसे अपने चिंतन का आधार बनाकर उन्होंने मनन किया: 'इसी प्रकार मनुष्य मरते हैं, या तो बचपन में, या मध्य आयु में, या बुढ़ापे में।' और गुरु, अपने 'सुगंधित कक्ष' में बैठे हुए, अपने तेजस्वी दिव्य रूप को प्रकट किया और मानो उनके सामने बोलते हुए प्रकट हुए, और कहा: 'इसी प्रकार, हे पताचारा, सभी मनुष्य मरने के योग्य हैं; इसलिए क्या यह बेहतर है कि हम इस तरह से जिएं कि पांचों खंधों (5 आंतरिक समुच्चयों) के आने-जाने को देख सकें, भले ही केवल एक दिन के लिए ही सही, एक पल के लिए ही सही, बजाय इसके कि हम सौ साल तक जिएं और उसे न देखें।
'वह व्यक्ति जो सौ वर्ष तक जीवित रहा,

वह कभी यह नहीं देखता कि चीजें कैसे उत्पन्न होती हैं और नष्ट होती हैं (भौतिक संसार का सत्य)।

एक दिन से अधिक न जीना ही बेहतर है।

अतः उस दिन उसे अनित्यता का सत्य दिखाई देता है।

और जब उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया, तो पताकारा ने अरहंत पद (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का रूप और अर्थ दोनों में पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। उस समय से, अपनी शिष्या अवस्था में ही इस उपलब्धि को याद करते हुए और इस आध्यात्मिक परिवर्तन को महत्व देते हुए, उन्होंने आनंदपूर्वक कहा:
हल से खेतों की जुताई करते हुए, बीज बोते हुए

धरती की गोद में बोए गए बीज से ही मनुष्य अपनी फसलें प्राप्त करते हैं।

उनकी कमाई का आनंद लें और पत्नी और बच्चे का पालन-पोषण करें। (112)

मैं, जिसका जीवन पवित्र है, जो खोजता है, क्यों नहीं कर सकता?

गुरु (बुद्ध) की इच्छा पूरी करने में मैं आलसी नहीं हूँ।

न ही घमंड से निर्वाण की प्राप्ति हो सकती है? (113)

एक दिन, अपने पैर धोते हुए, मैं बैठकर देखने लगा

ढलान से नीचे रिसता हुआ पानी।

इससे मैंने स्वयं को दृढ़ संकल्पित कर लिया था।

जैसे किसी श्रेष्ठ नस्ल के घोड़े को प्रशिक्षित किया जाता है। (114)

फिर मैं अपनी कोठरी में जाकर अपना लैंप ले लेता हूँ।

और मैं अपने सोफे पर बैठकर लौ को देखता हूँ। (115)

पिन को पकड़कर, मैं बाती को पूरी तरह नीचे खींच लेता हूँ।

तेल में. . . .

देखो! नन्हे दीपक का निर्वाण!

आत्मज्ञान (विमोक्खो, विमुक्ति) का उदय होता है!

मेरा मन अब मुक्त हो गया है (विमोक्खो, विमुक्ति, मोक्ष)! (116)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

पताकारा एक धनी सावत्थी व्यापारी की सुंदर पुत्री थी। जब वह बालिग हुई तो उसके माता-पिता ने उसके लिए उसी के समान प्रतिष्ठा और धन वाले एक पुरुष से विवाह निर्धारित कर दिया। परन्तु पताकारा अपने माता-पिता के घर के एक नौकर से प्रेम करती थी। उसने अपने प्रेमी के साथ भाग जाने का निश्चय किया क्योंकि उसे लगा कि नौकर से विवाह करने के लिए माता-पिता की सहमति प्राप्त करना असंभव होगा।

नौकरानी का वेश धारण करके और सिर पर पानी का घड़ा लेकर पताकारा अपने प्रेमी के साथ भाग गई। उन्होंने सावत्थी से कुछ दूरी पर स्थित एक गाँव में अपना घर बसाया। उसका पति खेत जोतता था और मामूली कमाई करता था। पताकारा चावल कूटने, खाना पकाने और सफाई करने का काम करती थी - ये सभी काम पहले उसके माता-पिता के घर के नौकर किया करते थे। इस प्रकार उसने एक कठिन जीवन व्यतीत किया, और अपने भाग जाने के कारण माता-पिता को जो कष्ट पहुँचाया था, उसका प्रायश्चित इसी जन्म में कर रही थी।

कुछ समय बाद पताकारा अपने पहले बच्चे से गर्भवती हुई। रिवाज के अनुसार वह प्रसव के लिए अपने माता-पिता के घर वापस जाना चाहती थी। उचित समय आने पर उसने अपने पति से उसे अपने माता-पिता के पास वापस ले जाने का अनुरोध किया। उसने इनकार कर दिया, क्योंकि उसे यकीन था कि उसे उनसे दूर ले जाने के लिए उसके माता-पिता उसे यातनाएँ देंगे और मार डालेंगे। तब पताकारा ने अकेले जाने का फैसला किया। पड़ोसियों को यह बताकर कि वह अपने माता-पिता से मिलने गई है, पताकारा सावत्थी की ओर चल पड़ी।

जब उसका पति काम से लौटा और उसे पता चला कि पताकारा अपने माता-पिता से मिलने गई है, तो वह बहुत परेशान हुआ। उसके पीछे दौड़कर उसने उसे पकड़ लिया और वापस लौटने की विनती की। उसी समय प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। कुछ झाड़ियों की ओट में छिपकर पताकारा ने एक बेटे को जन्म दिया। अपने पति के आग्रह पर वह वापस लौट आई।

कुछ वर्षों बाद पताकारा अपने दूसरे बच्चे से गर्भवती हुई। जब बच्चे के जन्म का समय निकट आया, तो अपने माता-पिता के सहयोग से बच्चे को जन्म देने के दृढ़ संकल्प के साथ, वह अपने बड़े बेटे को लेकर सावत्थी की ओर चल पड़ी। वह आधी दूरी ही तय कर पाई थी कि उसका पति उसके पास पहुँच गया। उसने फिर से उसे जाने से मना किया। लेकिन इस बार पताकारा अपने माता-पिता के साथ रहने के लिए दृढ़ थी।

वे इसी तरह यात्रा कर रहे थे कि अचानक भयंकर तूफान आ गया। तेज हवाओं ने रास्ते को तहस-नहस कर दिया, पेड़ की डालियाँ इधर-उधर हिलने लगीं और मूसलाधार बारिश होने लगी। तूफान के बीच ही पताकारा को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। उसने अपने पति से मूसलाधार बारिश और हवा से बचने के लिए एक अस्थायी आश्रय बनाने को कहा। वह आश्रय बनाने के लिए कुछ उपयुक्त डालियाँ काटने चला गया। पताकारा अपने पति के लौटने का व्यर्थ ही इंतजार करती रही। फिर, अपने पहले बच्चे को यथासंभव बचाते हुए, उसने दूसरे बेटे को जन्म दिया। पताकारा ने रात एक झाड़ी के नीचे दुबककर सोई, अपने शरीर को इस तरह झुकाकर कि उसके दोनों बेटे तूफान से सुरक्षित रहें।

अगली सुबह जब वह अपने पति के पदचिह्नों पर चली तो उसने उनका अकड़ा हुआ शरीर पाया। आश्रय के लिए शाखाएँ काटते समय उन्होंने एक विषैले साँप को परेशान कर दिया था। मृत्यु दर्दनाक थी लेकिन क्षणिक थी। शोक में लीन, पताकारा ने अपने बेटों को इकट्ठा किया और सावत्थी में अपने माता-पिता के घर की ओर चल पड़ी।

रास्ते में उन्हें उफनती अचिरवती नदी पार करनी पड़ी। पानी कमर तक था और धारा तेज़ थी। तूफान और हाल ही में प्रसव पीड़ा से थकी हुई पताकारा जानती थी कि वह दोनों बच्चों को नहीं ले जा सकती। अपने बड़े बेटे को किनारे पर छोड़कर वह नवजात शिशु को दूसरी ओर ले गई। फिर वह अपने पहले बच्चे को लाने के लिए वापस चल पड़ी। वह आधे रास्ते में ही थी कि उसने एक बाज़ को नीचे झपट्टा मारते हुए देखा जो लाल मांस के टुकड़े जैसे दिखने वाले नवजात शिशु को उठाकर ले जा रहा था। पताकारा चीखी और अपने हाथ हिलाए, उम्मीद कर रही थी कि बाज़ उसके बच्चे को छोड़ देगा। बाज़ ने उसकी चीखों को अनसुना कर दिया, लेकिन उसका पहला बच्चा, यह सोचकर कि उसकी माँ उसे बुला रही है, नदी में दौड़ पड़ा और तेज़ बहते पानी में बह गया।

पताकारा शोक से टूट गई। एक ही दिन में उसने अपने पति और दो बेटों को खो दिया था। शोक से व्याकुल, उसके बाल बिखरे हुए थे, कपड़े भीगे हुए थे, आँसुओं से भीगी हुई पटाकारा सावत्थी पहुँची। वहाँ उसकी मुलाकात एक नगरवासी से हुई और उसने अपने माता-पिता के बारे में पूछा। अजनबी ने उससे उस परिवार के बारे में न पूछने की विनती की। उसने कहा, "किसी और के बारे में पूछो, लेकिन उस परिवार के बारे में नहीं।" लेकिन पटाकारा अड़ी रही। तब उसने उसे बताया कि पिछली रात तेज़ हवाओं ने उनका घर गिरा दिया था, जिससे उसके माता-पिता और भाई दोनों की मृत्यु हो गई थी। फिर, हवा में उठते नीले धुएँ की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "देखो, यह उन तीनों की चिता का धुआँ है जो मर गए। उनका अंतिम संस्कार एक साथ किया गया था।"

असहनीय शोक में पटाकारा अपना मानसिक संतुलन खो बैठी। दर्द से चीखती हुई वह शहर में इधर-उधर भागी, उसके कपड़े फटे हुए थे, बाल बिखरे हुए थे, वह अधनंगी थी। स्थानीय लोगों ने उसे गालियाँ दीं और अपशब्द कहे क्योंकि उन्हें यकीन था कि वह मानसिक रूप से विक्षिप्त है। दुःख से व्याकुल और अधमरी अवस्था में पटाचारा जेतवन मठ के पास पहुँची, जहाँ बुद्ध निवास कर रहे थे। नगरवासियों ने उसे रोकने का प्रयास किया। परन्तु बुद्ध ने अपनी करुणामय दृष्टि से उसकी आंतरिक बुद्धि को पहचानते हुए उसे अंदर आने का आदेश दिया। फिर उन्होंने अपनी करुणा और वचनों से उसे चेतना में वापस लाया। बुद्ध ने कहा, "बहन, अपनी चेतना को पुनः प्राप्त करो।" मानो उसके शरीर पर ठंडे पानी की बाल्टी उड़ेल दी गई हो। इन शब्दों ने उसके पूरे अस्तित्व को झकझोर दिया और उसके दुःख से व्याकुल मन को शांत कर दिया। किसी द्वारा फेंके गए एक लबादे को अपने ऊपर ओढ़कर पटाचारा ने बुद्ध को अपनी दुखमय कहानी सुनाई।

बुद्ध ने करुणा और धैर्य से उनकी बात सुनी और फिर उनसे कहा कि अब और परेशान न हों। "तुम उस परमेश्वर के पास आई हो जो तुम्हारे दुख को दूर कर सकता है। तुमने केवल आज ही पुत्रों, पतियों और माता-पिता को नहीं खोया है, बल्कि इस अनंत संसार चक्र में तुमने पुत्रों और अन्य प्रियजनों को खोया है।" उन्होंने कहा, "तुमने चारों सागरों के जल से भी अधिक आँसू बहाए हैं।" जैसे-जैसे वे बोलते गए, पताकारा का दुःख कम होता गया। बुद्ध ने अंत में निम्नलिखित श्लोक से अपनी बात समाप्त की:
चारों महासागरों में बहुत कम पानी है।

हमने जितने आंसू बहाए हैं, उनकी तुलना में

दुःख से व्याकुल, पीड़ा से विक्षिप्त

हे स्त्री, तुम अब भी क्यों लापरवाह हो?

आश्रय देने के लिए कोई पुत्र नहीं हैं

कोई पिता या रिश्तेदार नहीं

मृत्यु से घिरे व्यक्ति के लिए

रिश्तेदार आश्रय प्रदान नहीं करते।

इस तथ्य को अच्छी तरह समझ लेने के बाद

सद्गुणों से परिपूर्ण बुद्धिमान पुरुष

जल्दी ही स्पष्ट हो जाना चाहिए

निर्वाण की ओर जाने वाला मार्ग।

(धम्मपद 268, 288, 289)

जब बुद्ध ने अपना प्रवचन समाप्त किया, तब तक पताकारा वह उन्मादग्रस्त स्त्री नहीं रह चुकी थीं जो मठ में आई थीं। उन्होंने समस्त सांसारिक वस्तुओं की अनित्यता के सत्य को भलीभांति जान लिया था और संतत्व की प्रथम अवस्था, सोतापन्न प्राप्त कर ली थी। इसके बाद उन्होंने भिक्षुणी बनने का निवेदन किया। भिक्षुणी संघ में प्रवेश करने के बाद, पताकारा ने लगन से धम्म का अभ्यास किया। उनकी लगन शीघ्र ही फलदायी हुई, क्योंकि कुछ ही समय में पताकारा ने अरहंतत्व प्राप्त कर लिया।

पताकारा ने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया था। दीपक बुझने के साथ ही, उनका एकाग्र मन मोक्ष प्राप्त कर चुका था। बुद्ध ने पताकारा को विनय (भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए अनुशासन नियम) में अग्रणी भिक्षुणी के रूप में नामित किया था। बचपन में पताकारा अनुशासनहीन और चंचल थीं। उन्होंने अपने माता-पिता के अधिकार के विरुद्ध विद्रोह किया था और अपने विद्रोह का परिणाम भुगता था। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने अनुशासन के महत्व को समझा और विनय में अग्रणी भिक्षुणी बनीं।

पताकारा अपने पिछले जन्म की आकांक्षाओं और प्रशिक्षण के कारण ही इतनी जल्दी एक चंचल लड़की से संत बन सकीं। एक लाख विश्व चक्र पूर्व पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय, उन्होंने गुरु को एक भिक्षुणी को अनुशासन में अग्रणी की उपाधि प्रदान करते हुए देखा था। वह उस भिक्षुणी से प्रेरित हुईं और भविष्य के किसी बुद्ध के अधीन अनुशासन में अग्रणी भिक्षुणी बनने की आकांक्षा रखने लगीं। बुद्ध पद्ममुत्तरा ने देखा कि पताकारा में अपनी आकांक्षा को पूरा करने की योग्यता और गुण हैं, इसलिए उन्होंने भविष्यवाणी की कि वह गौतम बुद्ध के समय में अनुशासन में अग्रणी भिक्षुणी होंगी। पताकारा ने अनेक बुद्धों के अधीन भिक्षुणी के रूप में जीवन व्यतीत किया और गौतम बुद्ध के मार्गदर्शन में उन्होंने जो अंतर्दृष्टि और ज्ञान अर्जित किया, वह फलीभूत हुआ।

पताकारा, जिन्होंने अपने अनुशासनहीन और लापरवाह व्यवहार के कारण बहुत कष्ट सहा, उन्होंने अपना जीवन अन्य युवतियों को मठवासी अनुशासन और अनुशासित मन के लाभों की शिक्षा देने में समर्पित कर दिया। उन्हें एक महान शिक्षिका और करुणामयी भिक्षुणी के रूप में सम्मान प्राप्त था, जिन्होंने अनेक महिलाओं को मुक्ति प्राप्त करने में सहायता की।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.11
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||48|| ------>>>> अगला

5.11 पताचारा के अधीन तीस थेरी अपने अन्न (प्रबुद्ध अवस्था) की घोषणा करते हैं।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन प्रतिज्ञाएँ ली थीं और अच्छे कर्म संचित करके ज्ञान प्राप्ति (विमोक्ष, विमुक्ति) की परिस्थितियाँ संजोई थीं। वे इस बुद्ध काल में विभिन्न स्थानों पर कुल के परिवारों में जन्मीं, पताचारा का उपदेश सुना, आस्था विकसित की और दीक्षा ली। एक दिन उन्होंने सद्गुणों (नैतिक उपदेशों) को पूर्ण करते हुए और अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए उन्हें यह उपदेश दिया:
'पुरुष मूसल से चावल कूटने में व्यस्त हैं।'

युवावस्था में पुरुष धन इकट्ठा करते हैं और उसे संचित करते हैं।

प्रिय पत्नी और बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए। (117)

लेकिन ध्यान रखें कि आप निवास करें

बुद्ध का वह अनुशासन, जिससे पश्चाताप नहीं होता।

जल्दी से अपने पैर धो लें, फिर एकाग्र मन से बैठ जाएं।

और अपनी चेतना को समभाव (समथा) होने दें।

बुद्ध के अनुशासन में सफलता प्राप्त करने के लिए। (118)

तब उन भिक्षुणियों ने थेरी की सलाह का पालन करते हुए, अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में स्वयं को स्थापित किया, उसमें अभ्यास किया और ज्ञान को इतनी परिपक्वता तक पहुँचाया - और उनमें यह प्रतिज्ञा भी निहित थी - कि उन्होंने अर्हतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान)

प्राप्त किया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को अक्षरशः और भाव से पूर्णतः समझ लिया। और उस पर पीछे मुड़कर देखते हुए, उन्होंने आनंदपूर्वक इस प्रकार कहा, और थेरी के श्लोकों को अपने श्लोकों में जोड़ा:
पटाकारा की शिक्षाओं के तहत, उसकी बातें सुनने के बाद

अपने पैरों को धोकर, वे एकमत होकर अलग-अलग बैठ गए।

और समभाव (समथा) में चेतना के साथ, शांत मन से,

इस प्रकार बुद्ध के अनुशासन का अनुसरण करते हुए। (119)

रात के पहले पहर बीतने के बाद, एक उदय हुआ।

पिछले जन्मों (पुनर्जन्मों) की लंबी यादें;

दूसरी पहर बीतने के बाद, कुछ ही समय में उठ खड़ा हुआ।

स्पष्ट, दिव्य, दिव्य दृष्टि, पवित्रता से परिपूर्ण;

रात का आखिरी पहर बीतते ही वे फूट पड़े।

और अज्ञानता का अंधकार दूर हो गया। (120)

फिर वे उठ खड़े हुए और उसे धन्य कहकर उसकी प्रशंसा की।

आपकी इच्छा पूरी हुई! और हम आपको ले चलते हैं।

जैसे इंद्र (इन्द) तैंतीस (10 मिलियन) देवताओं (देवदूतों) के प्रमुख थे,

आकाशीय युद्धों में अजेय,

हम आपको अपना मुखिया मानते हैं, और इसी प्रकार हम जीवन व्यतीत करेंगे।

हमने जो त्रिविध ज्ञान[2] प्राप्त किया है,

और सांसारिक इच्छाएँ दूर हो जाती हैं। (121)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] ज्ञानोदय के कारण प्राप्तियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वव्यापी दिव्य दृष्टि (या दिव्य दृष्टि) जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा5.12
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||49|| ------>>>> अगला

5.12 चंदा, एक गरीब ब्राह्मण की पुत्री:
वह भी पूर्व युगों में पिछली कन्याओं की तरह ही जन्मी थी, और इस बुद्ध युग में एक ब्राह्मण गाँव में एक ऐसे ब्राह्मण की पुत्री के रूप में जन्मी जिसके बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। बचपन से ही उसके परिवार ने अपनी संपत्ति खो दी और वह दयनीय परिस्थितियों में पली-बढ़ी।
अब, उसके घर में नाग-विस्फोटक रोग (संक्रामक रोग) फैल गया और उसके परिवार के सभी सदस्य इसकी चपेट में आकर मर गए। वह अपना भरण-पोषण करने में असमर्थ होने के कारण एक मिट्टी का बर्तन लेकर घर-घर भीख माँगती रही। एक दिन वह वहाँ पहुँची जहाँ पताकारा ने अभी-अभी अपना भोजन समाप्त किया था। भिक्षुणियों ने उसे दयनीय और भूख से व्याकुल देखकर, उस पर दया करते हुए स्नेहपूर्वक उसका स्वागत किया और अपने पास मौजूद भोजन से उसे तृप्त किया। उनके इस नेक आचरण से प्रसन्न होकर, वह थेरी के पास गई, उन्हें प्रणाम किया और थेरी के प्रवचन के दौरान एक तरफ बैठ गई। उसने आनंदपूर्वक सुना और जीवन चक्र के बारे में चिंतित होकर संसार का त्याग कर दिया। थेरी के उपदेश का पालन करते हुए, वह अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में स्थापित हो गई और अभ्यास में लीन हो गई। फिर, अपने दृढ़ संकल्प और ज्ञान की परिपक्वता के कारण, उसने कुछ ही समय बाद अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके रूप और अर्थ में भलीभांति समझ लिया। और अपनी इस उपलब्धि को याद करते हुए, उसने आनंदपूर्वक कहा:
मैं पहले बुरे दिनों में फंसा हुआ था।

मेरा न कोई पति था, न कोई संतान, न कोई मित्र।

या रिश्तेदार—मैं खाना या कपड़े कहाँ से पा सकता हूँ? (122)

भिखारियों की तरह, मैंने अपना कटोरा और लाठी ले ली।

और उन्होंने मेरे लिए भिक्षा जुटाने का प्रयास किया, घर-घर जाकर भीख मांगी।

धूप से झुलसे हुए, ठंड से जमे हुए, सात थका देने वाले साल। (123)

फिर मैं आया जहाँ एक महिला तपस्वी थी

उन्होंने मेरे साथ भोजन और पेय साझा किया और मेरा स्वागत किया।

और कहा: 'हमारे बेघर तपस्वी जीवन में आओ!' (124)

दया भाव से उसने मुझे आने दिया।

और उन्होंने मुझे प्रतिज्ञा लेते हुए सुना।

और तब से ज्ञान और शक्ति के शब्द

उसने बात की और मेरे सामने रख दिया

सर्वोच्च उपलब्धि तक पहुँचने का मार्ग। 251 (125)

मैंने उन्हें पढ़ाते हुए सुना और उनके बताए रास्ते पर चला।

हमारी माता की शिक्षा बुद्धिमानी और स्पष्टता से भरी है!

मुझे अब त्रिविध ज्ञान[2] प्राप्त हो गया है।

घातक इच्छाओं से मुक्त। (126)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] ज्ञानोदय के कारण प्राप्तियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वव्यापी दिव्य दृष्टि (या दिव्य दृष्टि) जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा6.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ॥50॥ ------>>>> अगला

6.1 पताकारा की 'पाँच सौ' शोकग्रस्त माताएँ जिन्हें उन्होंने सांत्वना दी और दीक्षा दी:
ये माताएँ भी पूर्व बुद्धों के अधीन पूर्व थेरी के रूप में जीवन व्यतीत कर चुकी थीं, और इस बुद्ध युग में विभिन्न स्थानों पर किसी कुलवासी के घर में पुनर्जन्म लेकर विवाह किया और संतान उत्पन्न की, तथा गृहस्थ जीवन व्यतीत किया। ऐसे कर्म करने के कारण, जिनसे ऐसा परिणाम उत्पन्न हुआ, उन्हें एक बच्चे की मृत्यु का शोक सहना पड़ा। तब वे व्यथित होकर पताकारा के पास पहुँचीं, उन्हें प्रणाम किया और उनके पास बैठकर अपने दुःख का वर्णन किया। थेरी ने उनके दुःख को संयमित करते हुए इस प्रकार कहा:
हम यह नहीं जान सकते कि मनुष्य किस प्रकार जन्म लेते हैं।

और न ही हम वह रास्ता देख सकते हैं जिससे वे जाते हैं (मरते हैं)।

फिर तुम उसके लिए क्यों शोक मनाते हो जो तुम्हारे पास आया था?

आँसुओं के बीच विलाप करते हुए: 'मेरे बेटे! मेरे बेटे!' (127)

तुम्हें देखकर वह रास्ता नहीं जानता जिससे वह आया था।

और न ही उसके तुम्हें छोड़कर जाने का तरीका?

रोओ मत, क्योंकि मनुष्य का जीवन ऐसा ही होता है। (128)

वह बिना पूछे आया, बिना बुलाए चला गया।

देखो! अपने आप से फिर से पूछो कि तुम्हारा बेटा कहाँ से आया है।

इस धरती पर इस थोड़ी सी सांस लेने की जगह में बने रहने के लिए? (129)

एक रास्ते से आया और दूसरे रास्ते से चला गया।

मनुष्य को मरना है और दूसरे जन्मों में जाना है।

तो यहाँ और इसलिए आगे—तुम क्यों रोओगे? (130)

उनकी शिक्षा सुनकर वे प्रेरणा से भर गए और थेरी के मार्गदर्शन में संसार का त्याग कर दिया। अब से वे अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) का अभ्यास करते रहे, उनका मन ज्ञानोदय (विमुक्ति, विमुक्ति) के लिए परिपक्व होता गया और वे शीघ्र ही अरहंत पद (बुद्ध के समान ज्ञानोदय) में स्थापित हो गए, और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके वास्तविक रूप और अर्थ में भलीभांति समझ गए। उस समय

से, अपनी इस उपलब्धि पर विचार करते हुए, वे इन शब्दों से प्रसन्न होते रहे, 'जिस मार्ग से लोग आते हैं,' और उसमें अन्य श्लोक जोड़कर उन्हें क्रमानुसार इस प्रकार दोहराते रहे:
देखो! मेरे हृदय से छिपा हुआ तीर निकल गया है।

वहां जो शाफ्ट था, उसे उसने हटा दिया है।

और मेरे मृत बच्चे के लिए वह असहनीय शोक

जिसने मेरे पूरे जीवन को विषैला बना दिया था, वह मर चुका है। (131)

आज मैं ठीक हो गया हूँ, मेरी तड़प अभी भी बाकी है।

मुझे पूर्ण रूप से मुक्ति प्राप्त हुई।

मैं बुद्धिमान और शांत बुद्ध, धम्म और संघ की शरण में जाता हूँ(132)

अब, चूंकि वे 500 भिक्षुणियां पताकारा की शिक्षाओं में पारंगत थीं, इसलिए उन्हें पताकारा की भिक्षुणियां कहा जाने लगा।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा6.2
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||51|| ------>>>> अगला

6.2 वसित्थी, या वसेत्थी, वैशाली के एक कुल के व्यक्ति की पुत्री, एक ब्राह्मण की पत्नी, एक शिक्षिका।
वह भी पूर्व बुद्धों की तरह ही पूर्व बुद्धों के अधीन रहते हुए, इस बुद्ध युग में वैशाली के एक कुल के व्यक्ति के परिवार में पुनर्जन्म लेकर जन्मीं। उनके माता-पिता ने उनका विवाह अपने ही कुल के एक पुत्र से कर दिया, और उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया और अपने पति के साथ सुखी जीवन व्यतीत किया। परन्तु जब बच्चा दौड़ने-भागने लायक हुआ, तो उसकी मृत्यु हो गई; और वह हृदयविदारित होकर शोक से पागल हो गईं। जब रिश्तेदार पति को सांत्वना दे रहे थे, तब वह, उनकी जानकारी के बिना, रोते हुए भाग गईं और (पागलपन की अवस्था में) इधर-उधर भटकती रहीं, जब तक कि वह मिथिला नहीं पहुँच गईं। वहाँ उन्होंने भगवान बुद्ध को अगली गली से नीचे जाते हुए देखा, जो आत्मसंयमित, शांत और अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण में थे। महान गुरु के दर्शन मात्र से और बुद्ध की कृपा से, वह अपने पागलपन से उबरकर सामान्य अवस्था में आ गईं। तब गुरु (बुद्ध) ने उन्हें संक्षेप में धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया। इसे सुनकर वे परमानंद की लहरों से भर उठीं और उन्होंने गुरु (बुद्ध) से दीक्षा देने का अनुरोध किया। तब उन्होंने एक अन्य भिक्षुणी (भिक्षुणी) से उन्हें दीक्षा देने के लिए कहा। सभी आवश्यक कर्तव्यों और प्रारंभिक अनुष्ठानों को पूरा करते हुए, वे अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में स्थापित हुईं और पूर्ण परिश्रम और परिपक्व समझ के साथ, उन्होंने शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को सच्चे रूप और भावना में पूर्णतः समझ लिया। अपनी इस उपलब्धि को याद करते हुए, प्रसन्न होकर उन्होंने कहा:
अपने बच्चे के लिए शोक मनाते हुए, मेरा दिमाग सुन्न हो गया है, मैं शोक से पागल हो गया हूँ।

मैं इधर-उधर, इधर-उधर भटकता रहा।

नग्न, बिखरे बालों के साथ, (133)

सड़कों के किनारे खड़े रहना,

और जहाँ मुर्दे पड़े थे, और रथों के रास्तों के किनारे—

अतः मैं तीन वर्ष तक भूखा-प्यासा रहा। (134)

और फिर अंत में मैंने उन्हें (बुद्ध को) देखा, जब वे जा रहे थे।

उस पवित्र नगर मिथिला में:

अनियंत्रित को वश में करने वाला महान गुरु, जी हाँ, वही।

स्वयं बुद्ध, भय के निवारक। (135)

फिर मेरा भटकता हुआ मन वापस मेरे नियंत्रण में आ गया;

मैं तुरंत उनके पास जाकर प्रणाम करने लगा।

और वहाँ, उनके चरणों में ही मैंने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना।

उन्होंने मुझ पर, गौतम (बुद्ध) पर, बड़ी करुणा दिखाई। (136)

मैंने उनके द्वारा सिखाए गए धम्म का पालन किया, दीक्षा ली और संसार का त्याग किया।

और अपनी सारी चिंताओं को पीछे छोड़कर, मैंने खुद को समर्पित कर दिया।

गुरु की शिक्षाओं का अनुसरण करना और उन्हें साकार करना।

जीवन महान सौभाग्य के मार्ग पर अग्रसर है। (137)

अब मेरे सारे दुख दूर हो गए हैं, चकनाचूर हो गए हैं।

जड़ से उखाड़ दिया गया, पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया,

अब मैं इसे समझ और ग्रहण कर सकता हूँ।

वह आधार जिस पर दुःख टिका होता है। (138)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा6.3
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||52|| ------>>>> अगला

6.3 मगध के सगाला में राजा के परिवार की पुत्री, राजा बिम्बिसार (राजगृह) की पत्नी खेमा, जो अंतर्दृष्टि में विख्यात थेरी में अग्रणी थीं और बुद्ध द्वारा आदर्श थेरी के रूप में स्थान प्राप्त थीं,
अब जब पद्ममुत्तरा बुद्ध थे, तब वह हंसवती में दूसरों की दासी बनकर, अपनी आजीविका के लिए दूसरों पर निर्भर थीं। एक दिन, उन्होंने वृद्ध सुजाता को भिक्षा मांगते हुए देखा, तो उन्होंने उन्हें तीन मीठे केक दिए और साथ ही अपने बाल उतारकर उन्हें देते हुए कहा: 'काश मैं भविष्य में बुद्ध की महान ज्ञानवान शिष्या बन सकूँ!' अनेक सौभाग्यशाली पुनर्जन्मों के बाद, देवताओं (देवदूतों) और मनुष्यों दोनों के बीच रानी के रूप में, क्योंकि उन्होंने उत्तम कर्म किए थे, वह मनुष्य बनीं, जब विपस्सी बुद्ध थे। संसार का त्याग करके, उन्होंने दस हजार वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पवित्र जीवन व्यतीत किया और वे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) की विद्वान उपदेशक थीं। जब काकुसंध बुद्ध थे, तब एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लेकर उन्होंने संघ के लिए एक विशाल उद्यान बनवाया और बुद्ध को संघ का प्रमुख बनाकर उसे संघ को सौंप दिया। कोनागमना बुद्ध के समय भी उन्होंने यही कार्य किया। जब कश्यप बुद्ध थे, तब वे राजा किकी की सबसे बड़ी पुत्री बनीं, जिनका नाम समानी रखा गया। उन्होंने ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत किया और संघ को एक कुटिया दान में दी। अंततः, इस बुद्ध युग (गौतम बुद्ध के युग) में, उनका जन्म मगध के सगाला में राजा के परिवार में हुआ और उनका नाम खेमा रखा गया। सुंदर और स्वर्णमयी त्वचा वाली वे राजा बिम्बिसार की पत्नी बनीं। जब गुरु (बुद्ध) वेलुवन (बांस के वन) में थे, तब वे अपनी सुंदरता पर मोहित होकर उनसे मिलने नहीं गईं, क्योंकि उन्हें डर था कि वे इसे उनकी कमी समझेंगे। राजा ने लोगों से वेलुवन की प्रशंसा करवाई ताकि वे वहां आएं। तब उन्होंने राजा से वेलुवन देखने की अनुमति मांगी। राजा विहार गए और जब उन्हें कोई गुरु नहीं मिला, तो उन्होंने ठान लिया कि रानी को जाने नहीं देंगे। उन्होंने अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे रानी को दस शक्तियों वाले बुद्ध से मिलवाएं, चाहे इसके लिए उन्हें विवश ही क्यों न करना पड़े। जब रानी गुरु से मिले बिना ही जाने वाली थीं, तब उन्होंने ऐसा ही किया। जब वे अनिच्छा से रानी को लाए, तो गुरु ने अपनी जादुई शक्ति से एक अप्सरा जैसी स्त्री को प्रकट किया, जो ताड़ के पत्ते से उन्हें हवा दे रही थी। खेमा ने उसे देखकर सोचा, 'सचमुच भगवान बुद्ध के चारों ओर देवियों जैसी सुंदर स्त्रियां हैं। मैं तो ऐसी स्त्री की सेवा करने के भी योग्य नहीं हूं। मैं अपने नीच और गलत विचारों के कारण बर्बाद हो गया!' फिर, देखते ही देखते, गुरु की दृढ़ इच्छाशक्ति से वह स्त्री यौवन से अधेड़ और फिर वृद्धावस्था में पहुंच गई, और अंत में टूटे दांतों, सफेद बालों और झुर्रीदार त्वचा के साथ ताड़ के पत्ते सहित पृथ्वी पर गिर पड़ी। तब खेमा ने अपने प्राचीन संकल्प के कारण सोचा: 'क्या ऐसा शरीर इस तरह से क्षतिग्रस्त हो सकता है? तो मेरा शरीर भी ऐसा ही हो जाएगा!' और गुरु (बुद्ध), उसके विचारों को जानते हुए, बोले:
'जो लोग कामवासना के गुलाम होते हैं, वे धारा के साथ बह जाते हैं।'

जैसे कोई मकड़ी जाले पर सरकती है

उसने स्वयं ही इसे बनाया है। लेकिन जो मुक्त हुआ है,

जिनके सारे बंधन टूटकर बिखर गए हैं,

कहीं और विचार केंद्रित करके, संसार को त्याग दो।

और इंद्रिय सुख में लिप्त रहने वाले सभी आनंद को दूर रखा जाए।

टीकाओं में कहा गया है कि जब उन्होंने अपना कार्य पूरा किया, तो उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का रूप और अर्थ में पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त किया। लेकिन अपदाना के अनुसार, उन्हें केवल उस फल (सोतापना, प्रथम दिव्य जागृति) में स्थापित किया गया था जिसने धारा में प्रवेश किया था, और राजा की सहमति से, उन्होंने संघ में प्रवेश किया और तब वे अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) बन गईं।
उस समय से वे अपनी महान अंतर्दृष्टि (पन्ना, दिव्य समझ) के लिए जानी जाने लगीं, और जेतवन वन विहार (मठ) में आर्यों (अनुयायियों) की सभा में बैठे भगवान (बुद्ध) द्वारा उन्हें इसमें सर्वोच्च स्थान दिया गया।
और एक दिन जब वे एक पेड़ के नीचे ध्यान कर रही थीं, तो युवा रूप में दुष्ट मारा (राक्षस) उनके पास आया और कामुक विचारों से उन्हें लुभाने लगा।
तुम सुंदर हो, और जीवन अभी जवान है, खूबसूरत खेमा!

मैं भी जवान हूँ—आओ, हे सबसे सुंदर महिला!

हमारे कानों में पांचों प्रकार की मधुर ध्वनियाँ गूंजती हैं,

हम अपनी खुशी की तलाश करेंगे। (139)

यह शरीर घृणित, रोग और भ्रष्टाचार का घिनौना अड्डा है।

मुझे घृणा और उत्पीड़न का अनुभव होता है। वासना की लालसा जड़ से उखड़ जाती है। (140)

देह और इंद्रिय-मन की वासनाएँ खंजर और भाले की तरह वार करती हैं।

मुझे किसी भी प्रकार के इंद्रिय सुख में आनंद लेने के बारे में मत बताओ!

अब ऐसी सभी व्यर्थ चीजें मुझे और प्रसन्न नहीं कर सकतीं। (141)

संसार, शरीर और शैतान के प्रेम को चारों ओर से मार डाला गया है। [1]

अज्ञानता का वह अंधकार जो कभी मुझे घेरे हुए था, अब छंट गया है।

हे दुष्ट! यह जान लो! विनाशक, अपनी हार जान लो! (142)

देखो! तुम जो आकाश के तारों की अंधाधुंध पूजा करते हो,

वन में अग्नि की पूजा करने वाले, अग्नि की प्रतीक्षा करो।

तुम सब सच्चाई से अनजान हो, तुम सब मूर्ख और नासमझ हो।

यह मानते हुए कि इस तरह से तुम्हें बुराई से मुक्ति मिल सकती है। (143)

मैं जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं परम मानव, प्रबुद्ध बुद्ध की पूजा करता हूँ, [2]

सभी दुःखों से पूर्णतः मुक्त, गुरु के आदेशों का पालन करने वाला। (144)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा6.4
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||53|| ------>>>> अगला

6.4 सुजाता, साकेत के एक करोड़पति (सेठी) की पुत्री, एक करोड़पति (सेठी) की पत्नी।
पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्पित होकर, अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित करके और ज्ञान प्राप्ति के लिए आवश्यक शर्तों (विमुक्ति, विमुक्ति) को सुदृढ़ करके, वह इस बुद्ध युग में साकेत में एक करोड़पति (सेठी) परिवार में पुनर्जन्म लेकर जन्मीं। उनके माता-पिता ने उनका विवाह एक समान पदस्थ करोड़पति (सेठी) के पुत्र से कर दिया और वह उनके साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही थीं। एक दिन उद्यान में आयोजित नक्षत्र उत्सव में भाग लेने के लिए जाते समय, वह अपनी सेविकाओं के साथ नगर लौट रही थीं, तभी अंजना वन में उन्होंने गुरु (बुद्ध) के दर्शन किए और प्रसन्नतापूर्वक उनके पास जाकर आदर किया और विराजमान हो गईं। गुरु ने अपना प्रवचन क्रमबद्ध रूप से समाप्त करते हुए, उनके शांत मन को जानकर, उन्हें प्रेरणादायक उपदेश के रूप में धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) समझाया। इसी कारण, क्योंकि उनकी बुद्धि पूर्णतः परिपक्व थी, वे बैठे-बैठे ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर गईं, साथ ही उन्होंने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को रूप और अर्थ दोनों में पूर्णतः समझ लिया। गुरु को प्रणाम करके घर

लौटकर उन्होंने अपने पति और माता-पिता की सहमति प्राप्त की और गुरु (बुद्ध) के आदेशानुसार भिक्षुणियों के संघ में प्रवेश लिया। अपनी इस उपलब्धि को याद करते हुए वे अत्यंत प्रसन्न हुईं और उन्होंने कहा:
सुंदर वस्त्रों से सजी, आकर्षक पोशाक में,

चंदन की धूल से सजी मालाओं में,

मेरे सभी आभूषणों से सजा हुआ, घिरा हुआ (145)

दासियों की टुकड़ी के साथ, और अच्छी तरह से सुसज्जित

ठोस और नरम भोजन के साथ-साथ पर्याप्त मात्रा में पानी भी पिएं।

मैं घर से स्वयं गाड़ी चलाकर सुंदर उद्यान (गार्डन) गया। (146)

वहाँ हमने खूब खेल-कूद की और आनंद मनाया।

फिर हम एक बार फिर घर की ओर चल पड़े।

अत: हम अंजना नामक उपवन में प्रवेश कर गए।

सकेता के पास, जहाँ पेड़ों के बीच

विहार (मठ) स्थित है (147)

उन्होंने (बुद्ध ने) मुझे वहाँ बैठे देखा, हे जगत के प्रकाश।

और वे उसकी उपस्थिति में जाकर आराधना करने लगे।

और हम सबके प्रति उनकी अपार करुणा के बारे में,

उन्होंने मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया — वह जो देखता है! (148)

मैं भी तुरंत भेदने और प्रवेश करने में सक्षम हो गया।

महान द्रष्टा द्वारा सिखाई गई सच्चाई को सुनकर,

क्योंकि वहाँ, जब मैं बैठा था, मैंने स्पर्श किया

धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग)

निर्मल, अमृतमयी मार्ग (शाश्वतता/अमरता की ओर)। (149)

फिर सबसे पहले मैंने घर की जिंदगी छोड़ दी,

जब मुझे धर्म का मार्ग (धम्म) ज्ञात हुआ,

और अब मैंने त्रिविध ज्ञान[1] प्राप्त कर लिया है।

हे बुद्ध का मार्ग कितना बुद्धिमान और निश्चित है! (150)

[1] ज्ञानोदय के कारण प्राप्तियाँ (i) पिछले पुनर्जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि (या दिव्य दृष्टि) जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर सभी आसवों (इंद्रिय इच्छाओं) का विनाश, अर्थात् पवित्रता।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

राजपरिवार में जन्मी खेमा मगध राज्य के सागला नगर में रहती थी। अपने सुनहरे रंग के कारण उसके माता-पिता ने उसका नाम खेमा रखा था। बड़ी होकर वह राजा बिम्बिसार की मुख्य पत्नी बनी। वह अत्यंत सुंदर थी और अपनी सुंदरता के प्रति बहुत सजग थी। इसलिए वह बुद्ध के दर्शन या धर्मोपदेश सुनना नहीं चाहती थी, क्योंकि बुद्ध ने स्पष्ट कर दिया था कि बाहरी सुंदरता क्षणभंगुर है और ज्ञान प्राप्ति में उसका कोई महत्व नहीं है।

राजा बिम्बिसार, जो बुद्ध के कट्टर अनुयायी थे, चाहते थे कि उनकी रानी बुद्ध के उपदेशों को सुनें। उन्होंने एक योजना बनाई जिससे उन्हें बुद्ध के निवास स्थान वाले मठ में आने के लिए प्रेरित किया जा सके। राजा बिम्बिसार ने अपने संगीतकारों से उस उपवन की प्राकृतिक सुंदरता का गीत के माध्यम से वर्णन करवाया जिसमें बुद्ध निवास कर रहे थे। सुंदरता की शौकीन खेमा ने बुद्ध के चारों ओर फैले सुंदर फूलों और वृक्षों के वर्णन को मंत्रमुग्ध होकर सुना। उपवन की सुंदरता का अनुभव करने की इच्छा से खेमा ने मठ जाने का निर्णय लिया।

बुद्ध एक विशाल सभा को प्रवचन दे रहे थे, तभी उन्होंने दूर से खेमा को मठ की ओर आते देखा। अपनी मानसिक शक्तियों से उन्होंने अपने सामने एक अत्यंत सुंदर कन्या का आभास कराया। उपवन और उसके सुगंधित फूलों की सुंदरता से मोहित खेमा सभा के निकट आती गईं, जब तक कि उनकी नज़र बुद्ध को पंखा झल रही उस सुंदर कन्या पर नहीं पड़ी। सुंदरता की प्रशंसिका खेमा उस कन्या की सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गईं, जो उनकी अपनी सुंदरता से कहीं अधिक थी।

तब बुद्ध ने उस सुंदर कन्या को उनकी आँखों के सामने धीरे-धीरे बूढ़ा कर दिया। खेमा ने कन्या की सुंदर त्वचा पर झुर्रियाँ पड़ते, उसके बाल भूरे होते और शरीर को बूढ़ा होते देखा। फिर उन्होंने शरीर को उम्र के साथ ढहते और नष्ट होते देखा, केवल एक शव बचा जो अंततः हड्डियों के ढेर में बदल गया। यह समझते हुए कि सभी परिस्थितिजन्य घटनाएँ क्षणभंगुर हैं, खेमा को एहसास हुआ कि उनके साथ भी ऐसा ही होगा। जब यह सुंदर आकृति उनकी आँखों के सामने बूढ़ी होकर विघटित हो रही है, तो वह अपनी सुंदरता कैसे बनाए रख सकती हैं?

खेमा बुद्ध की बातें सुनने के लिए तैयार थीं, जिन्होंने उन्हें कामवासना और इंद्रिय सुखों के खतरों से अवगत कराया और क्षणभंगुर इंद्रिय सुखों का त्याग करने का आग्रह किया। आध्यात्मिक रूप से उन्नत मन से इन शिक्षाओं का पालन करते हुए, खेमा ने अरहंतत्व प्राप्त किया। इसके बाद उन्हें राजा बिम्बिसार से भिक्षुणी संघ में प्रवेश करने की अनुमति मिली।

खेमा को सत्य का ज्ञान इतनी शीघ्रता से इसलिए प्राप्त हुआ क्योंकि उन्होंने कई युगों पहले सद्गुणों और ज्ञान का अभ्यास किया था। सत्य और ज्ञान के प्रति प्रबल आकर्षण के कारण, खेमा ने कई पूर्व जन्मों में बुद्धों, पच्चेक बुद्धों और बोधिसत्वों के निकट जन्म लिया था और धम्म का अध्ययन, अभ्यास और अध्यापन किया था।

एक लाख विश्व चक्र पूर्व, बुद्ध पद्ममुत्तरा के समय, खेमा का जन्म हंसावती नगर में एक सेवक परिवार में हुआ था। वे पद्ममुत्तरा बुद्ध से प्रेरित थीं, जो भिक्षुओं और भिक्षुणियों की सभा में धम्म का उपदेश दे रहे थे। उनके मन में पद्ममुत्तरा बुद्ध को भोजन अर्पित करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई। धन की कमी के कारण, उन्होंने अपने सुंदर बाल काटकर बेच दिए ताकि बुद्ध को भिक्षा दे सकें। तब उन्होंने भावी बुद्ध की प्रमुख महिला शिष्या बनने और ज्ञान में अग्रणी बनने की आकांक्षा रखी। उस समय से खेमा ने अपनी आकांक्षा को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम किया। 91 विश्व चक्र पूर्व, बुद्ध विपस्सी के समय, वे एक भिक्षुणी और धम्म की शिक्षिका थीं। वर्तमान महा बद्ध कप्पा में बुद्ध काकुसंध, कोनागमना और कस्सपा के समय में, वह संबंधित बुद्धों की गृहस्थ शिष्या थीं, उन्होंने मठों का निर्माण किया था और प्रत्येक बुद्ध और उनके भिक्षुओं और भिक्षुणियों के समूह को दान दिया था, और लगन से धम्म का अभ्यास किया था।

खेमा के पिछले जन्मों की कई जातक कथाएँ हैं। उन्हें बोधिसत्व गौतम की पत्नी (जातक 354), उनकी बहू (जातक 397) और सारिपुत्त की पत्नी (जातक 534) के रूप में ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला था। इन सभी पिछले जन्मों में वह गुणी थीं और उन्होंने अपनी आकांक्षा को पूरा करने के लिए कई पुण्य कर्म किए थे।

अरहंतत्व प्राप्त करने के बाद खेमा ने शरीर की अनित्यता और कामुक सुखों के खतरों को समझा। एक बार एक लगातार चाहने वाले ने उन्हें बहकाने की कोशिश की।

खेमा, जो पहले से ही अरहंत थीं, ने उन्हें उपदेश दिया।

बुद्ध की पहली महिला प्रमुख शिष्या खेमा, ज्ञान और अंतर्दृष्टि में सर्वोपरि थीं। उच्च शिक्षाओं को समझाने की उनकी क्षमता और बुद्धिमत्ता के कारण सभी उनका आदर करते थे। गहन विषयों पर उनकी बुद्धिमत्ता और स्पष्टतापूर्ण व्याख्याओं ने राजा पसेनादि कोसल पर अमिट छाप छोड़ी, जो उनका बहुत आदर करते थे। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, ज्ञान और विश्लेषणात्मक कौशल से खेमा ने बुद्ध को उनकी भिक्षुणियों की विशाल मंडली को धम्म का उपदेश देने और उन्हें प्रशिक्षित करने में सहायता की, जिनके लिए वे एक आदर्श थीं। ऐसे अनेक उदाहरण भी मिलते हैं जहाँ खेमा ने करुणा और समझ के साथ पुरुष और स्त्री गृहस्थ भक्तों को धम्म का उपदेश दिया।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा6.5
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||54|| ------>>>> अगला

6.5 साकेत के करोड़पति (सेठी) मज्झा की पुत्री अनोपमा:
पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेकर और अनेक जन्मों में युगों-युगों तक प्रभावी अच्छे कर्म संचित करके, ज्ञान प्राप्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पूर्ण करके, वह इस बुद्ध युग में साकेत में करोड़पति (सेठी) मज्झा की पुत्री के रूप में पुनर्जन्मीं। अपनी सुंदरता के कारण उन्हें 'अतुलनीय' (अनोपमा) नाम मिला। जब वह बड़ी हुईं, तो अनेक धनी पुरुषों के पुत्रों, राजाओं के मंत्रियों और राजकुमारों ने उनके पिता के पास दूत भेजकर कहा: 'हमें अपनी पुत्री अनोपमा दे दीजिए, हम आपको यह या वह देंगे।' यह सुनकर, क्योंकि उनके भीतर सर्वोच्च प्राप्ति का वचन था, उन्होंने सोचा: 'गृहस्थी के जीवन में मुझे कोई लाभ नहीं है'; और उन्होंने गुरु (बुद्ध) की खोज की। उन्होंने उन्हें उपदेश देते हुए सुना, और उनकी बुद्धि परिपक्व होने लगी, उस उपदेश की स्मृति और अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में किए गए अथक प्रयास ने उन्हें तृतीय अवस्था—अनगामी (प्रधान देवदूत संसार से बंधे[2])—में स्थापित कर दिया। गुरु (बुद्ध) से प्रवेश का अनुरोध करने पर, उनके आदेश से उन्हें भिक्षुणियों में प्रवेश दिया गया। और उस दिन से सातवें दिन, उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। उस पर पीछे मुड़कर देखते हुए, वे प्रसन्न हुईं और बोलीं:
करोड़पति (सेठी) मजझा के प्रसिद्ध घर की बेटी,

मैं धनी, सुंदर और समृद्ध पैदा हुई थी।

विशाल संपत्ति और उच्च पद की ओर। (151)

और मेरे चाहने वालों की भी कमी नहीं थी—बहुत से लोग आए और मुझसे प्रेम निवेदन किया;

राजाओं और व्यापारी राजकुमारों के पुत्र आए

महंगे उपहारों के साथ, सभी मेरा हाथ पाने के लिए उत्सुक थे।

और अनेक देशों से दूत भेजे गए।

मेरे पिता से किए वादे के साथ: 'मुझे दे दो (152)

अनोपमा, और देखो! उसका वजन चाहे जो भी हो,

अनोपमा, तुम्हारी बेटी, मैं उसे दे दूँगा।

उस वजन का आठ गुना सोना और कीमती रत्न। (153)

लेकिन मैंने प्रबुद्ध बुद्ध को देखा था।

विश्व का एकमात्र सर्वोच्च, अतुलनीय।

मैं नम्रता से बैठकर उनके चरणों में पूजा करने लगा। (154)

गौतम ने दया भाव से ऐसा किया।

उन्होंने मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया।

और वहाँ बैठे हुए भी,

मैंने तीसरा लक्ष्य (अनागामी, प्रधान देवदूत जगतबद्ध[2]) प्राप्त किया,

और मुझे पता था कि यह दुनिया मुझे कभी वापस आते हुए नहीं देखेगी (पुनर्जन्म नहीं होगा)। (155)

फिर अपने बाल मुंडवा लिए,

मैंने बेघर तपस्वी जीवन शैली अपना ली।

अब सातवीं रात हो चुकी है जब से सभी इंद्रियां सुन्न हो गई हैं

मेरे भीतर लालसा सूख गई है। (156)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।

[2] अनागामी - शाब्दिक अर्थ: वापस न लौटने वाला, निर्वाण से पूर्व की अवस्था, वह व्यक्ति जो ब्रह्मलोक (प्रधान देवदूतों का लोक) में पुनर्जन्म लेगा और फिर वहाँ से निर्वाण प्राप्त करेगा।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा6.6
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<------ ||55|| ------>>>> अगला

6.6 महान महा-प्रजापति गौतमी (बुद्ध की पालक माता, बुद्ध की दिवंगत माता की बहन और सहपत्नी, कपिलवस्तु की रानी और भिक्षुणी संघ की प्रमुख)

उनका जन्म उस समय हुआ जब पद्ममुत्तरा बुद्ध थे, हंसवती नगर में एक कुलवासी परिवार में। गुरु के उपदेश सुनकर और एक भिक्षुणी को अनुभव का प्रमुख स्थान देते हुए, उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन उन्हें भी ऐसा ही स्थान प्राप्त होगा। फिर, अनेक जन्मों के बाद, उनका पुनर्जन्म बुद्ध-शून्य युग में, कश्यप और हमारे बुद्ध के बीच, बनारस में 500 दासियों में से एक के रूप में हुआ। अब, जब वर्षा ऋतु निकट आई, तो पाँच मौन बुद्ध नंदमूलक पर्वत-गुफा से भिक्षा मांगने के लिए इसिपताना आए; और उन स्त्रियों ने अपने पतियों से वर्षा ऋतुओं के दौरान बुद्धों के लिए पाँच कुटियाएँ बनवाईं और उस दौरान उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की। बनारस के पास एक बुनकर के गाँव में मुखिया के परिवार में उनका पुनर्जन्म हुआ और उन्होंने फिर से मौन बुद्धों की सेवा की। अंततः, हमारे गुरु (बुद्ध)

के हमारे पास आने से कुछ समय पहले, देवदहा में महा-सुप्पबुद्ध के परिवार में उनका पुनर्जन्म हुआ। उनका पारिवारिक नाम गौतमा था और वे महान माया (बुद्ध की माता) की छोटी बहन थीं। जन्मचिह्नों के व्याख्याकारों ने कहा कि दोनों बहनों की संतानें चक्र-चालक शासक (सम्राट) होंगी। अब, राजा सुद्धोदन (बुद्ध के पिता) जब वयस्क हुए, तो उन्होंने एक उत्सव आयोजित किया और दोनों बहनों का विवाह कराया। इसके बाद, जब हमारे गुरु (बुद्ध) का उदय हुआ और वे धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के उत्तम चक्र को घुमाते हुए आत्माओं का पालन-पोषण कर रहे थे, तब उनके पिता वैशाली, जो अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर चुके थे, का निधन हो गया।

तब महान प्रजापति ने संसार त्यागने की इच्छा से गुरु (बुद्ध) से दीक्षा मांगी, लेकिन उन्हें दीक्षा नहीं मिली। तब उन्होंने अपने बाल कटवाए, वस्त्र धारण किए और कलह और विवाद पर आधारित सुत्तंत के प्रवचन के अंत में, वे शीघ्र ही चली गईं और उन 500 शाक्य स्त्रियों के साथ, जिनके पतियों ने संसार त्याग दिया था, वैशाली गईं और आनंद थेरा के माध्यम से गुरु से दीक्षा प्राप्त करने का अनुरोध किया। उन्हें दीक्षा और भिक्षुणियों के लिए आठ अतिरिक्त नियम प्राप्त हुए।

इस प्रकार दीक्षा प्राप्त करने के बाद, महान प्रजापति आईं और गुरु को प्रणाम किया और एक तरफ खड़ी हो गईं। तब गुरु ने उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया; और उन्होंने अभ्यास और साधना से शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही उन्हें अंतर्ज्ञान और विश्लेषणात्मक ज्ञान भी प्राप्त हुआ। शेष 500 भिक्षुणियों को नंदक के प्रवचन के बाद अंतर्ज्ञान ज्ञान की छह शाखाओं से संपन्नता प्राप्त हुई।[1]

एक दिन, जब गुरु (बुद्ध) महान जेतवन वन विहार में आर्यों (भिक्षुओं और भिक्षुणियों) की सभा में विराजमान थे, तब उन्होंने महान प्रजापति गौतमी को ज्ञान में सर्वोपरि स्थान दिया। गौतमी, जो पूर्ण ज्ञान और निर्वाण के आनंद में लीन थीं, ने एक दिन गुरु के समक्ष अपनी अन्न (प्रबुद्ध अवस्था) की घोषणा करके और उनके सद्गुणों की प्रशंसा करके अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

बुद्ध, ज्ञान प्राप्त, महान!

सभी जीवित प्राणियों से श्रेष्ठ,

जिसने समस्त कष्टों और दुखों से मुक्ति दिलाई है

मैं और बहुत से पीड़ित लोग। (157)

अब मुझे समझ में आ गया है कि दुख कैसे आता है।

मेरे भीतर की लालसा, यानी कारण, सूख गई है।

क्या मैं नहीं चला, क्या मैंने अंत को नहीं छुआ?

आर्य (कुलीन) अष्टांगिक मार्ग पर कष्टों के बारे में? (158)

ओह! लेकिन मैं तो बहुत लंबे समय से इस राह पर भटकता आ रहा हूँ।

मां, पिता, भाई, पुत्र के रूप में जीवन जीना

और बीते युगों में (पिछले जन्मों में) दादा-दादी के रूप में—

चीजों की असलियत न जानना,

और मुझे जो चाहिए था वह कभी नहीं मिला। (159)

लेकिन अब मेरी आँखों ने भगवान बुद्ध के दर्शन कर लिए हैं;

और अब मुझे पता है कि यह जीवित शरीर आखिरी है,

और जन्मों का अंतहीन चक्र चकनाचूर हो गया है।

अब मैं कभी पुनर्जन्म नहीं लूंगा! (160)

उस मंडली को देखो जो उसके बारे में जानती है—

भाईचारे की सुखद सद्भावना में,

अत्यंत ऊर्जावान और दृढ़ निश्चयी,

निरंतर दृढ़ता से लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए—

यह बुद्धों को दी गई सबसे श्रेष्ठ श्रद्धांजलि है। (161)

ओह! निश्चित रूप से अनगिनत जिंदगियों के भले के लिए।

क्या माया बहन ने गौतम को जन्म दिया था?

हमारे दुखों के बोझ को दूर करने वाला,

जो रोग और मृत्यु के बोझ से दबे हुए पड़े थे! (162)

[1] इद्धि (जादुई क्षमता), किसी भी स्थान की शुद्ध श्रवण शक्ति, दूसरों के विचारों का ज्ञान, पूर्व जन्मों (पुनर्जन्मों) की स्मृति, अन्य प्राणियों के पूर्व जन्म, भीतर आसवों (इंद्रिय इच्छाओं) का निवारण, अर्थात् पवित्रता।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

प्रजापति गौतमी, रानी महा माया की छोटी बहन और राजा सुद्धोदन की दूसरी पत्नी थीं। उन्हें महा (महान) प्रजापति कहा जाता था क्योंकि ऋषियों ने भविष्यवाणी की थी कि वे एक विशाल अनुयायी समूह की नेता बनेंगी। जब उनकी प्रिय बहन ने राजकुमार सिद्धार्थ को जन्म देने के सात दिन बाद देहांत कर दिया, तो वे अत्यंत दुखी हुईं। वे बहनें बहुत करीब थीं। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपनी बहन के बच्चे को अपने बच्चे की तरह पालेंगी।

अपने पुत्र नंदा की देखभाल का जिम्मा नर्सों को सौंपकर, महा प्रजापति ने नवजात शिशु की देखभाल की। राजा सुद्धोदन और महा प्रजापति दोनों ही सौम्य राजकुमार को बहुत प्यार करते थे। राजकुमार सिद्धार्थ अपने सौतेले भाई और सौतेली बहन, महा प्रजापति के दो बच्चों, नंदा और नंदा के साथ विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत हुए।

जब बुद्ध कपिलवस्तु आए और उन्होंने राजा सुद्धोदन को धम्मपाल जातक का उपदेश दिया, तब महा प्रजापति ने संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्न प्राप्त की। राजा सुद्धोदन के देहांत के बाद, महा प्रजापति ने निश्चय किया कि वे भी दीक्षा ग्रहण करेंगी और बुद्ध के मार्गदर्शन में पवित्र जीवन व्यतीत करेंगी। उनके पुत्र नंदा और पोते नन्हे राहुल ने भी बुद्ध के मार्गदर्शन में दीक्षा ग्रहण कर ली थी। प्रजापति को सांसारिक सुखों की कोई इच्छा नहीं रही।

बुद्ध कपिलवस्तु में शाक्यों और कोलियों के बीच रोहिणी नदी के जल को लेकर हुए विवाद को सुलझाने के लिए आए थे, तभी महा प्रजापति ने उनसे महिलाओं को दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति देने का अनुरोध किया। बुद्ध ने कारण बताए बिना ही मना कर दिया और

कहा, "हे गौतमी, यह तुम्हें भाए नहीं कि महिलाओं को ऐसा करने की अनुमति दी जाए।" लेकिन महा प्रजापति ने हार नहीं मानी। उन्होंने दूसरी और तीसरी बार भी महिलाओं के लिए दीक्षा का अनुरोध किया। हर बार बुद्ध ने एक ही उत्तर दिया।

इसके बाद बुद्ध वैशाली चले गए और कुटागारा हॉल में स्थित महावन में निवास करने लगे। दृढ़ निश्चयी महा प्रजापति हतोत्साहित नहीं हुईं। अपने बाल मुंडवाकर, उन्होंने भिक्षुणी के पीले वस्त्र धारण किए और शाक्य स्त्रीयों के एक बड़े दल के साथ 150 मील की दूरी तय करके वैशाली पहुँचीं। धूल से सनी, सूजे और लहूलुहान पैरों के साथ, वह हॉल के बाहर खड़ी रो रही थीं। जब बुद्ध के निजी सेवक आनंद ने उन्हें देखा और उनके दु:ख का कारण सुना, तो उन्होंने उनकी ओर से बुद्ध से विनती करने का निश्चय किया।

करुणामय आनंद ने स्त्रियों की ओर से विनती की। जब बुद्ध ने इनकार कर दिया, तो आनंद ने उनसे पूछा कि क्या वे यह मानते हैं कि स्त्रियाँ आध्यात्मिक ऊँचाइयों और अरहंतत्व को प्राप्त करने में असमर्थ हैं? बुद्ध ने उत्तर दिया कि स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान आध्यात्मिक विकास प्राप्त करने में सक्षम हैं। फिर उन्होंने महा प्रजापति के पिछले जन्मों को देखा। यह देखकर कि महा प्रजापति ने कई युगों पहले भिक्षुणियों के संघ की स्थापना की इच्छा की थी, जिसकी पूर्ति उनके शासनकाल में होनी थी, बुद्ध ने दया दिखाई, आनंद की विनती स्वीकार की और भिक्षुणियों के संघ की स्थापना की।

बुद्ध ने महा प्रजापति को शुरू में मना करने का कारण नहीं बताया। अतीत के सभी बुद्धों के साथ भिक्षुणियों का संघ था। गौतम बुद्ध ने इसे देखा होगा और महसूस किया होगा कि स्त्री संघ प्रत्येक बुद्ध के अनुयायी का अभिन्न अंग है। इसलिए, कुछ लोगों का मानना है कि वे प्रजापति के दृढ़ संकल्प और संकल्प की परीक्षा ले रहे थे, क्योंकि महिलाओं, विशेषकर राजपरिवार की महिलाओं के लिए पवित्र जीवन कठिन और कई कठिनाइयों से भरा होता है। कुछ का यह भी मानना है कि शुरू में मना करने का कारण उस समय समाज और महिलाओं के प्रति उसका व्यवहार था, और बुद्ध को स्त्री संघ की सुरक्षा की चिंता थी। सामान्य तौर पर, यह माना जाता है कि शुरू में मना करने का उद्देश्य कुलीन महिलाओं के दृढ़ संकल्प और संकल्प को मजबूत करना और उन्हें भविष्य में आने वाली कठिनाइयों के लिए बेहतर ढंग से तैयार करना था।

बुद्ध के समय भारत में महिलाओं को पुरुषों से हीन समझा जाता था। उन्हें ज्यादा स्वतंत्रता नहीं थी और अक्सर उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार नहीं किया जाता था। कुलीन परिवारों की महिलाओं को सावधानीपूर्वक एकांत में रखा जाता था और दुर्व्यवहार से बचाया जाता था। पुरुष महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करते थे। बुद्ध के शिष्य अक्सर जंगलों में ध्यान करते थे और सुनसान सड़कों पर अकेले ही एक शहर से दूसरे शहर पैदल चलकर धम्म का प्रचार करते थे। वे भिक्षुणियों की सुरक्षा और संरक्षण कैसे सुनिश्चित करते? वे यह कैसे सुनिश्चित करते कि उनके साथ सम्मान और निष्पक्षता से व्यवहार किया जाए? वे भिक्षुणियों की सुरक्षा का जिम्मा ब्रह्मचर्य का व्रत लेने वाले भिक्षुओं को कैसे सौंपते? क्या इससे भिक्षुओं के लिए अनुशासन बनाए रखना और भी कठिन नहीं हो जाता?

बुद्ध ने भिक्षुणियों के लिए आठ अतिरिक्त अनुशासनात्मक (विनय) नियम निर्धारित किए, जिनमें से अधिकांश इस बात से संबंधित थे कि उन्हें भिक्षुओं का सम्मान और आदर कैसे करना होगा, जिन्हें आवश्यकतावश उनकी रक्षा करनी होगी। उन्होंने यह भविष्यवाणी भी की कि भिक्षुणियों के दीक्षा लेने से पृथ्वी पर उनके उपदेशों का समय कम हो जाएगा।

आधुनिक जगत की कुछ महिलाओं को इनमें से कुछ नियमों को स्वीकार करना कठिन लग सकता है, लेकिन बुद्ध द्वारा शुरू किए गए साहसिक और क्रांतिकारी परिवर्तन को पूरी तरह से समझने के लिए हमें इन्हें बुद्ध के समय की महिलाओं की भूमिका और स्थिति के संदर्भ में देखना चाहिए।

महिलाओं पर लागू होने वाले आठ मठवासी नियम इस प्रकार थे:

1. एक भिक्षुणी को हमेशा भिक्षु का आदर करना चाहिए, भले ही वह संघ में उससे कनिष्ठ हो। भिक्षुओं में कनिष्ठ भिक्षु वरिष्ठ भिक्षुओं का आदर करते थे, ठीक उसी प्रकार जैसे कनिष्ठ भिक्षुणियां वरिष्ठ भिक्षुणियों का आदर करती थीं।

2. एक भिक्षुणी को वर्षा ऋतु ऐसे स्थान पर नहीं बितानी चाहिए जहाँ भिक्षु न हों। (बुद्ध के समय भारत में महिलाओं के प्रति प्रचलित दृष्टिकोण के कारण भिक्षुणियों की सुरक्षा के लिए यह सावधानी आवश्यक थी)।

3. महीने में दो बार भिक्षुणी को भिक्षुओं से मठवासी अनुशासन (उपोसथ) के पाठ का समय पूछना चाहिए और भिक्षुणियों (जो मठवासी नियमों से विचलित हो गई हैं) को सलाह और चेतावनी देने के लिए किसी भिक्षु को भेजने का अनुरोध करना चाहिए।

4. वर्षा ऋतु के दौरान हुए एकांतवास की समाप्ति पर, भिक्षुओं और भिक्षुणियों की एक सभा में अंतिम समारोह आयोजित किया जाएगा।

5. भिक्षुणियों द्वारा किए गए कुछ अपराधों का निपटारा भिक्षुओं और भिक्षुणियों दोनों की सभाओं द्वारा किया जाना चाहिए। भिक्षुणियों की सभा केवल छोटे-मोटे अपराधों और महिलाओं से संबंधित कुछ व्यक्तिगत मामलों पर ही विचार करती है।

6. एक नवदीक्षित भिक्षुणी को दो वर्ष के प्रशिक्षण के बाद उच्च दीक्षा प्राप्त होगी। ऐसे उदाहरण भी हैं जब भिक्षुओं को दीक्षा के तुरंत बाद उच्च दीक्षा दी गई थी।

7. किसी भी परिस्थिति में एक भिक्षुणी को किसी भिक्षु को फटकार नहीं लगानी चाहिए। 8.

यद्यपि भिक्षुणियां भिक्षुओं को उपदेश नहीं दे सकतीं, फिर भी एक भिक्षु उस भिक्षुणी को उपदेश दे सकता है जिसने मठवासी अनुशासन का उल्लंघन किया हो।

महा प्रजापति और उनकी शाक्य स्त्रियों के समूह ने आठ अतिरिक्त अनुशासन नियमों को स्वीकार किया और बुद्ध से दीक्षा प्राप्त की। बुद्ध भिक्षुणियों (भिक्षुओं) के संघ की स्थापना करने वाले पहले धार्मिक शिक्षक थे। भिक्षुणियों को भी भिक्षुओं के समान ही मठवासी नियमों का पालन करना सिखाया गया। बुद्ध ने अपनी बढ़ती हुई भिक्षुणी मंडली की सहायता के लिए दो प्रमुख महिला शिष्यों को नियुक्त किया (जैसे उन्होंने दो प्रमुख पुरुष शिष्यों को नियुक्त किया था)। इसके बाद, परिस्थितियों के अनुसार अनुशासन में नए नियम जोड़े गए। उदाहरण के लिए, भिक्षुणी उप्पलावन्ना से संबंधित एक घटना के बाद भिक्षुणियों को जंगलों में अकेले ध्यान करने और निवास करने की अनुमति नहीं थी।

भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए बुद्ध का मठवासी अनुशासन (पाँच ग्रंथ) एक अनुकरणीय लोकतांत्रिक व्यवस्था है जिससे हम आज भी सीख सकते हैं। संघ के असाधारण रूप से उच्च नैतिक मानक और बुद्ध द्वारा स्थापित अद्वितीय प्रशासनिक व्यवस्था सुविचारित और दूरदर्शी थी। भारत के पूर्व वायसराय लॉर्ड ज़ेटलैंड लिखते हैं, "और यह जानकर कई लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि दो हज़ार वर्ष और उससे भी अधिक समय पहले भारत में बौद्धों की सभाओं में हमारी वर्तमान संसदीय प्रणाली के मूल तत्व पाए जाते हैं।"

कुछ ही समय बाद, महा प्रजापति ने अरहंत पद के साथ-साथ अंतर्ज्ञान और विश्लेषणात्मक ज्ञान भी प्राप्त कर लिया। उनकी शाक्य स्त्रियों का समूह भी अरहंत पद प्राप्त कर चुका था। महा प्रजापति को वरिष्ठता और अनुभव में सर्वोच्च स्थान दिया गया।

कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, प्रजापति ने बुद्ध और अपनी प्रिय बहन माया को प्रणाम किया, जिन्होंने शिशु को जन्म दिया था।

महा प्रजापति ने पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय में भिक्षुणियों के संघ की स्थापना करने की इच्छा रखी थी। उन्होंने बुद्ध पद्ममुत्तरा को एक अन्य भिक्षुणी को इसी प्रकार की उपाधि प्रदान करते हुए देखा था। उस भिक्षुणी से प्रेरित होकर, उन्होंने भविष्य के किसी बुद्ध के समय में इसी प्रकार का पद प्राप्त करने की कामना की थी। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने पद्ममुत्तरा बुद्ध और उनके अनुयायियों को दान दिया और अपनी इच्छा व्यक्त की। बुद्ध ने उनकी इच्छा की पूर्ति को भांपते हुए भविष्यवाणी की थी कि गौतम बुद्ध के समय में वे भिक्षुणियों में वरिष्ठता और अनुभव में अग्रणी होंगी और भिक्षुणियों के संघ की स्थापना करेंगी। इस समय से महा प्रजापति ने पुण्य कर्म किए और धम्म का अभ्यास करने के लिए अथक प्रयास किया।

अगली प्रलेखित जन्म कथा उस समय की है जब कोई सर्वोच्च बुद्ध नहीं थे। प्रजापति का जन्म एक धनी परिवार में हुआ था और उनकी सेवा में 500 दासियाँ थीं। उन्होंने पाँच पच्चेक बुद्धों को बरसाती ऋतु में आश्रय की तलाश में शहर आते देखा था। अपनी दासियों के साथ मिलकर उन्होंने बुद्धों के लिए पाँच आश्रय स्थल बनवाए और उन्हें सुसज्जित किया। फिर उन्होंने पाँच पच्चेक बुद्धों को आमंत्रित किया और अपनी दासियों के साथ मिलकर वर्षा ऋतु के तीनों महीनों तक उन्हें भोजन कराया। ऋतु के अंत में, अपनी दासियों के साथ मिलकर उन्होंने बुद्धों को भेंट करने के लिए कथिना वस्त्र सिले। मृत्यु के बाद प्रजापति और उनकी पाँच सौ दासियाँ स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लेकर दीर्घकाल तक स्वर्गिक सुखों का आनंद लेती रहीं।

उनका अगला प्रलेखित जन्म महा प्रजापति के रूप में हुआ, जो राजकुमार सिद्धार्थ की पालक माता और मौसी थीं। दृढ़ संकल्प और अथक परिश्रम से उन्होंने एक लाख विश्व चक्र पूर्व की अपनी मनोकामना को पूरा करने के लिए असंख्य युगों तक धम्म का अभ्यास किया।

वैशाली के लिच्छवी राजाओं ने महा प्रजापति और उनके साथ आईं पाँच सौ शाक्य राजकुमारियों के लिए एक विशाल मठ बनवाया। प्रजापति सभी भिक्षुणियों के लिए, विशेष रूप से कुलीन वर्ग की अन्य महिलाओं के लिए एक आदर्श थीं। उन्होंने उन्हें भिक्षुणी के एकांत और संयमी जीवन में ढलने के लिए प्रोत्साहित किया और सहायता प्रदान की। उन्होंने ननदियों के अध्यापन और प्रशासन में भी सहयोग दिया। जब महा प्रजापति 120 वर्ष की आयु के निकट पहुँचीं, तो उन्हें अहसास हुआ कि उनके पास जीने के लिए अधिक समय नहीं बचा है। अब समय आ गया था कि वे बुद्ध को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करें, जिन्होंने उन्हें धम्म का अमृत सिखाया था और निर्वाण प्राप्त करने में उनकी सहायता की थी। बुद्ध के पास पहुँचकर उन्होंने कहा:
"हे प्रभु! मैंने आपका भौतिक शरीर तो उत्पन्न किया, लेकिन

आपने मेरे आध्यात्मिक शरीर का जिक्र किया।

मैंने तुम्हें अपना दूध पिलाया, लेकिन

आपने मुझे धम्म का दूध पिलाया।

दुख और संसार का नाश करने के लिए।

बुद्ध की प्रतिमा के दर्शन करने का यह एक दुर्लभ अवसर है।

मैं दर्शन करना और श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा।

आपके कमल जैसे चरणों में।

कृपया अपने पैरों को आगे की ओर फैलाएं।

बुद्ध ने करुणा से अपने चरण फैलाए, जो गुलाबी कमल के समान थे। उनके चरणों में गिरकर और प्रबुद्धता के प्रतीक महान चिह्नों का आदर करते हुए, प्रजापति ने उनकी आराधना की और अपनी किसी भी कमी के लिए क्षमा मांगी। फिर उन्होंने परलोक जाने की अनुमति मांगी।

प्रजापति के निकट परलोक जाने की खबर दूर-दूर तक फैल गई। भिक्षु और भिक्षुणियां उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एकत्रित हुए। सारिपुत्त, मोग्गलाना, नंदा, राहुल, आनंद, खेमा, उप्पलावन्ना और कई अन्य लोग वैशाली में एकत्रित हुए। आनंद, जो उस समय केवल सोतापन्ना थे, रोने लगे। प्रजापति ने उन्हें यह याद दिलाकर सांत्वना दी कि उन्होंने बुद्ध से उनकी ओर से भिक्षुणियों के संघ की स्थापना के लिए कहकर उनकी कितनी बड़ी सेवा की थी। फिर उन्होंने आनंद को धीरे से समझाया कि वे न रोएं, क्योंकि सबसे श्रेष्ठ भिक्षु का रोना उचित नहीं था।

बुद्ध ने स्त्रियों की बौद्धिक क्षमताओं को स्वीकार किया था, फिर भी अनेक पुरुष वर्षों से अपने अंतर्विचारों को बदलने को तैयार नहीं थे। बुद्ध ने प्रजापति को बुलाकर कहा, "हे गौतमी, आप जैसी स्त्री (पूर्व रानी) का ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत दुर्लभ है। उन मूर्ख पुरुषों के भ्रम को दूर करने के लिए कोई चमत्कार कीजिए जो स्त्रियों की आध्यात्मिक क्षमताओं के प्रति संशय में हैं।"

तब प्रजापति वायु में उठीं और फिर नीचे आकर बुद्ध की आराधना की। उन्होंने तीन बार इस प्रकार उन्हें प्रणाम किया, फिर वे अंतर्धान हो गईं और भीड़ के सामने पुनः प्रकट हुईं। अंत में बुद्ध से परिनिर्वाण प्राप्त करने की अनुमति स्वीकार करके, वे बुद्ध पर दृष्टि रखते हुए पीछे की ओर नन आश्रम की ओर चलीं। बुद्ध ने सभी को उनके अंतिम विदाई के लिए उनके पीछे चलने का निर्देश दिया। प्रजापति नन आश्रम में प्रवेश कर गईं और पद्मासन में बैठकर गहन ध्यान में लीन हो गईं, ध्यान अवस्था को प्राप्त किया और परिनिर्वाण के आनंद में विलीन हो गईं।

लिच्छवी राजाओं ने प्रजापति के अवशेषों को सोने के ताबूत में रखा और भव्य जुलूस के साथ शहर में घुमाया। महा प्रजापति के अंतिम संस्कार में बुद्ध का अपनी पालक माता और सभी माताओं के प्रति आदर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। बुद्ध, जो कभी किसी के पीछे नहीं

चलते थे, उनके पार्थिव शरीर को ले जा रहे रथ के पीछे-पीछे चले। इस प्रकार, बुद्ध ने अपने उदाहरण से हमें दिखाया कि हमें अपनी माताओं का आदर और सम्मान करना चाहिए, क्योंकि जब हम छोटे थे और अपना ख्याल रखने में असमर्थ थे, तब उन्होंने हमारी देखभाल और प्यार किया। सैकड़ों भिक्षु और भिक्षुणियां श्मशान घाट तक रथ के पीछे-पीछे चले। फिर ताबूत को चंदन की चिता पर रखा गया और उस पर चमेली और अन्य सुगंधित तेल छिड़के गए। इसके बाद लिच्छवी राजाओं ने चिता को प्रज्वलित किया।

कहा जाता है कि महा प्रजापति के अवशेष चमकते मोतियों की तरह सफेद हो गए थे। आनंद ने अवशेषों को एकत्र किया और उन्हें बुद्ध को सौंप दिया, और बाद में लिच्छवी राजाओं को। राजाओं ने महा प्रजापति के अवशेषों को स्थापित करने के लिए एक स्तूप का निर्माण करवाया। विश्व भर की महिलाएं भिक्षुणी संघ की शुरुआत करने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए महा प्रजापति को सम्मान और श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा6.7
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||56|| ------>>>> अगला

6.7 सावत्थी के एक ब्राह्मण की पुत्री गुट्टा:
पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेकर, अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित करके और ज्ञान प्राप्ति के लिए आवश्यक शर्तों (विमुक्ति, विमुक्ति) को सुदृढ़ करके, वह भी इस बुद्ध युग में सावत्थी में एक ब्राह्मण परिवार में पुनर्जन्म लेकर गुट्टा नाम से जन्मीं। किशोरावस्था में उन्हें घर का जीवन अरुचिकर लगने लगा और उन्होंने अपने माता-पिता की सहमति से महान प्रजापति (पालक माता और बुद्ध की दिवंगत माता की बहन एवं सहपत्नी) के अधीन संघ में प्रवेश किया। उस समय से, यद्यपि उन्होंने भक्तिपूर्वक अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) का अभ्यास किया, उनका मन लंबे समय तक बाहरी हितों के पीछे भागता रहा, जिससे एकाग्रता भंग हो गई। तब गुरु (बुद्ध) ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए अपने 'सुगंधित कक्ष' से अपना तेजस्वी दिव्य रूप प्रकट किया और उनके निकट, मानो हवा में बैठे हुए, ये शब्द कहे:
गुट्टा, क्या तुम उस उच्च पुरस्कार के बारे में सोचते हो?

जिसके लिए तुम अपनी दुनिया खोने को तैयार थे,

संतान की आशा का त्याग करके धन के लालच में पड़ जाना।

इससे मन को सही दिशा मिलती है और वह शुद्ध होता है।

और न ही अपने आप को भटकते विचारों के प्रभाव में आने दो। (163)

मनुष्य के विचार हमेशा भ्रामक होते हैं।

उन स्थानों के लिए खुशी की बात है जहां मारा (शैतान) अपना शिकार ढूंढता है;

और अनेक पुनर्जन्मों का कारण बनते हुए,

इस भयावह चक्र में मूर्खों का ही स्थान है। (164)

आपको उन पांच बंधनों को तोड़ना है: वासना
विवेक, दुर्भावना, आत्म-भ्रम,
रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों का कलंक, और संदेह, (165)
हे भिक्षुणी (भिक्षुणी) इन निम्न बंधनों को त्यागकर...
जो आपको वापस यहीं किनारे पर खींच लाते हैं।
आपको यहाँ दोबारा आने की ज़रूरत नहीं है! (166)
आपको जीवन की लालसा से दूर ले जाए,[2] अहंकार से दूर ले जाए,

अज्ञानता से, और ध्यान भटकाने के उन्माद से;
बंधनों को तोड़ दो; तभी तुम आ पाओगे
पीड़ा का पूर्ण अंत। जंजीर तोड़ दो (167)
जन्म और मृत्यु—आप जानते हैं इनका क्या मतलब है।
अतः, इस पृथ्वी पर जीवन में लालसा से मुक्त रहो।
और धम्म (शाश्वत सत्य) की पवित्रता को देखकर,
तुम शांत और निर्मल होकर अपने मार्ग पर आगे बढ़ोगे। (168)

और जब गुरु (बुद्ध) ने वह वचन समाप्त किया, तो थेरी ने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त हुआ। उस आनंद से परिपूर्ण होकर उन्होंने भगवान बुद्ध द्वारा कहे गए क्रम में ही उन पंक्तियों का उच्चारण किया, और यहीं से वे पंक्तियाँ थेरी की श्लोक कहलाने लगीं।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान विधि को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।

[2] देहधारी या निराकार रूप में पुनः जीवन जीने की लालसा। यह और इसके बाद के तीन शब्द अंतिम पाँच बंधन हैं, 'जिनके दूर होने से तत्काल अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञानोदय) प्राप्त होता है'।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा6.8
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
6.8 विजया, राजगृह के एक कुल के सदस्य की पुत्री:

उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित किए थे। बुद्ध युग में उनका पुनर्जन्म राजगृह में एक कुल के सदस्य के परिवार में हुआ। बड़ी होकर वे खेमा की सहेली बनीं, जो बाद में थेरी कहलाए, लेकिन तब वे गृहस्थ थीं। खेमा के संसार त्यागने की बात सुनकर उन्होंने कहा, 'यदि वे राजा की पत्नी होकर संसार त्याग सकती हैं, तो मैं भी अवश्य त्याग सकती हूँ।' अतः वे खेमा थेरी के पास गईं और थेरी ने उनकी इच्छा को समझकर उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया, जिससे पुनर्जन्म के विषय में उनका मन विचलित हुआ और वे इस व्यवस्था में शांति की खोज करने लगीं। ऐसा ही हुआ और थेरी ने उन्हें दीक्षा दी। वह कर्तव्यानुसार सेवा और अध्ययन करते हुए, अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में निपुण हो गईं, और अपनी क्षमता के कारण शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को रूप और अर्थ में भलीभांति समझ लिया। और जब उन्होंने उस पर पीछे मुड़कर देखा, तो वे प्रसन्न हुईं और इस प्रकार बोलीं:

चार बार नहीं, पांच बार, मैं तेजी से अपनी कोठरी से बाहर निकला।
और मन की शांति की तलाश में भटकता रहा।
मुझमें कमी थी, और विचारों के शासन की भी कमी थी।
मैं उन्हें कैद में नहीं ला सका। (169)
फिर मैं एक भिक्षुणी के पास आया और उनसे पूछा
मेरे मन में कई शंकाएं हैं।
उन्होंने मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया: तत्व, (170)
इंद्रियों के जीवन में अंग और वस्तु,
[और फिर श्रेष्ठ जीवन के कारक:]
आर्यों के चार सत्य, उनकी शक्तियाँ, उनकी सामर्थ्यें,
जागृति के सात कारक,
अष्टांगिक मार्ग, जो परम कल्याण की ओर ले जाता है। (171)
मैंने उसकी बातें सुनीं, उसकी शिक्षाओं का मैंने पालन किया।
रात के पहले पहर बीतने के बाद, एक उदय हुआ।
पिछले जन्मों (पुनर्जन्मों) की लंबी यादें। (172)
दूसरी पहर बीतने के बाद, कुछ ही समय में उठ खड़ा हुआ।
स्पष्ट, दिव्य, दिव्य दृष्टि, पवित्रता से परिपूर्ण;
रात के आखिरी पहर बीतते ही, मैं फूट पड़ा
और अज्ञानता के अंधकार को चीर डाला। (173)
फिर, आनंद और मन की परम शांति को महसूस करें।
मेरे शरीर में ऊर्जा भर दो, मैं सात दिन तक समाधि/सम्मोहन की अवस्था में बैठा रहा।

फिर जकड़े हुए अंगों को फैलाकर मैं दोबारा उठ खड़ा हुआ।
और क्या वह अज्ञानता का अंधकार सचमुच ही क्षत-विक्षत कर रहा था? (174)
[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा7.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||57|| ------>>>> अगला

7.1 उत्तरा, सावत्थी के एक कुली की पुत्री, पताचार की शिष्या।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया और लाभकारी कर्म करके अपने भीतर अच्छे कर्मों की जड़ जमा ली, और ज्ञान प्राप्ति के लिए आवश्यक तत्व (विमुक्ति, विमुक्ति) अच्छी तरह से संचित कर लिए। बुद्ध युग में, उनका पुनर्जन्म सावत्थी में एक कुली के परिवार में हुआ और उनका नाम उत्तरा रखा गया। जब वे समझदार हुईं, तो उन्होंने पताचार को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देते हुए सुना, जिससे वे उसमें विश्वास करने लगीं। उन्होंने भिक्षुणी संघ में प्रवेश किया, विपश्यना[1] का अभ्यास किया और जल्द ही वे अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) बन गईं। अपनी उपलब्धि पर पीछे मुड़कर देखते हुए, वे प्रसन्न हुईं और उन्होंने इस प्रकार कहा:
'पुरुष मूसल से चावल कूटने में व्यस्त हैं।'

युवावस्था में पुरुष धन इकट्ठा करते हैं और उसे संचित करते हैं।

प्रिय पत्नी और बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए। (175)

लेकिन ध्यान रखें कि आप निवास करें

बुद्ध का वह अनुशासन, जिससे पश्चाताप नहीं होता।

जल्दी से अपने पैर धो लो, फिर एकाग्र मन से बैठ जाओ (176)

अपने मन में दृढ़ता स्थापित करें,

एकाग्र एकाग्रता के साथ, गहन ध्यान में,

संकार (भावनाएं, इच्छाएं, आकांक्षाएं, पाप) के कार्यों को देखें।

जो तुम्हारे स्वयं से उत्पन्न नहीं होता, वह तुम्हारा स्वयं नहीं है। [2] (177)

पटाकारा की शिक्षाओं के तहत, उसकी बातें सुनने के बाद

अपने पैर धोकर, वे एकमत होकर अलग-अलग बैठ गए, (178)

रात के पहले पहर बीतने के बाद, एक उदय हुआ।

पिछले जन्मों (पुनर्जन्मों) की लंबी यादें।

दूसरी पहर बीतने के बाद, कुछ ही समय में उठ खड़ा हुआ।

स्पष्ट दिव्य दृष्टि, दिव्य, पवित्रता की। (179)

रात के तीसरे पहर के बीतते ही, मैं फूट पड़ा

और अज्ञानता के अंधकार को चीर डाला।

अब त्रिविध ज्ञान से परिपूर्ण होकर[3] मैं उठा:

'हे देवी! निश्चय ही आपकी इच्छा पूरी हुई है। (180)

जैसे इंद्र (इन्द) तैंतीस (10 मिलियन) देवताओं (देवदूतों) के प्रमुख थे,

आकाशीय युद्धों में अजेय,

मुखिया के रूप में, और मैं इसी तरह जीवन व्यतीत करूंगा।

मैंने जो त्रिविध ज्ञान[3] प्राप्त किया है,

और सांसारिक इच्छाएँ दूर हो जाती हैं। (181)

एक दिन, पताकारा के अधीन अपना कार्य पूरा करने के बाद, यह थेरी अपने निवास स्थान पर गईं और पालथी मारकर बैठ गईं। उन्होंने मन में यह निश्चय किया कि जब तक मैं अपने मन को आसवों (भौतिक इच्छाओं) से पूरी तरह मुक्त नहीं कर लेती, तब तक मैं इस स्थिति से नहीं उठूंगी। इस प्रकार उन्होंने अपने मन में दृढ़ संकल्प किया और विपश्यना (ध्यान) में धीरे-धीरे स्पष्टता प्राप्त करते हुए, मार्ग पर अग्रसर होकर, उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही अंतर्ज्ञान की शक्ति और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त किया। इस प्रकार, उन्नीस विषयों पर एक के बाद एक चिंतन करते हुए, इस चेतना के साथ कि 'मैंने इस विषय में जो करना था वह कर लिया है,' उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक ऊपर दिए गए श्लोक कहे और अपने अंगों को फैलाया। और जब भोर हुई और रात से दिन का प्रकाश निकला, तो उन्होंने थेरी को खोजा और अपने श्लोकों को दोहराया।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान विधि को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] शाब्दिक रूप से, संस्कारों को स्वयं के रूप में नहीं, बल्कि अन्य के रूप में समझें।
[3] ज्ञानोदय के कारण प्राप्तियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा7.2
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||58|| ------>>>> अगला

7.2 चाला, मगध के नलका की ब्राह्मणी सुरुपासारी की पुत्री, भिक्षुओं के प्रमुख सारिपुत्त की बहन।
पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेकर और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित करके, वह भी इस बुद्ध युग में मगध के नलका गाँव में पुनर्जन्म लेकर जन्मीं।[1] वह ब्राह्मणी सुरुपासारी की संतान थीं। उनके नामकरण के दिन उनका नाम चाला रखा गया। उनकी छोटी बहन उपाचल और सबसे छोटी शिशुपचला थीं, और तीनों अपने भाई सारिपुत्त, धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) के सेनापति से छोटी थीं। अब, जब तीनों ने सुना कि उनके भाई ने संघ के लिए संसार का त्याग कर दिया है, तो उन्होंने कहा: 'यह कोई साधारण प्रणाली या साधारण त्याग नहीं हो सकता, यदि हमारे भाई जैसे किसी ने इसका अनुसरण किया हो!' और इच्छा और लालसा से परिपूर्ण होकर, उन्होंने भी संसार का त्याग कर संन्यासी बन गईं, अपने रोते-बिलखते रिश्तेदारों और परिचारकों को त्याग दिया। संन्यासी

बनने के बाद, परिश्रम और मेहनत से, पापों को दूर करते हुए, उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया और निर्वाण के आनंद में निवास किया।
अब, चाला भिक्षुणी, अपने परिक्रमा और भोजन के बाद, एक दिन अंधवन में ध्यान करने के लिए गईं। तभी एक राक्षस (मारा) उनमें कामुक इच्छाएं जगाने आया। सूत्र में वर्णित है:
'फिर, चाला भिक्षुणी, श्रावस्ती में अपनी परिक्रमा और भोजन के बाद, एक दिन अंधवन में ध्यान करने के लिए गईं। और, अंधवन में नीचे जाकर, वे एक पेड़ के नीचे बैठ गईं। तभी पापी राक्षस (मारा) वहाँ आया।'
अपने पवित्र ब्रह्मचर्य के व्रत को तोड़ने की इच्छा से, मारा (राक्षस) ने उससे पूछा कि वह मुंडा हुआ भिक्षुणी क्यों बन गई है। जब उसने उसे गुरु (बुद्ध) और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के गुणों के बारे में बताया, तो उसने समझाया कि उसने इसमें निपुणता प्राप्त कर ली है और कामुक जीवन पर विजय प्राप्त कर ली है। इससे मारा (राक्षस) व्याकुल और निराश होकर वहाँ से गायब हो गया। लेकिन उसने मारा (राक्षस) के साथ हुई अपनी बातचीत का विवरण इस प्रकार दिया:
सभी इंद्रियों से परिपूर्ण, आत्मजागरूक, ध्यानमग्न भिक्षुणी (भिक्षुणी)

प्रशिक्षित और आत्मसंयमित, पवित्र मार्ग पर चलने वाला, शांत।

कर्म, वाणी और विचार पर पूर्ण निपुणता के साथ

शांत भाव से, (दिव्य) आनंद में निवास करता है। (182)

मारा (शैतान):

अब क्यों और तुम इस तरह के कपड़े पहने हुए क्यों दिख रहे हो?

और नन की तरह मुंडाए हुए, फिर भी शामिल न हों

क्या आप किसी संप्रदाय के तपस्वियों के साथ उनके अनुष्ठानों में भाग लेना चाहेंगे?

तुम्हारा यह व्यर्थ और स्वार्थी उद्देश्य क्या है? (183)

चला:

वे ही हैं जो बाहर हैं, जाल में फंसे हुए हैं।

उन व्यर्थ दर्शनों में से जिन पर वे निर्भर हैं—

वे ही लोग हैं जिन्हें धम्म (सत्य) का ज्ञान नहीं है।

धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) में वे ही सर्वथा अयोग्य हैं। (184)

शाही साकिया वंश में जन्म होता है

एक बुद्ध, जो पुरुषों में अद्वितीय हैं:

उन्होंने मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) प्रदान किया है।

जो व्यर्थ दार्शनिक मतों पर विजय प्राप्त करता है। (185)

दुख का उद्गम और कारण, दुख पर काबू पाने के तरीके,

आर्यों का अष्टांगिक मार्ग निम्नलिखित की ओर ले जाता है:

समस्त दुखों का निवारण। (186)

और मैंने, जिसने उसके वचन सुने हैं,

वह पूरी ईमानदारी से अपने अनुशासन का पालन करेगा।

अब मुझे अद्वितीय त्रिविध ज्ञान[2] प्राप्त हो गया है,

बुद्ध के समय के दौरान। (187)

हर तरह से, इंद्रियों का आकर्षण समाप्त हो जाता है।

और भीतर का अंधकार (अज्ञान) क्षेत्र चीर-फाड़ कर अलग हो जाता है।

हे पापी! यह जान लो!

हे विनाशक! यहाँ तुम विजयी नहीं हो पाओगे। (188)

[1] इसे नाला-गाँव भी कहा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि सारिपुत्त समय-समय पर वहाँ निवास करते रहे और वहीं उनकी मृत्यु हुई और उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया।
[2] ज्ञानोदय के कारण प्राप्तियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वव्यापी दिव्य दृष्टि (या दिव्य दृष्टि) जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा7.3
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||59|| ------>>>> अगला

7.3 उपचला, चाला और सारिपुत्त की बहन।
वह भिक्षु संघ के सेनापति सारिपुत्र की दूसरी बहन भी थीं। उनकी कहानी पिछली कहानी में बताई जा चुकी है। चाला की तरह, उन्होंने भी दीक्षा ली, अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) का अभ्यास किया और अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) बन गईं। वे प्रसन्न हुईं और मारा (राक्षस) द्वारा व्यर्थ में प्रलोभित किए जाने के बाद उन्होंने कहा:
सभी इंद्रियों से परिपूर्ण, आत्मजागरूक, ध्यानमग्न भिक्षुणी (भिक्षुणी)

प्रशिक्षित और आत्म-संयम में,

आंतरिक शांति पूर्ण होने के साथ,

और उसने पथ पर अपनी जगह बना ली है

जिन पवित्र लोगों ने अमरता प्राप्त कर ली है, वे यहाँ से होकर गुजरे। (189)

मारा (शैतान):

पुनर्जन्म क्यों नहीं, तुम्हें प्यार क्यों?296 क्योंकि, जन्म लेने के बाद से,

आप इंद्रियों से मिलने वाले जीवन का आनंद ले सकते हैं।

इंद्रियों और यौन क्रिया के खेल का आनंद लें और मजे करें।

अन्यथा बहुत देर हो जाने पर आपको घोर पश्चाताप होगा। 297 (190)

उपचला:

जो जन्म लेता है, उसकी मृत्यु अवश्य होगी।

और हत्या जैसे कई खतरे,

चोट, यातना, अंग हानि, बंधन, शोक

अतः जन्म लेने वाले व्यक्ति को दुख भोगना ही पड़ता है। (191)

शाही साकिया वंश में जन्म होता है

जो पवित्र है, जो जागृत बुद्ध है, जो अजेय है।

उन्होंने मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) प्रदान किया है।

जिससे पुनर्जन्म का चक्र भलीभांति पार हो जाता है, (192)

दुख का उद्‌गम और कारण, दुख पर काबू पाने के तरीके,

आर्यों का अष्टांगिक मार्ग निम्नलिखित की ओर ले जाता है:

समस्त दुखों का निवारण। (193)

और मैंने, जिसने उसके वचन सुने हैं,

वह पूरी ईमानदारी से अपने अनुशासन का पालन करेगा।

अब मुझे अद्वितीय त्रिविध ज्ञान[2] प्राप्त हो गया है,

बुद्ध के समय के दौरान। (194)

हर तरह से, इंद्रियों का आकर्षण समाप्त हो जाता है।

और भीतर का अंधकार (अज्ञान) क्षेत्र चीर-फाड़ कर अलग हो जाता है।

हे पापी! यह जान लो!

हे विनाशक! यहाँ तुम विजयी नहीं हो पाओगे। (195)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] ज्ञानोदय के कारण तीन उपलब्धियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा8.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||60|| ------>>>> अगला

8.1 शिशुपचला, चाला, उपचला और सारिपुत्त की बहन।
उनकी कहानी उनकी बहन चाला की कहानी में बताई गई है - कैसे उन्होंने अपने महान भाई (सारिपुत्र, भिक्षु संघ के प्रमुख) के पदचिन्हों पर चलकर संघ में प्रवेश किया, अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) का अभ्यास किया और अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) बन गईं। सिद्धि के आनंद में लीन होकर, उन्होंने एक दिन अपनी उपलब्धि पर विचार किया, और जो कुछ करना था वह सब कर लेने के बाद, वे प्रसन्न हुईं और अपने आनंदमयी भाव में इस प्रकार कहा:
भिक्कुनी (नन) नैतिक उपदेशों (शील) में निपुण,

हर मायने में पूरी तरह से सुरक्षित,

जिसने उस पवित्र मार्ग को प्राप्त कर लिया है, वह शांत हो गया है।

जीवन का वह अनवरत अमृत। (196)

मारा (शैतान):

तावंतिस, यम और तुसिता देवता (स्वर्ग के देवदूत),

निम्मनराती देव (स्वर्गदूत) और वासवत्ती देव (स्वर्गदूत)

उनके मन में लालसा भरी आकांक्षाएं हैं,

आप बीते युगों में कहाँ-कहाँ रह चुके हैं? (197)

जब थेरी ने यह सुना, तो उसने कहा: 'रुको, मारा (राक्षस)! जिस कमललोक की तुम बात कर रहे हो, वह समस्त संसार की तरह कामवासना, घृणा और अज्ञान की आग से जल रहा है। वहाँ विवेकशील मन को कोई आकर्षण नहीं मिल सकता।' और मारा (राक्षस) को यह दिखाते हुए कि उसका मन संसार और इंद्रिय सुखों से विमुख हो गया है, उसने उसे इस प्रकार फटकारा:

तावंतिस, यम और तुसिता देवता (स्वर्ग के देवदूत),

निम्मनराती देव (देवदूत) और वासवत्ती देव (देवदूत)(198)

सोचिए कि वे कितनी बार ऐसा करते हैं

जन्म से मृत्यु तक, और मृत्यु से पुन: जन्म तक,

पहले यह बनना और फिर वह बनना,

बार-बार आने वाली विपत्ति से हमेशा घिरा हुआ

दयनीय व्यक्तित्व का,

जहां से दयालु मुक्ति नहीं आती। (199)

सारी दुनिया आग की लपटों में घिरी है, सब कुछ जल रहा है!

सारा संसार प्रज्वलित है, सारे संसार क्षणभंगुर हैं! (200)

लेकिन जो चीज नहीं बदलती, वह अतुलनीय है।

जो सांसारिक लोगों को ज्ञात नहीं है,

जिसके लिए बुद्ध ने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया है।

मेरा मन उसमें लीन रहना पसंद करता है। (201)

और मैंने, जिसने उसके वचन सुने हैं,

वह पूरी ईमानदारी से अपने अनुशासन का पालन करेगा।

अब मुझे अद्वितीय त्रिविध ज्ञान[2] प्राप्त हो गया है,

बुद्ध के समय के दौरान। (202)

हर तरह से, इंद्रियों का आकर्षण समाप्त हो जाता है।

और भीतर का अंधकार (अज्ञान) क्षेत्र चीर-फाड़ कर अलग हो जाता है।

हे पापी! यह जान लो!

हे विनाशक! यहाँ तुम विजयी नहीं हो पाओगे। (203)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] ज्ञानोदय के कारण तीन उपलब्धियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा9.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||61|| ------>>>> अगला

9.1 वड्ढा की माता, भारुकच्छ (भरुच) के एक कुलवासी की पुत्री:
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित किए, जिससे ज्ञान प्राप्ति की तैयारी धीरे-धीरे पूर्ण हो गई। बुद्ध युग में उनका जन्म भारुकच्छ[1] नगर में एक कुलवासी के परिवार में हुआ। विवाह के बाद उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम वड्ढा रखा गया। तब से वे वड्ढा की माता के नाम से जानी जाने लगीं। एक भिक्षु का उपदेश सुनकर वे भी अनुयायी बन गईं और अपने बच्चे को अपने रिश्तेदारों को सौंपकर भिक्षुणियों के पास गईं और संघ में प्रवेश किया। शेष कथा, जिसका वर्णन यहाँ नहीं किया गया है, भिक्षु वड्ढा की कथा से पूर्ण की जा सकती है, जो वरिष्ठ भिक्षुओं के भजनों (थेरागाथा) में वर्णित है। वड्ढा अपनी माता से मिलने के लिए अकेले ही भिक्षुणियों के कक्ष में चले गए और उनकी माता ने उनसे पूछा, 'तुम यहाँ अकेले क्यों आए हो?' और उन्हें इस प्रकार फटकारा:
हे मेरे वड्ढा, तुम फिर कभी मत आना।

बार-बार दुनिया के जंगल में

मेरे पुत्र! पुनर्जन्मों से मुक्त हो जाओ।

और जीवन के सभी कष्टों से मुक्ति। (204)

सच्ची ख़ुशी, हे वड्ढा मेरी, उनकी है

जो बुद्धिमान और लालसा एवं संदेह से मुक्त है,

शांत और निर्मल, लालसा को वश में कर लिया है।

और सभी घातक इच्छाओं से मुक्त होकर निवास करें। (205)

जिस मार्ग पर इन जैसे ऋषियों ने यात्रा की है—

मार्ग के मार्गदर्शन का अनुसरण करते हुए, वे कैसे

हे प्रिय बालक, क्या तुम दुखों का निश्चित अंत कर पाओगे?

अपने स्वयं के कल्याण के लिए अध्ययन करें और विकास को बढ़ावा दें। (206)

और पुत्र वड्ढा ने यह सोचकर कि 'मेरी माता निश्चय ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर चुकी हैं, इस प्रकार कहा:

अब आप बड़ी आशा और विश्वास के साथ ऐसा कहते हैं,

हे माँ! मुझे आप पर पूरा भरोसा है।

मेरी प्यारी माँ, जंगल रास्ते में बाधा नहीं है। (207)

तब थेरी (माता) ने उत्तर दिया, जिससे पता चला कि उसका काम पूरा हो गया है:

आह, नहीं! मेरी वड्ढा, मैं जो कुछ भी करता हूँ,

या कहें, या सोचें, चाहे चीजें बड़ी हों या छोटी,

जंगली बुराई की छोटी सी भी वृद्धि नहीं

अब मेरे आगे के रास्ते में बाधा खड़ी है। (208)

मैंने सभी सांसारिक इच्छाओं का त्याग कर दिया है।

मैंने अत्यंत उत्साह से (बिना आलस्य के) ध्यान किया है।

अब मुझे त्रिविध ज्ञान[3] प्राप्त हो गया है,

और बुद्ध की साधना पूर्ण हो गई है। (209)

भिक्षु वद्धा ने उनकी शिक्षा को प्रेरणा मानकर और उससे प्रेरित होकर अपने विहार (मठ) में जाकर, अपने सामान्य विश्राम स्थल पर बैठकर, अपनी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[2]) को इस प्रकार विकसित किया कि उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। और अपनी इस उपलब्धि पर प्रसन्न होकर, वे अपनी माता के पास गए और अपने अन्न (ज्ञान की अवस्था) की घोषणा की।

मेरी माँ ने जो प्रलोभन दिया वह कितना शानदार था!

और फटकार भी उतनी ही दयालु थी।

उन्होंने मुझे वह शिक्षा भी दी जो उन्होंने मुझे दी।

अपने परम सद्गुणों के बोझ से लदा हुआ। (210)

मैंने उसकी बातें सुनीं, मैंने उसकी सलाह को समझदारी भरा माना।

और धार्मिक श्रद्धा से रोमांचित होकर उसने पुकारा

मुक्ति प्राप्त करने का दर्शन। (211)

और मैंने दिन-रात अथक परिश्रम (ध्यान) किया।

जब तक उनकी चेतावनियों का फल नहीं मिला,

और मैं निर्वाण की परम शांति को स्पर्श कर सकता था। (212)

[1] भरूच - भारत के पश्चिम में गुजरात राज्य का एक बंदरगाह शहर।
[2] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[3] ज्ञानोदय के कारण तीन उपलब्धियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा10.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||62|| ------>>>> अगला

10.1 किसा-गोतमी, श्रावस्ती के गरीब परिवार की पुत्री, खुरदरे वस्त्र धारण करने वाली भिक्षुणियों में अग्रणी।

उनका जन्म पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय हंसवती नगर में एक कुलवासी परिवार में हुआ था। एक दिन उन्होंने गुरु को धम्म का उपदेश देते हुए सुना और भिक्षुणी को खुरदरे वस्त्र धारण करने के मामले में सर्वोच्च स्थान दिया। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि एक दिन उन्हें भी यह स्थान प्राप्त होगा। बुद्ध युग में उनका श्रावस्ती में एक गरीब परिवार में पुनर्जन्म हुआ। उनका नाम गोतमी था और दुबले-पतले शरीर के कारण उन्हें दुबली-पतली गोतमी कहा जाता था। विवाह के बाद उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया गया और उन्हें तुच्छ पुत्री कहा गया। परन्तु जब उन्होंने पुत्र को जन्म दिया, तो उन्हें सम्मान दिया गया। फिर जब पुत्र खेलने-कूदने लायक बड़ा हुआ, तो उसकी मृत्यु हो गई और गोतमी देह से विक्षिप्त हो गईं। और, उसके जन्म के बाद से लोगों के व्यवहार में आए बदलाव को ध्यान में रखते हुए, उसने सोचा: 'वे मेरे बच्चे को भी छीनकर छोड़ देंगे।' इसलिए, शव को अपनी कमर पर उठाकर, वह शोक से पागल होकर घर-घर जाकर कहने लगी: 'मेरे बच्चे के लिए दवा दीजिए!' और लोग तिरस्कारपूर्वक कहते थे: 'दवा! इसका क्या फायदा?' वह उनकी बात नहीं समझ पाई। लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति ने सोचा: 'उसका मन अपने बच्चे के शोक से व्याकुल है। दस गुना शक्ति वाले परमेश्वर को उसके लिए कोई न कोई दवा अवश्य पता होगी।' और उसने कहा: 'हे प्रिय स्त्री, स्वयं बुद्ध के पास जाओ और उनसे अपने बच्चे के लिए दवा मांगो।' वह उस समय विहार (मठ) गई जब गुरु (बुद्ध) धर्मोपदेश दे रहे थे, और बोली: 'भगवान बुद्ध, मेरे बच्चे के लिए दवा दीजिए!' गुरु ने उसमें आशा देखकर कहा: 'जाओ, नगर में प्रवेश करो, और जिस भी घर में अभी तक किसी की मृत्यु न हुई हो, वहाँ से थोड़ा सा सरसों का दाना ले आओ।' उसने राहत की सांस लेते हुए कहा, 'हे प्रभु, यह ठीक है!' और नगर के पहले घर में जाकर बोली, 'मुझे थोड़ा सा सरसों का दाना दे दीजिए, ताकि मैं अपने बच्चे को दवा दे सकूँ। यदि इस घर में अभी तक किसी की मृत्यु न हुई हो, तो मुझे थोड़ा सा सरसों का दाना दे दीजिए।' 'कौन कह सकता है कि यहाँ कितने लोग नहीं मरे हैं?' 'तो फिर मुझे इतने सरसों के दाने की कोई आवश्यकता नहीं है।' इस प्रकार वह दूसरे और तीसरे घर में गई, जब तक कि बुद्ध की शक्ति से उसका उन्माद दूर नहीं हो गया, उसका स्वाभाविक मन शांत नहीं हो गया, और उसने सोचा: 'पूरे नगर में यही व्यवस्था रहेगी। भगवान बुद्ध ने मेरी भलाई के लिए दया करके यह पूर्वाभास कर लिया था।' और इस विचार से रोमांचित होकर वह नगर छोड़कर चली गई और अपने बच्चे को श्मशान भूमि में लिटाते हुए बोली:
'यह न तो किसी गांव का कानून है, न ही किसी शहर का कानून।'

इस कबीले के लिए या केवल उस कबीले के लिए कोई कानून नहीं है;

हाँ, पूरी दुनिया के लिए, और स्वर्ग में रहने वाले देवताओं (देवदूतों) के लिए भी।

यही नियम है: सब कुछ क्षणभंगुर है!

ऐसा कहकर वह गुरु (बुद्ध) के पास गईं। उन्होंने कहा, 'गोतमी, क्या तुम्हारे पास थोड़ी सी सरसों है?' उन्होंने कहा, 'हे प्रभु, कारण कर्मों में है, सरसों में नहीं। कृपया मुझे उपदेश दीजिए।' तब गुरु (बुद्ध) ने इस प्रकार कहा:
जिसका मन बच्चों और धन-संपत्ति पर लगा रहता है...

वह केंद्रित है, अपने विचारों में उनसे जुड़ा हुआ है।

मृत्यु रात में आई भीषण बाढ़ की तरह आती है।

सोते हुए गांव को छीन लेना।

जब उन्होंने बात पूरी की, तो वह प्रथम मार्ग (धारा-प्रवेश/सोतापना, प्रथम दिव्य जागृति) की सिद्धि में दृढ़ हो गईं और दीक्षा के लिए निवेदन किया। उन्होंने सहमति दी, और उन्होंने तीन बार दाहिनी ओर प्रणाम करके भिक्षुणियों के पास जाकर दीक्षा ली। और कुछ ही समय बाद, चीजों के कारणों का अध्ययन करते हुए, उन्होंने अपनी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) को विकसित किया। तब गुरु (बुद्ध) ने एक महिमापूर्ण श्लोक कहा:
'वह व्यक्ति जो सौ वर्ष तक जीवित रहा,

वह कभी भी अमृतमय मार्ग (शाश्वतता/अमरता का मार्ग) नहीं देखता।

एक दिन से अधिक न जीना ही बेहतर है।

अतः उसने उसी दिन मार्ग को देखा।

जब उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया, तो उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। और तपस्वी जीवन शैली में अग्रणी होकर, वे तीन प्रकार के खुरदुरे वस्त्र धारण करने लगीं। तब गुरु (बुद्ध), जेतवन वन (मठ) में एक सभा में बैठे हुए, भिक्षुणियों को उनके गुणों के अनुसार क्रम देते हुए, उन्हें खुरदुरे वस्त्र धारण करने वालों में प्रथम घोषित किया। और उन्होंने, अपनी उपलब्धियों को याद करते हुए, गुरु के समक्ष, चुने हुए लोगों के साथ मित्रता की प्रशंसा में यह भजन गाया:
विश्वभर के नेक लोगों के साथ मित्रता

ऋषि ने प्रशंसा की है। मूर्ख भी वास्तव में बुद्धिमान बन जाता है।

यदि वह किसी कुलीन मित्र का स्वागत करे। (213)

पवित्र लोगों के पास जाओ! उनमें जो जाते हैं

ज्ञान (पन्न) बढ़ता है; और उस पवित्र प्रेम में

तुम अपने सभी दुखों से मुक्त हो जाओगे। (214)

दु:ख को अच्छी तरह से पहचानो; ध्यान दो कि यह कैसे आता है।

और यह कैसे गुजरता है; अष्टांगिक मार्ग को ध्यान से देखें

इससे दुखों का अंत होता है, ये चार महान आर्य सत्य हैं। (215)

उसने कहा है, स्त्री का भाग्य कितना दयनीय है!

पुरुषों को वश में करने वाला और उनका मार्गदर्शन करने वाला:

शत्रुतापूर्ण पत्नियों के साथ घर साझा करना कष्टदायक होता है।

प्रसव पीड़ा में असहनीय कष्ट होता है।

कुछ लोग मृत्यु की तलाश में हैं, अन्यथा उन्हें दो बार कष्ट भोगना पड़ेगा, (216)

गले को भेदते हुए; नाजुक जहर शरीर में प्रवेश करता है।

माँ की हत्या करने वाले भ्रूण के मामले में भी दुख की बात है।

जन्म नहीं होता, और दोनों की मृत्यु एक समान ही होती है। (217)

'अपने बच्चे को जन्म देने के लिए घर लौटना [2]

मैंने जंगल में अपने पति को मरते हुए देखा।

मुसीबतें आने से पहले मैं अपने माता-पिता तक भी नहीं पहुँच सका। (218)

मैंने अपने दोनों बेटों को खो दिया, अपने पति को भी।

और जब मैं विपत्ति में अपने घर पहुँचा,

देखो! जहाँ सब एक छोटी सी चिता पर एक साथ जल रहे थे,

मेरी माँ, मेरे पिता और मेरा भाई जल रहे हैं!' (219)

हे अभागी, बर्बाद स्त्री! यह सारा बोझ!

आपने जिन दुःखों को सहा है, उन्हीं से ये आँसू बहाए हैं।

हजारों जिंदगियों के थका देने वाले चक्र के माध्यम से। (220)

मैंने भी देखा है कि श्मशान भूमि में,

मेरे बेटे का कोमल मांस खा लिया गया [3]

(सफाई करने वाले जानवरों द्वारा)

उसके रिश्तेदार अब मर चुके हैं, वह खुद समाज से बहिष्कृत है।

उसके पति की मृत्यु हो चुकी है।

अब वह अमरत्व को प्राप्त हो चुकी है (221)

अब मुझे समझ आ गया है

आर्यों का मार्ग, अष्टांगिक मार्ग पर

वह अवस्था अमृतमय (शाश्वतता/अमरता) की ओर जाती है।

मैंने निर्वाण का अनुभव किया है और उसे निहार लिया है।

पवित्र धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के दर्पण में। (222)

मैं भी अपने दर्द से उबर चुका हूँ।

मेरा बोझ हल्का हो गया है, मेरा काम पूरा हो गया है।

मेरा मन पूरी तरह से स्वतंत्रता (विमुक्ति/विमुक्ति) के लिए तैयार है।

मैंने, थेरी किसा-गोतामी ने, यह कहा है! (223)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] यहाँ वह अपने भजन में पताचारा (अपने गुरु) की कहानी को शामिल करती है, मानो 'नारी' की दुर्दशा को और अधिक पूर्ण रूप से व्यक्त करने के लिए, 'नारी के भाग्य' में निहित दुखद संभावनाओं के तमाशे और त्रासदी को, जिसका उसका अपना मामला मात्र एक चरण था। आलोचना इसे छंदों और टीका के बीच ऐतिहासिक सामंजस्य में एक और 'दोष' के रूप में देख सकती है - भौगोलिक दृष्टि से। फिर भी, यहाँ एक ऐसी विशेषता है जो विशुद्ध रूप से साहित्यिक रचना वाले किसी भी छंद में कभी नहीं हो सकती। और सौंदर्यपरक तीव्रता में ये छंद किसा-गोतमी के अपने दुख के अंतर्निहित गहरे दुख की इस आधारभूत लहर और अंत में मिश्रित विजय के माध्यम से अद्भुत रूप से लाभ प्राप्त करते हैं।
[3] कुत्ते, सियार, बाघ, पैंथर, बिल्लियाँ, आदि, खुले शवों के सफाईकर्मी के रूप में।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

गौतमी एक गरीब आदमी की बेटी थी। दुबली-पतली होने के कारण उसे किसा गौतमी या "दुबली-पतली गौतमी" कहा जाता था। सौभाग्य से उसका विवाह एक धनी व्यापारी के पुत्र से हुआ। परन्तु ससुराल वालों का व्यवहार एक कुलीन महिला के लिए उचित नहीं था। उन्होंने उसे कभी भी उसकी साधारण पृष्ठभूमि नहीं भूलने दी।

कुछ ही समय में किसा गौतमी गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। वह अपने बच्चे से बहुत प्यार करती थी और उस पर अपना सारा स्नेह और स्नेह लुटाती थी। बच्चा चलना सीख ही रहा था कि एक जानलेवा बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई। किसा गौतमी, जिसने पहले कभी मृत्यु का अनुभव नहीं किया था, अत्यंत दुखी हुई। जिन ससुराल वालों ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था, उन्होंने पुत्र के जन्म के बाद उसे स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार उसने अपना सारा स्नेह अपने पुत्र पर लुटाया और अपना जीवन उस बच्चे के इर्द-गिर्द ही केंद्रित कर लिया, जिसके कारण उसे स्वीकार किया गया था। उसे पुनर्जीवित करने के लिए औषधि खोजने के दृढ़ संकल्प के साथ, उसने अपने मृत बच्चे को अपनी गोद में उठाया और एक कुशल चिकित्सक की तलाश में घर-घर भटकने लगी।

गाँव वाले उस पर हंसने लगे और उसे अपशब्द कहने लगे। क्या वह देख नहीं पा रही थी कि उसका बच्चा मर चुका है? लेकिन दुःख से व्याकुल गौतमी डटी रही। एक ज्ञानी व्यक्ति ने उस दुखी स्त्री पर दया करते हुए उसे बुद्ध के पास भेजा। बुद्ध को प्रणाम करके किसा गौतमी ने उनसे अपने बच्चे को पुनर्जीवित करने की प्रार्थना की।

बुद्ध ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा कि किसा गौतमी पिछले जन्मों के परिश्रम से आध्यात्मिक रूप से उन्नत थीं। परन्तु असहनीय दुःख के कारण उनका मन धर्म के लिए तैयार नहीं था।

यह देखकर कि किसा गौतमी ने पहले कभी मृत्यु का अनुभव नहीं किया था, बुद्ध ने उनसे कहा कि वे किसी ऐसे घर से कुछ सरसों के बीज लाएँ जहाँ मृत्यु न हुई हो। किसा गौतमी एक ऐसे गाँव में रहती थीं जहाँ संयुक्त परिवार साथ रहते थे। वह अपने मृत बच्चे को लेकर घर-घर गईं, लेकिन उन्हें कोई ऐसा घर नहीं मिला जहाँ मृत्यु न हुई हो। कुछ ही समय में किसा गौतमी को अहसास हुआ कि मृत्यु सभी प्राणियों के लिए सामान्य है। अपने मृत बच्चे का अंतिम संस्कार करके वह सांत्वना के लिए बुद्ध के पास लौट आईं।

बुद्ध ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें सरसों के बीज मिल गए हैं। गौतमी ने बुद्ध को बताया कि गाँव के हर परिवार में किसी न किसी की मृत्यु हो गई है। उन्होंने कहा, "मृतकों की संख्या जीवितों से कहीं अधिक प्रतीत होती है।"

यह देखकर कि किसा गौतमी धम्म के लिए तैयार हैं, बुद्ध ने उन्हें समस्त वस्तुओं की अनित्यता का उपदेश दिया। चार पंक्तियों के प्रवचन के अंत में, आध्यात्मिक रूप से परिपक्व किसा गौतमी ने संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्न प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने भिक्षुणी बनने की अनुमति मांगी।

भिक्षुणी किसा गौतमी बुद्ध की शिक्षाओं का पूर्ण आदर करती थीं। एक दिन, जब वे धम्म हॉल में दीपक बुझाने ही वाली थीं, तो उनकी नज़र लौ पर पड़ी। नाचती हुई लौ पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्होंने मन ही मन सोचा, "जिस प्रकार इस लौ का है, उसी प्रकार प्राणियों का भी है। कुछ प्रज्वलित होते हैं, तो कुछ बुझ जाते हैं। केवल वे ही जो निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं, फिर कभी दिखाई नहीं देते।"

बुद्ध ने यह जानकर कि किसा गौतमी अपने लक्ष्य के निकट हैं, अपना एक प्रकाशमान स्वरूप प्रकट किया और उनके प्रतिबिंबों का उपयोग करते हुए उन्हें इस प्रकार उपदेश दिया: "जिस प्रकार इस लौ का है, उसी प्रकार प्राणियों का भी है। कुछ प्रज्वलित होते हैं, तो कुछ बुझ जाते हैं। केवल वे ही जो निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं, फिर कभी दिखाई नहीं देते। इसलिए, जो क्षण भर के लिए ही सही, निर्वाण को देख लेता है, उसका जीवन सौ वर्ष तक जीवित रहकर निर्वाण को न देखने से श्रेष्ठ है।" प्रवचन के अंत में किसा गौतमी ने निर्वाण के परम आनंद को प्राप्त कर लिया।

कृतज्ञता व्यक्त करते हुए किसा गौतमी ने बुद्ध द्वारा दिए गए अपार आनंद का वर्णन किया और दूसरों को भी श्रेष्ठ पुरुषों के साथ संगति करने के लिए प्रोत्साहित किया।

निम्न कुल की एक गरीब महिला होने के कारण अत्यधिक कष्ट सहने वाली किसा गौतमी ने अन्य स्त्रियों के दर्द को समझा। एक स्त्री का जीवन कठिन और पीड़ा से भरा था। स्त्रियों को अक्सर संपत्ति की तरह समझा जाता था और उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। कई पुरुषों की एक से अधिक पत्नियाँ होती थीं। एक स्त्री होने के नाते कष्ट सहने वाली किसा गौतमी स्त्रियों के कष्टों के प्रति सहानुभूति रखती थीं। उन्होंने अपने परिचित स्त्रियों द्वारा झेली गई कुछ कठिनाइयों का वर्णन किया और कष्टों से मुक्ति पाकर अपनी राहत को व्यक्त किया। बुद्ध के समय भारत में स्त्रियों की दुर्दशा को समझने पर ही उनके द्वारा स्थापित आमूलचूल परिवर्तन और किसा गौतमी जैसी स्त्रियों द्वारा उनके प्रति व्यक्त की गई कृतज्ञता को सही मायने में समझा जा सकता है, क्योंकि बुद्ध ने स्त्रियों को पुरुषों के समान आध्यात्मिक रूप से सक्षम माना था।

एक बार दुष्ट मारा ने उन्हें बहकाने का प्रयास किया, लेकिन गौतमी बलवान और अदम्य थीं।

बुद्ध ने धम्म का उपदेश इसलिए दिया क्योंकि सभी वस्तुएँ अनित्य हैं, और यही अनित्यता दुख का कारण है। बुद्ध अक्सर प्रियजन की मृत्यु से होने वाले दुख का उदाहरण देकर सभी सांसारिक घटनाओं की अनित्यता को समझाते थे। फिर उन्होंने किसा गौतमी जैसी आध्यात्मिक रूप से उन्नत साधिकाओं को निर्वाण की परम आनंद प्राप्ति में सहायता की। किसा गौतमी ने तपस्या का मार्ग अपनाया और श्मशान घाटों से मिले पुराने कपड़ों से बने मोटे वस्त्र धारण किए। बुद्ध ने कहा कि गौतमी मोटे वस्त्र धारण करने वाली भिक्षुणियों में सबसे श्रेष्ठ थीं, जो तेरह तपस्याओं में से एक है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा11.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||63|| ------>>>> अगला

11.1 उपपालवन्ना, श्रावस्ती के एक करोड़पति (सेठी) की पुत्री, इद्धि (जादुई शक्ति) प्राप्त थेरियों में अग्रणी, बुद्ध द्वारा खेमा के समान भिक्षुणियों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त।
उनका जन्म भी पद्ममुत्तरा के समय, हंसवती नगर में एक कुलवासी परिवार में हुआ था। जब वे बड़ी हुईं, तो उन्होंने एक विशाल जनसमूह के साथ गुरु (बुद्ध) का उपदेश सुना, जिसमें उन्होंने एक भिक्षुणी को जादुई शक्तियों से युक्त भिक्षुणियों में प्रमुख स्थान दिया। उन्होंने सात दिनों तक बुद्ध और संघ को महान दान दिए और उसी पद की आकांक्षा की। . . .
[यहां अनुवादक द्वारा बहुत सी सामग्री उपलब्ध नहीं कराई गई है]
इस बुद्ध युग में, उनका श्रावस्ती में करोड़पति (सेठी) की पुत्री के रूप में पुनर्जन्म हुआ। और क्योंकि उनकी त्वचा नीले कमल के हृदय के रंग की थी, इसलिए उन्हें उपपालवन्ना कहा गया। जब वह वयस्क हुई, तो पूरे भारत से राजाओं और आम लोगों ने उसके पिता के पास दूत भेजे और कहा, 'हमें अपनी पुत्री दे दीजिए।' इस पर करोड़पति (सेठी) ने सोचा, 'मैं सबकी इच्छा पूरी नहीं कर सकता। मुझे कोई योजना बनानी होगी।' और अपनी पुत्री को बुलवाकर उन्होंने कहा, 'प्रिय पुत्री, क्या तुम संसार त्यागकर संन्यासी बनने के लिए तैयार हो?' जीवन के अंतिम पड़ाव पर होने के कारण, उनके शब्द मानो सौ गुना शुद्ध तेल से अभिषेक किए गए हों। इसलिए उन्होंने कहा, 'प्रिय पिता, मैं संसार त्याग दूंगी!' उन्होंने उनका सम्मान करते हुए उन्हें भिक्षुणियों के निवास स्थान पर ले जाकर दीक्षा दी।
कुछ समय बाद उपवास गृह में उनकी बारी आई। उन्होंने दीपक जलाकर कमरे की सफाई की। फिर दीपक की लौ को प्रत्यक्ष प्रतीक मानकर और उस पर निरंतर ध्यान लगाकर, उन्होंने 'दीप्तिमान यंत्र' के माध्यम से ध्यान (ध्यानमग्न अवस्था) प्राप्त की, और उसे अपना आधार बनाकर अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। इसके फलस्वरूप, उन्हें अंतर्ज्ञान और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का ज्ञान प्राप्त हुआ, और वे रूपांतरण की जादुई शक्तियों में विशेष रूप से निपुण हो गईं।

और गुरु (बुद्ध), जेतवन वन (मठ) में एक सभा में विराजमान होकर, उन्हें जादुई शक्तियों में सर्वोच्च स्थान प्रदान किया। ध्यान (ध्यानमग्न अवस्था) और फलस्वरूप प्राप्त होने के आनंद पर चिंतन करते हुए, उन्होंने एक दिन कुछ श्लोक दोहराए। ये श्लोक एक ऐसी माता द्वारा व्यथा गए थे जो अपनी पुत्री की प्रतिद्वंद्वी के रूप में रह रही थी, जो बाद में भिक्षु बनकर गंगा-तट के वृहद के रूप में प्रसिद्ध हुए, और ये श्लोक कामुक इच्छाओं के नुकसान, नीचता और भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालते थे।
मैं।

'हम एक ही व्यक्ति से बंधे हुए, शत्रुता में जीते रहे,'

मां और बेटी, दोनों प्रतिद्वंद्वी पत्नियों के रूप में!

ओह, हमारी हालत कितनी दयनीय थी!

अस्वाभाविक अपराध! मेरे रोंगटे खड़े हो गए। (224)

मुझ पर भय छा गया। यह जीवन कितना घिनौना है!

कामुक इच्छाओं से भरी, अशुद्ध और घृणित,

कांटों से घना जंगल, जिसमें

हम दोनों, मेरी प्रेमिका और मैं, दुर्भाग्यवश भटक गए थे!' (225)

इंद्रियों के जीवन में मौजूद बुराइयाँ, शक्तिशाली

उसने देखा कि सब कुछ त्यागने में ही निश्चित शरण है।

राजगृह जाकर उन्होंने संन्यास ग्रहण किया और दीक्षा ली।

वह घर जहाँ कोई घर नहीं है (तपस्वी जीवन जीने के लिए)। (226)

II.

प्रसन्न और प्रसन्न होकर, वह अपनी प्राप्त उपलब्धि पर चिंतन करती है:

मुझे अपने पिछले जन्मों (पुनर्जन्मों) का ज्ञान है।

दिव्य, पवित्र और दिव्य दृष्टि से स्पष्ट और शुद्ध होकर;

अब मैं दूसरों के मन को समझ सकता हूँ;

मुझे पवित्रता की दिव्य श्रवण शक्ति प्राप्त है; (227)

मैंने अलौकिक शक्तियों (इद्धि) को अपना बना लिया है;

और घातक सांसारिक इच्छाओं को दूर किया।

ये छह उच्च ज्ञान मेरे हैं। [1]

और इस प्रकार बुद्ध का अनुशासन पूर्ण हो जाता है (228)

III.

वह बुद्ध की सहमति से उनके समक्ष एक अद्भुत कार्य करती है और उसे दर्ज करती है:

मैं रथ और चार घोड़ों के साथ आया था।

असाधारण शक्ति द्वारा दृश्यमान बनाया गया,

और उनके चरणों में गिरकर पूजा की।

अद्भुत बुद्ध, समस्त लोकों के स्वामी। (229)

IV.

वह साल के पेड़ों के झुरमुट में मारा (शैतान) से परेशान है और उसे फटकार लगाती है:

मारा (शैतान)

तुम उस स्थान पर आए हो जहाँ सुगंधित वृक्ष फूलों से लदे खड़े हैं।

साल के पेड़ के नीचे अकेला रहता है

तुम्हारा कोई साथी नहीं है – क्या तुम्हें छेड़छाड़ करने वालों से डर नहीं लगता? (230)

वह

यदि तुम्हारे जैसे एक लाख बहकाने वाले भी होते,

मेरे शरीर का एक बाल भी अकड़ता या कांपता नहीं – मारा, तुम क्या कर सकती हो? (231)

हालांकि मैं यहां खड़ा हूं, मैं गायब हो सकता हूं और तुम्हारे शरीर में प्रवेश कर सकता हूं।

देखो! मैं तुम्हारी भौहों के बीच खड़ा हो सकता हूँ, ऐसी जगह खड़ा हो सकता हूँ जहाँ तुम मुझे देख न सको। (232)

अब मेरा मन पूरी तरह से आत्मनियंत्रित है।

और जादुई शक्तियों का पूर्णतया ज्ञान प्राप्त कर लिया गया है।

हाँ, छह उच्च ज्ञान[1] मेरे हैं।

और इस प्रकार बुद्ध का अनुशासन पूर्ण हो जाता है। (233)

भाले और बरछी की तरह ही इंद्रिय सुखों का आनंद भी होता है।

जो हमारे नश्वर शरीरों को भेदकर चीर-फाड़ देते हैं।

जिन सुखों को तुम वासनापूर्ण जीवन के सुख कहते हो—

ये मेरे लिए कोई मायने नहीं रखते, मैं ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करता हूँ। (234)

मैंने हर तरह से इंद्रिय सुखों को त्याग दिया है।

और भीतर का अज्ञान का अंधकार छंट जाता है

हे पापी, यह जान लो!

हे विनाशक! यहाँ तुम विजयी नहीं हो पाओगे। (235)

टिप्पणी – इस प्रसिद्ध थेरी से जुड़ी चार गाथाएँ, थेरीगाथा में बिना किसी अंतराल के दर्ज हैं। टीका इन्हें चार प्रसंगों में विभाजित करती है। पहले प्रसंग में, राजगृह में व्यापार के सिलसिले में लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के दौरान, सावत्थी में एक व्यापारी की पत्नी अपने पहले बच्चे को जन्म देने वाली होती है, तभी उसकी माँ, जो पत्नी की वफादारी पर विश्वास नहीं करती, उसे घर से निकाल देती है। वह अपने पति की तलाश में निकलती है और रास्ते में एक बंगले में एक बेटे को जन्म देती है। उसकी अनुपस्थिति में एक अन्य व्यापारी बच्चे को ले जाता है और उसे गोद ले लेता है। एक डाकू सरदार उस विचलित माँ को पाता है और वह उसे एक बेटी को जन्म देती है। वह अनजाने में उस बच्ची को घायल कर देती है और सरदार के क्रोध से बचने के लिए भाग जाती है। कई वर्षों बाद, एक युवक, रिश्ते से अनजान, माँ और बेटी दोनों का विवाह कर लेता है। माँ अपनी बेटी के सिर पर निशान देखती है और अपनी प्रतिद्वंद्वी को अपनी ही संतान के रूप में पहचान लेती है।

[1] पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति की छह महाशक्तियाँ: इद्धि (जादुई क्षमता), किसी भी स्थान की शुद्ध श्रवण शक्ति, दूसरों के विचारों का ज्ञान, पूर्व जन्मों (पुनर्जन्मों) की स्मृति, अन्य प्राणियों के पूर्व जन्म, भीतर आसवों (इंद्रिय इच्छाओं) का निरोध, अर्थात् पवित्रता।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

उप्पलावन्ना एक धनी व्यापारी की असाधारण रूप से सुंदर पुत्री थी। उसकी त्वचा नीले कमल के फूल की पंखुड़ी के समान नीले-काले रंग की थी। उसकी त्वचा के असाधारण रूप से सुंदर रंग के कारण, उसके माता-पिता ने उसका नाम उप्पलावन्ना रखा, जिसका अर्थ है 'नीले कमल के रंग वाली'। जब वह बालिग हुई, तो उसके माता-पिता ने उसका विवाह एक धनी परिवार के युवा व्यापारी से कर दिया। उस समय की प्रथा के अनुसार, वह अपने पति के घर सावत्थी चली गई।

उप्पलावन्ना अपने ससुराल में खुशी से रहती थी, जब तक कि उसके पति को व्यापार के सिलसिले में राजगृह की यात्रा नहीं करनी पड़ी। जब उसके पति ने प्रस्थान किया, तब न तो उप्पलावन्ना और न ही उसके पति को पता था कि वह गर्भवती है। जब उसकी गर्भावस्था स्पष्ट हुई, तो उसकी सास ने उस पर दुराचार का आरोप लगाया। अपनी निर्दोषता का दावा करने के बावजूद, उप्पलावन्ना को उसकी सास ने घर से निकाल दिया, जो अब उससे घृणा करती थी। उप्पलावन्ना, जिसने कोई गलती नहीं की थी, ने अपने पति की खोज में राजगृह जाने का फैसला किया।

यात्रा लंबी और कठिन थी। गर्भवती सुंदर स्त्री पर दया करने वाले अजनबियों की शरण में रहते हुए, वह धीरे-धीरे एक शहर से दूसरे शहर चलती रही, जब तक कि उसे प्रसव पीड़ा शुरू नहीं हो गई। रास्ते में एक झोपड़ी में विश्राम करते हुए उसने एक पुत्र को जन्म दिया। थकी-हारी और कमजोर उप्पलावन्ना ने नवजात शिशु को अपने वस्त्र में लपेटकर विश्राम किया। फिर, शिशु को झोपड़ी में छोड़कर वह पास की नदी में स्नान करने चली गई।

वहाँ से गुजर रहे एक अजनबी ने उसके शिशु के रोने की हल्की आवाज सुनी। शिशु को बिना माता-पिता के देखकर उसने उसे गोद लेने का फैसला किया। जब उप्पलावन्ना झोपड़ी में लौटी तो वह पूरी तरह टूट चुकी थी। शोक में रोते हुए वह अपने शिशु को ढूंढने के लिए इधर-उधर भागी, लेकिन उसे अपना पुत्र नहीं मिला।

उप्पलावन्ना व्याकुल थी। वह जानती थी कि अब वह अपने पति के पास नहीं जा सकती। अगर उसे पता चला कि उसने अपने पुत्र को खो दिया है, तो वह निश्चित रूप से उसे मार डालेगा। परिवार का मुखिया पहला पुत्र होता है, जो वंश को आगे बढ़ाता है। भारत के पुरुष प्रधान समाज में यह एक अत्यंत अनमोल बच्चा था और उसका जन्म एक उत्सवपूर्ण घटना थी। उप्पलावन्ना जानती थी कि उसकी लापरवाही के लिए उसे कभी क्षमा नहीं मिलेगी। कहीं और जाने की जगह न होने के कारण उसने अपने माता-पिता के घर लौटने का फैसला किया। वह घने जंगल से गुजर रही थी कि जंगल में छिपे एक डाकू की नजर उस पर पड़ी। उसकी असाधारण सुंदरता से मोहित होकर उसने उसे अपनी पत्नी बनाने का फैसला किया। हताश उप्पलावन्ना मान गई।

कुछ ही समय बाद वह फिर से गर्भवती हुई और उसने एक बच्ची को जन्म दिया। हालाँकि, उसका जीवन सुखमय और आरामदायक नहीं था। उसका पति अक्सर उस पर बहुत क्रोधित रहता था। वह लगातार उसे उसके अतीत और उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करने के अपने उदार आतिथ्य की याद दिलाता रहता था। एक बार ऐसे ही लंबे और भयंकर झगड़े के बाद वह गुस्से में घर छोड़कर चला गया। अपने पति पर क्रोधित उप्पलावन्ना उछल पड़ी और अपनी गोद में सो रही बच्ची को बिस्तर पर पटक दिया। बच्ची बिस्तर से उछलकर ज़मीन पर गिरी और उसके सिर में चोट लग गई। घाव से खून बहने लगा और बच्ची बेहोश पड़ी रही। उप्पलावन्ना को यकीन था कि उसने गलती से अपनी बेटी को मार डाला है। वह जानती थी कि उसका पति कभी उस पर विश्वास नहीं करेगा। उसे अपनी जान का डर था क्योंकि वह अपने लुटेरे पति के क्रोध को जानती थी। उसने फिर से भाग जाने का फैसला किया।

छोटे-मोटे काम करके सुंदर उप्पलावन्ना किसी तरह अपना गुजारा चलाती रही। उसकी पिछली दौलत और खूबसूरती अब उसके किसी काम की नहीं थी। वह एक पतित स्त्री थी, अपने माता-पिता के पास लौटने में शर्म महसूस करती थी और अपने पति के पास लौटने से डरती थी। वह कई वर्षों तक घोर गरीबी में रही। एक दिन जब वह लकड़ियाँ इकट्ठा कर रही थी, तभी एक सुंदर युवक की नज़र उस पर पड़ी। उस वृद्ध महिला की सुंदरता से मोहित होकर उसने उसे अपनी पत्नी बनाने का निश्चय किया। उप्पलावन्ना, जो अपने असुरक्षित जीवन से तंग आ चुकी थी, मान गई।

उप्पलावन्ना और उसके पति कुछ समय तक सौहार्दपूर्वक साथ रहे। फिर एक दिन उसे व्यापार के सिलसिले में जाना पड़ा। जब वह लौटा तो अपने साथ एक दूसरी पत्नी को भी लाया — एक बेहद खूबसूरत युवती जो यौवन के चरम पर थी। उप्पलावन्ना ने अनिच्छा से उस युवती को स्वीकार किया। पुरुष अक्सर महिलाओं पर अपना अधिकार जमा लेते थे और एक से अधिक पत्नियाँ रखना आम बात थी। दोनों महिलाओं के बीच एक अस्थिर मित्रता विकसित हुई। एक दिन उप्पलावन्ना उस युवती के बाल संवार रही थी, तभी उसने उसके सिर पर एक बड़ा, टेढ़ा-मेढ़ा निशान देखा। युवती ने उसे बताया कि वह एक डाकू की बेटी थी और उसके पिता के साथ उसकी माँ की लड़ाई में उसके सिर पर चोट लगी थी। उप्पलावन्ना भयभीत हो गई। यह उसकी अपनी बेटी थी जिसे उसने कई साल पहले मरा हुआ समझकर छोड़ दिया था। यह सोचकर कि उसने और उसकी बेटी ने एक ही पुरुष को साझा किया था, वह अंदर से टूट गई। अपने दयनीय जीवन की शर्म सहन न कर पाने के कारण वह बुद्ध के पास सांत्वना और आराम के लिए गईं। उप्पलावन्ना ने तब भिक्षुणी संघ में शामिल होने का निर्णय लिया।

कुछ समय बाद सभा भवन की सफाई और ताला खोलने की बारी उनकी आई। दीपक जलाने और भवन की सफाई करने के बाद, दीपक की लौ ने उन्हें आकर्षित किया। अग्नि तत्व पर ध्यान केंद्रित करते हुए, वे गहन ध्यान में लीन हो गईं और विश्लेषणात्मक ज्ञान के साथ-साथ अरहंतत्व प्राप्त कर लिया।

अपनी असीम अलौकिक शक्तियों के कारण, बुद्ध ने उप्पलावन्ना को अपनी भिक्षुणियों में सबसे श्रेष्ठ घोषित किया था। वे उनकी दूसरी प्रमुख महिला शिष्या भी थीं। खेमा के साथ मिलकर उन्होंने बुद्ध को भिक्षुणियों के बढ़ते समूह के शिक्षण और प्रशासन में सहायता की। उप्पलावन्ना, जिन्होंने युवावस्था में समाज द्वारा महिलाओं के प्रति किए जाने वाले व्यवहार के कारण बहुत कष्ट सहा था, ने अन्य युवतियों को कष्टों से मुक्ति दिलाने में सहायता की। महिलाओं द्वारा झेले जाने वाले अद्वितीय कष्टों के अपने अनुभव के कारण, वे समान परिस्थितियों में दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने में सक्षम थीं।

उप्पलावन्ना की शीघ्र ज्ञान प्राप्ति को समझने के लिए हमें कई युगों पहले बुद्ध पद्ममुत्तरा के समय में जाना होगा। बुद्ध पद्ममुत्तरा के समय, उप्पलावन्ना का जन्म हंसवती नगर के एक धनी परिवार में हुआ था। उन्होंने पद्ममुत्तरा बुद्ध को एक अन्य भिक्षुणी को, जो अलौकिक शक्तियों में श्रेष्ठ थीं, अपनी दूसरी महिला शिष्या नियुक्त करते हुए देखा था। उस भिक्षुणी से प्रेरित होकर, उप्पलावन्ना ने बुद्ध और उनके

अनुयायियों को सात दिनों तक भोजन और आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की थीं। तब उन्होंने बुद्ध की दूसरी प्रमुख शिष्या बनने की इच्छा रखी। बुद्ध पद्ममुत्तरा ने देखा कि उप्पलावन्ना अपनी इच्छा पूरी करेंगी, इसलिए उन्होंने भविष्यवाणी की कि बुद्ध गौतम के अधीन वह दूसरी प्रमुख महिला शिष्या और अलौकिक शक्तियों में अग्रणी होंगी। तब से उप्पलावन्ना ने लगन से पुण्य कर्म किए और अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहीं।

ग्रंथ में उप्पलावन्ना के कुछ पिछले जन्मों का वर्णन है। कश्यप बुद्ध के समय, जो हमारे गौतम बुद्ध से पहले थे, उप्पलावन्ना का जन्म बनारस नगर के राजपरिवार में राजा किकी की पुत्री के रूप में हुआ था। वह बुद्ध की समर्पित अनुयायी थीं और उन्होंने कई पुण्य कर्म किए, जिनमें बुद्ध के लिए एक सुंदर मठ का निर्माण भी शामिल था। मृत्यु के बाद उनका पुनर्जन्म एक दिव्य लोक में हुआ और उन्होंने दीर्घकाल तक स्वर्गिक आनंद का अनुभव किया।

उनका अगला जन्म एक गरीब महिला के रूप में दर्ज है। सर्वोच्च बुद्ध कश्यप और सर्वोच्च बुद्ध गौतम के बीच पृथ्वी पर कई पच्चेक बुद्ध प्रकट हुए थे। गंधमादन पर्वत पर सात दिनों तक गहन ध्यान में लीन रहे पच्चेक बुद्ध भिक्षा मांगने के लिए पर्वत से नीचे उतरे थे। उस समय उप्पलावन्ना ने नीले कमल के फूल और चावल तोड़े थे, जिन्हें उन्होंने भुने हुए चावलों में बदल दिया था। पच्चेक बुद्ध को देखकर उन्होंने उन्हें भुने हुए चावल और सुंदर नीले कमल के फूल भेंट किए। फिर, आनंद से भरकर, उन्होंने नीले कमल के समान सुंदर होने की इच्छा व्यक्त की। भोजन और फूल स्वीकार करके, पच्चेक बुद्ध सूक्ष्म यात्रा द्वारा पर्वत की चोटी पर लौट गए। मृत्यु के बाद उप्पलावन्ना का पुनर्जन्म स्वर्गलोक में हुआ, जहाँ उन्होंने दीर्घकाल तक दिव्य आनंद का अनुभव किया।

फिर वह स्वर्गलोक से चली गईं और मनुष्यलोक में पुनर्जन्म लिया। उनके माता-पिता या जन्म का कोई रिकॉर्ड मौजूद नहीं है। ग्रंथों में दर्ज है कि नीले कमल के फूलों से भरी एक झील के पास जंगल में रहने वाले एक ऋषि को झील के किनारे, फूलों के पास एक सुंदर बच्ची मिली। नीले कमल के रंग की त्वचा वाली वह बच्ची बेहद खूबसूरत थी, जिसका नाम ऋषि ने उप्पलावन्ना रखा। उन्होंने उस असहाय शिशु को गोद लेने का फैसला किया। उप्पलावन्ना बड़ी होकर अत्यंत सुंदर हो गईं और किसी अप्सरा जैसी दिखती थीं। वह ऋषि के साथ जंगल में एकांत जीवन व्यतीत करती रहीं।

एक दिन, जंगल से गुजर रहे एक यात्री ने उस असाधारण रूप से सुंदर लड़की को देखा और ऋषि से उसके जन्म के बारे में पूछा। जब ऋषि ने बताया कि वह अनाथ है और उन्होंने उसे अपने बच्चे की तरह पाला है, तो वह वापस गया और जंगल में रहने वाली उस असाधारण सुंदर कन्या के बारे में राजा को सूचित किया। राजा ने उसे अपनी संगिनी बनाने का निर्णय लिया। अपने दरबारियों के साथ, उन्होंने ऋषि के पास जाकर उप्पलावन्ना से अपनी रानी बनने का अनुरोध किया। उप्पलावन्ना मान गईं। वन छोड़कर वे महल में रहने लगीं और जल्द ही उनकी प्रिय रानी बन गईं।

अगला प्रलेखित जन्म तब हुआ जब उप्पलावन्ना का पुनर्जन्म राजगृह में एक किसान की पत्नी के रूप में हुआ। उस समय आठ पच्चेक बुद्ध संसार में प्रकट हुए थे और उप्पलावन्ना को उन्हें भिक्षा देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने सुगंधित चावल का भोजन तैयार किया था और उसे अपने पति के पास ले जा रही थीं जो खेत जोत रहे थे, तभी उन्होंने आठ बुद्धों को भिक्षा मांगते हुए देखा। उन्होंने तुरंत अपने पति के लिए तैयार किया हुआ भोजन बुद्धों को दे दिया और अगले दिन उन्हें अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने सुगंधित भोजन तैयार किया और नीले कमल के आठ गुच्छे तोड़े, जिन्हें उन्होंने भोजन के बाद बुद्धों को अर्पित किया। दूसरी बार, उन्होंने नीले कमल के समान सुंदर होने की इच्छा की।

अगला प्रलेखित जन्म हमारे गौतम बुद्ध के समय श्रावस्ती में हुआ। पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय में उन्होंने जो आकांक्षा व्यक्त की थी, वह फलदायी होना था। उनका अपमानजनक जीवन असहनीय था। अपने पति को अपनी बेटी के साथ साझा करना उनके मन पर गहरा बोझ था। उन्होंने बुद्ध के मार्गदर्शन में भिक्षुणी बनने का निश्चय किया। यद्यपि ग्रंथ में उप्पलावन्ना की नीले कमल के समान सुंदर होने की आकांक्षा के दो उदाहरण मिलते हैं, यह संभव है कि उन्होंने अलौकिक शक्तियों में अग्रणी बनने और बुद्ध की दूसरी प्रमुख शिष्या बनने की अपनी मूल आकांक्षा को भी नवप्रवर्तित किया हो। ऐसी आकांक्षा की पूर्ति के लिए महान परिश्रम और अनेक पुण्य कर्मों की आवश्यकता होती है।

संभवतः उनके असामान्य रंग और अनोखी सुंदरता ने अधिक ध्यान आकर्षित किया, जिसके परिणामस्वरूप पाठ का यह भाग संरक्षित हो सका। यह तथ्य कि उप्पलावन्ना ने तुरंत बुद्ध गौतम के अधीन भिक्षुणी बनने की सहमति दी और उसके कुछ ही समय बाद अरहंत पद प्राप्त किया, यह दर्शाता है कि ऐसे कई अन्य अवसर रहे होंगे जब उन्होंने पुण्य कर्म करने के बाद ज्ञान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की और अपनी आकांक्षाओं को पुनर्जीवित किया। हालाँकि, ये मेरे शोध में उपलब्ध नहीं हैं।

उस समय भिक्षुओं की तरह भिक्षुणियों के लिए भी ध्यान करने के लिए वन में जाना आम बात थी। उप्पलावन्ना भिक्षा मांगने के बाद लौटीं और घने वन में स्थित अपनी कुटिया में प्रवेश किया। उन्हें पता नहीं था कि आनंद नामक एक पूर्व प्रेमी, जो उनसे प्रेम करता था, उनकी कुटिया में घुस गया था और उनके पलंग के नीचे छिप गया था। उनके लेटते ही, उन्हें अचानक घेरकर, वह उनके ऊपर चढ़ गया और उन पर हावी हो गया। उनकी विनती और विरोध के बावजूद, उसने उनके साथ दुर्व्यवहार किया और अपनी मनमानी की। फिर वह चुपके से निकल गया, जैसे आया था वैसे ही चुपके से।

लेकिन अरहंत का अपमान करने का पाप बहुत भारी था। अपने इस बुरे कर्म से व्यथित होकर आनंद अपनी इच्छाओं की आग में जलकर मर गया और अविची नरक में पुनर्जन्म लिया।

उप्पलावन्ना ने स्वयं को संभाला और भिक्षुणियों को अपनी आपबीती सुनाई। भिक्षुणियों ने यह सूचना भगवान बुद्ध को दी। भिक्षुणियों के लिए बुद्ध का सबसे बुरा डर सच हो गया था। उनकी प्रमुख शिष्या उप्पलावन्ना पर अत्याचार किया गया, उनका अपमान किया गया और उनके साथ अनादरपूर्ण व्यवहार किया गया। राजा पसेनादि कोसल के पास जाकर बुद्ध ने उनसे नगर परिसर के भीतर भिक्षुणियों के लिए एक निवास स्थान बनाने का अनुरोध किया। फिर उन्होंने यह नियम बना दिया कि भिक्षुणियां जंगल में अकेले ध्यान और निवास नहीं करेंगी। इस समय से भिक्षुणियां केवल नगर में ही निवास करने लगीं।

कुछ समय बाद भिक्षु धम्म हॉल में एकत्रित हुए और इस घटना पर चर्चा करने लगे। अरहंतों की वासनाओं को तृप्त करने की आवश्यकता को लेकर एक बहस छिड़ गई। तब बुद्ध ने उन्हें यह बताकर उनके संदेह दूर किए कि अरहंत पद प्राप्त कर चुके पुरुषों और महिलाओं के बीच की वासना शांत हो जाती है।

उप्पलावन्ना अपनी असाधारण सुंदरता के कारण अनेकों प्रशंसकों की चाहत का पात्र थीं। बुद्ध के पवित्र संघ की सदस्य होने के बावजूद भी वे उनसे विमुख नहीं हुए।

स्त्री-पुरुषों के अनूठे कष्टों को समझने वाली उप्पलावन्ना बुद्ध के लिए एक अमूल्य संपत्ति थीं। अपनी अलौकिक शक्तियों और सौम्य स्वभाव से उन्होंने हजारों स्त्रियों को मुक्ति दिलाने में सहायता की। उनकी सुंदरता, करुणा और सौम्यता से प्रभावित होकर अनेकों ने महान अरहंत का अनुकरण किया और स्वयं ज्ञान प्राप्त किया।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा12.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||64|| ------>>>> अगला

12.1 पुन्ना या पुन्निका, जो सावत्थी के करोड़पति (सेठी) अनाथपिंडिका के घर में एक दासी की पुत्री थीं और जिन्हें उन्होंने मुक्त किया था , उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित किए थे। जब विपस्सी बुद्ध थे, तब उनका एक कुलवासी परिवार में पुनर्जन्म हुआ। विवेक की आयु में आकर, अपने भीतर निहित प्रतिज्ञा के कारण, वे पुनर्जन्म की संभावना को लेकर चिंतित हो गईं और भिक्षुणियों के पास जाकर धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना, उस पर विश्वास किया और भिक्षुणी संघ में प्रवेश किया। सद्गुणों में परिपूर्ण होकर और तीनों पिटकों का अध्ययन करके, वे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) में बहुत विद्वान हो गईं और उसकी शिक्षिका भी बनीं। यही नियति उन्हें पांचों बुद्धों - सिख, वेसभु, ककुसंध, कोनागमना और कस्सपा - के अधीन भी प्राप्त हुई। लेकिन अपने अहंकार के कारण वह दोषों को जड़ से उखाड़ने में असमर्थ रही। अतः, उसके अहंकार के कर्मों के फलस्वरूप, इस बुद्ध युग में उसका पुनर्जन्म सावत्थी में अनाथपिंडिका (करोड़पति) के घर में एक घरेलू दासी के रूप में हुआ। बुद्ध के सिंह गर्जना प्रवचन (एमएन 11, 12) को सुनने के बाद वह सोतापना (प्रथम दिव्य ज्ञानोदय) की साध्वी बनी। इसके बाद, जब उसने ब्राह्मण (पुजारी) को बुद्ध की शिक्षाओं के प्रति अनुकूल बना दिया और इस प्रकार अपने स्वामी का सम्मान प्राप्त कर लिया, जिससे उसने उसे मुक्त कर दिया, तो उसने संघ में प्रवेश करने के लिए उसकी सहमति प्राप्त कर ली। और, अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) का अभ्यास करते हुए, उसने अल्पकाल में ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके वास्तविक रूप और अर्थ में पूर्णतः समझ लिया। अपनी इस उपलब्धि को याद करते हुए, उसने परमानंद में ये श्लोक कहे:
पानी का दराज, एक बार मैं नदी के किनारे गया था,

सर्दी के मौसम में भी, सजा के डर से जाते थे।

रखैलियों से निंदा के भय से परेशान। (236)

(वह एक ब्राह्मण/पुजारी को धार्मिक शुद्धि के लिए स्नान करते हुए देखती है)

वह: 'क्या, ब्राह्मण, तुम्हें इस बात का डर है कि हमेशा ऐसा ही रहेगा?'

तुम नदी में उतरोगे? क्यों?

कांपते अंगों के साथ भीषण ठंड सहन करें?' (237)

उन्होंने कहा: 'अच्छा, आप जानती ही हैं, लेडी पुन्निका, पूछने की क्या ज़रूरत है?'

जो व्यक्ति उचित कर्मों द्वारा इस प्रकार दूर करता है

बुरे कर्मों का प्रभाव? जो युवावस्था में, (238)

या बुढ़ापे में बुरे कर्म किए हों।

उस कर्म से मुक्ति मिलती है। (239)

वह: 'नहीं, अब, जो अज्ञानी को अज्ञानी से अवगत कराता है,'

उसने आपको यह बताया है: कि ऐसा करने से (स्नान करने से),

क्या बुरे कर्मों से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है? (240)

तो फिर मछलियाँ और कछुए क्यों?

मेंढक, जलीय सांप, मगरमच्छ

और जो भी जल में भटकते हैं वे सीधे स्वर्ग जाएंगे (241)

हाँ, वे सभी जो बुरे कर्मों का फल भोगते हैं।

भेड़ और सूअर काटने वाले, शिकार करने वाले,

चोर, हत्यारे—वे तो बस खुद को ही बदनाम करते हैं।

जल से बुरे कर्मों से मुक्ति मिलती है! (242)

और अगर ये धाराएँ पहले की चीज़ों को बहा ले जा सकतीं

तुम्हारे द्वारा किए गए बुरे कार्यों को वे अपने साथ ले जाना चाहेंगे।

आपकी योग्यता भी, आपको पूरी तरह से नंगा और निर्वस्त्र छोड़ देगी। (243)

हे ब्राह्मण, इसी बात से भयभीत होकर तुम सदा के लिए आते हो।

यहां नहाना और कांपना, वह भी, वह भी

तुम्हें बर्बाद कर देगा, और तुम्हारी त्वचा को ठंड से बचाएगा। (244)

उन्होंने कहा: 'वे लोग जो गलतियों के रास्ते पर भटक गए थे'

अब आप आर्य मार्ग पर अग्रसर हैं।

हे महिला, मैं अपना स्नान वस्त्र आपको दान के रूप में देता हूँ। (245)

वह बोली: 'अपनी पोशाक अपने पास रखो! मुझे पोशाकों की कोई तलाश नहीं है।'

यदि आप कष्ट से डरते हैं, यदि आप इसे पसंद नहीं करते, (246)

तुम न तो खुलेआम कोई गलत काम करते हो और न ही कोई छिपा हुआ गलत काम।

लेकिन यदि तुम बुराई करोगे, या कर चुके हो, (247)

तो फिर तुम्हारे लिए दुख से बचने का कोई रास्ता नहीं है?

भले ही आप उसे आते हुए देखें और भाग जाएं।

यदि तुम कष्ट से डरते हो, यदि कष्ट तुम्हें प्रसन्न नहीं करता, (248)

जाओ और बुद्ध तथा धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) की खोज करो।

और अपने आश्रय के लिए आदेश का पालन करें; उनसे सीखें।

नैतिक उपदेशों (शील) का पालन करना। इस प्रकार तुम भलाई पाओगे। (249)

वह बोला: 'देखो! मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ।'

और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) और व्यवस्था का मार्ग। मैं सीखूंगा।

उनमें से कुछ को अपने ऊपर लेना और रखना

नैतिक उपदेश (शील); इस प्रकार मैं वास्तव में अच्छा पाऊंगा। (250)

मैं एक समय ब्राह्मण वंश का पुत्र था।

आज मैं एक सच्चे ब्राह्मण (पवित्र पुरुष) के रूप में खड़ा हूँ।

मैंने श्रेष्ठ त्रिविध ज्ञान (त्रे-विद्या)[2] प्राप्त कर लिया है,

सच्चे वेद ज्ञान को प्राप्त किया।

आंतरिक धारा के आध्यात्मिक स्नान द्वारा शुद्ध किया गया।' (251)

ब्राह्मण के लिए, शरण और नैतिक उपदेशों (शील) में स्थापित होने के बाद, जब उन्होंने गुरु (बुद्ध) को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देते हुए सुना, तो वे अनुयायी बन गए और संघ में प्रवेश कर गए। अथक प्रयास से, वे कुछ ही समय बाद त्रिविध ज्ञान (तीनों ज्ञान)[2] प्राप्त कर चुके थे, और अपनी इस अवस्था को याद करते हुए उन श्लोकों में प्रसन्न हुए। और थेरी ने स्वयं उन श्लोकों को दोहराते हुए, उन्हें अपना भजन बना लिया।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] ज्ञानोदय के कारण तीन उपलब्धियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा13.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||65|| ------>>>> अगला

13.1 अंबपाली, वैशाली की पूर्व वेश्या:
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेकर और कई जन्मों में युगों तक प्रभावी रहने वाले अच्छे कर्मों का संचय करके सिख बुद्ध (एक पूर्व बुद्ध) के समय में संघ में प्रवेश किया। एक दिन, जब वे अभी नौसिखिया ही थीं, भिक्षुणियों के साथ जुलूस में एक मंदिर में दर्शन कर रही थीं, तभी उनके आगे चल रहे एक अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) थेरी ने मंदिर के प्रांगण में जल्दबाजी में थूक दिया। उनके पीछे आकर, थेरी के इस कृत्य पर ध्यान न देते हुए, उन्होंने फटकार लगाते हुए कहा, 'कौन सी गणिका (वेश्या) यहाँ थूक रही है?'
एक भिक्षुणी होने के नाते, नैतिक उपदेशों (शील) का पालन करते हुए, उन्हें गर्भ से पुनर्जन्म से घृणा थी और उन्होंने स्वतः पुनर्जन्म पर अपना ध्यान केंद्रित किया। अपने पिछले जन्म में वह वैशाली में राजा के उद्यानों में, एक आम के वृक्ष की तलहटी में अनायास ही प्रकट हुईं। माली ने उन्हें पाया और नगर ले आया। वे आम के रक्षक की कन्या के नाम से प्रसिद्ध हुईं। उनकी सुंदरता, आकर्षण और मोहकता ऐसी थी कि अनेक राजकुमार उन्हें पाने के लिए आपस में होड़ करते रहे। अंततः, अपने झगड़े को समाप्त करने के लिए और कर्म के नियम के कारण, उन्होंने "सभी की संपत्ति" होने का वचन दिया और उन्हें गणिका (नृत्य करने वाली और क्रीड़ा करने वाली) नियुक्त किया। बाद में, गुरु (बुद्ध) में आस्था के कारण, उन्होंने अपने ही उद्यानों में एक विहार (मठ) बनवाया और उसे गुरु और संघ को सौंप दिया। (बाद में उनका अपना पुत्र भिक्षु बन गया) और जब उन्होंने अपने पुत्र, वरिष्ठ भिक्षु विमला-कोंडन्ना को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देते हुए सुना, तो उन्होंने भी दीक्षा ली और अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) का अभ्यास किया, और अपने ऊपर वृद्धावस्था के प्रभाव को देखकर, सांसारिक अनित्यता का नियम उनके मन में आया, प्रेरित होकर, उन्होंने निम्नलिखित श्लोक कहे:
कभी मेरे घुंघराले बाल मधुमक्खी के पंखों की तरह चमकदार और काले रंग के गुच्छों में गुच्छों की तरह हुआ करते थे।

समय के साथ वे बोरी या छाल के कपड़े की तरह हो जाते हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (252)

मेरे बाल इत्र की पेटी की तरह सुगंधित हैं, मीठे फूलों से भरे हुए हैं।

बीते वर्षों की बर्बादी अब खरगोश के फर की गंध के समान लगती है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (253)

घनी झाड़ियों की तरह, अच्छी तरह से लगाए गए पौधों से सुसज्जित, और कंघी, पिन और पार्टिंग से सुंदर।

वर्षों के बीतने से सुंदर चोटियाँ बिखर गईं और सब कुछ टूट गया।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (254)

काले रंग की चोटियाँ रत्नों और सोने से सजे सिर के आभूषणों में जगमगा रही थीं।

वर्षों की बर्बादी के साथ सब कुछ टूट गया है, और बालों की लटें अब पूरी तरह से झड़ गई हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (255)

किसी मूर्तिकार की शिल्पकारी की तरह सजी हुई मेरी भौहें चमक रही थीं, जिन्हें बारीकी से पेंसिल से उकेरा गया था।

वर्षों के बीतने के साथ-साथ वे झुर्रियों से भर गए हैं, लटकते हुए से।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (256)

मेरी आंखें रत्नों की तरह चमकीली और दमकती हुई थीं, गहरे नीले रंग की और लंबी पलकों वाली।

वर्षों की बर्बादी से वे पूरी तरह से नष्ट हो गए, अब उनमें कोई चमक नहीं बची।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (257)

बच्चों की तरह ही नाक के नथुनों का घुमाव नाजुक और चिकना होता है।

अब वर्षों की बर्बादी से नाक झुलस गई है और सिकुड़ गई है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (258)

मेरे कानों की बनावट इतनी सुंदर है मानो किसी सुनार ने इसे नाजुक कारीगरी से बनाया हो।

वर्षों के बीतने के साथ-साथ वे झुर्रियों से भर गए हैं और लटके हुए हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (259)

मेरी मुस्कान से मेरे दांत ऐसे चमक उठे जैसे केले के पेड़ की कलियाँ खिल रही हों।

वर्षों के बीतने से वे टूट-फूट गए हैं और जौ की तरह पीले पड़ गए हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (260)

मेरी आवाज इतनी मधुर थी मानो कोयल जंगल में उड़ते हुए घंटी की आवाज हो।

अब वर्षों के बीतने के साथ, आवाज टूट गई है और रुक-रुक कर निकल रही है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (261)

मेरे गले के सामने सीप की तरह कोमल चमक दिखाई दी।

अब वर्षों के बीतने से इसकी सारी सुंदरता मुरझा गई है और विकृत हो गई है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (262)

कभी मेरी भुजाएँ दो बेलनाकार स्तंभों की तरह चमकती थीं।

वर्षों के बीतने के साथ वे मुरझाई हुई शाखाओं की तरह कमजोर होकर लटक जाते हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (263)

पहले मेरे कोमल हाथ खूबसूरत थे, जिन पर चमकती सोने की अंगूठियां और चूड़ियां थीं।

वर्षों की बर्बादी के साथ वे उलझी हुई जड़ों की तरह हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (264)

मेरे छोटे स्तनों के सामने सुडौल और सुंदर आकृति में एक उभार आया।

वर्षों की बर्बादी के साथ वे ऐसे मुरझाए हुए हैं जैसे पानी के बिना (पानी ढोने वाली) खालें।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (265)

पहले मेरा शरीर अच्छी तरह से पॉलिश किए गए सोने की ढाल की तरह चमकता था।

अब उम्र के साथ-साथ शरीर झुर्रियों के जाल से ढक गया है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (266)

सांप की कुंडली की तरह, मेरी जांघों की पूरी सुंदरता समाई हुई थी।

वर्षों के बीतने के साथ-साथ वे बांस के तनों के समान हो गए हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (267)

सोने की चूड़ियों से सजी मेरी टखने पहले देखने में बहुत खूबसूरत लगती थीं।

वर्षों की बर्बादी से वे तिल के गट्ठों की तरह सिकुड़ गए हैं।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (268)

मेरे पैर पहले इतने कोमल और प्यारे थे मानो उन पर रुई के गुच्छे लगे हों।

समय के साथ-साथ ये त्वचा फट गई है और अब झुर्रियों से भर गई है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (269)

इस शरीर की यही हालत रही है। अब यह उम्र से थका हुआ, कमजोर और बदसूरत हो गया है।

कई बुराइयों का घर; एक पुराना मकान जहाँ से गारा टपक रहा है।

सत्यवक्ता (बुद्ध) के वचन अन्यथा (असत्य) नहीं हैं। (270)

और यह देखकर कि थेरी ने अपने स्वयं के व्यक्तित्व में अनित्यता के प्रत्यक्ष संकेतों से तीनों लोकों की सभी घटनाओं में अनित्यता को पहचाना, और इसे ध्यान में रखते हुए, दुख और आत्माहीनता के सत्य को जाना, उसने अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में स्पष्टता प्राप्त करते हुए मार्ग पर प्रगति की और अरहंतत्व (बुद्ध के समतुल्य ज्ञान) प्राप्त किया।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा13.2
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||66|| ------>>>> अगला

13.2 वैशाली के एक ब्राह्मण (पुजारी) की पुत्री रोहिणी:
पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लेकर और अनेक जन्मों में युग-स्थायी फलदायी अच्छे कर्म संचित करके, वह इक्यावन युग पूर्व, विपस्सी बुद्ध के समय में, एक कुलवासी परिवार में जन्मी। एक दिन उसने बंधुमती नगर में भगवान बुद्ध को भिक्षा मांगते हुए देखा और उनके कटोरे को मीठे पकवानों से भरते हुए देखकर, उसने प्रसन्नता और आनंद से उनके चरणों में नमन किया। उस कर्म के फलस्वरूप स्वर्ग और पृथ्वी पर अनेक जन्मों के बाद, जब उसने ज्ञान प्राप्ति के लिए आवश्यक सभी गुण (विमुक्ति) संचित कर लिए, तो इस बुद्ध युग में वैशाली में एक अत्यंत समृद्ध ब्राह्मण के घर में उसका पुनर्जन्म हुआ और उसका नाम रोहिणी रखा गया। जब वह समझदार हुई, तो गुरु

(बुद्ध) के वैशाली में रहने के दौरान वह विहार (मठ) गई और प्रवचन सुने। वह 'सोतापना (प्रथम दिव्य जागरण)' की साध्वी बनीं और अपने माता-पिता को सिद्धांत सिखाकर, जब उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया, तो उन्हें संन्यासी संघ में प्रवेश करने की अनुमति मिल गई। अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) का अभ्यास करते हुए, उन्होंने कुछ ही समय बाद अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को रूप और अर्थ में पूर्ण रूप से समझ लिया।
और सोतापना (प्रथम दिव्य जागरण) में प्रवेश करने के दौरान अपने पिता के साथ हुई चर्चा को याद करते हुए, उन्होंने उसका सार उल्लासपूर्ण छंदों के रूप में व्यक्त किया:
रोहिणी के पिता:

"भिक्षुओं को देखो!" क्या तुम कभी ऐसा कहते हो?

"भिक्षुओं को देखो!" कहकर उसने मुझे नींद से जगा दिया।

भिक्षुओं की प्रशंसा सदा तुम्हारी जुबान पर रहे।

वे कहते हैं, क्या वह एकांतवास करना चाहती है? (271)

आप इन भिक्षुओं को उनके आने पर दान देते हैं।

भरपूर भोजन और पेय। आओ, रोहिणी।

मैं पूछता हूँ, भिक्षु आपको इतने प्रिय क्यों हैं? (272)

ये आलसी लोग काम करने से खुश नहीं हैं।

वे दूसरों से मिलने वाले दान से अपना जीवन यापन करते हैं।

वे भिखारी हैं, और टुकड़ों-टुकड़ों के लालची हैं।

मैं पूछता हूँ, भिक्षु आपको इतने प्रिय क्यों हैं?' (273)

रोहिणी:

हे प्रिय पिताजी, आपने कई दिनों तक पूछा है

एकांतवासियों के बारे में। अब क्या मैं इसके बारे में बात करूँ?

उनके सद्‌गुण, उनकी बुद्धिमत्ता और उनका काम। (274)

वे काम करने के लिए उत्सुक रहते हैं, आलसी लोग नहीं हैं।

वे जो सबसे महान कार्य करते हैं, उसमें वे सांसारिक इच्छाओं का त्याग करते हैं।

और घृणा। इसीलिए भिक्षु मुझे प्रिय हैं। (275)

वे बुराई की तीन नीच जड़ों को दूर करते हैं[2]

भीतर से पूर्णतः शुद्ध करना, सभी पापों को दूर करना,

इसलिए मुझे भिक्षु प्रिय हैं। (276)

उनके कर्मों में पवित्रता है, उनके वचनों में पवित्रता है।

और उनके विचार (मन) में उनका कार्य शुद्ध है।

इसलिए मुझे भिक्षु प्रिय हैं। (277)

सीप के समान निर्मल,

भीतर और बाहर से शुद्धता के साथ

पवित्र तेजस्वी पात्रों के साथ

इसलिए मुझे भिक्षु प्रिय हैं। (278)

धम्म (शाश्वत सत्य की शिक्षा) के विद्वान और अनुयायी;

धर्म के मार्ग पर चलने वाला और नेक व्यक्ति।

वे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देते हैं।

इसलिए मुझे भिक्षु प्रिय हैं। (279)

धम्म (शाश्वत सत्य की शिक्षा) के विद्वान और अनुयायी;

धर्म के मार्ग पर चलने वाला और नेक व्यक्ति।

पूरी एकाग्रता के साथ ध्यान करते हुए

इसलिए मुझे भिक्षु प्रिय हैं। (280)

वे दूर-दूर तक, आत्म-नियंत्रित और एकाग्र होकर विचरण करते हैं;

अपने शब्दों में बुद्धिमान और विनम्र,

वे वास्तव में पीड़ा के अंत को जानते हैं

इसलिए मुझे भिक्षु प्रिय हैं। (281)

और जब वे गांव की गली से गुजरते हैं,

वे बिना किसी कारण के मुड़कर देखते हैं; वे बिना किसी अपेक्षा के चलते रहते हैं।

इसलिए मुझे संन्यासी प्रिय हैं। (282)

वे भंडारगृह बनाने के लिए इसका उपयोग नहीं करते।

न जार, न डिब्बा। उन्होंने इसे परिपूर्ण बनाया।

उनकी खोज। इसीलिए भिक्षु मुझे प्रिय हैं। (283)

वे न तो कोई सिक्का पकड़ते हैं, न ही उनके हाथ में सोना आता है।

न ही चांदी। वे अपनी जरूरतों के लिए पर्याप्त मात्रा में ही सामान ले लेते हैं।

इसलिए मुझे भिक्षु प्रिय हैं। (284)

अनेक कुलों से और अनेक ग्रामीण क्षेत्रों से

वे संघ में शामिल हो गए। वे सद्भावना से हैं।

इसलिए मुझे भिक्षु प्रिय हैं। (285)

रोहिणी के पिता:

'अब सचमुच हमारे कल्याण के लिए, हे रोहिणी,

तुम इसी घर में जन्मी बेटी हो!

आपका विश्वास बुद्ध और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) में है।

और संघ में; अपनी धर्मपरायणता को तीव्र करो। (286)

आप अच्छी तरह जानते हैं कि यह सर्वोच्च क्षेत्र है

जहां योग्यता का सृजन हो सकता है। हम भी अब से ऐसा ही करेंगे।

हम स्वयं को पवित्र पुरुषों (तपस्वियों/भिक्षुओं) की सेवा में समर्पित करेंगे।

इससे हमारे खाते में पुण्य जमा होगा।

उन्हें प्रचुर मात्रा में दान देकर। (287)

रोहिणी:

'यदि यह पीड़ा है जिससे आप डरते हैं, यदि आप इसे पसंद नहीं करते हैं,

जाओ और बुद्ध तथा धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) की खोज करो।

और अपने आश्रय के लिए आदेश दें; उनसे सीखें

और नैतिक उपदेशों (शील) का पालन करो। ऐसा करने से तुम्हें सुख मिलेगा। (289)

रोहिणी के पिता:

देखो! मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ।

और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) और व्यवस्था का मार्ग। मैं सीखूंगा।

उनमें से कुछ को अपने ऊपर लेने के लिए और

नैतिक उपदेशों (शील) का पालन करो। तभी मुझे सुख मिलेगा। (290)

मैं भी एक समय ब्राह्मण वंश का पुत्र था।

आज मैं अपने कर्मों में ब्राह्मण के रूप में खड़ा हूँ।

मैंने श्रेष्ठ त्रिविध ज्ञान (त्रे-विद्या)[3] प्राप्त कर लिया है,

सच्चे वेद ज्ञान को प्राप्त किया।

और आंतरिक आध्यात्मिक स्नान द्वारा शुद्ध हो चुके हैं।' (291)

ब्राह्मण शरण (बुद्ध, धम्म और संघ) और नैतिक उपदेशों (शील) में स्थापित था, बाद में जब वह प्रसन्न हुआ, तो उसने संसार का त्याग कर दिया और अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में विकसित होकर अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। अपनी उपलब्धि को याद करते हुए, प्रसन्न होकर उसने अंतिम श्लोक कहा।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] (i) राग - संसार की पसंद/लालसा, (ii) द्वेष - संसार की नापसंद, (iii) मोह - भीतर की सच्ची घटना का अज्ञान।
[3] ज्ञानोदय के कारण तीन उपलब्धियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

रोहिणी बुद्ध की चचेरी बहन और अनुराधा की बहन थीं। जब दरबार की महिलाओं ने प्रजापति गौतमी का अनुसरण करते हुए भिक्षुणी बनने का निर्णय लिया, तो रोहिणी ने मना कर दिया।

जब अनुराधा भिक्षुओं के एक बड़े दल के साथ कपिलवस्तु गए, तो उनके सभी रिश्तेदार मठ में उन्हें श्रद्धांजलि देने आए। लेकिन रोहिणी नहीं आईं। जब अनुराधा ने अपनी बहन के न आने का कारण पूछा, तो उन्हें बताया गया कि त्वचा पर भयंकर दाने होने के कारण उन्हें लोगों का सामना करने में शर्म आती है। अनुराधा ने उन्हें अपने समक्ष लाने का अनुरोध किया। रोहिणी घूंघट ओढ़े चेहरे के साथ आईं।

अनुराधा ने रोहिणी से भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए एक सभा भवन बनाने का अनुरोध किया, क्योंकि उनकी यह समस्या कर्मिक कर्मों के कारण थी। सभा भवन बनाने के लिए उनके पास पर्याप्त धन नहीं था, इसलिए उन्होंने आवश्यक धन जुटाने के लिए अपने गहने बेचने का निर्णय लिया। अपने शाक्य चचेरे भाइयों की सहायता से और पूज्य गुरु के मार्गदर्शन में... अनुराधा नामक एक सभा भवन बुद्ध और उनके अनुयायियों के लिए बनवाया गया था। भवन के निर्माण के पूरा होते ही रोहिणी के चेहरे पर मौजूद भयंकर दाने गायब हो गए। तब रोहिणी ने बुद्ध और उनके अनुयायियों को भोजन के लिए आमंत्रित किया।

बुद्ध ने पूछा कि यह सभा भवन किसके लिए बनवाया गया है और भोजन किसने परोसा है, तब उन्हें रोहिणी की आश्चर्यजनक कहानी सुनाई गई। फिर उन्होंने रोहिणी को उनके चेहरे पर मौजूद भयंकर दानों का कारण बताया। कई जन्म पहले वह बनारस के राजा की मुख्य संगिनी थीं। राजा की एक प्रिय नर्तकी से उनका झगड़ा हो गया था। नर्तकी से ईर्ष्या करने वाली रोहिणी ने एक संक्रमित व्यक्ति से पपड़ी लेकर उसे पीसकर चूरा बना लिया और नर्तकी के बिस्तर और चेहरे पर लगा दिया। इससे नर्तकी को संक्रमण हो गया और उसकी त्वचा पर भयंकर दाने निकल आए। इस अशुभ कर्म का फल ही रोहिणी के चेहरे पर ये भयंकर दाने थे। सभा भवन के निर्माण के शुभ प्रभावों ने इस बुरे कर्म के प्रभाव को निष्फल कर दिया।

धम्म का अध्ययन करने के बाद, रोहिणी ने संतत्व की पहली अवस्था, सोतापन्ना प्राप्त की। वे बुद्ध और उनके भिक्षुओं की समर्थक बन गईं और अनेक पुण्य कर्म करती रहीं। मृत्यु के समय वे तावतिंसा स्वर्ग में गईं, जहाँ उनका जन्म तावतिंसा स्वर्ग के राजा सक्का की अत्यंत सुंदर संगिनी के रूप में हुआ।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा13.3
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||67|| ------>>>> अगला

13.3 चपा, वंकाहारा के एक प्रमुख शिकारी (जेत्तकमिगलुद्दक) की पुत्री, उपक की पत्नी, जो पूर्व-अजीवक (तपस्वी) थे। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित किए थे, जिससे उन्हें लाभकारी मूल प्राप्त हुए और ज्ञान प्राप्ति की परिस्थितियाँ परिपक्व हुईं। इस बुद्ध युग में, उनका पुनर्जन्म वंकाहारा देश के एक शिकारी गाँव में हुआ, जहाँ वे प्रमुख शिकारी की पुत्री थीं और उनका नाम चपा रखा गया।
एक बार उपक नामक एक तपस्वी, गुरु (बुद्ध) से मिले जब वे बनारस जा रहे थे (अपने ज्ञान प्राप्ति के तुरंत बाद), जहाँ वे अपने बोधि वृक्ष सिंहासन से धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का चक्र शुरू करने वाले थे, और उन्होंने उनसे पूछा: 'हे मेरे मित्र, आप पूर्ण रूप से स्वस्थ प्रतीत होते हैं! आपका रंग निर्मल और शुद्ध है। 'हे मित्र, तुमने संसार का त्याग क्यों किया? तुम्हारा गुरु कौन है? तुम किस सिद्धांत में विश्वास करते हो?' बुद्ध ने उसे इस प्रकार उत्तर दिया:
मैंने सभी बाधाओं को पार कर लिया है। मैं समस्त धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को जानता हूँ।

सभी लालसाओं (तन्हा/तृष्णा) से मुक्त (विमुत्तो/विमुक्ति)।

अब मुझे ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त है। मैं आपके सामने किसका नाम लूं?

मेरे लिए कोई शिक्षक जीवित नहीं है। मैं अकेला खड़ा हूँ।

पृथ्वी पर और स्वर्ग में, मेरा कोई प्रतिद्वंदी नहीं है।

अब मैं बनारस नगर की खोज में चलता हूँ।

चक्र की शुरुआत करने के लिए, धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) की शिक्षा देना।

अंधे और भटके हुए राष्ट्रों को जगाने और उनका मार्गदर्शन करने के लिए,

शाश्वत जीवनदायी अमृत (अमता/अमृत) के ढोल को बजाना।

तपस्वी (उपक), गुरु (बुद्ध) के सर्वज्ञता और महान उद्देश्य को समझकर, मन को शांति मिली और उन्होंने उत्तर दिया, 'मित्र, ऐसा ही हो! तुम शाश्वत विजय के योग्य हो!' फिर, एक छोटे रास्ते से वे वंकाहारा देश में आए और शिकारी गाँव के पास रहने लगे, जहाँ मुख्य शिकारी उनकी ज़रूरतें पूरी करता था। एक दिन, मुख्य शिकारी अपने पुत्रों और भाइयों के साथ एक लंबी शिकार यात्रा पर निकला और अपनी पुत्री से निवेदन किया कि उसकी अनुपस्थिति में वह 'अरहंत' [1] की उपेक्षा न करे। वह अत्यंत सुंदर थी; उपक उसके घर भिक्षा माँगते हुए, उसकी सुंदरता पर मोहित हो गए और भोजन नहीं कर सके, बल्कि अपना भोजन घर ले गए और उपवास कर बैठे, यह प्रतिज्ञा करते हुए कि यदि वे चापा को नहीं जीत पाए तो मर जाएँगे। सात दिन बाद पिता वापस लौटे और अपने 'अरहंत' के बारे में पूछने पर उन्हें पता चला कि वे पहले दिन के बाद वापस नहीं आए हैं। शिकारी ने उसकी तलाश की, और उपका कराहते हुए और करवटें बदलते हुए अपनी दुर्दशा बताई। शिकारी ने पूछा कि क्या उसे कोई हुनर आता है, तो उसने कहा, 'नहीं'; लेकिन उसने उनके लिए शिकार लाने और उसे बेचने की पेशकश की। शिकारी मान गया, और उसे एक कोट देकर अपने घर ले आया और अपनी बेटी उसे दे दी।
कुछ समय बाद उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम उन्होंने सुभद्दा रखा। जब बच्चा रोया, तो चापा ने उसे लोरी गाकर सुनाया: 'उपका का बेटा, तपस्वी का बेटा, शिकारी का बेटा, रो मत, रो मत!' अपने पति का मज़ाक उड़ाते हुए।
अंत में उसने कहा: 'क्या तुम्हें लगता है, चापा, मेरा कोई रक्षक नहीं है? मेरा एक मित्र है, जो अनन्तता का विजेता है, और मैं उसी के पास जाऊंगा।'
उसने देखा कि वह परेशान है, और बार-बार उसी तरह उसे चिढ़ाती रही, जब तक कि एक दिन गुस्से में आकर वह जाने के लिए तैयार नहीं हो गया। उसने उसे रोकने के लिए बहुत कुछ कहा, लेकिन व्यर्थ, और वह पश्चिम की ओर चल पड़ा।
उस समय भगवान बुद्ध श्रावस्ती में जेतवन वन में विराजमान थे और उन्होंने भिक्षुओं से कहा, "जो आज यह पूछने आए कि 'शाश्वत विजयकर्ता कहाँ है?' उसे मेरे पास भेज दो।"
तब उपक वहाँ पहुँचा और विहार के बीच में खड़ा होकर पूछा, "शाश्वत विजयकर्ता कहाँ है?"
तो वे उसे ले आए और जब उसने भगवान बुद्ध को देखा, तो उसने कहा, "क्या आप मुझे जानते हैं, भगवान बुद्ध?"
बुद्ध ने कहा, "जी हाँ, मैं जानता हूँ। लेकिन तुम, तुमने अब तक अपना समय कहाँ बिताया है?"
उपक ने कहा, "वान्काहारा देश में, भगवान।"
बुद्ध ने कहा, "उपक, तुम अब बूढ़े हो गए हो; क्या तुम दीक्षा का जीवन जी सकते हो?"
उपक ने कहा, "मैं दीक्षा लूँगा, भगवान।"
गुरु (बुद्ध) ने एक भिक्षु से कहा, "आओ, भिक्षु, इसे दीक्षा दो।" और उस समय से अभ्यास और प्रशिक्षण करते हुए, वह शीघ्र ही अनागामी (वापसी न होने की अवस्था) की सिद्धि में स्थापित हो गया। [2] और उसके बाद उसकी मृत्यु हो गई, और उसका पुनर्जन्म अविहा स्वर्ग में हुआ। [3] और वहाँ उस पुनर्जन्म के क्षण में, उसने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया।
लेकिन चापा, अपने पति के जाने से दुखी होकर, अपने बेटे को उसके दादा के पास छोड़कर, उपक के मार्ग का अनुसरण करते हुए, श्रावस्ती में संसार का त्याग कर (बुद्ध के संप्रदाय में भिक्षुणी बनने के लिए), अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[4]) का अभ्यास किया और शीघ्र ही अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया। और प्रसन्न होकर, उपक के श्लोकों को अपने श्लोकों के साथ मिलाकर, उसने (अपने पति के जाने के बारे में) इस प्रकार कहा:
उनके पति उपाका बोलते हैं:

'एक समय था जब मैं लाठी लेकर बेघर तपस्वी की तरह स्वतंत्र रूप से घूमता था।'

अब मैं तो एक शिकारी हूँ, लेकिन जल्दी ही डूब गया।

सांसारिक वासनाओं के हानिकारक दलदल में भी, प्रसन्न

दूसरी तरफ से बाहर निकलना। (292)

मेरी पत्नी अपने बच्चे के साथ खेलती है और मेरी पिछली हालत का मजाक उड़ाती है।

मुझे विश्वास है कि उसका आकर्षण अब भी मुझे अपने बंधन में बांधे रखता है।

लेकिन मैं चापा से बंधन तोड़कर फिर से दीक्षा लूंगा।' (293)

चापा:

'हे मेरे वीर, मुझसे क्रोधित मत हो!'

हे महान मुनि (संत), मुझ पर क्रोधित न हों!

जो क्रोध को स्थान देता है, वह भला कैसे भला हो सकता है?

पवित्र जीवन और ध्यान की प्राप्ति?' (294)

उपका:

नहीं, मैं नाला जाऊंगा। अब नाला में ही रहूंगा।

और पवित्र तपस्वियों के धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) का जीवन व्यतीत करें।

यहां तो मैं सिर्फ (नारीत्व की) सुंदरता में ही जकड़ा जा रहा हूँ!' (295)

चापा:

'ओह, मेरे काली आँखों वाले प्रेमी, फिर से मुड़ो, आओ'

और इस घर में हमेशा मेरे साथ काम (सेक्स) का आनंद लो।

और मैं तुम्हारा दास बनूंगा।

और मेरे सभी रिश्तेदार आपके सेवक होंगे। (296)

उपका:

'अब तुम मुझे सिर्फ एक चौथाई (आकर्षक) ही लगती हो।'

यदि कोई पुरुष आपके प्रेम का इच्छुक हो,

आप उसे किस महिमा का वादा करेंगे? (297)

चापा:

'ओ काली आंखों वाली प्रेमिका, क्या मैं देखने में उचित नहीं हूँ?'

जैसे जंगल में लता लहराती है,

जैसे अनार का पेड़ पूरी तरह से खिल गया हो

पहाड़ी की चोटी पर उगने वाला, या तुरही के आकार का फूल

द्वीप की गुफा के मुहाने पर झुका हुआ? देखें, (298)

मैं लाल चंदन की खुशबू वाला परफ्यूम पहनूंगा।

आपके लिए बेहतरीन बनारस का रेशमी वस्त्र – ओह, क्यों?

ओह, तुम मुझसे इतनी दूर कैसे जाओगे?' (299)

उपका:

इसलिए शिकारी (शिकारी) (स्वतंत्र पक्षी को) फंसाने की कोशिश करता है।

आप अपनी खूबसूरती का प्रदर्शन जैसे चाहें वैसे कर सकते हैं।

तुम मुझे पहले की तरह कभी अपने से नहीं बांध पाओगे। (300)

चापा:

और हे मेरे पति, इस नन्हे फूल को देखो

आपने मुझे जो उपहार दिया था—अब निश्चित रूप से आप ऐसा नहीं करेंगे।

क्या तुम उसे त्याग दोगे जिसने तुम्हें संतान दी है? (301)

उपका:

'बुद्धिमान लोग अपने बच्चों, धन और रिश्तेदारों का त्याग कर देते हैं।'

महान नायक हमेशा संसार से विमुख होकर (त्याग की ओर) प्रस्थान करते हैं।

जैसे हाथी अपने बंधन को दो भागों में तोड़ देते हैं।' (302)

चापा:

फिर अपने बच्चे को तुरंत छड़ी या चाकू से मारो।

मैं ज़मीन पर पीटूँगा—खुद को बचाने के लिए

तुम अपने बेटे के शोक से नहीं हटोगे!' (303)

उपका:

और यदि तुम बच्चे को सियार, भेड़ियों या कुत्तों के सामने फेंक दोगे,

हे बच्चे की माँ, फिर भी इससे कोई लाभ नहीं होगा।

मुझे वापस मोड़ने के लिए!' (304)

चापा:

'तो फिर, अगर आपको जाना ही है तो जाइए, और आपकी यात्रा मंगलमय हो।'

लेकिन मुझे बताओ तुम किस गांव में जाओगे?

आपका लक्ष्य कौन सा कस्बा, शहर या राजधानी है?' (305)

उपका:

'पिछले कुछ दिनों में हम अपनी तपस्या में लीन थे।'

अपनी सतही प्रथाओं को वास्तविक मानना।

हम तीर्थयात्रियों की तरह भटकते रहे—गांव, शहर, कस्बा,

और पूंजी—हम बारी-बारी से प्रत्येक पर चले गए।' (306)

लेकिन परम पूज्य बुद्ध अब उपदेश देते हैं।

नेरंजारा नदी के किनारे-किनारे,

वह धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) जिसके द्वारा

सभी को कष्टों से मुक्ति मिल सकती है।

मैं उसी के पास जाता हूँ; अब वही मेरा मार्गदर्शक होगा। (307)

चापा:

'हाँ, जाओ और मेरी ओर से उन्हें प्रणाम करो।'

कौन है संसार का सर्वोच्च स्वामी?

और दाहिनी ओर से अभिवादन करते हुए, [5]

क्या तुम हमारी ओर से उसे भेंट चढ़ाओगे? (308)

उपका:

'अब यह उचित और सही है, जैसा कि आप कहते हैं,'

मैं श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपकी ओर से बोल रहा हूँ।

उन्हें, जो संसार के सर्वोच्च स्वामी हैं।

और दाहिनी ओर से अभिवादन करते हुए,

मैं तुम्हारे और अपने लिए भेंट चढ़ाऊंगा। (309)

इसलिए वह नेरंजारा के पास गया।

और उन्होंने नदी के किनारे बुद्ध की प्रतिमा देखी।

अमृत का मार्ग सिखाना (अनंत काल/अमरता की ओर) (310)

पीड़ा और पीड़ा कैसे उत्पन्न होती है, और पीड़ा कैसे कम हो सकती है

इस पर काबू पाओ, और उस तक पहुँचने का मार्ग अपनाओ,

आर्यों का (महान) अष्टांगिक मार्ग भी। (311)

पति ने उनके चरणों में झुककर उन्हें प्रणाम किया।

दाहिनी ओर से सलाम और चापा की प्रतिज्ञाएँ

प्रस्तुत किया गया; फिर संसार का त्याग कर दिया गया

बेघर तपस्वी जीवन के लिए; त्रिविध ज्ञान[6] ने विजय प्राप्त की,

और उन्होंने भगवान बुद्ध के अनुशासन का पालन किया। (312)

[1] हमारी परंपरा के अनुसार, वे 'पवित्र पुरुष' थे। बौद्ध अर्थ में वे अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) नहीं थे।
[2] अनागामी - शाब्दिक अर्थ: पुनर्जन्म न लेने वाला, निर्वाण से पूर्व की अवस्था, वह व्यक्ति जो ब्रह्मलोक (प्रधान देवदूतों का लोक) में पुनर्जन्म लेगा और फिर वहाँ से निर्वाण प्राप्त करेगा।
[3] यह 'रूप जगत' या ब्रह्मलोक के पाँच 'सर्वोच्च' स्वर्गों में से एक था।

[4] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोत्कृष्ट अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञान प्राप्त होता है।
[5] श्रद्धा के पात्र की ओर दाहिनी ओर रखते हुए उसके चारों ओर घूमना (या दक्षिणावर्त वृत्त में घूमना)।
[6] ज्ञानोदय के कारण तीन उपलब्धियाँ (i) पिछले पुनर्जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि (या दिव्य दृष्टि) जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर सभी आसवों (इंद्रिय इच्छाओं) का विनाश, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा13.4
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||68|| ------>>>> अगला

13.4 सुंदरी, धनी ब्राह्मण सुजाता की पुत्री, श्रावस्ती की पुत्री।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और अनेक जन्मों में युगों-युगों तक प्रभावी अच्छे कर्म संचित किए थे। इकत्तीस युग पूर्व, जब वेसभु बुद्ध थे, एक कुलवासी परिवार में उनका पुनर्जन्म हुआ। एक दिन उन्होंने गुरु को भिक्षा दी और उनकी आराधना की। गुरु ने उनके आस्तिक हृदय को देखकर उनका धन्यवाद किया। स्वर्ग और अन्य सुखमय जन्मों के बाद, जब उनकी समझ परिपक्व हो गई, तो इस बुद्ध युग में उनका बनारस में ब्राह्मण सुजाता की पुत्री के रूप में पुनर्जन्म हुआ। उनके उत्तम रूप के कारण उन्हें सुंदरी कहा जाता था। जब वह बड़ी हुईं, तो उनके छोटे भाई का निधन हो गया। उनके पिता व्यथित होकर इधर-उधर भटकते हुए थेरी वसित्ती से मिले। जब उन्होंने उनसे पूछा कि उन्हें क्या कष्ट है, तो उन्होंने पहले दो श्लोकों में वर्णित उत्तर दिया। उनके दुःख को कम करने की इच्छा से, उन्होंने अगले दो श्लोक कहे और उन्हें अपने दुःख रहित होने की बात बताई। ब्राह्मण ने उनसे पूछा, 'हे देवी, आप दुःख से कैसे मुक्त हुईं?' थेरी ने उन्हें त्रिरत्न (तीन रत्नों) के बारे में बताया, जो शरणस्थल हैं। उन्होंने पूछा, 'गुरु (बुद्ध) कहाँ हैं?' 'वे इस समय मिथिला में हैं।' अतः ब्राह्मण अपने रथ से मिथिला गए और गुरु से मिलने का प्रयास किया। गुरु (बुद्ध) ने उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया; और उन्होंने विश्वास किया और विपश्यना (अंतर्दृष्टि ध्यान) का गहन अभ्यास करने के बाद संघ में प्रवेश किया और तीसरे दिन अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। लेकिन सारथी अपना रथ वापस बनारस ले गया और ब्राह्मणी (पत्नी) को सारी घटना बताई। जब सुंदरी (पुत्री) ने यह सुना, तो उसने अपनी माता से कहा, "माँ, मैं भी संसार त्यागकर संघ में शामिल होना चाहती हूँ।" माता ने कहा, "इस घर की सारी संपत्ति तुम्हारी है। तुम इस परिवार की वारिस हो। अपनी विरासत को स्वीकार करो और उसका आनंद लो। त्याग की ओर मत जाओ।" लेकिन सुंदरी ने कहा, "धन मेरे किसी काम का नहीं। माँ, मैं संसार त्याग दूँगी।" और माता को राजी करके उसने अपनी सारी संपत्ति थूक की तरह त्याग दी और बनारस में संघ में प्रवेश कर लिया। अपनी योग्यता और ज्ञान की परिपक्वता के कारण, वह विद्यार्थी बनकर और विपश्यना (ध्यान) में लगन से परिश्रम करते हुए, अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, और उसने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को रूप और अर्थ में पूर्णतः समझ लिया।
उस समय से सिद्धि की सहजता और निर्वाण के आनंद में लीन होकर, उन्होंने सोचा: 'मैं गुरु (बुद्ध) के समक्ष सिंह गर्जना (उपलब्धि का कथन) करूंगी।' और अपने गुरु से अनुमति लेकर, वे भिक्षुणियों के एक बड़े समूह के साथ बनारस से प्रस्थान करके, उचित समय पर सावत्थी पहुंचीं, गुरु को प्रणाम किया और एक तरफ खड़ी हो गईं। गुरु द्वारा स्वागत किए जाने पर, उन्होंने अपने अन्न (प्रबुद्ध अवस्था) की घोषणा करते हुए बताया कि वे 'उनके मुख की पुत्री' हैं, इत्यादि। इसके बाद, उनकी माता सहित उनके सभी रिश्तेदारों और उनके परिचारकों ने संसार का त्याग कर दिया। अपनी उपलब्धि को याद करते हुए, और अपने पिता के वचनों को अपने भजन में प्रयुक्त करते हुए, वे प्रसन्न हुईं और इस प्रकार बोलीं:
ब्राह्मण (पुजारी) सुजाता:

ब्राह्मणों की देवी, आप भी अतीत में—

आप जानते हैं कि मौत ने आपके नन्हे-मुन्ने को छीन लिया।

और शिकार किया गया; और तुम पूरी रात, पूरे दिन

तुमने अपना तीखा विलाप किया। वसित्थी, कहो! (313)

ऐसा कैसे हो सकता है कि आज तुम, जिसने खो दिया है

इतने सारे—क्या सात थे?—आपके सभी बेटे,

अब और इतना शोक और विलाप नहीं? (314)

थेरी वासित्थी:

नहीं, ब्राह्मण, हमारे सैकड़ों बच्चे,

और हमारे सैकड़ों रिश्तेदार और भी हैं,

क्या हम बीते युगों में ऐसा करते आए हैं?

मृत्यु के शिकार के रूप में, तुम और मैं दोनों को देखा गया। (315)

लेकिन मैंने जन्म और मृत्यु दोनों से यह सीखा है।

वहाँ से निकलने का एक रास्ता है। इसीलिए अब और नहीं।

मैं शोक मनाता हूँ, न रोता हूँ, न ही तीखा विलाप करता हूँ। (316)

ब्राह्मण (पुजारी) सुजाता:

हे वासित्थी, ये शब्द वास्तव में अद्भुत हैं।

आप बोलिए! आपने यह सिद्धांत किसका सीखा है?

इस प्रकार के भाषण के लिए आपको अधिकार कहाँ से प्राप्त हुआ? (317)

थेरी वासित्थी:

वह वही है, प्रबुद्ध व्यक्ति, बुद्ध, वह।

जो कुछ समय बाद, मिथिला शहर के पास,

क्या उन्होंने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया, ब्राह्मण, जिसके द्वारा

जो भी जीवित है, वह हर दुख को दूर कर सकता है। (318)

हे ब्राह्मण, जब मैंने अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) को सुना...

निरुपाधि (गैर-सब्सट्रेट) के सिद्धांत को प्रकट करो[2],

मुझे वह शिक्षा तुरंत समझ में आ गई।

और मेरे सारे मातृ-शोक मुझसे दूर हो गए। (319)

ब्राह्मण (पुजारी) सुजाता:

फिर मैं भी सीधे मिथिला चला जाऊंगा।

यदि सौभाग्यवश परम पूज्य बुद्ध

मैं, यहाँ तक कि मैं भी, हर दुख से मुक्त हो जाऊँ। (320)

ब्राह्मण गया; उसने प्रबुद्ध व्यक्ति को देखा।

यद्यपि मुक्त, फिर भी उसमें

पुनर्जन्म का कोई आधार कारक नहीं पाया जाता, और उनसे,

द्रष्टा, वह जो सभी कष्टों से परे हो चुका है, (321)

उन्होंने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना: दुख का सत्य, और कैसे

दुख आते हैं, और दुखों पर कैसे काबू पाया जा सकता है?

आर्यों (कुलीनों) द्वारा भी, अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण किया जाता है।

इससे समस्त दुखों का निवारण हो जाता है। (322)

उन्हें तुरंत ही धम्म के धर्म मार्ग का ज्ञान हो गया।

उन्होंने संसार का त्याग कर दिया, उन्होंने बेघर तपस्वी जीवन को चुना।

तीसरी रात जब मैं एकाग्रचित्त होकर ध्यान में था,

सुजाता ने सत्य की तीनों प्रकार की समझ को स्पर्श किया और प्राप्त किया। (323)

ब्राह्मण (पुजारी) सुजाता:

'आओ, सारथी, अब इस रथ को घर ले चलो!'

आपकी प्रिय प्रेमिका, ब्राह्मणी, के अच्छे स्वास्थ्य की कामना करती हूँ।

और कहो: "ब्राह्मण ने संसार का त्याग कर दिया है।"

तीसरी रात को पूर्ण एकाग्रता से ध्यान करते हुए

सुजाता ने सत्य की तीनों प्रकार की समझ को स्पर्श किया और प्राप्त किया। (324)

और इसलिए ड्राइवर ने कार और पर्स ले लिया।

उसने घर पर पैसे भेजे और अपनी प्रेमिका के अच्छे स्वास्थ्य की कामना की।

और कहा: 'ब्राह्मण ने संसार का त्याग कर दिया है।'

तीसरी रात को पूर्ण एकाग्रता से ध्यान करते हुए

सुजाता ने सत्य की तीनों प्रकार की समझ को स्पर्श किया और प्राप्त किया। (325)

सुंदरी की माँ:

हे सारथी, तुमने जो सुना है, उसी के लिए

और बताता है कि ब्राह्मण ने प्राप्त कर लिया है

त्रिविध ज्ञान (त्रे-विद्या[3]), मैं तुम्हें आधा उपहार नहीं देता (अर्थात पूर्ण)।

रथ ले लो, दोनों घोड़े ले लो।

और अपने परिश्रम के लिए हजार टुकड़े ले लो। (326)

सारथी:

'हे ब्राह्मणी, इन्हें अपना ही रहने दो।'

घोड़े, रथ और हजार सिक्के,

क्योंकि मेरा भी मन संसार छोड़ने का है।

सर्वोच्च ज्ञान वाले व्यक्ति के निकट जाने के लिए। (327)

सुंदरी की माँ:

लेकिन हे मेरी सुंदरी, अब जब तुम्हारे पिता चले गए हैं,

अपना घर छोड़कर, अपनी सारी संपत्ति का त्याग करके—

मवेशी और घोड़े, हाथी, गहने और अंगूठियां –

कम से कम तुम अपने हक के तो हो! तुम ही वारिस हो।

क्या आप अपने परिवार के साथ इस धन का आनंद लेते हैं? (328)

सुंदरी ने अपनी माँ से कहा:

'मवेशी और घोड़े, हाथी, गहने और अंगूठियां-

ये सब मिलकर इस निष्पक्ष और व्यापक क्षेत्र का निर्माण करते हैं।

क्या उसने उसे अपने से दूर कर दिया है, मेरे प्यारे पिता?

और अपने पुत्र के शोक में उसने संसार का त्याग कर दिया।

मैं भी अपने भाई की मृत्यु से दुखी हूँ।

मेरी भी उसी की तरह दुनिया छोड़ने की इच्छा है। (329)

सुंदरी की माँ:

'तो, हे सुंदरी, यही तुम्हारा इरादा हो।'

आपका संकल्प सफलता से परिपूर्ण हो!

(तुम्हें) हाथ से मुंह तक भोजन मिलेगा।

इधर-उधर से इकट्ठा किया गया (टुकड़ों में),

पैचवर्क वाला चोला—इन चीजों ने ये सब हासिल किया

परलोक में शुद्धिकरण होगा

जो भी बात तुम्हारे जीवन को इस दुनिया में दूषित कर रही है।' (330)

सुंदरी ने अपनी शिक्षिका थेरी से कहा

मैंने खुद को प्रशिक्षित किया है, लेडी, त्रिविध पाठ्यक्रम में।[4]

मेरे लिए दिव्य नेत्र स्पष्ट रूप से चमकता है।

मुझे पता है कि मेरा जन्म कैसे और कब हुआ।

बहुत अतीत में, और जहाँ मैं रहता था (ज्ञात पूर्व जीवन)। (331)

हे मेरे परम मित्र, यह सब मैं आपका ऋणी हूँ।

संघ की सबसे प्यारी थेरी,

अब मुझे त्रिविध ज्ञान (त्रुविधा[3]) प्राप्त हो गया है।

और इस प्रकार बुद्ध की साधना पूर्ण होती है। (332)

हे महिला, कृपया मुझे अपनी सहमति दें, क्योंकि मैं

मैं सावत्थी जाऊँगा, ताकि मैं

मैं अपनी सफलता की 'शेर जैसी दहाड़' लगाऊंगा।

परम संत बुद्ध की उपस्थिति में। (333)

शिक्षिका थेरी ने सुंदरी से कहा:

देखो, सुंदरी, सुंदर रंगत वाले गुरु (बुद्ध)!

उनका स्वरूप शुद्ध सोने के समान, निर्मल और उज्ज्वल है।

जो सर्वप्रबुद्ध हैं, बुद्ध हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं।

अनियंत्रित को वश में करने वाला, जिसने कभी भय का स्वाद नहीं चखा। (334)

और देखो, हे स्वामी, सुंदरी, कौन आ रही है

आपको आत्मज्ञान (विमुक्ति, विमुक्ति) के बारे में बताने के लिए,

और उसे फिर से जन्म लेने का अधिकार नहीं है।

जिसने स्वयं को वासना से मुक्त कर लिया है

बंधनों से मुक्त, संसार से विमुख।

निर्धारित कार्य अब पूर्ण हो चुका है।

और मदहोश कर देने वाली सभी इच्छाएँ दूर हो जाती हैं। (335)

सुंदरी ने बुद्ध से कहा:

मैं बनारस से तुम्हारे पास आया हूँ।

मैं, सुंदरी, आपकी शिष्या, आपके चरणों में नतमस्तक होती हूँ।

हे महान वीर, मुझे यहाँ पूजा करते हुए देखो। (336)

आप बुद्ध हैं! आप गुरु हैं! और आप,

मैं तुम्हारी बेटी हूँ, तुम्हारे मुख की संतान हूँ।

आप तो बिल्कुल ब्राह्मण हैं! अपने वचन के भी पक्के।

अब मेरा निर्धारित कार्य पूरा हो चुका है।

और वे सभी इच्छाएँ जिन्होंने मुझे मदहोश कर दिया था, दूर हो गईं। (337)

बुद्ध:

'आपका स्वागत है, हे आदरणीय महिला!'

आपके लिए तो यह बस थोड़ी सी दूरी थी।

क्योंकि वे लोग आते हैं जो स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेते हैं,

प्रभु के चरणों में उपासना करने में प्रसन्नता होती है।

जो स्वयं भी वासना से मुक्त हो चुके हैं,

बंधनों से मुक्त, संसार से विमुख,

जिन्होंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है।

और वे सभी इच्छाएँ जो नशे में चूर थीं, दूर हो गईं। (338)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] निरुपधि - अर्थात्, पुनर्जन्म की स्थितियों या आधारों को समाप्त करने के लिए कैसे जीना है। निम्नलिखित पंक्ति का शाब्दिक अर्थ है: 'मैं, जिसने शिक्षा को समझा था, ने अपने बचपन के दु:ख को वहीं दूर कर दिया।'
[3] ज्ञानोदय के कारण तीन उपलब्धियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।

[4] तीन प्रशिक्षण हैं: i. शील (नैतिक उपदेश) ii. समाधि (ध्यान और समाधि अवस्था प्राप्त करना) iii. पन्ना (ध्यानमग्न अवस्थाओं से उत्पन्न प्रत्यक्ष दिव्य बोध)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा13.5
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

13.5 राजगृह की सुभा (सुनार की पुत्री)

उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित किए थे, जिससे उन्होंने धीरे-धीरे अच्छाई की जड़ जमाई और ज्ञानोदय की अवस्थाएँ (विमुक्ति, विमुक्ति) प्राप्त कीं। इस बुद्ध युग में, उनका पुनर्जन्म राजगृह में एक सुनार की पुत्री के रूप में हुआ। अपने सुंदर रूप के कारण उन्हें सुभा कहा जाता था। एक दिन जब वे समझदार हुईं, तो वे राजगृह में गुरु (बुद्ध) के पास गईं और उन पर श्रद्धा रखते हुए, एक तरफ बैठकर उन्हें प्रणाम किया। गुरु ने उनके नैतिक गुणों की परिपक्वता को देखकर और उनकी इच्छा के अनुसार, उन्हें चार सत्यों में निहित धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया। इससे उन्हें सोतापना (प्रथम दिव्य जागरण) की सिद्धि प्राप्त हुई। बाद में उन्हें गृहस्थ जीवन की कमियों का एहसास हुआ और उन्होंने महान प्रजापति गौतमी (पालक माता, बुद्ध की दिवंगत माता की बहन और सहपत्नी, और भिक्षुणियों की प्रमुख) के अधीन संघ में प्रवेश किया और स्वयं को उच्चतर मार्ग के लिए समर्पित कर दिया। समय-समय पर उनके रिश्तेदारों ने उन्हें संसार में लौटने के लिए आमंत्रित किया और इसके आकर्षणों के बारे में बताया। एक दिन जब वे आए, तो उन्होंने उन्हें गृहस्थ जीवन और संसार में मौजूद खतरों के बारे में बताया और नीचे दिए गए चौबीस श्लोकों में धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया, और तब वे (उन्हें अपने साथ ले जाने की) इच्छा से मुक्त होकर चले गए। फिर उन्होंने अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में प्रयास किया, अपनी इंद्रियों को शुद्ध किया, अंततः अरहंत पद (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया। अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) के रूप में उन्होंने इस प्रकार कहा:

एक लड़की, जो पूरी तरह सफेद कपड़े पहने थी, ने एक बार सुना था

धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उन्होंने उत्सुकतापूर्वक, गंभीरता से सुना।

इस प्रकार मुझमें सत्यों को समझने की क्षमता उत्पन्न हुई। (339)

इसी वजह से मुझे सभी सांसारिक सुख-सुविधाएं बहुत अप्रिय लगने लगीं।

क्योंकि मैं उन खतरों को देख सकता था जो मुझे घेर रहे थे।

यह पुनर्जन्मित यौगिक, 'व्यक्तित्व,'

और इसका त्याग करना ही मेरी एकमात्र इच्छा थी। (340)

इसलिए मैंने अपनी दुनिया—अपने सभी रिश्तेदारों—को त्याग दिया।

मेरे दास, मेरे श्रमिक और मेरे गाँव,

और चारों ओर उपजाऊ खेत और घास के मैदान फैले हुए थे, (341)

सब कुछ उचित हो और जीवन में आनंद का संचार हो।

मैंने ये सब छोड़ दिया, बड़ी-बड़ी जागीरों से मुंह मोड़ लिया।

और दीक्षा प्राप्त करने का प्रयास किया (342)

अब यह अनुचित होगा कि मैं, जो पूर्ण विश्वास में हूँ

जिसने सत्य को भलीभांति समझा, उसने उस संसार का त्याग कर दिया।

जो सोने-चांदी से मिलने वाली संपत्ति को त्यागकर,

किसी भी सांसारिक इच्छा को संजोकर न रखें।

कहीं ऐसा न हो कि सब कुछ तुम्हारे ऊपर फिर आ पड़े! (343)

जागृत व्यक्तियों और संतों को चांदी और सोना किसी काम का नहीं।

तपस्वियों के पवित्र जीवन के लिए अनुपयुक्त।

वे आर्यों की संपत्ति नहीं हैं—कुलीन वर्ग की संपत्ति नहीं हैं। (344)

जिससे लोभ और कामुकता जागृत होती है,

मोह और सभी शारीरिक वासनाएँ,

हानि का भय और अनेक प्रकार की चिंताएँ कहाँ से उत्पन्न होती हैं?

यहाँ दृढ़ता बनाए रखने का कोई आधार नहीं है। (345)

यहां पुरुष, लापरवाह और इच्छाओं के उन्माद में डूबे हुए,

मन से भ्रष्ट, एक दूसरे को

और बाधित होकर, सामान्य शत्रुता में संघर्ष करते हैं। (346)

मृत्यु, बंधन, यातना, विनाश, शोक और पीड़ा

इंद्रियों के गुलामों और भयानक विनाश की प्रतीक्षा करो। (347)

मेरे सगे-संबंधियों—नहीं, मेरे शत्रुओं— ऐसा क्यों?

मुझे अपनी इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से क्यों बांधते हो?

मुझे उस व्यक्ति के रूप में जानो जिसने देखा और इसलिए भाग गया।

इंद्रिय-प्रधान जीवन से उत्पन्न होने वाले खतरे। (348)

न तो सोना और न ही पैसा सफाई के काम आ सकता है

घातक आसवों का जहर।

निर्दयी और हत्यारी इंद्रिय-इच्छाएं हैं;

जैसे क्रूर भाला और कारागार के बंधन। (349)

मेरे रिश्तेदारों को इससे क्या फर्क पड़ता है? नहीं,

मुझे अपनी इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से क्यों बांधते हो?

मुझे उस स्त्री के रूप में जानो जिसने विवेकपूर्ण जीवन से पलायन किया।

अपने बाल मुंडवाकर, पीले वस्त्र में लिपटी हुई। (350)

जैसे-तैसे जुटाकर भोजन जुटाया जाता था,

पैचवर्क वाला यह गाउन—ये चीजें मेरे लिए उपयुक्त हैं।

बेघर तपस्वी जीवन का आधार। (351)

महान ऋषि इंद्रियों की सभी इच्छाओं का निवारण करते हैं।

चाहे वे स्वर्ग में हों या पृथ्वी पर;

वे शांति से निवास करते हैं, क्योंकि वे स्वतंत्र भूमिधारक हैं।

क्योंकि उन्होंने स्थिर आनंद प्राप्त कर लिया है। (352)

मुझे कभी भी सांसारिक वासनाओं के पीछे न भागने देना।

जिसमें कोई शरण नहीं है; क्योंकि वे शत्रु हैं।

और हत्यारे, और क्रूर भयंकर आग। (353)

ओह! लेकिन यहाँ एक राक्षस है, जो भूत बनकर घूमता है।

मृत्यु के भय और डर का, एक काँटेदार झाड़ी,

यह एक लालची मुंह है, एक ऐसा रास्ता है जिसे पार करना असंभव है।

एक गड्ढे का मुँह जिसमें हम अपनी बुद्धि खो देते हैं, (354)

विनाश का एक भयावह रूप मंडरा रहा है—ऐसा

सांसारिक वासनाएँ हैं; साँपों के उठे हुए सिर।

मूर्खों को इसी में आनंद मिलता है।

अंधा, सामान्य, औसत, कामुक व्यक्ति। (355)

उन सभी असंख्य लोगों के लिए, जो इस प्रकार अज्ञानी रह जाते हैं

सांसारिक वासनाओं के दलदल में अज्ञानता से ग्रस्त,

जन्म और मृत्यु को सीमित करने वाली किसी भी बात पर ध्यान न दें। (356)

सांसारिक इच्छाओं के कारण मनुष्य आकर्षित होता है।

कई लोगों के लिए दुखद मार्ग से एक भयानक विनाश की ओर—

जहां हर कदम का अपना दंड होता है। (357)

शत्रुता का कारण सांसारिक वासनाएँ हैं।

पश्चाताप और दुर्भावना को जन्म देना।

(358) मांस के लालच, जो हमें संसार और मृत्यु से बांधते हैं।

जिससे पागलपन, उन्माद की स्थिति उत्पन्न होती है।

मन को उत्तेजित करने वाली चीजें सांसारिक वासनाएं हैं।

ये वो जाल हैं जो मारा (शैतान) ने मनुष्यों को बर्बाद करने के लिए बिछाए थे। (359)

सांसारिक वासनाओं के भयानक फल अंतहीन हैं।

विष से भरा हुआ, अनेक बुराइयाँ बोने वाला,

इसकी मिठास कम और क्षणिक है, जो कलह को भड़काती है।

और हमारे दिनों की चमक को मुरझा रहा है। (360)

जिसने यह चुनाव किया है, मैं कभी नहीं

दुनिया की आपदाओं में फिर से आना,

क्योंकि निर्वाण में ही मेरा आनंद सदा रहता है। (361)

अतः, सांसारिक वासनाओं से लड़कर और उन पर विजय प्राप्त करके,

शीतल आशीर्वाद की आशा में प्रतीक्षा करो।

प्रयास में निरंतर लगन बनाए रखते हुए,

जब तक सभी बंधन हटा नहीं दिए जाते (362)

यही मार्ग है, वह मार्ग जो दुःख से परे ले जाता है।

उन सभी चीजों से परे जो अपवित्र करती हैं,

आर्यों का अष्टमार्ग भी सीधा है।

हम उन रास्तों पर चलें जिन पर संत चले हैं। (363)

* * * * *

अब इस सुभा को देखो, जो धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) पर खड़ी है।

एक सुनार की बेटी!

देखो! वह पूर्ण रूप से शांत हो गई है;

वृक्ष के नीचे ध्यान की समाधि में लीन रहता है। (364)

आज से आठ दिन हो गए हैं जब से वह (अभिषिक्त) हुई हैं।

आस्था में, और शिक्षा के प्रकाश में दीप्तिमान।

उप्पलवन्ना के निर्देशानुसार, लो!

वह तीन गुना बुद्धिमान है और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाली है। (365)

वह महिला मुक्त हो गई है, उसके सारे कर्ज माफ हो गए हैं।

एक भिक्षुणी, जो उच्चतर अर्थों में प्रशिक्षित हो।

सारे बंधन टूट गए हैं, उसका काम पूरा हो गया है।

और जिन सांसारिक इच्छाओं ने उसे विषैला बना दिया था, वे शुद्ध हो गईं। (366)

उसके पास सक्का (इंद्र, देवताओं/देवदूतों के राजा) आए।

और अपने देवदूतों के दल के साथ।

अपनी पूरी शान-शौकत के साथ, सुभा की पूजा करते हुए,

एक सुनार की बेटी,

और सभी के स्वामी (बुद्ध)। (367)

जब दीक्षा के आठवें दिन उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, और एक वृक्ष के नीचे बैठकर पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया, तो भगवान बुद्ध ने उनकी प्रशंसा में श्लोक (364-366) कहे, और भिक्षुओं को बताया कि सक्का (इंद्र) ने यह सब दिव्य दृष्टि से देखा, फिर वह और तावंती स्वर्ग के देव (देवदूत) श्रद्धापूर्वक नीचे आए और हाथ जोड़कर उनकी पूजा की, फिर अंतिम श्लोक बोला गया।

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक प्रमुख अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है जिसमें ध्यान अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटना (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर केंद्रित होता है जो आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय की ओर ले जाता है।

www.budsas.org से और अधिक

जानकारी: पूर्व बुद्ध की एक अच्छी भक्त होने के नाते, सुभा का जन्म भगवान गौतम बुद्ध के युग में एक समृद्ध सुनार की सुंदर पुत्री के रूप में हुआ था। उनके जन्म से घर में सौभाग्य आया, इसलिए उनके गर्वित पिता ने उनका नाम सुभा रखा, जिसका अर्थ है "भाग्यशाली"। वे अक्सर सोचते थे, "मेरी यह पुत्री पूर्ण सौंदर्य की धनी होगी। यह मुझे मेरे द्वारा बनाए गए उत्तम शाही आभूषणों की याद दिलाती है!"

जब सुभा सोलह वर्ष की हुईं, तब तक उनके पिता धनी हो चुके थे और कई धनी ग्राहकों से काम प्राप्त करते थे। जैसे-जैसे उनका व्यापार फलता-फूलता गया, उनके अधीन कई सुनार काम करने लगे। सुभा अक्सर रानियों और राजकुमारियों के लिए उनके द्वारा बनाए गए सुंदर हार, मुकुट और अन्य आभूषण पहनती थीं और अपनी सुंदरता का प्रदर्शन करती थीं। माता-पिता और पड़ोसी सौम्य स्वभाव वाली सुभा की प्रशंसा करते थे, जो नाजुक और परिष्कृत आभूषण पहनने पर और भी सुंदर प्रतीत होती थीं। सुभा दयालु थीं, इसलिए उनका घर एक सुखमय स्थान था, जहाँ मित्र और रिश्तेदार सद्भाव से एकत्रित होते थे।

सुभा के पड़ोसी अक्सर एक ऐसे राजकुमार की चर्चा करते थे जिसने अपना महल छोड़कर तपस्वी जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया था। वे कहते थे कि वह महान ऋषि एक संत बन गए थे और उनके कई शिष्य थे। एक दिन जब राजगृह के लोग उस महान ऋषि के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो सुभा के पिता ने उस दिन अपने कामगारों के लिए छुट्टी घोषित कर दी और सुभा अपने माता-पिता और मित्रों के साथ उस महान ऋषि के आगमन को देखने गई। जब राजा बिम्बिसार के नेतृत्व में जनता ने भगवान बुद्ध के उपदेश सुने, तो वे आनंद से भर उठे। शाम तक राजा, उनके दल और नगर के सभी नागरिकों ने बौद्ध धर्म को अपना धर्म मान लिया। शीघ्र ही बुद्ध को समर्पित मठ स्थापित किए गए, जहाँ कुछ भिक्षु निवास करने लगे, जबकि अन्य धर्म का प्रचार करने के लिए निकल पड़े।

जल्द ही बौद्ध धर्म देश का स्वीकृत धर्म बन गया। कई युवा लड़के-लड़कियाँ भिक्षुओं और भिक्षुणियों के संघ में शामिल हो गए। सुभा अपने माता-पिता के साथ उपदेश स्थल पर गई और प्रवचनों को प्रसन्नतापूर्वक सुना। उसने पीले वस्त्रधारी भिक्षुणियों को देखा और उनसे बातचीत की। उनका परिवार मठ का अच्छा भक्त बन गया और अक्सर वहां जाता था। एक दिन, जब भगवान ने अलौकिक दृष्टि से उपस्थित लोगों को देखा, तो उन्होंने पाया कि दासी सुभा सांसारिक जीवन का अंतिम जन्म जी रही है - यानी वह भिक्षुणी बनेगी और ज्ञान प्राप्त करेगी। उस दिन जब भगवान उपदेश दे रहे थे, सुभा ने ध्यान से सुना और प्रवचन के अंत में, उसने ज्ञानोदय की अवस्था प्राप्त कर ली। इसके बाद उसने अपने माता-पिता से भिक्षुणी बनने की अनुमति देने की विनती की। माता-पिता उसे अपने माता-पिता से अलग नहीं करना चाहते थे क्योंकि वह उनकी इकलौती संतान थी और उनकी संपत्ति की उत्तराधिकारी बनने वाली थी। इसलिए, क्योंकि वे उससे प्यार करते थे, उन्होंने उसका मन बदलने की पूरी कोशिश की। अंततः, वे मान गए और कुछ समय बाद वह भिक्षुणी बन गई। उसके माता-पिता और रिश्तेदारों को लगा कि सुभा जल्द ही भिक्षुणी छोड़कर उनके पास लौट आएगी, क्योंकि उसे सुंदर वस्त्र और आभूषण पहनने का शौक था।

इस बीच सुभा ने भिक्षुणियों से धार्मिक शिक्षाएँ प्राप्त कीं और उनके नियमों का पालन किया। भिक्षुणियों द्वारा धर्म के उपदेशों और धार्मिक विषयों पर विस्तृत चर्चाओं को वह ध्यानपूर्वक सुनती थीं। उन्होंने ध्यान की शिक्षाएँ प्राप्त कीं और शांतिपूर्वक ध्यान किया। उनके बिना, उनके प्रिय माता-पिता का घर वीरान हो गया। अंततः, उन्होंने अपने मित्रों से बात की और सुभा को घर वापस लाने के इरादे से भिक्षुणी आश्रम जाने का निर्णय लिया। भिक्षुणी आश्रम पहुँचते ही, उनकी माताजी रोने लगीं और बोलीं: "प्यारी बेटी! तुम्हारे बिना हमारा घर वीरान हो गया है। सोचो तुम्हारे पिता द्वारा तुम्हारे लिए विशेष रूप से बनाए गए सुंदर सोने के आभूषण! ये आभूषण तुम्हारे

गले, कानों और बाजुओं की शोभा बढ़ाते थे! एक समय था जब तुम्हें इन्हें पहनना बहुत पसंद था! अब हमारे पास इन्हें विरासत में पाने के लिए कोई बेटी नहीं है! प्यारी बेटी, हम धनवान हैं और हमारे पास बहुत से नौकर हैं! वापस आ जाओ और हमारी सारी संपत्ति की मालकिन बन जाओ!" जब माताजी रो रही थीं, तब उनके रिश्तेदारों और मित्रों ने भी यही अपील की।

सुभा ने आगे की अपीलों को रोकने का निश्चय किया और उन्हें समझाने की कोशिश की कि उनकी अपीलें व्यर्थ हैं। उन्होंने उन्हें इन शब्दों में सलाह दी:
मेरी मां और रिश्तेदारों, ध्यान से सुनो।

एक युवक के लिए उपयुक्त सुरुचिपूर्ण वस्त्र पहने हुए,

मैंने प्रभु की शिक्षाओं को सुना।

स्वस्थ मन की स्थिति में,

तब मुझे सच्चाई का एहसास हुआ।

इसलिए मैंने अपने उन माता-पिता को छोड़ दिया जो मुझसे प्यार करते थे।

मेरे सभी प्रिय मित्रों और रिश्तेदारों,

एक सुखमय जीवन की सभी विलासिताएं,

काफी धन-दौलत, जमीनें और खेत।

सांसारिक सुख-सुविधाओं की लालसा में,

यह मेरी वर्तमान जीवनशैली के अनुकूल नहीं है।

मैंने अपने घर के सुख-सुविधाओं को छोड़ दिया।

मैं वहां दोबारा नहीं जाऊंगी।

मुझे एकांत का जीवन पसंद है।

सभी प्रकार की लालसाओं से रहित।

जो लोग इच्छा की खाई में गिर गए हैं,

अक्सर निराशाओं का सामना करना पड़ता है,

उनकी संपत्ति का नुकसान,

शारीरिक चोटें और इससे भी बदतर आपदाएँ।

प्रिय रिश्तेदारों, मेरी बात सुनो।

तुम मुझे क्यों लुभाने की कोशिश करते हो?

मैंने अपने पीछे कितनी परेशानियां छोड़ दी हैं?

प्रिय मित्रों, कृपया यह समझें कि मैं एक बेघर नन हूँ।

जो धन-दौलत में कोई मूल्य नहीं देखता!

मेरा सिर मुंडा हुआ है;

मैंने धार्मिक संघ के वस्त्र धारण कर रखे हैं।

कृपया मेरी बेघर और भिखारी जैसी हालत को समझें!

मैं दूसरों द्वारा दिए गए भोजन पर ही गुजारा करता हूँ।

दूसरों द्वारा दिए गए वस्त्रों को पहनकर,

सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीना -

एक नन का जीवन ऐसा ही होता है।

सर्वज्ञ भगवान बुद्ध

साथ ही साथ महान संघ भी,

इच्छा के सभी बंधनों को तोड़ दिया है

मुक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए।

वे स्वतंत्र और खुश हैं!

लालसा और इच्छा भयानक शत्रु हैं।

एक विनाशकारी आग की तरह, वे लाते हैं

अपने साथ तमाम कष्ट और दुख लेकर आते हैं।

दुश्मनों की तरह, उन्होंने हमें दंडित करने का विकल्प चुना।

इंद्रिय सुख एक आतंक हैं।

लोगों के दिमाग में जहर घोलना।

विषैले तीर की तरह, वे पवित्र मन को भेद देते हैं।

लोगों को खतरे और पाप की ओर गुमराह करना।

इंद्रियों के सुख भयावह होते हैं।

जैसे कोई सांप का सिर डंक मारने ही वाला हो।

वे अज्ञानी लोग,

जो इच्छाओं के दलदल को पार करने में असमर्थ हैं,

इंद्रियों के सुखों में लिप्त हो जाओ।

वे जन्म और मृत्यु में कोई अंत नहीं देखते।

अस्तित्व के विशाल सागर में।

इस प्रकार लालसा उत्पन्न करती है,

दुःखपूर्ण परिस्थितियों में पुनर्जन्म।

उनकी पत्तियाँ मानो बंधी हुई हैं

सांसारिक अस्तित्व के सागर में सदा के लिए।

लोभ और व्यथा शत्रुओं को जन्म देते हैं।

अनुयायियों को खतरे की ओर आकर्षित करना।

अपनी मूर्खता पर पश्चाताप करते हुए,

उन्हें अंतहीन दुखों का सामना करना पड़ता है।

चीनी से लेपित विषैले भोजन का सेवन करना,

वे पहले तो खुश होकर गाना गाते हैं।

जैसे-जैसे जहर अपना असर दिखाता है, यह बहुत पीड़ा लाता है।

इसके परिणामस्वरूप दुख और आपदा आती है।

अतः, प्रिय मित्रों और सगे संबंधियों,

इन कारणों से, मैं स्वीकार नहीं करता/करती।

आपकी खुशी की अवधारणा धन पर निर्भर करती है।

मुझे नन बनकर खुशी मिली है।

मैं अब कभी भी घर का जीवन स्वीकार नहीं करूँगी!

यहां तक कि महान लोगों के रूप में भी,

जिन्होंने आर्य अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण किया,

संसार के भयानक सागर को पार करने में सक्षम हुए।

मैं निश्चित रूप से उनके पदचिह्नों का अनुसरण करूंगा।

निर्वाण की अनुभूति प्राप्त करने के लिए।

जिन मित्रों और रिश्तेदारों ने उनकी बातें सुनीं, उन्होंने फिर कभी उन्हें उकसाने की कोशिश नहीं की। उनमें से अधिकांश ने उनके शब्दों की सच्चाई को समझ लिया और उन्हें सुनकर प्रसन्न हुए।

शांति का ध्यान करते हुए, सुभा ने दीक्षा के आठवें दिन पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर ली। एक दिन, जब प्रबुद्ध भिक्षुणी ध्यान के आनंद में डूबी हुई थीं, तब भगवान बुद्ध ने उनकी ओर ध्यान दिलाते हुए, उनकी पूजा करने आई भिक्षुणियों से कहा: "भिक्षुणियों! सुभा भिक्षुणी को देखो! थेरी उप्पलावन्ना ने उन्हें अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया है। आस्था से परिपूर्ण होकर, उन्होंने सचेतनता बनाए रखी है और अपनी इंद्रियों को संयमित रखा है। अथक परिश्रम से उन्होंने बंधनों से मुक्ति प्राप्त की है। उनका अभ्यास अरहंतत्व की पूर्ण प्राप्ति में परिणत हुआ है। उन्होंने तीन उच्च ज्ञान प्राप्त कर लिए हैं। दीक्षा प्राप्त किए हुए उन्हें केवल आठ दिन हुए हैं। वे वास्तव में भिक्षुणी संघ के लिए गौरव हैं!" जब देवताओं के राजा इंद्र ने भगवान के शब्दों को सुना, तो वे अपने दिव्य प्राणियों के दल के साथ आए और प्रबुद्ध भिक्षुणी सुभा की पूजा की।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा14.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||69|| ------>>>> अगला

14.1 जीवक के आम के बाग की सुभा, राजगृह के एक ब्राह्मण की पुत्री।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित करके, सद्गुणों की जड़ों को विकसित किया और अपने ज्ञान की परिपक्वता के माध्यम से ज्ञानोदय (विमुक्ति, विमुक्ति) के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ प्राप्त कीं। बुद्ध युग में, उनका पुनर्जन्म राजगृह में एक अत्यंत प्रतिष्ठित ब्राह्मण के परिवार में हुआ। उनका नाम सुभा था और उनका शरीर अपने सभी अंगों में अत्यंत सुंदर था। इसी कारण उन्हें यह नाम दिया गया। जब गुरु (बुद्ध) राजगृह में रहे, तब उन्होंने आस्था प्राप्त की और एक गृहस्थ शिष्या बन गईं। बाद में वे जीवन चक्र (पुनर्जन्मों का चक्र) के बारे में चिंतित हो गईं और इंद्रियों के सुखों में खतरे को देखकर उन्होंने निश्चय किया कि त्याग में ही सुरक्षा है। उन्होंने महान प्रजापति गौतमी (बुद्ध की दिवंगत माता की बहन और सहपत्नी तथा भिक्षुणियों की प्रमुख) के मार्गदर्शन में संघ में प्रवेश किया और विपश्यना (अंतर्दृष्टि ध्यान) का अभ्यास करते हुए शीघ्र ही अनागामी (अनगामी) अवस्था की प्राप्ति कर ली।
एक दिन राजगृह का एक उग्र और शराबी युवक जीवक (राजा का चिकित्सक) के आम के बाग में खड़ा था और उसने उन्हें ध्यान करने जाते देखा। मोहित होकर उसने उनका रास्ता रोक दिया और उन्हें कामुक भोगों के लिए उकसाया। उन्होंने अनेक उदाहरणों से उन्हें कामुक भोगों के अभिशाप और अपने त्याग के मार्ग के बारे में बताया तथा उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया। फिर भी वह सुधर नहीं पाया और अपने अभिमानों पर अड़ा रहा। थेरी ने अपने शब्दों पर ही न रुकते हुए, उस व्यक्ति की अपनी आँखों की सुंदरता के प्रति आसक्ति देखकर, अपनी एक आँख को आँख के सॉकेट से निकाल लिया, उसे फाड़ दिया और उसे देते हुए कहा: 'आओ, फिर! इस आपत्तिजनक आँख को ले लो!' यह देखकर वह व्यक्ति भयभीत और क्षुब्ध हो गया और उसकी सारी वासना समाप्त हो गई, उसने थेरी से क्षमा मांगी। तब थेरी गुरु (बुद्ध) के समक्ष गईं, और वहाँ उन्हें देखते ही उनकी आँख पहले जैसी हो गई। इसी कारण वे बुद्ध के प्रति निरंतर आनंद से कांपती रहीं। गुरु (बुद्ध), उनके मन की स्थिति को जानते हुए, उन्हें शिक्षा दी और सर्वोच्च प्राप्ति के लिए

अभ्यास दिखाया। अपने आनंद को दबाते हुए, उनकी अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) बढ़ती गई, और उन्होंने अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त किया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को रूप और अर्थ में पूर्ण रूप से समझ लिया। उस समय से, निर्वाण के आनंद और फल में लीन होकर, उसने अपनी जीती हुई चीज़ों को याद करते हुए, अपने सामने खड़े उस बेलगाम पुरुष से इन छंदों में संवाद किया:
जीवक के रमणीय वन क्षेत्र में सुभा भिक्खुनी (नन) घूमती थी।

वहाँ एक शराबी और अनियंत्रित व्यक्ति उससे मिला।

और उसने रास्ता रोक दिया। उससे सुभा ने इस प्रकार कहा: 389 (368)

मैंने ऐसा क्या किया है जिससे तुम नाराज हो गए हो, कि तुम इस तरह मेरे रास्ते में आ गए हो?

हे मित्र, ऐसा प्रतीत होता है कि किसी भी पुरुष के लिए किसी दीक्षित (नन) को छूना संभव नहीं है। (369)

इसी प्रकार मेरे गुरु (बुद्ध) ने मुझे नैतिक उपदेशों (शील) में दीक्षित किया है।

हम सम्मान करते हैं और अनुसरण करते हैं;

वेलकम वन ने मुझे जिस प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया है, उसमें भी यही सिखाया गया है।

शुद्धिकरण और अनुशासन पवित्र हैं। तुम मेरा रास्ता क्यों रोक रहे हो? (370)

मेरा शुद्ध, अविचल मन; मेरा भावहीन मन, तुम नीच भावनाओं से परिपूर्ण;

मैं, जो अपने संपूर्ण स्वरूप में मुक्त (विमुत्त/विमुक्त) और निर्दोष हूँ,

मुझे यह बात कहाँ से आती है कि तुम मुझे रोकते हो, अप्रिय रूप से खड़े रहते हो?' (371)

मनुष्य :

'हे महिला, आप युवा हैं और पापरहित हैं—आप पुरोहित जीवन में क्या चाहती हैं?'

उस पीले रंग की पोशाक (नन की) उतार फेंको और आओ! खिलते हुए जंगल में

हम अपनी खुशी की तलाश करते हैं। फूलों की सुगंध से भरे वृक्षों से सुगंध आती है (372)

मिठास। देखो, वसंत अपने चरम पर है, खुशियों का मौसम!

तो चलो मेरे साथ फूलों से लदे जंगल में चलें और हम आनंद की तलाश करें। (373)

ऊपर से आती हवा की मधुर ध्वनि जंगल की खिलती चोटियों को छू रही है।

पवनदेवों के प्रभाव में। लेकिन तुम जंगल में अकेले जा रहे हो,

इसकी गहराइयों में खो जाने पर, तुम्हें आनंद या संतोष देने वाली कोई चीज कैसे मिलेगी? (374)

वह विशाल जंगल प्रेतवाधित है, जिसमें जंगली जीवों के कई झुंड रहते हैं।

हाथियों के उग्र और हिंसक उत्पात से इसकी शांति भंग हो गई।

वह स्थान मानव जाति से रहित और भयावह है, क्या आपको वहां अकेले नहीं जाना चाहिए? (375)

तुम सोने की बनी किसी मूर्ति की तरह हो, मानो किसी अप्सरा की तरह स्वर्ग के बगीचे में विचरण कर रही हो।

हे अद्वितीय प्राणी! तुम्हारी सुंदरता प्रकाशमान हो!

बनारस के उत्तम रेशमी वस्त्र से सजी सुंदर पोशाक में लिपटी हुई। (376)

मैं केवल आपकी सेवा करने और आपको जंगल में रहने देने के लिए ही जीवित रहूंगा।

इस संसार में तुमसे अधिक प्रिय और प्यारा कोई प्राणी नहीं है।

तुम जंगल की परी जैसी धीमी गति से चलने वाली आँखों वाली हो। (377)

अगर तुम मेरी बात मानोगे, तो वहाँ आओ जहाँ सुरक्षित जीवन के सुख तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।

बरामदों और छतों वाले घर में निवास करो, दासियाँ तुम्हारी सेवा में तत्पर हों। (378)

बनारस के नाजुक रेशमी वस्त्र पहनें, मालाएं धारण करें, मलहम लगाएं।

मैं तुम्हें अनेक प्रकार के आभूषण देता हूँ, जो बहुमूल्य पत्थरों से बने हैं।

सोने का काम और मोती। और तुम एक सुंदर और आलीशान पलंग पर सवार होगे, (379)

चंदन की लकड़ी से तराशा हुआ, सुगंधों से महका हुआ, नए तकियों से सजा हुआ,

ऊनी और मुलायम बिस्तर, और बेदाग चंदोबों से सजे हुए। (380)

तुम जल की गोद में खिले कमल के समान हो, जिसकी सेवा परियां करती हैं।

ब्रह्मचर्य का जीवन जीने वाले तुम बूढ़े हो जाओगे, तुम्हारी सुंदरता अतुलनीय है।' (381)

सुभा:

अब तुम्हारा क्या होगा, इस गंदगी से भरे, कब्र में समा चुके इतने नाजुक शव में?

क्या आपने मुझे यह बुरी शिक्षा देते हुए देखा है, क्या आप मोहित हैं? (382)

मनुष्य :

तुम्हारी आंखें हिरण जैसी हैं, पहाड़ों में बसी किसी परी जैसी।

तुम्हारी वो परी जैसी आंखें ही हैं, जिन्हें देखकर मेरे दिल में प्यार की गहराई और बढ़ जाती है। (383)

आपके तेजस्वी, निर्मल चेहरे में कमल की पंखुड़ी के समान विराजमान,

तुम्हारी उन आँखों को देखकर ही मेरे जुनून को बल मिलता है। (384)

हे देवी, तुम मुझसे कितनी भी दूर क्यों न हो, मैं तुम्हें कभी कैसे भूल सकता हूँ?

लंबी पलकों वाली तुम, तुम्हारी आंखें कितनी चमत्कारी हैं?

हे जादूगरनी आँखों वाली परी!, उन गोलों से बढ़कर मुझे कुछ भी प्रिय नहीं है! (385)

सुभा:

देखो! तुम वहाँ चलना चाहते हो जहाँ कोई रास्ता नहीं है; तुम कब्जा करना चाहते हो

आपके खेल के लिए आकाश से चंद्रमा;

तुम मेरु (पर्वत) की चोटियों को पार कर जाओगे।

तुम जो बुद्ध के बच्चे की घात लगाने का साहस करते हो! (386)

अब न तो धरती पर और न ही स्वर्ग में कोई ऐसी वस्तु जीवित है जो मेरे लिए वासना का पात्र हो।

मुझे अभी यह नहीं पता। यह कैसा है?

महान मार्ग पर जड़ से शाखा तक नष्ट कर दिया गया। (387)

हाथ से जलते हुए कोयले की तरह फेंका गया, और विष के प्याले के समान घातक माना गया।

यह मुझे दिखाई नहीं देता। यह कैसा है? पवित्र मार्ग पर जड़ से शाखा सहित नष्ट हो जाना। (388)

किसी ऐसी स्त्री को बहकाओ जिसने मेरी बात नहीं समझी है, या जिसका शिक्षक

वह अभी सीख रही है; सौभाग्य से वह सुनेगी; सुभा, उसे बहकाने की कोशिश मत करो;

वह समझती है। और अब झुंझलाहट और असफलता आपको ही झेलनी पड़ेगी। (389)

क्योंकि मैंने अपने मन में ठान लिया है कि जो कुछ भी मेरे ऊपर आएगा, मैं उसके प्रति सतर्क रहूंगा।

दोष हो या सम्मान, प्रसन्नता हो या दुःख—और इस सिद्धांत को जानते हुए:—

'सभी भौतिक वस्तुएँ घृणित हैं,' मेरा मन कहीं भी उनसे नहीं जुड़ता। (390)

हाँ, मैं बुद्ध का शिष्य हूँ; मैं आगे बढ़ता रहता हूँ।

अष्टांगिक मार्ग की गाड़ी पर सवार। तीर खींचे गए हैं।

मेरे घावों से, और मेरी आत्मा इच्छाओं और मादक पदार्थों से शुद्ध हो गई है।

इसलिए मैं परमानंद में ध्यान करने के लिए एकांत स्थानों में आया हूँ। (391)

ओह! मैंने इसे (शरीर को) देखा है - एक अच्छी तरह से रंगी हुई कठपुतली, जिसमें नए लकड़ी के तकुए लगे हुए हैं।

धूर्ततापूर्वक डोरियों और पिनों से बांधे गए, और विभिन्न प्रकार से नाचते हुए। (392)

लेकिन यदि सभी तार और पिन खींचे हुए, ढीले और बिखरे हुए हों,

ताकि कठपुतली का अस्तित्व ही समाप्त हो जाए और वह टुकड़े-टुकड़े हो जाए।

आप अपने मन को शांत करने के लिए किस अंग का चयन करेंगे और उसे नियुक्त करेंगे? (393)

इस प्रकार ये बेचारे नन्हे शरीर अस्तित्व बनाए रखते हैं:

सदस्यों और विशेषताओं को हटा दें तो कुछ भी किसी भी रूप में शेष नहीं रहता।

कुछ भी नहीं बचता! आप अपने मन को शांत करने के लिए क्या चुनते हैं? (394)

यहां तक कि दीवार पर नारंगी रंग से रंगी हुई किसी पेंटिंग के रूप में भी,

[यह हमें सत्य और वास्तविकता का कुछ भी नहीं देता, सिवाय झूठे दिखावे के;]

आप इस मामले में विकृत दृष्टि से [भेद नहीं कर सकते; न्यायाधीशों के साथ]

औसत मनुष्य का ज्ञान, त्रुटिपूर्ण, व्यर्थ। (395)

ओह, तुम अंधे हो! तुम एक काल्पनिक दुनिया के पीछे भाग रहे हो, कठपुतली के तमाशों से भ्रमित हो गए हो।

भीड़ के बीच में दिखाई देने वाले; आप मूल्य और वास्तविकता के ज्ञाता हैं।

जादूगर की चालें काम करती हैं, जैसे सपने में दिखाई देने वाले सोने के पेड़। (396)

यह आंख आखिर है क्या, सिवाय एक खोखले पेड़ के बीच में फंसी एक छोटी सी गेंद के?

आंसुओं के खारे पानी से सना हुआ, चिपचिपा पदार्थ टपकाता हुआ, फिल्म का बुलबुला।

अनेक पहलुओं वाली आंख के आकार में बनाई गई खाद?' (397)

तुरंत ही सुभा ने अपनी आंख (आंख के सॉकेट से) निकालकर उसे दे दी:

'तो यहाँ देखो! तुम अपनी नज़र डालो!' उसने पाप नहीं किया, उसका मन आसक्ति से मुक्त था। (398)

उसके भीतर की वासना तुरंत शांत हो गई और वह उससे क्षमा मांगने लगा:

हे पवित्र और ब्रह्मचारी कन्या, काश तुम अपनी दृष्टि पुनः प्राप्त कर सको।

मैं फिर कभी इस तरह से आपको अपमानित करने की हिम्मत नहीं करूंगा। (399)

आपने मेरे पाप को बहुत हद तक नष्ट कर दिया है; मैंने धधकती ज्वालाओं को अपने हृदय से लगा रखा है;

मैंने विषैले साँप को छुआ है — लेकिन हे! मुझे ठीक कर दे और मुझे क्षमा कर दे! (400)

उत्पीड़न से मुक्त होकर भिक्षुणी संत बुद्ध के पास चली गई।

वहाँ उनकी उपस्थिति में, उनके पवित्र स्वरूप को देखकर

अत्यंत गुणवान परिवार में जन्मी होने के कारण, उसकी दृष्टि तुरंत ही बहाल हो गई। (401)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] अनागामी - शाब्दिक अर्थ: वापस न लौटने वाला, निर्वाण से पूर्व की अवस्था, वह व्यक्ति जो ब्रह्मलोक (प्रधान देवदूतों का लोक) में पुनर्जन्म लेगा और फिर वहाँ से निर्वाण प्राप्त करेगा।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा15.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||70|| ------>>>> अगला

15.1. इसिदासी, उज्जैनी के एक करोड़पति (सेठी) की पुत्री, सकेता (पटना) के एक करोड़पति (सेठी) की पूर्व पत्नी
, उसने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और जन्म-जन्मांतर में अपने पूर्व स्वभाव पर कायम रहते हुए, युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्मों का संचय किया था। अपने जीवन के अंतिम चरण से पहले सातवें जन्म में, वह कामुक आकर्षण से प्रभावित होकर व्यभिचारी आचरण में लिप्त हो गई। इसके कारण वह कई शताब्दियों तक नरक में रही और उसके बाद तीन जन्मों तक पशुवत रही। उसके बाद एक दासी ने उसे नपुंसक के रूप में जन्म दिया और फिर वह एक गरीब आम आदमी की पुत्री के रूप में जन्म लेती रही। जब वह वयस्क हुई, तो उसका विवाह गिरिदास नामक एक कारवां-नेता के पुत्र से हुआ। अब उसकी दूसरी पत्नी गुणी और उच्च गुणों वाली थी, और नई पत्नी उससे ईर्ष्या करती थी और उसके कारण पति से झगड़ा करती थी। उनकी मृत्यु के बाद, बुद्ध युग में उनका पुनर्जन्म उज्जैन में एक गुणी, सम्मानित और धनी व्यापारी की पुत्री के रूप में हुआ और उनका नाम इसिदसी रखा गया। जब वे वयस्क हुईं, तो उनके माता-पिता ने उनका विवाह एक व्यापारी के पुत्र से कर दिया, जो उनके लिए उपयुक्त था। एक माह तक वे एक समर्पित पत्नी के रूप में उनके साथ रहीं; फिर, अपने पूर्व कर्मों के फल स्वरूप, उनके पति ने उनसे विमुख होकर उन्हें घर से निकाल दिया। यह सब पाली ग्रंथ में वर्णित है। एक के बाद एक पतियों के लिए वांछनीय न साबित होने के कारण, वे व्याकुल हो गईं और अपने पिता की सहमति से, थेरी जिनादत्त के अधीन भिक्षुणी के रूप में दीक्षा ली। और अंतर्दृष्टि (विपश्यना[1]) में प्रगति करते हुए, उन्होंने कुछ ही समय बाद अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञान) प्राप्त कर लिया, साथ ही धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को रूप और अर्थ में पूर्ण रूप से समझ लिया।
पुण्य और निर्वाण के आनंद में लीन होकर, एक दिन पटना नगर में भोजन करने के बाद, वह महान गंगा के एक रेतीले किनारे पर बैठ गईं। जब उनकी सहेली, थेरी बोधि ने उनसे उनके पूर्व अनुभव के बारे में पूछा, तो उन्होंने उसे छंदों में सुनाया। उनके पूर्व और बाद के उत्तरों के संबंध को दर्शाने के लिए, संशोधकों ने ये तीन छंद जोड़े:
पटना के सुंदर नगर में, पृथ्वी के सबसे सुंदर नगर में,

इसका नाम ट्रम्पेट-फ्लावर की सुंदरता के कारण रखा गया है।

शाक्य वंश से जन्मी दो संत भिक्षुणियाँ (भिक्षुणियाँ) निवास करती थीं, (402)

इसिदसी एक, बोधि दूसरा।

नैतिक उपदेश (शील) का पालन करने वाले

ध्यान की अवस्था (ध्यानमग्न अवस्था का आनंद) के प्रेमियों के लिए

विद्वान महिलाएं, जो सभी सांसारिकता के दाग से मुक्त हैं। (403)

इन्होंने दान-पुण्य कर अपना उपवास तोड़ लिया।

उन्होंने अपने कटोरे धोए और एकांत में प्रसन्नतापूर्वक बैठ गए।

वे एक दूसरे से इस प्रकार बात करते रहे, पूछते और उत्तर देते रहे: (404)

'तुम्हारा रूप-रंग बहुत प्यारा है, इसिदासी।'

ताजा और अछूता, फिर भी आपकी स्त्री अपने चरम पर है।

आपने अपने पूर्व जीवन में क्या खामी देखी है?

क्या आपने अपनी नियति के लिए आत्मसमर्पण करना चुना?' (405)

फिर उस शांत जगह इसिदासी में,

धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) की व्याख्या करने में कुशल।

उसने उसकी बात को आगे बढ़ाया और इस प्रकार उत्तर दिया:

'सुनो, बोधि, मैंने कैसे संन्यास लिया (भिक्षुणी बनने के लिए)। (406)

अवंती के प्रमुख शहर उज्नेनी में,

मेरे पिता एक सदाचारी नागरिक के रूप में रहते हैं।

मैं, उनकी इकलौती बेटी, उनकी प्रियतम,

उनके जीवन का सबसे प्रिय और अनमोल खजाना। (407)

अब सकेता से एक नागरिक आया

प्रथम श्रेणी का और अत्यंत धनी

अपने बेटे के लिए मुझसे शादी का प्रस्ताव रखने के लिए।

और पिता ने मुझे उसे बहू के रूप में दे दिया। (408)

मैं सुबह और शाम को अपनी शुभकामनाएँ लेकर आया।

मेरे पति के माता-पिता दोनों को,

मैंने अपना सिर झुकाया और उनके चरणों में घुटने टेके,

मुझे दिए गए प्रशिक्षण के अनुसार। (409)

मेरे पति की बहनें और उनके भाई भी,

और उसके सभी रिश्तेदार जैसे ही अंदर दाखिल हुए, तभी

मैंने संकोची उत्साह से उठकर उन्हें जगह दी। (410)

और जहां तक भोजन, उबला हुआ या सूखा भोजन, और पेय पदार्थ की बात है,

जो कुछ संग्रहित करना था, उसे मैंने अलग रख दिया।

और उसे बाँट दिया और जिसका हक था उसे दे दिया। (411)

मैं समय से पहले उठकर घर में इधर-उधर घूमने लगा।

फिर मैंने अपने हाथ-पैर अच्छी तरह धोकर आगे बढ़ा।

अपने स्वामी (पति) को आदरपूर्वक अभिवादन करने के लिए, (412)

और कंघी, दर्पण, मलहम, साबुन लेकर,

मैंने उसे एक दासी की तरह कपड़े पहनाए और संवारा। (413)

मैंने चावल उबाले, मैंने बर्तन धोए;

और एक माँ के रूप में, अपने इकलौते बच्चे के लिए,

इसलिए मैंने अपने भले आदमी की सेवा की। (414)

मेरे लिए, जिसने इस प्रकार असीम परिश्रम किया,

और उन्होंने विनम्र मन से सेवा की।

मैं सुबह जल्दी उठती थी, हमेशा मेहनती और अच्छी थी।

मुझे उससे घृणा के सिवा कुछ भी महसूस नहीं हुआ। (415)

नहीं, अपनी माँ और अपने पिता के लिए वह

उन्होंने कहा:— 'आप मुझे अनुमति दीजिए और मैं चला जाऊंगा।'

क्योंकि मैं इसिदासी के साथ नहीं रहूँगा

एक ही छत के नीचे, और कभी भी उसके साथ न रहें।' (416)

'हे पुत्र, अपनी पत्नी के बारे में इस प्रकार मत बोलो,'

इसिदासी बुद्धिमान और विवेकशील है।

वह सुबह जल्दी उठने वाली और एक मेहनती गृहिणी हैं।

कहिए, क्या वह आपकी नजरों में बिल्कुल भी पसंद नहीं है? (417)

'वह मुझे किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुंचाती, फिर भी'

मैं इसिदासी के साथ कभी नहीं रह पाऊंगा।

मैं उसे कष्ट नहीं दे सकता। रहने दो, रहने दो!

आप मुझे अनुमति दीजिए और मैं चला जाऊंगा। (418)

और जब उन्होंने यह सुना, तो सास-ससुर ने

मुझसे पूछा गया: 'तो फिर आपने ऐसा क्या किया है जिससे किसी को ठेस पहुंची हो?'

बच्चे, हमसे खुलकर बात करो, और सच को वैसे ही बोलो जैसा वह है। (419)

मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जिससे किसी को ठेस पहुंचे या नुकसान हो।

न ही मैं बुरी बातों से नाराज होती हूँ। मैं क्या कर सकती हूँ?

क्या मेरे पति मुझे इतना नापसंद करते हैं?' (420)

अपने बेटे की रक्षा और सुरक्षा के लिए, वे मुझे वापस ले गए।

अनिच्छुक होकर, पिता के घर जाने के लिए, व्याकुल होकर,

व्याकुल होकर: 'हाय! हम टूट गए, प्यारी लक!' (421)

फिर पिता ने मुझे दूसरी बार दुल्हन के रूप में विदा किया।

मेरे पति के पिता द्वारा चुकाई गई आधी राशि से संतुष्ट। (422)

उस घर से भी, जब मैं वहाँ एक महीना रह चुका था,

मुझे वापस भेज दिया गया, हालांकि मैंने काम किया था और सेवा दी थी।

निर्दोष और सदाचारी, किसी भी दास के समान। (423)

और तीसरा, एक साधु जो भिक्षा मांग रहा था—

जो आत्मसंयमित था और नियंत्रण कर सकता था

साथी मनुष्यों में कृपा—मेरे पिता मिले

और उसने उससे इस प्रकार कहा: 'तुम मेरे दामाद बनो!'

आओ, उस फटे हुए वस्त्र और बर्तन को फेंक दो!' (424)

वह आया, और इस तरह हम आधे महीने और रुके रहे।

एक साथ। फिर उसने पिता से इस प्रकार कहा:

'हे प्रभु, मुझे मेरा वस्त्र, मेरा कटोरा और मेरा प्याला वापस दे दो।'

मुझे जाने दो ताकि मैं अपने बचे-खुचे टुकड़े फिर से खोज सकूँ। (425)

फिर उसके पिता, माता और पूरे कबीले ने उसे बुलाया

रिश्तेदारों के यह पूछने पर कि: 'आखिर यह क्या है?'

क्या तुम्हें यहाँ रहना पसंद नहीं है? जल्दी बताओ, क्या बात है?

हम ऐसा क्या कर सकते हैं जिससे आप और अधिक प्रसन्न हों?' (426)

फिर उसने कहा: 'अगर मैं खुद के लिए पर्याप्त हूं,

मेरे लिए इतना ही काफी है। एक बात मैं जानता हूँ:—नीचे

मैं इसिदासी के साथ एक छत के नीचे नहीं रहूँगा!' (427)

उसे बर्खास्त कर दिया गया। मुझे भी, मैंने सोचा, मैं भी अकेला ही चला गया।

और फिर मैंने अपने माता-पिता से मरने की अनुमति मांगी।

या फिर वे मुझे इस दुनिया को छोड़ने की अनुमति दें। (428)

अब लेडी जिनादत्ता अपने काम पर जुट गई हैं।

मैं अपने पिता के घर प्रतिदिन भिक्षा मांगने आता था।

वह हर नैतिक सिद्धांत का ध्यान रखती थी,

विनय (नैतिक नियमों) में विद्वान और विशेषज्ञ। (429)

और उसे देखकर हम उठे, और मैंने तैयारी की

उसके लिए एक आसन, और जैसे ही वह बैठी, मैं घुटनों के बल बैठ गया।

फिर उसे उबला हुआ और सूखा हुआ भोजन दिया, (430)

और पानी के बर्तन जो हमने अलग रखे थे—

और उसने अपनी भूख मिटा ली। फिर मैंने कहा:

'देवी, मैं संसार त्यागना चाहता/चाहती हूँ।' 'यहाँ क्यों?' (431)

मेरे पिता ने कहा, 'प्यारे बच्चे, तुम्हारे लिए अवसर हैं।'

धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के अनुसार चलना। भोजन सहित।

और पेय पदार्थ पवित्र भिक्षुओं को तृप्त कर सकता है।

और द्विज (ब्राह्मण)। परन्तु मैं अपने पिता के बारे में, (432)

रोते हुए और हाथ जोड़कर उसने बेताबी से विनती की:

नहीं, लेकिन मैंने जो बुरा कर्म किया है,

ताकि मैं प्रायश्चित कर सकूँ और यह मिट जाए।' (433)

तब पिता ने कहा: 'तुम जाओ और ज्ञान प्राप्त करो।'

और सर्वोच्च धम्म (शाश्वत सत्य) का ज्ञान प्राप्त करो, और निर्वाण पाओ।

कि उन्होंने, जो कि सर्वोत्कृष्ट प्राणी (बुद्ध) हैं, यह जान लिया है। (434)

फिर मेरी प्यारी माँ और पिताजी को,

और मैंने अपने सभी रिश्तेदारों और परिवार को विदाई दी।

और सात दिन बाद ही मैं रवाना हुआ था।

मैंने त्रिविध ज्ञान[2] को स्पर्श किया और प्राप्त किया। (435)

तब मुझे अपने पूर्व जन्मों के बारे में पता चला।

यहां तक कि उनमें से सात भी, और मैं अब भी उसका फल भोग रहा हूँ।

जो फसल मैंने बोई, जो परिणाम आया।

अब मैं तुम्हें यही बताऊंगा, और तुम

मैं अपने (पूर्व जन्म की) कहानी को एकाग्रता से सुनूंगा। (436)

मेरे रहने से पहले एराकाचा के कस्बे में,

सोने के सभी कामों में निपुण एक धनी शिल्पकार।

युवावस्था के उमंग से उत्तेजित होकर, एक व्यभिचारी,

मैंने पड़ोसियों की पत्नियों के साथ (कामुक रूप से) आनंद लिया। (437)

उसके कारण मेरी मृत्यु हुई और मैं लंबे समय तक नरक में जलता रहा।

जब तक मैं पूरी तरह पककर बाहर नहीं आया, और फिर

उसे एक वानर के शरीर में पुनर्जन्म मिला। (438)

विशाल वानर के सामने मैं मुश्किल से सात दिन ही जीवित रहा।

बंदरों के सरदार ने मुझे नपुंसक बना दिया।

मेरी कामुकता का यही फल था। (439)

वहीं से सिंध के जंगलों में उनकी मृत्यु हो गई।

एक आँख वाली बकरी की संतान का पुनर्जन्म (440)

और लंगड़ा; बारह वर्ष तक नपुंसक अवस्था में रहा, कीड़ों द्वारा कुतरा हुआ।

मैं अस्वस्थ होने के कारण बच्चों को अपनी पीठ पर लादकर ले जाता था।

मेरी कामुकता का यही फल था। (441)

उससे मृत्यु होने के बाद, मुझे पुनः जन्म प्राप्त हुआ।

एक पशु व्यापारी की गाय का बच्चा,

लाख जैसे लाल रंग का एक बछड़ा; बारहवें महीने में (442)

नपुंसक बनाकर, जुते हुए, मैंने हल और गाड़ी खींची।

दूरदर्शिता का अभाव और चिंतित, प्रेरित और अयोग्य।

मेरी कामुकता का यही फल था। (443)

इसलिए सड़क पर भी उसकी मृत्यु हो जाती है

मैं एक घरेलू दासी की संतान के रूप में जन्म लिया।

न तो स्त्री और न ही पुरुष, मेरा लिंग (नपुंसक) है।

मेरी कामुकता का यही फल था। (444)

तीस वर्ष की आयु में मेरी मृत्यु हुई और मेरा पुनर्जन्म हुआ।

एक लड़की, एक ठेले वाले की बेटी, गरीब

और दुर्भाग्य से पीड़ित, और कर्ज के बोझ तले दबे हुए।

साहूकारों से लिया गया। (445)

ब्याज की उस राशि का भुगतान करने के लिए, जो लगातार बढ़ती और फैलती जा रही थी,

पैसे के बदले, कारवां का व्यापारी

मुझे रोते-बिलखते घसीटकर ले जाया गया, मैं तब छोटी थी।

मुझे मेरे घर से दूर ले जा रहे हैं। (446)

अब मैं सोलह वर्ष का हो चुका हूँ, जब मैं

एक लड़की के रूप में खिल उठी, वही व्यापारी का बेटा,

उनका नाम गिरिदास था, उन्होंने मुझसे प्रेम किया (447)

और उसने मुझे अपनी पत्नी बना लिया। उसकी एक और पत्नी थी।

एक गुणी और प्रतिष्ठित महिला,

अपने साथी की ओर आकर्षित। और इसलिए मैं लाया

उस घर में कलह और शत्रुता थी। (448)

मेरे कर्मों का फल यही था कि उन्हें यह सब झेलना पड़ा।

इस अंतिम जीवन में, आपने मेरा अपमान किया है, भले ही

मैंने उनके विनम्र दास के रूप में उनकी सेवा की।

अच्छा! अब मैंने इन सब बातों का अंत कर दिया है! (449)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/सांभाविकता) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] ज्ञानोदय के कारण तीन उपलब्धियाँ: (i) पिछले जन्मों का स्मरण, (ii) सर्वदर्शी दिव्य दृष्टि जो ब्रह्मांड में कहीं भी देख सकती है, और (iii) भीतर के सभी आसवों (इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं) का नाश, अर्थात् पवित्रता।

www.budsas.org से और अधिक जानकारी:

पाटलिपुत्त में, जो बाद में सम्राट अशोक की राजधानी बना, बोधि और इसिदासी नाम की दो भिक्षुणियाँ रहती थीं, जो आपस में गहरी सहेलियाँ थीं। दोनों ने सभी दोषों को नष्ट कर दिया था और ज्ञान प्राप्त कर लिया था। एक दिन दोनों सहेलियों ने अपने अतीत और भिक्षुणी बनने की दीक्षा के बारे में चर्चा की। वृद्ध भिक्षुणी बोधि ने बहुत कष्ट सहे थे। उन्होंने अपनी कहानी इसिदासी को सुनाई और फिर उस युवा और सुंदर भिक्षुणी से पूछा कि उन जैसी सुंदर और मनमोहक भिक्षुणी ने जीवन के कष्ट कैसे सहे।

तब इसिदासी ने अपनी जीवन कहानी सुनाई। उनका जन्म उज्जैन शहर में एक धनी व्यापारी की इकलौती लाडली बेटी के रूप में हुआ था। जब वह वयस्क हुईं, तो उनके पिता के एक मित्र, धनी व्यापारी ने अपने बेटे के लिए उनका हाथ मांगा। इसिदासी के माता-पिता इस प्रस्ताव से बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि वे उस परिवार को अच्छी तरह जानते थे। एक आदर्श पुत्री होने के नाते, इसिदासी ने अपने पति और ससुराल वालों के सामने भी इन्हीं गुणों और व्यवहार का प्रदर्शन किया। जल्द ही उसने अपने सास-ससुर का दिल जीत लिया। इसिदासी को अपने पति से भी प्यार हो गया। नौकरों की मदद को नज़रअंदाज़ करते हुए वह खुद ही उनके खाने-पीने और ज़रूरतों का ख्याल रखती थी। हालांकि, उसके प्यार और आदर्श व्यवहार के बावजूद, उसका पति जल्द ही उससे ऊब गया।

अपने माता-पिता के सामने यह स्वीकार करते हुए कि इसिदासी निर्दोष थी, उसके पति ने ज़ोर देकर कहा कि वह अब उसके साथ नहीं रह सकता। हालांकि, चूंकि उसने कोई गलती नहीं की थी, इसलिए उसने शहर छोड़कर कहीं और नई ज़िंदगी शुरू करने का प्रस्ताव रखा। इसिदासी के सास-ससुर स्तब्ध रह गए। वे अपनी बहू से बहुत प्यार करते थे और उसे खोना नहीं चाहते थे। यह सोचकर कि उनके बेटे के मन में कोई ऐसी बात है जिसे वह बताने में हिचकिचा रहा है, उन्होंने इसिदासी से पूछताछ की। उसने सच-सच जवाब दिया कि उसने कुछ भी गलत नहीं किया है।

उसके सास-ससुर स्तब्ध और निराश हो गए। वे इसिदासी को अपनी बेटी की तरह प्यार करते थे। लेकिन वे नहीं चाहते थे कि उनका बेटा दूसरे शहर चला जाए। उन्होंने इसिदासी को उसके माता-पिता के पास वापस भेजने का फैसला किया, उन्हें पूरा विश्वास था कि अपनी सुंदरता और दयालुता के कारण उसे आसानी से कोई दूसरा उपयुक्त जीवनसाथी मिल जाएगा। इस अस्वीकृति से इसिदासी को गहरा सदमा लगा। बुद्ध के समय में भारतीय समाज में माता-पिता के पास वापस भेजा जाना एक अपमान और कलंक माना जाता था।

इसिदासी के माता-पिता इस घटना से व्याकुल थे। उन्होंने इस अपरिहार्य स्थिति को स्वीकार करते हुए एक उपयुक्त पति की तलाश शुरू की। जल्द ही उन्हें एक धनी युवक मिला जो इसिदासी की सुंदरता और व्यवहार से इतना मोहित हो गया कि उसने दुल्हन के पिता द्वारा दिए जाने वाले दहेज का आधा हिस्सा देने की पेशकश की। इसिदासी ने अपने नए पति पर पूरा ध्यान दिया और उनका अत्यंत सम्मान किया, फिर भी वही सिलसिला जारी रहा। एक महीने के भीतर ही उसने इसिदासी को उसके पिता के पास वापस भेज दिया और विवाह रद्द कर दिया, हालांकि वह अपनी आदर्श पत्नी के प्रति अपनी इस घोर नापसंदगी का कोई कारण नहीं बता सका।

इसिदासी पूरी तरह टूट गई थी। इस दूसरी बार ठुकराए जाने से उसका दिल ज़हर के तीर की तरह छलनी हो गया था। वह घर में उदास घूमती रहती थी। जब एक साधु उनके घर भीख मांगने आया, तो इसिदासी के हताश पिता ने उसे साधु को सौंप दिया। साधु अपने एकांत जीवन से संतुष्ट नहीं था। एक सुंदर पत्नी और आलीशान महल में विलासितापूर्ण जीवन की संभावना उसे लुभा रही थी। उसने अपना

भिक्षापात्र और वस्त्र इसिदासी के पिता को देकर उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया। लेकिन दो सप्ताह बाद वह उसे वापस ले आया और अपना वस्त्र और वस्त्र वापस मांग लिया। उसने कहा, "वह इसिदासी के साथ एक ही छत के नीचे रहने की बजाय धरती का सबसे गरीब आदमी बनना पसंद करेगा।" बार-बार ठुकराए जाने का कारण जानने की विनती करने के बावजूद वह कोई कारण नहीं बता सका। उसने कहा, "उसे बस इतना पता था कि वह उसके साथ नहीं रह सकता।"

इसिदासी आत्महत्या करने को तैयार थी। तीन बार ठुकराए जाने का दुख और शर्म उसके लिए असहनीय थी। जब वह अपनी मृत्यु की योजना बना रही थी, तभी जिनाद्दता नाम की एक बौद्ध भिक्षुणी उनके घर भिक्षा मांगने आई। उनकी शांत और सौम्य प्रकृति से प्रसन्न होकर, इसिदासी ने अपने पिता से भिक्षुणी बनने की अनुमति मांगी। उनके पिता अनिच्छुक थे क्योंकि वे उनका साथ नहीं छोड़ना चाहते थे, लेकिन अपनी प्रिय पुत्री की आँखों में पीड़ा देखकर वे सहमत हो गए। फिर उन्होंने इसिदासी को निर्वाण की सर्वोच्च अवस्था प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

दीक्षा लेने के बाद, इसिदासी ने निर्वाण की परम आनंद प्राप्ति के लिए अपना सारा ध्यान केंद्रित किया। सात दिनों के भीतर ही उन्हें उच्च ज्ञान प्राप्त हो गया। इसिदासी अपने पिछले जन्मों को याद कर सकती थीं, प्राणियों के जन्म और मृत्यु को देख सकती थीं और सभी दुखों के नाश के लिए आवश्यक ज्ञान को ग्रहण कर सकती थीं। अपने पिछले जन्मों को देखकर इसिदासी को अपने असफल विवाहों का कारण समझ में आया।

उन्होंने अपने मित्र बोधि को अपने वर्तमान दुख का कारण समझाया। आठ जन्म पहले इसिदासी एक पुरुष के रूप में पैदा हुई थीं - एक धनी, सुंदर और आकर्षक सुनार। स्त्रियाँ उनकी ओर आकर्षित होती थीं और वे उनका लाभ उठाते थे, भले ही वे अन्य पुरुषों की पत्नियाँ और भोली-भाली लड़कियाँ थीं। वह एक स्त्री से दूसरी स्त्री के पास जाता रहा, दिल तोड़ता रहा, उसे इस बात का ज़रा भी एहसास नहीं था कि वह कितना दर्द और पीड़ा पहुँचा रहा है। वह बार-बार अपनी इच्छा पूरी करना चाहता था। वह बदलाव चाहता था। उसने कई दिल और शादियाँ तोड़ी थीं, इस बात से उसे ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ता था। ये सब उसके लिए उपलब्धियाँ थीं जिन पर वह गर्व कर सकता था।

मृत्यु के समय उसने अपना अंतिम नृत्य किया। उसे अपने द्वारा पहुँचाई गई पीड़ा का फल भुगतना पड़ा। मृत्यु के बाद उसका पुनर्जन्म नरक में हुआ और उसने कई वर्षों तक उस अग्निलोक की यातना और पीड़ा सहन की। जिस प्रकार उसने दूसरों के दर्द की परवाह किए बिना पीड़ा पहुँचाई थी, उसी प्रकार उसने भी निर्दयता से यातना सहन की।

इसलोक के जीवनकाल तक नरक जैसी यातना सहने के बाद उसका पुनर्जन्म एक बंदर के गर्भ में हुआ। उसके जन्म के सात दिन बाद, नवजात बंदर से अपने पद को खतरा देखकर, बंदरों के सरदार ने उसके जननांगों को काट दिया और उसे नपुंसक बना दिया। इसिदासी ने भविष्य में होने वाली प्रतिद्वंद्विता को रोकने के लिए किए गए इस कृत्य का वर्णन किया है।

मृत्यु के बाद उसका पुनर्जन्म एक भेड़ के रूप में हुआ, जो एक लंगड़ी, एक आँख वाली भेड़ की संतान थी। बारह वर्षों तक वह कष्टों में रहा, आंतों के कीड़ों से ग्रस्त रहा, बच्चों को ढोने और हल व गाड़ी खींचने का काम करता रहा, और उसे शायद ही कभी आराम मिलता था। वह कठिन परिश्रम ही था जिससे वह चंचल सुनार हमेशा बचता रहा था, और अब एक बोझ ढोने वाले जानवर के रूप में उसे वही कठिन परिश्रम सहना पड़ा। उसके मालिक ने उसे नपुंसक बना दिया था और उसका जीवन गहन परिश्रम से भरा हुआ था, और अपने अंतिम वर्षों में उसकी दृष्टि भी चली गई थी।

दो जन्मों तक पशु जगत में रहने के बाद उसका पुनर्जन्म मानव जगत में एक नर और मादा के मिश्रित रूप में हुआ। वह गटर में जन्मी एक दासी की संतान था। उसने एकांत और पीड़ामय जीवन व्यतीत किया, नर और मादा दोनों ने उसे त्याग दिया और उसे एक विचित्र प्राणी की तरह माना जाता था।

अपने अगले जन्म में उसका (पूर्व सुनार का) पुनर्जन्म एक स्त्री के रूप में हुआ। अब वह एक स्त्री बन गया था, जो उसकी पूर्व इच्छा का पात्र थी। उस स्त्री का पिता एक निकम्मा गाड़ीवान था जो हर काम में असफल रहा। उसने अपने कर्ज चुकाने के लिए अपनी बेटी को एक अमीर व्यापारी को सौंप दिया। बेटी की विनती के बावजूद, उसे व्यापारी के घर में दासी के रूप में रख लिया गया। वह सोलह वर्ष की थी और बेहद आकर्षक थी। कुछ समय बाद, घर के बेटे को उससे प्रेम हो गया और उसने उसे अपनी दूसरी पत्नी बना लिया। स्वाभाविक रूप से, पहली पत्नी इस व्यवस्था से बहुत असंतुष्ट थी। दासी ने अपनी नई स्थिति से संतुष्ट होकर पति-पत्नी के बीच कलह पैदा करने के लिए हर संभव प्रयास किया। इसके परिणामस्वरूप घर में बहुत झगड़े और कलह हुए, अंततः वह शादी तोड़ने और पति-पत्नी को अलग करने में सफल हो गई।

सुनार के रूप में उसके पिछले बुरे कर्मों का फल तो मिल चुका था। लेकिन उसके द्वारा उत्पन्न इस नए कष्ट का फल उसे भुगतना ही था। दासी का पुनर्जन्म इसिदासी के रूप में हुआ। अपने पिछले जन्म में उसने कलह पैदा की थी और पति-पत्नी को अलग कर दिया था, जिससे उन्हें बहुत दुख और पीड़ा हुई थी। अब उसे हर उस पुरुष के तिरस्कार और अस्वीकृति का सामना करना पड़ा जिससे उसकी शादी हुई। इस ग्रंथ में उन पुण्य कर्मों का उल्लेख नहीं है जो उन्होंने अपने चंचल व्यवहार से पहले किए होंगे, लेकिन उनके पतियों के प्रति उनकी करुणा, शांत स्वीकृति और समर्पण ने उनके पिछले अच्छे कर्मों को फलने-फूलने का अवसर प्रदान किया। परिश्रम और लगन से इसिदासी ने निर्वाण (ज्ञानोदय) प्राप्त किया।

हम सभी इसिदासी की कहानी से सीख ले सकते हैं। समय के साथ, विशेषकर पश्चिमी दुनिया में, नैतिक मूल्यों में गिरावट आई है। युवा लड़के-लड़कियाँ यौन व्यवहार को लेकर बहुत लापरवाह हो गए हैं और मीडिया और टेलीविजन ने विज्ञापनों, फिल्मों और पत्रिकाओं के माध्यम से यौन संबंध का महिमामंडन किया है। जो कभी अनैतिक माना जाता था, अब नैतिक माना जाता है। मानव जाति की अज्ञानता के बावजूद, कर्म का नियम लागू होता है। बुद्ध ने यौन व्यवहार के संबंध में पालन करने के लिए एक बहुत ही सरल नैतिक संहिता निर्धारित की। बौद्ध होने के नाते, हमें न केवल व्यभिचार और बलात्कार से दूर रहने की सलाह दी जाती है, बल्कि किसी भी प्रकार के अनुचित यौन व्यवहार के प्रति भी सचेत किया जाता है। इसमें माता-पिता, रिश्तेदारों और दोस्तों की देखरेख में रहने वालों के साथ संबंध और ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा लेने वाले धार्मिक समुदायों के सदस्यों के साथ संबंध शामिल हैं। बौद्धों को आकस्मिक यौन संबंध में लिप्त नहीं होना चाहिए, बल्कि संयम बरतना चाहिए और अपनी इच्छाओं के आगे झुकने से पहले प्रेम और प्रतिबद्धता पर आधारित सार्थक, दीर्घकालिक संबंध बनाना सुनिश्चित करना चाहिए। बौद्धों को बाल शोषण और आकस्मिक संबंधों के कारण होने वाले विवाह विच्छेद और विघटन को रोकने के लिए भी सक्रिय रूप से काम करना चाहिए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> थेरिगाथा >> थेरिगाथा16.1
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||71|| ------>>>> अगला

16.1 सुमेधा, वारनावती के राजा कोंचा की पुत्री।
उन्होंने भी पूर्व बुद्धों के अधीन संकल्प लिया था और अनेक जन्मों में युग-स्थायी प्रभाव वाले अच्छे कर्म संचित करके ज्ञान प्राप्ति की पूर्ण तैयारी की थी। उनका जन्म कोनागमना बुद्ध के समय एक कुलवासी परिवार में हुआ था। जब वे वयस्क हुईं, तो उन्होंने और उनकी सहेलियों, जो कुलवासी पुत्रियाँ थीं, ने मिलकर एक विशाल उद्यान बनवाया और उसे बुद्ध और उनके संघ को सौंप दिया। इस पुण्य कर्म के फलस्वरूप उनका पुनर्जन्म तैंतीस देवदूतों के स्वर्ग में हुआ। वहाँ दिव्य धन-संपत्ति का आनंद लेते हुए एक शानदार काल व्यतीत करने के बाद, वह एक बार फिर यम देवताओं (देवदूतों) के बीच, फिर तुषिता स्वर्ग के आनंदमय देवताओं (देवदूतों) के बीच, फिर निम्मनराती स्वर्ग के सुखी सृष्टिकर्ता देवताओं (देवदूतों) के बीच, फिर अन्य रचनाओं के संचालक देवताओं (देवदूतों) के बीच जन्म लेकर अंततः देवताओं (देवदूतों) के राजा की रानी बनीं।
उस समय से, जब कश्यप बुद्ध थे, एक धनी नागरिक की पुत्री के रूप में पुनर्जन्म लेकर, उन्होंने एक गृहस्थ भक्त के रूप में उत्कृष्ट पुण्य अर्जित किया और तैंतीस देवताओं (देवदूतों) के बीच एक और पुनर्जन्म प्राप्त किया। अंततः, इस बुद्ध युग में, मंतवती नगर में, राजा कोंचा की पुत्री के रूप में पुनर्जन्म लेकर, उनका नाम सुमेधा रखा गया। और जब वह समझदार हुईं, तो उनके माता-पिता ने वारनावती के राजा अनिकरत्त को उनसे मिलने की अनुमति दे दी। लेकिन बचपन से ही उन्हें अपनी उम्र की राजकुमारियों और दासियों के साथ भिक्षुणियों के आश्रम में जाकर धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश सुनने की आदत थी। अपने दृढ़ संकल्प के कारण वे लंबे समय से जन्म-जन्म के चक्र से भयभीत थीं, धर्म के प्रति समर्पित थीं और इंद्रिय सुखों से विमुख थीं।
इसी कारण जब उन्होंने अपने माता-पिता और रिश्तेदारों का निर्णय सुना, तो उन्होंने कहा, 'गृहस्थी के जीवन में मेरा कर्तव्य नहीं है। मैं संसार त्याग दूंगी (भिक्षुणी बनने के लिए)।' और वे उन्हें मना नहीं सके। उन्होंने सोचा, 'इस प्रकार मुझे संसार त्यागने की अनुमति मिल जाएगी,' और अपने निश्चय पर अडिग होकर अपने बाल काट लिए। फिर भिक्षुणियों से सुनी विधियों के अनुसार अपने बालों का उपयोग करते हुए, उन्होंने शारीरिक आकर्षण के प्रति घृणा पर ध्यान केंद्रित किया और 'अशुभ वस्तुओं' का विचार मन में लाते हुए प्रथम ध्यान (सम्मोहन अवस्था) प्राप्त की। और जब वह इस प्रकार एकाग्र ध्यान में लीन थी, तो उसके माता-पिता उसे विदा करने के लिए उसके कमरे में आए। लेकिन उसने पहले उन्हें, उनके सभी दल और राजा के सभी लोगों को धर्म में विश्वास दिलाया और भिक्षुणियों के आवास में संसार का त्याग करते हुए घर छोड़ दिया।
कुछ ही समय बाद, अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना[1]) में अच्छी तरह स्थापित होकर, और ज्ञानोदय (विमुक्ति, विमुक्ति) के लिए परिपक्व होकर, उसने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को उसके वास्तविक रूप और अर्थ में पूर्ण रूप से समझकर अरहंतत्व (बुद्ध के समान ज्ञानोदय) प्राप्त किया। और अपनी विजय को याद करते हुए,वह परमानंद से भर उठी:

मंतावती में राजा हेरॉन की पुत्री,

उनकी प्रमुख पत्नी से सुमेधा का जन्म हुआ था।

कानून निर्माताओं को समर्पित। (450)

वह एक गुणी और वाक्पटु लड़की थी।

ज्ञानवान और हमारे भगवान बुद्ध की पद्धति में पारंगत

अच्छी तरह से प्रशिक्षित। उसने अपने माता-पिता से बात की।

और बोला: 'अब सुनो, माँ, पिताजी, दोनों! (451)

मैं निर्वाण के प्रति समर्पित हूँ।

क्षणभंगुर वह सब कुछ है जो घटित होता है।

भले ही उसमें किसी देवता (देवदूत) का स्वरूप हो।

तो फिर मुझे इस खाली जीवन का क्या करना होगा?

उस समझ का क्या अर्थ है, जो थोड़ा देती है, बहुत कुछ नष्ट कर देती है? (452)

वासनाएँ सर्प के विष के समान कड़वी होती हैं।

जिस समझदारी के लिए युवा मूर्ख तरसते हैं।

उस वजह से कई रातें दुख में गुज़रीं

वे दु:ख के लोकों में कष्टदायी जीवन व्यतीत करते हैं। (453)

पापी मन वाले, पापी लोग शोक मनाते हैं

जीवन नरक जैसा है। ये सब मूर्ख ही हैं।

कर्म, वचन और विचार में बिना किसी संयम के। (454)

लेकिन मूर्खों में न तो बुद्धि होती है और न ही इच्छाशक्ति।

वे यह नहीं समझ सकते कि दुख किस कारण उत्पन्न होता है।

जब उन्हें सिखाया जाता है, तब भी वे नहीं सीखते; क्योंकि उनका मन आलसी होता है।

आर्यों का चार प्रकार का सत्य जागृत नहीं होता। (455)

हे माता, वे सत्य जो प्रबुद्ध व्यक्ति को ज्ञात हैं,

सर्वश्रेष्ठ, जो बुद्ध ने हमें प्रकट किया है,

वे, यानी बहुसंख्यक लोग, नहीं जानते, और वे

पुनः जन्म लेने में आनंद लें,

और देवताओं (देवदूतों) के बीच पुनर्जन्म लेने की लालसा रखते हैं। (456)

यहां तक कि देवताओं (देवदूतों) के पास भी कोई शाश्वत घर नहीं है।

आवश्यकताएँ अस्थाई होनी चाहिए।

फिर भी वे मूर्ख आत्माएं भयभीत नहीं हैं।

बार-बार कहीं जन्म लेने के लिए आना। (457)

दुःखपूर्ण जीवन के चार मार्ग हैं (चार बुरे गंतव्य)।

और केवल दो ही कल्याण के मार्ग (2 अच्छे गंतव्य) [2]

और इन्हें जीतना कितना मुश्किल है! अगर कोई चार में आ जाए,

उन लोकों में कोई दीक्षा उपलब्ध नहीं है। (458)

(अर्थात, चार बुरे गंतव्यों में मन इतना परिपक्व नहीं होता कि धम्म को समझ सके)

आप दोनों मुझे अनुमति दें, कि मैं अपने संसार का त्याग कर दूं;

और दस शक्तियों के स्वामी (बुद्ध) की धन्य शिक्षा में[3]

बाहरी दुनिया की परवाह किए बिना, मैं जन्म और मृत्यु को जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयास करूंगा। (459)

मैं अनेक जन्मों में आनंद कैसे ले सकता हूँ?

इस निर्जीव शरीर में, आत्मा के बिना झाग?

ताकि मैं प्यास को पूरी तरह से समाप्त कर सकूँ।

मुझे फिर से होने दो, मुझे आगे बढ़ने दो (तपस्वी बनने दो)। (460)

अब बुद्ध का युग है! अभाव का दौर समाप्त हो गया है।

अवसर का! पल जीत लिया!

हे भगवान, मेरे जीवन में ऐसा कभी न हो,

नैतिक उपदेशों (शील) दोनों को कम आंकना।

और पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन!' (461)

सुमेधा ने इस प्रकार कहा, और फिर दोहराया: 'माँ'

और मेरे पिता, मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा।

एक आम महिला होने के नाते मैं अपना व्रत तोड़कर भोजन करती हूँ।

मैं यहीं लेटकर मरना पसंद करूँगा!' (462)

पीड़ित माँ रो रही थी; पिता स्तब्ध था।

दुःख के साथ, उसने उसे समझाने और सांत्वना देने का प्रयास किया।

जो महल के फर्श पर साष्टांग प्रणाम कर लेटा था, (463)

उन्होंने कहा, 'उठो, प्यारे बच्चे। यह उदासी क्यों?'

आपके लिए? आपकी शादी इसलिए हो रही है ताकि आप जाकर राज कर सकें।

वारनावती में, प्रतिज्ञा की गई दुल्हन

राजा अनिकारत्ता का, सुंदर युवक। (464)

तुम उसकी प्रमुख पत्नी, उसकी रानी बनोगी।

नन्हे बच्चे, इस दुनिया को छोड़ना कितना कठिन है!

नैतिक उपदेश (शील) और ब्रह्मचर्य जीवन कठिन हैं। (465)

रानी के रूप में आपको अधिकार प्राप्त होंगे।

धन-दौलत, संप्रभुता और विलासिता।

आपमें से जो इस मामले में सौभाग्यशाली हैं और युवा हैं, आनंद लें।

जीवन के मीठे पल। चलो तुम्हारी शादी में चलते हैं, बच्चे। (466)

तब सुमेधा ने उन्हें उत्तर दिया, 'नहीं, इस तरह नहीं!'

कोई आत्मा, कोई सार, विकास को जन्म नहीं दे सकता।

इनमें से कोई एक होगा — आप चुनिए कि कौन सा:

या तो मुझे इस दुनिया से विदा होने दो, या मुझे मरने दो।

इसलिए, और केवल इसलिए, मैं विवाह करना चुनूंगा। [4] (467)

इस गंदे, अपवित्र शरीर का क्या मूल्य है?

दुर्गंध उत्सर्जित करने वाला, भय का स्रोत, एक थैला

मैल से भरी, रिसती हुई, अशुद्ध त्वचा (468)

इस बीच? जो जानता है उसके लिए इसका क्या महत्व है?

घिनौना शव, मांस से लिपटा हुआ

और रक्त, कीड़ों का निवास स्थान, पक्षियों का भोजन—

ऐसी वस्तु किसे दी जाएगी? (469)

थोड़ी देर में उसे श्मशान घाट ले जाया गया।

जब चेतना शरीर से निकल जाती है, तो यह शरीर वहीं पड़ा रहता है।

जैसे बेकार लकड़ी का लट्ठा, जिससे रिश्तेदार भी मुंह मोड़ लेते हैं। (470)

जिस चीज से उन्हें नहलाना पड़ता है उसे फेंकना

पराई चीजों का भोजन, जिस पर पीछे हटना

स्वयं माता-पिता, उनके रिश्तेदारों की तो बात ही छोड़िए। (471)

उन्हें इस आत्माहीन (अनत्ता संस्कृत अनात्म) शरीर से लगाव है।

वह हड्डियों और नसों से बुना हुआ है, शरीर गंदा है,

अनेक प्रकार के रिसावों से भरा हुआ। (472)

जहां शरीर का विच्छेदन करना है, और उसे पलटना है

सबसे भीतरी बाहरी भाग, गंध से यह साबित हो जाएगा

माँ के लिए भी सहन करना असहनीय है। (473)

मेरे अस्तित्व के कारक, अंग, तत्व,

ये सभी क्षणिक यौगिक हैं, जिनकी जड़ें गहरी हैं।

जन्म में दुख है, और सबसे पहले और अंत में यही बात है।

मैं ऐसा नहीं करूँगा। फिर मैं किससे विवाह करना चाहूँगा? (474)

बल्कि मैं तो दिन-प्रतिदिन मृत्यु का सामना करना चाहूंगा।

तीन सौ भाले मुझे फिर से भेद रहे थे,

अगर ऐसा सौ साल तक भी होता तो

दर्द का अंतिम अंत करो, अन्यथा यह अंतहीन होगा। (475)

समझदार लोग इस सौदे को अंतिम रूप देंगे और मिलेंगे।

पूर्ण विनाश, क्योंकि उसका वचन,

गुरु (बुद्ध) कहते हैं: "लंबी यात्रा

जो लोग मारे जाते हैं, वे बार-बार पुनर्जन्म लेते हैं। (476)

मृत्यु से हमारा सामना अनगिनत तरीकों से होता है।

देवताओं (देवदूतों) और मनुष्यों के बीच, राक्षसों या जानवरों के रूप में,

भूतों के बीच, या नरक के कोठरियों में। (477)

और वहाँ कितने ही अभिशप्त और पीड़ाग्रस्त लोग रहते हैं!

स्वर्ग में भी हमें कोई निश्चित शरण नहीं मिलती।

इससे ऊपर कुछ भी नहीं है, निर्वाण का आनंद। (478)

और उन्होंने उस आनंद को प्राप्त कर लिया है जिसने उनके सभी हृदयों को मोह लिया है।

मैंने उनके पवित्र वचन के प्रति प्रतिज्ञा की है।

जो दस प्रकार की शक्तियों से परिपूर्ण है (बुद्ध), और किसी बात की परवाह नहीं करता,

जन्म और मृत्यु (पुनर्जन्म) को उनसे दूर रखने का प्रयास करो। (479)

हे पिता, आज मैं संन्यास लेने जा रहा हूँ!

मैं खोखली दौलत से कुछ भी नहीं लूंगा!

इंद्रिय-संबंधी इच्छाएँ मुझे विचलित और विक्षिप्त करती हैं, और वे मेरे लिए अभिशप्त हो गई हैं।

ठीक वैसे ही जैसे वह ठूंठ जहाँ कभी ताड़ का पेड़ खड़ा था। (480)

उसने अपने पिता से ऐसा कहा। अब राजा ने...

अनिकारत्ता, अपने प्रेम निवेदन के लिए जा रहा है

उसकी युवा दुल्हन की सहमति नजदीक आ रही थी।

निर्धारित समय पर। लेकिन सुमेधा (481)

उसके मुलायम काले बालों के गुच्छों को नीचे गिरने दिया गया

और फिर एक खंजर से उन्हें काट डाला। फिर बंद कर दिया।

वह दरवाजा जो उसके अपने सीढ़ीदार कमरों की ओर जाता था,

और तुरंत प्रथम ध्यान-उत्साह (ध्यानमग्न अवस्था का आनंद) प्राप्त हुआ। (482)

वह वहीं आनंद में डूबी बैठी थी, जबकि

अनिकारत्ता राजधानी पहुंच गया।

फिर वह अनित्यता के बारे में सोचने लगी।

अपने विचार का विकास करते हुए। (483)

इस बीच अनिकारत्ता तेजी से आगे बढ़ता है

महल की सीढ़ियाँ, रत्नों की शानदार श्रृंखला से सजी हुई।

और सोना, और झुककर सुमेधा से प्रेम निवेदन करता है। (484)

'मेरे राज्य पर शासन करो और मेरी संपत्ति का आनंद लो।'

और शक्ति। आप अमीर, खुश और इतने युवा हैं।

जीवन और प्रेम से मिलने वाली खुशियों का आनंद लें।

यद्यपि उन्हें जीतना कठिन होता है और कुछ ही लोग उन्हें जीत पाते हैं। (485)

मैं अपना राज्य आपको समर्पित करता हूँ!

आप अपनी इच्छानुसार इनका निपटान कर सकते हैं, और ढेर सारे उपहार दे सकते हैं।

निराश मत हो। तुम्हारे माता-पिता परेशान हैं। (486)

इस प्रकार सुमेधा के लिए, जिसके लिए इच्छाएँ

कामुक प्रेम व्यर्थ था, न ही किसी काम का।

गुमराह करने के लिए, उत्तर दिया: 'हे मत करो'

इस कामुक प्रेम के लिए आपकी इच्छाएँ।

सभी खतरों और इंद्रियों के सुखों को देखो। (487)

विश्व के चारों महाद्वीपों के राजा मंधाता

उसके पास अपनी इंद्रियों को संतुष्ट करने के लिए अधिक धन था

अन्य किसी भी व्यक्ति की तुलना में, फिर भी उनका निधन हो गया

असंतुष्ट, उसकी इच्छाएँ अधूरी रह गईं। (488)

नहीं, और वर्षा के देवता ने सातों प्रकार की वर्षा की।

पृथ्वी और आकाश रत्नों से भर जाने तक, फिर भी ऐसा ही होता रहेगा

इंद्रियों की लालसा बढ़ती है, और तृप्त न होने पर मनुष्य मर जाता है। (489)

'इंद्रिय-इच्छाएं तलवार की तेज धार के समान होती हैं।'

'जैसे सांपों के सिर झपटने के लिए तैयार हों।'

'जैसे धधकती मशालें,' और 'जैसे कुतरी हुई नंगी हड्डियाँ।' (490)

इंद्रियों की इच्छाएँ क्षणभंगुर और अस्थिर होती हैं।

पीड़ा से भरी और विष से लबालब, भयानक

छूने पर इतना तीव्र जलन होती है जैसे गर्म लोहे का गोला।

उनकी जड़ भी हानिकारक है और उनका फल भी हानिकारक है। (491)

जैसे 'फल' पर्वतारोही को पतन की ओर ले जाता है,

ये इंद्रिय-इच्छाएं हैं; बुराई 'मांस के लोथड़ों' के समान है।

वे लालची पक्षी एक दूसरे से छीन लेते हैं;

जैसे धोखा देने वाले 'सपने'; जैसे 'उधार ली गई वस्तुएँ' जिन्हें वापस प्राप्त किया गया हो। (492)

'जैसे भाले और बरछी वासनाओं की इच्छाएं हैं,'

'एक महामारी, एक फोड़ा, एक अभिशाप और एक मुसीबत।'

धधकते कोयलों की भट्टी, 'दुख का मूल कारण'

हत्यारा और भयावह भय का स्रोत। (493)

इसी प्रकार इंद्रिय-इच्छाओं की तीव्रता भी बढ़ गई है।

मोक्ष के मार्ग में आने वाली उन बाधाओं की घोषणा कर दी गई है।

जाओ, मुझे अकेला छोड़ दो, क्योंकि मुझे खुद पर भरोसा नहीं है।

जब तक इस संसार में मेरा कुछ हिस्सा और भाग्य शेष है। (494)

दूसरा मेरे लिए क्या करेगा? मेरे लिए

जिसका सिर आग की लपटों में लिपटा है, जिसके कदमों का पीछा किया जा रहा है

उम्र और मृत्यु से भी नहीं रुकता। कुचलने के लिए

मुझे उनके लिए पूरी तरह से प्रयास करना होगा। (495)

फिर अपने दरवाजे पर आकर उसने राजा को देखा।

उसका प्रेमी और उसके माता-पिता वहाँ बैठे थे

और आंसू बहाते हुए। और एक बार फिर उनसे बात की: (496)

उन्हें अभी भी दुनिया भर में भटकना बाकी है।

जो एक बार फिर बेसुध होकर अपने आँसू बहाते हैं,

पिता की मृत्यु पर रोने का कोई अंत नहीं है।

या तो भाई मारा जाए, या फिर उन्हें स्वयं मरना पड़े। (497)

आपको याद आता है कि कैसे कहा गया था कि आँसू

और दूध और रक्त इस संसार में अनंत काल तक बहते रहते हैं।

और याद रखें कि यह हड्डियों और खून का एक बंडल है।

उन प्राणियों द्वारा जो संसारों में विचरण करते हैं। (498)

चार महासागरों की तुलना को याद रखें

आंसुओं, दूध और खून के प्रवाह के साथ।

'एक आदमी की हड्डियों के विशाल ढेर' को याद रखें

केवल एक युग से, विपुल (पर्वत) के बराबर; (499)

और महान भारत (जम्बुद्वीप) भी पर्याप्त नहीं होगा।

मोल्ड की छोटी-छोटी गिनती वाली गेंदें प्रदान करने के लिए,

जिससे सभी पूर्वजों की गणना की जा सके

अपने जीवन चक्र का, अनंत संसार में। (500)

याद है वो छोटे-छोटे तिनकों के टुकड़े?

और पेड़ की शाखाएँ और टहनियाँ कभी भी पर्याप्त नहीं हो सकती थीं।

अपने पिता के लिए अनंत काल तक गिनती करो।' (501)

याद है वह दृष्टांत कैसे सुनाया गया था?

पूर्वी समुद्रों में रहने वाले मूर्ख कछुए के बारे में,

या फिर समय बीतने के साथ-साथ अन्य महासागर भी,

बहते हुए जुए के छेद से अपना सिर बाहर निकालते हुए;

मानव जन्म की संभावना इतनी दुर्लभ है। [5] (502)

शरीर से संबंधित दृष्टांत को भी याद रखें।

थूक का वह 'झाग का गुच्छा', जिसका कोई सार नहीं होता,

बहते रहना। यहाँ क्षणभंगुरता के पाँच कारक देखें।

और हे नरक को मत भूलो जहाँ बहुत से लोग कष्ट भोगते हैं। (503)

याद है हम श्मशान घाटों को कैसे भर देते हैं?

अब मृत्यु, अब कहीं और पुनर्जन्म।

'मगरमच्छों' के बारे में क्या कहा गया था, याद है?

और उन खतरों का हमारे लिए क्या मतलब था, और हे!

आप आर्यों के चार सत्यों को ध्यान में रखें। (504)

अब शाश्वत जीवन का अमृत (अमता/अमृत)[6] ज्ञात है

आप कामुकता के कड़वे पेय से कैसे संतुष्ट हो सकते हैं?

सेक्स समेत सभी इंद्रिय सुख कड़वे होते हैं।

और पांचों इंद्रियां कड़वी हैं (जो कड़वी पीड़ा की ओर ले जाती हैं) (505)

अब शाश्वत जीवन का अमृत ज्ञात हो चुका है।

आप कामुकता के उग्र आवेगों से कैसे संतुष्ट हो सकते हैं?

सेक्स समेत सभी इंद्रिय सुख तीव्र गति से प्रवाहित हो रहे हैं।

क्षय, उबलना, शोक और बुखार (506)

वहाँ है, जहाँ शत्रुता नहीं है! ओह कैसे

क्या आप इंद्रियों के सुखों से संतुष्ट हो सकते हैं?

तुम अनेक शत्रुओं के प्रकोप से खतरे में हो—उनका प्रकोप

या राजा का लालच, या चोर का, या प्रतिद्वंद्वी का, हानि

आग से हो या पानी से—हाँ, कितने सारे दुश्मन! (507)

ज्ञानोदय (मोक्खा, मोक्ष) को जानना बाकी है!

हे, तुम इंद्रिय सुखों से कैसे संतुष्ट हो सकते हो, जिनमें

क्या झूठ, बंधन और मृत्यु? हाँ, उन्हीं खुशियों में।

मृत्युदंड और जल्लाद घात लगाए बैठे हैं। जो लोग भोग-विलास करना चाहते हैं

उस समय से उनकी वासनाओं और आवश्यकताओं के कारण उन्हें कष्ट भोगना पड़ेगा। (508)

जो व्यक्ति भूसे की मशालें लंबे समय तक थामे रहेगा, वही उन्हें जलाएगा।

और चलिए नहीं चलते। तो, इस दृष्टांत में,

इंद्रिय वशीकरण उन्हें जलाता है जो इसे जाने नहीं देते। (509)

किसी व्यर्थ आनंद के कारण त्याग मत करो।

अर्थ की दृष्टि से, बड़ी खुशी उदात्त होती है,

नहीं तो, मछली की तरह आप कांटा निगल जाएंगे।

और फिर खुद को बर्बाद हुआ पाना (510)

अपने आप को इंद्रिय-इच्छाओं के वश में रखो, और न ही

तुम स्वयं उनसे बंधे रहो, जैसे कुत्ता बंधा रहता है।

जंजीर से बंधे हुए; अन्यथा वे काम चला लेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं।

तुम भूखे-प्यासे बहिष्कृत के साथ उस कुत्ते को खा गए। (511)

मैं एक बार फिर कहता हूँ, अथाह पीड़ाएँ

और मन की अनेक कष्टदायक पीड़ाएँ

तुम कामुक जीवन के बंधन में जकड़े हुए व्यथित हो। त्याग करो।

इंद्रिय सुखों का त्याग करो! वे नष्ट हो जाते हैं। (512)

एक ऐसी चीज है जो कभी बूढ़ी नहीं होती! ओह, कैसे

क्या आप इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से संतुष्ट हो सकते हैं?

इतनी जल्दी वह उम्र? क्या सभी चीजें पुनर्जन्म नहीं लेतीं?

चाहे वह कहीं भी हो, क्या वह बीमारी और मृत्यु से ग्रस्त है? (513)

यह जो कभी बूढ़ा नहीं होता, जो कभी मरता नहीं,

यह कभी बूढ़ा न होने वाला, कभी न मरने वाला मार्ग—

वहां कोई दुख नहीं आता, कोई शत्रु नहीं।

न ही यहाँ कोई भीड़ है; न कोई बेहोश होता है और न ही कोई असफल होता है।

न तो कोई भय आता है, न ही कोई ऐसी चीज जो पीड़ा देती हो—(514)

इसी मार्ग पर, अमृत के मार्ग (शाश्वतता/अमरता के मार्ग) पर, चले गए हैं

बहुत सारे। और आज भी, इसे जीतना बाकी है।

लेकिन केवल एक ऐसे जीवन से जो पूरी तरह से

भक्ति में समर्पित। परिश्रम न करो।

और तुम इसे प्राप्त नहीं कर पाओगे!' सुमेधा ने ऐसा कहा (515)

उसने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा कि उसे किसी भी चीज़ में कोई खुशी नहीं मिली।

वे गतिविधियाँ जो एक जीवन से दूसरे जीवन की ओर ले जाती हैं,

और, इस प्रकार अनिकारत्ता के मन में

यह कहते हुए उसने अपने लंबे बाल फर्श पर गिरा दिए। (516)

फिर वह हाथ जोड़कर फैलाते हुए उठ खड़ा हुआ।

और उसने अपने पिता से उसके लिए इस प्रकार विनती की:

हे सुमेधा को संसार छोड़ने (तपस्वी बनने) की अनुमति दो।

ताकि वह सत्य और मोक्ष/निर्वाण का निश्चय कर सके और उसे देख सके!' (517)

माता-पिता ने अनुमति दे दी और उन्होंने पुरोहिती दीक्षा प्राप्त कर ली।

वहाँ रुकने और भय तथा दु:ख को बढ़ाने से डर लगता है।

अंतर्दृष्टि की छह शाखाएँ [7] उसने महसूस कीं,

एक शिक्षार्थी के रूप में, सर्वोच्च फल प्राप्त करना। (518)

यह कितना अद्भुत है! कितना चमत्कारी है!

राजा की पुत्री के लिए निर्वाण!

उसके पूर्व जन्मों में उसकी स्थिति और आचरण,

जैसा कि उसने अपने अंतिम जीवन में बताया था, ये बातें थीं: (519)

'जब कोनागमना यहाँ बुद्ध थे,

और एक नए निवास स्थान में, ऑर्डर के पार्क में,

मेरे दो दोस्तों और मैंने उसके घर में रहना शुरू कर दिया।

गुरु के उपयोग के लिए एक विहार (मठ) का निर्माण किया। (520)

और कई दशकों और सदियों के जीवन

हम देवताओं (देवदूतों) के बीच रहते थे, मनुष्यों की तो बात ही छोड़िए। (521)

हमारी महिमा और हमारी शक्ति महान है।

मुझे न तो देवताओं (देवदूतों) की बात करने की आवश्यकता है और न ही पृथ्वी पर प्रसिद्धि की।

क्या मैं एक सम्राट की पत्नी नहीं थी?

सात खजानों में से खजाना-महिला? (522)

गुरु (बुद्ध) द्वारा सिखाए गए धम्म (शाश्वत सत्य) में धीरज रखना –

यही कारण था, यही स्रोत था, यही जड़ थी।

यह लंबी कारण-कार्य श्रृंखला की पहली कड़ी है।

यदि हम धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) से प्रेम करते हैं तो यही निर्वाण है। (523)

इस प्रकार कार्य करने वाले वे लोग जो उस पर भरोसा रखते हैं,

हे परम ज्ञान, अपनी सभी इच्छाओं और आशाओं को त्याग दो।

वापस अस्तित्व में आने का—और इस प्रकार मुक्त होने का

वे सभी वासनाओं के दाग से शुद्ध हो जाते हैं। (524)

[1] विपश्यना: यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक सर्वोच्च अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें अनासक्ति (समता/समभाव) के साथ आंतरिक घटनाओं (श्वास, शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ और मन) पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिससे आत्म-जागरूकता और ज्ञानोदय प्राप्त होता है।
[2] 'नरक' में पुनर्जन्म, पशु के रूप में, भूत के रूप में, राक्षस के रूप में, ये चार बुरे गंतव्य ('शुद्धिकरण जीवन') हैं; अच्छे गंतव्य मनुष्य या देवदूत (देवदूत) के रूप में हैं।
[3] दशबल: तथागत की दस विशिष्ट शक्तियाँ हैं: (1) वे सही और गलत अवसरों को भली-भांति जानते हैं; (2) वे सभी कर्म-श्रृंखलाओं के प्रभाव को भली-भांति जानते हैं; (3) किसी भी कार्य को पूरा करने की विधियाँ; (4) संसार के तत्व (डेटा); (5) प्राणियों की विभिन्न प्रवृत्तियाँ, झुकाव; (6) प्राणियों की क्षमताएँ; (7) सभी चिंतनशील अनुशासनों की प्रकृति और प्रक्रिया; (8) पूर्व जन्म। (9) उसे 'दिव्य दृष्टि' प्राप्त है; (10) उसने अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) के बौद्धिक ज्ञान (विमुक्ति, विमुक्ति) को प्राप्त कर लिया है।
[4] वरेय्यम। जैसा कि ऊपर बताया गया है, शाब्दिक रूप से, 'हे बालक, तुम्हारे लिए चुनाव हो,' उच्च जीवन में विवाह के लिए प्रयुक्त शब्द, चाहे इस मामले में स्त्री की कोई राय हो या न हो।
[5] शरीर (रूप) गंगा में बहते झाग के थक्के की तरह सार (आत्मा) से रहित है।
[6] अमृत = अमतान, जिसे इस कृति में अन्यत्र 'अमृत' के रूप में अनुवादित किया गया है, जो इसका व्युत्पत्ति संबंधी समकक्ष है। आमतौर पर निर्वाण के अनेक शब्दों में से एक माना जाता है, यहाँ टीका परंपरा द्वारा इसे धम्म से जोड़ा गया है - 'धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का अमत, जिसे स्वयं बुद्ध ने अपनी महान करुणा से हमारे लिए लाया है'।
[7] इद्धि (जादुई क्षमता), किसी भी स्थान की शुद्ध श्रवण शक्ति, दूसरों के विचारों का ज्ञान, पूर्व जन्मों (पुनर्जन्मों) की स्मृति, अन्य प्राणियों के पूर्व जन्म, भीतर आसवों (इंद्रिय इच्छाओं) का निवारण, अर्थात् पवित्रता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> टिप्पणीकार-एनवोई
श्रीमती राइस डेविड्स द्वारा 1909 के पुरातन अनुवाद से अनुकूलित,
www.tipitka.org पर पाली टिपिटक के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------ ||टिप्पणीकार-एनवोई|| ------>>>> अगला

टिप्पणीकार-परिशिष्ट

धर्मपरायण धर्म के माध्यम से लोगों के भजन

वे वास्तविक संतान और उत्तराधिकारी बन गए।

मुख से उत्पन्न, उस महान गुरु (बुद्ध) के द्वारा।

धम्म के राजा, धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) की संतान बने।

सभी सद्‌गुणों में श्रेष्ठ, अरहंतों,

जिसने वह सब कुछ संभव करवाया जो संभव था—

ये भजन, अन्ना (प्रबुद्ध अवस्था) के समय उनके द्वारा कहे गए शब्द।

उन्होंने घोषणा की थी, या जब भी की थी,

भिक्षु सुभूति की कविता से शुरू करते हुए,

थेरिका के नेतृत्व में थेरिस भजन के साथ-

ये सभी बातें संघ के नेताओं ने स्वीकार कीं।

और एक क्रमबद्ध धारावाहिक में संकलित किया गया,

थेरागाथा-थेरिगाथा नाम दिया गया।

उस कार्य के महत्व को स्पष्ट करने के लिए

तीन पुरानी टीकाएँ अभी भी मौजूद हैं।

मैंने इस व्याख्या को करने का प्रयास किया है।

जिसकी रचना करना, जहाँ भी उपयुक्त हो,

मैंने उच्चतम अर्थ को व्यक्त करने का प्रयास किया।

मैंने इसका नाम परमत्था-दीपानी रखा;

जिसका संपूर्ण कार्य अब पूर्णतः संपन्न हो चुका है,

व्यवस्थित निर्णय द्वारा व्यवस्था की जाती है,

पवित्र ग्रंथ के पाठ के लिए,

अध्याय संख्या बानवे में।

इस प्रकार ऐसी अच्छी चीजों की प्रभावकारिता से

जैसा मुझे दिया गया है, मैंने उसे लागू किया है।

क्या मैंने वचन की महिमा को उजागर किया है?

जगत के स्वामी की व्यवस्था;

कि वे समस्त सत्य में अपनी शुद्ध प्राप्ति के द्वारा

और सद्‌गुण का स्वाद सभी मनुष्य चख सकते हैं।

आत्मज्ञान का सार (विमुक्ति, विमुक्ति)।

बुद्ध के वचन और धर्म सदा अमर रहें।

और यह सदा आदरणीय रहे।

हर उस प्राणी द्वारा जिसमें जीवन और सांस है!

और मौसम के देवता उचित समय पर कृपा करें।

धरती पर वर्षा भेजो, और सर्वशक्तिमानों की कृपा हो।

धम्म (धर्म) के मार्ग से संसार पर शासन करो।

धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के प्रेमियों के रूप में!

इस प्रकार, पादरा-तीत्थ-विहार (मठ) में निवास करने वाले आचार्य धम्मपाला थेरा द्वारा थेरिगाथा पर की गई टीका समाप्त होती है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 28.यशोधरा, भगवान बुद्ध की पत्नी

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

<<<< पिछला । अगला >>>>

यह पृष्ठ वास्तव में अपदाना ग्रंथ से संबंधित है। यह भगवान बुद्ध की पत्नी, यशोदरा के बारे में है, जिन्हें यशोवती, भद्धकंचना या बिम्बादेवी भी कहा जाता है। वे अपनी सास, रानी महा-प्रजापजी-गोतमी के साथ भिक्षुणी बन गईं और भिक्षुणियों के लिए बने अलग मठ में रहने लगीं। उन्होंने धम्म के मार्ग पर चलते हुए सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया। बुद्ध के परिवार के बारे में बौद्ध धर्म से संबंधित अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न 20 भी देखें ।
78 वर्ष की आयु में अपने शरीर त्यागने के दिन उन्होंने ये बातें कहीं:

28. यशोदरा (बुद्ध की पत्नी)

एक समय पुरुषों का नेता राजगाह शहर में एक पहाड़ी गुफा में ठहरा हुआ था।

जो सुंदर और समृद्ध था। [952]693

उस समय यही तर्क दिया गया था।

उस नगर में निवास करने वाली यशोधरा नामक भिक्षुणी द्वारा,

एक सुंदर मठ के अंदर [वहाँ]: [953]

"नंदा, राहुल (पुत्र) और भद्दा; साथ ही दो प्रमुख अनुयायी; सुद्धोदन महाराजा (राजा और ससुर)।"

और गोतमी प्रजापति (रानी, बाद में भिक्षुणियों की प्रमुख); [954]

महान ख्याति के महान थेरा; और महान शक्तियों वाली थेरी:694 वे शांतिपूर्ण [निर्वाण] में चले गए हैं, दीपक की लौ की तरह निशानहीन। [955]

जब तक संसार का स्वामी जीवित है, मैं भी उस शांतिपूर्ण मार्ग पर चलूंगा।" और इन सब बातों पर विचार करने के बाद,

उसने अपने जीवन के अंत का पूर्वाभास कर लिया था। [956]

यह पूर्वाभास करते हुए कि जीवन के सभी तत्व उसी दिन नष्ट हो जाएंगे, वह अपने आश्रम से निकल पड़ी।

अपना वस्त्र और कटोरा लिए हुए। [957]

एक लाख 695 भिक्षुणियों द्वारा सम्मानित, [यशोधरा नामक भिक्षुणी,] अत्यंत शक्तिशाली, अत्यंत बुद्धिमान,

[तब] संबुद्ध के पास गया। (1) [958]

संबुद्ध की पूजा करने के बाद,

पहिए के निशान वाले [पैरों के तलवों] पर, एक तरफ बैठे हुए [उसके बगल में]

उसने शिक्षक से ये शब्द कहे: (2) [959]

693 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

694 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

695 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

अब मेरी उम्र अठहत्तर वर्ष हो गई है, बुढ़ापे का अंतिम चरण आ चुका है;

मैं महान ऋषि को रिपोर्ट कर रहा हूँ:

मैंने गुफा में [संतत्व] प्राप्त किया है। (3) [960]

अब मेरे लिए बुढ़ापा परिपक्व हो चुका है;

सचमुच मेरा जीवन तुच्छ है। मैं तुम्हें सब कुछ त्यागकर चला जाऊंगा।

मेरी शरण स्वयं में ही बनी है। (4) [961]

बुढ़ापे के अंतिम दिनों में,

मृत्यु शरीर को टुकड़ों-टुकड़ों में तोड़ देती है;

आज रात को, महान नायक,

मैं निर्वाण प्राप्त करूँगा। (5) [962]

जहां न जन्म है, न बुढ़ापा, न बीमारी और न मृत्यु, हे महान ऋषि, मैं उस महान नगर की ओर जा रहा हूँ।

[जो,] बिना शर्त, उसकी कोई मृत्यु नहीं होती। (6) [963]

इस विशाल जनसमूह में,696 ये सभी शिक्षक का आदर करते हैं,697 और जानते हैं कि प्रत्येक अपूर्णता

आमने-सामने क्षमा की जाती है, ऋषि। (7) [964]

पिछले जन्मों में (पूर्व जन्मों में) एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना।

अगर मैंने कभी आपको परेशान किया हो,699

मैं इसकी घोषणा कर रहा हूँ, महान नायक;

कृपया मेरी अपूर्णता को क्षमा करें। (8) [965]

उसकी बात सुनकर ऋषियों के स्वामी (बुद्ध) ने 700 कहा: "मैं तुमसे इससे बेहतर और क्या कह सकता हूँ?

आप निर्वाण कब प्राप्त करेंगे? [966]

अब अपनी महाशक्तियों का प्रदर्शन करो, हे मेरे विधान के कर्ता;

व्यवस्था में संदेह को रहने दो

सभी सभाओं के लिए काट दिया जाए।"702 (9) [967]

696 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

697, अर्थात् तैंतीस देवता।

698 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

699 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

700 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

702 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

ऋषि के वचन सुनकर, बौद्ध भिक्षुणी यशोदरा ने ऋषियों के राजा की आराधना की।

[तब] ने [बुद्ध] से यह भाषण दिया: [968]

मैं यशोदरा हूं, हीरो;

घर में मैं तुम्हारी मुख्य रानी थी,703

शाक्य वंश में जन्मा,

महिलाओं के बीच स्थापित.704 (10) [969]

हे वीर, आपके घर में, मैं

वह नेता था, सबका स्वामी था।

वहाँ मौजूद [महिलाओं की संख्या]

एक लाख छियानवे. (11) [970]

वे सभी महिलाएं, जो सौंदर्य और शालीनता के गुणों से परिपूर्ण हैं, युवा और सुभाषी हैं, आदर करती हैं...

मुझे, जैसे लोग देवताओं की पूजा करते हैं।705 (12) [971]

शाक्यन पुत्र के घर में हजार कन्याओं की नेता,

सुख और दुख में वे एक समान हैं,706

जैसे देवता [उस बगीचे में जिसका नाम] “आनंद” है। (13) [972]

इच्छा के सार से परे, सौंदर्य के सार के रूप में स्थिर,

सुंदरता के मामले में उनका कोई मुकाबला नहीं है।

विश्व के नेता के अलावा।" (14) [973]

इन शब्दों से शुरू होने वाले शब्द बोलते हुए, आकाश में उठकर,

यशोदरा ने विविध प्रकार के प्रदर्शन किए।

बुद्ध की अनुमति से शक्तियाँ,707। [974]708

संबुद्ध की उपासना करते हुए, उसने गुरु को अलौकिक शक्तियाँ दिखाईं।

उसने असाधारण महाशक्तियों का प्रदर्शन किया।

703 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

704 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

705 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

706 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

707 puṇṇā ti nāmaŋ

708 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

709 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

710 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

विविध, विभिन्न रूपों वाला। (15)711

शरीर ब्रह्मांड जितना विशाल है,712

उसने उत्तर में महाद्वीप713 को अपना सिर बनाया; पूर्व और पश्चिम को अपने पंख; और भारत को अपना धड़ बनाया; (16) [975]

पूंछ के पंख: दक्षिणी महासागर; [अन्य] पंख: विभिन्न नदियाँ;

उसकी आंखें चांद और सूरज जैसी थीं।

[उसका] प्रतीक ब्रह्मांडीय माउंट मेरु था। (17) [976]

[उसकी] चोंच में, दुनिया के छोर पर स्थित पर्वत,714 [वह] एक पेड़715 को उसकी जड़ों सहित ले जा रही थी। उसके पास आकर, [उसे] पंखा झलते हुए,]

वह विश्व नेता की पूजा कर रही है। (18) [977]

उसने स्वयं को हाथी, घोड़ा, पर्वत, सागर, चंद्रमा और सूर्य, मेरु पर्वत का रूप धारण किया।

और शकरा, [देवताओं का राजा]। (19) [978]

उसने हजार गुना संसार को खिलते हुए कमलों से ढक दिया,717 [और फिर कहा,] "मैं यशोदरा हूँ, वीरांगना;

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे आँखों वाले।" (20) [979]

और ब्रह्मा (प्रधान देवदूत) का रूप प्रकट करते हुए, उन्होंने पुण्य के सिद्धांत का प्रचार किया;718 "मैं यशोदरा, वीरांगना हूँ;

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे दृष्टिपूर्ण।" (21) [980]

711 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

712 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

713 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

714 डांटो , या "वश में किया हुआ"

715 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

716 vimutt'o

717 सिंगी-निक्खा-सवण्णो , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

718 ये पंक्तियाँ (पीटीएस में 41 अक्षर, बीजेटीएस में 40 अक्षर [जो पुराणजतिलेहि के बाद 'च' को छोड़ देता है]) पीटीएस और बीजेटीएस दोनों द्वारा एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत की गई हैं, हालांकि वे दो पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ती हैं और मुझे यह समझ नहीं आ रहा है कि इस "श्लोक" को छंद के अनुसार कैसे समझा जाए। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण में विकृत हो गया है? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे सटीक अनुवाद का प्रयास किया है , अर्थात् 12-12-12-12 छंद (जो संचरण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों के लोप [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों के लोप [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले छंद-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूलभूत इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

मैंने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (22) [981]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (23) [982]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

आपकी उपस्थिति में, हे महान नायक। (24) [983]

विश्व-स्वामियों, 719 सभी बुद्धों के साथ मेरी मुलाकात आप लोगों को अच्छी तरह से दिखाई दी; 720 उनके प्रति मेरी व्यापक सेवा

यह आपके लिए था, हे महान ऋषि। (25) [984]

हे ऋषि, मेरे द्वारा पूर्व में किए गए अच्छे कर्मों को याद कीजिए; उनसे मुझे पुण्य प्राप्त हुआ था।

हे महान नायक, आपके लिए। (26) [985]

मैंने कदाचार से परहेज किया, बाधा उत्पन्न की 721

[नौ] असंभव स्थान;722

मैंने जीवन का बलिदान दिया है।

हे महान नायक, आपके लिए। (27) [986]

मैंने स्वयं को पत्नी बनने के लिए समर्पित कर दिया।

कई दसियों अरब गुना। मुझे इस बात की कोई चिंता नहीं थी।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (28) [987]

मैंने स्वयं को सेवा में समर्पित कर दिया, कई दसियों अरब बार। मुझे इस बात का कोई दुख नहीं था।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (29) [988]

719 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

720 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "

721 #23, ऊपर

722 शाब्दिक अर्थ, " बीस मिलियन लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है " धम्म की अंतर्दृष्टि", " धम्म में प्रवेश ", " धम्म की समझ " , या "धम्म में प्रवेश " , शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

723 y'akkho

मैंने कई दसियों अरब बार भोजन उपलब्ध कराने के लिए खुद को समर्पित किया। मुझे इस बात का कोई दुख नहीं था।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (30) [989]

मैंने तुम्हें अपने सारे जीवन दे दिए हैं, कई दसियों अरब बार। मैं स्वयं को भय से मुक्त करूँगा।

मैं अपना जीवन [एक बार फिर] त्याग दूँगा। (31) [990]

हे महान ऋषि, आपके लिए मैं एक स्त्री की चीजों को नहीं छुपाती, विभिन्न प्रकार के कई वस्त्रों को छुपाती हूँ।

725 [मेरे] अंगों पर लगे आभूषण। (32) [991]

धन-दौलत और अनाज, गाँव और छोटे कस्बे भी त्याग दिए गए हैं।

खेत और बेटे और बेटियाँ [भी]

हे महान ऋषि, त्याग दिया गया है। (33) [992]

हाथी, घोड़े, गायें, गुलाम और नौकरानियाँ सभी को अनगिनत मात्रा में त्याग दिया गया है।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (34) [993]

मुझे जो भी देने को कहा जाएगा

मैं भिखारियों को दान के रूप में वह देता हूँ; मुझे किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं दिखती।

अंतिम उपहार देने से। (35) [994]

मुझे 727 बीमारियों का अनुभव हुआ है

इस बहुविविध अस्तित्व में अनगिनत प्रकार के लोग मौजूद हैं।728

हे महान नायक, आपके लिए। (36) [995]

मुझे सुख-सुविधाएं प्राप्त करने में कोई रोमांच नहीं मिलता;

मुझे 729 परेशानियों से कोई परेशानी नहीं होती। मैं हर जगह संतुलित रहता हूँ।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (37) [996]

[दोनों] का अनुभव करने के बाद

724 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, "वे लोग जिनके पास नहीं है"

725 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

726 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

727 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे bhikkhunī Sukkā पढ़ता है।

728 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

729 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ आप पढ़ रहे हैं

मार्ग में सुख और दुख दोनों का सामना करते हुए, महान ऋषि ने ज्ञानोदय प्राप्त किया।

वह शिक्षा जिसके लिए बुद्ध ने प्रयास किया। (38) [997]

आपके और मेरे द्वारा अन्य विश्व-स्वामियों से बहुत मुलाकातें हुईं, चाहे आप ब्रह्मा हों या कोई और।

गौतम बुद्ध, 733 विश्व के नेता। (39) [998]

मैंने बहुत सारी सेवाएँ कीं।

हे महान ऋषि, आपके लिए;

जब आप बुद्ध की शिक्षाओं की खोज कर रहे थे,734

मैं [हमेशा] आपका परिचारक था। (40) [999]

एक लाख युग [और]

चार अगणनीय [युग]

अतः, दीपांकर, महान नायक,

विश्व के नेता का जन्म हुआ। (41) [1000]

पास के किसी देश में, उसे आमंत्रित करते हुए, उस दिवंगत आत्मा के प्रसन्न मन वाले लोग सफाई कर रहे हैं।

जिस सड़क से वह आ रहा है। (42) [1001]

उस समय सुमेधा नाम का एक ब्राह्मण था। वह मार्ग तैयार करवा रहा था।

उस सर्वज्ञ के लिए जो आ रहा था। (43) [1002]

उस समय मैं एक कुंवारी लड़की थी, जो एक ब्राह्मण परिवार में जन्मी थी और सुमित्ता नाम से जानी जाती थी।

मैं उस सभा में गया। (44) [1003]

शिक्षक को अर्पित करने के लिए नीले कमल के आठ मुट्ठी भर फूल (735) के साथ

सभी लोगों के बीच

मैंने उस भयंकर [तपस्वी] ऋषि को देखा।736 (45) [1004]

730 शाब्दिक अर्थ, "भविष्य में" (एकवचन)

731 सम्मुखा , अर्थात् "एक साथ"

732 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

733 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca ("और आप सभी आपकी सेवा करेंगे")

734 में जटाम्ह का पाठ बीजेटीएस द्वारा पीटीएस अजता ("हम अजन्मे हैं;" इसका गलत अर्थ है अजतो "वह अजन्मा है")

735 °putta° शाब्दिक अर्थ, "पुत्र"

736 लिट., "हर समय हम नहीं हैं..."

उसे छाल के ऊपर बैठे हुए देखकर,737 उत्कृष्ट738 और मनमोहक,739 तब मैंने [अपने मन में इस प्रकार सोचा:]

"[यह] मेरा जीवन फलदायी हो रहा है।" (46) [1005]

उस समय मैंने उस ऋषि को देखा

वह प्रयास [जो उस समय] फलदायी हो रहा था;

पिछले कर्मों के कारण, मेरा

संबुद्ध में हृदय प्रसन्न हुआ। (47) [1006]

मेरे हृदय को और भी प्रसन्न करते हुए, मैंने कहा, "हे उच्च विचारों वाले ऋषि,

कोई और उपहार न देखकर [देने के लिए]

मैं तुम्हें फूल दे रहा हूँ, ऋषि।740 (48) [1007]

हे ऋषि, आपके लिए पाँच मुट्ठी भर हैं;

शेष तीन741 मेरे लिए हैं।

इस [उपहार] के माध्यम से सफलता मिले।

हे ऋषि, आपके जागरण के लिए। (49) [1008]

चौथा पाठ भाग

तब उस ऋषि ने, ज्ञानोदय के लिए, फूल लेकर लोगों के बीच पूजा की।

हे प्रसिद्ध, महान ऋषि 745 जो आ रहे थे। (50) [1009]

महान ऋषि [जिनका नाम] दीपांकर था, ने [उन्हें] लोगों के बीच देखकर [भविष्य में बुद्धत्व प्राप्त होने की] भविष्यवाणी की।746

[उस] ऋषि के लिए जिसका मन ऊँचा है। (51) [1010]

महान ऋषि दीपांकर ने भविष्यवाणी की कि मेरा कर्म असंख्य युगों तक जारी रहेगा।

737 रीडिंग cikkhallabhūmimasuciṃ with BJTS for PTS cikkhallabhūmiŋ gamanaŋ ("कीचड़ भरे रास्तों पर जाना")

738 reading pubbakammabalena no with BJTS for PTS pubbakammaphalan tato ("पिछले कर्मों के फल के बाद")

739 संसारपथ-नित्तिना

740 पाठ vītarāgā bhavāmase with BJTS (and PTS alt.) for PTS n'atthi dāni punabbhavo ("अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा")

741 t'ato tato

742 BJTS और PTS में वैकल्पिक रूप से saha के स्थान पर samā ("बराबर") पढ़ा जाता है ।

743 bodhanatthāya tavaŋ (PTS वैकल्पिक शब्द tava); इस वाक्यांश का अनुवाद "आपके ज्ञान के लिए" भी किया जा सकता है।

[मुझे]"

744 या, जैसा कि ऊपर बताया गया है, "मुझे जानने के लिए"

745 PTS mahā-isi (nom.) के लिए BJTS के साथ mahā - isiṃ (acc.) पढ़ना

746 शाब्दिक अर्थ, "महान नायक ने भविष्यवाणी की"

हे महान ऋषि, आपकी महिमा हो: (52)747

वह आपके जैसी ही स्वभाव और आचरण वाली पत्नी होगी; इसी कर्म के फलस्वरूप वह प्रेममय होगी।

हे महान ऋषि, आपके लिए।748 (53) [1011]

सुंदर दिखने वाली और बेहद प्रिय, आकर्षक, मीठी बातें करने वाली, वह एक प्यारी महिला होगी।

[और] आपके सिद्धांतों में एक उत्तराधिकारी। (54) [1012]

जिस प्रकार स्वामी अपने द्वारा संचित वस्तुओं की रक्षा करते हैं, उसी प्रकार यह भी उनकी रक्षा करेगा।

[सभी] चीजें जो स्वास्थ्यवर्धक हैं। (55) [1013]

आपके भविष्य के प्रति करुणा से भरी, वह आपकी सभी खूबियों को पूरा करेगी। पिंजरे से मुक्त हुए शेर की तरह,

वह जागृति प्राप्त करेगी।" (56) [1014]

बुद्ध के वचन से प्रसन्न होकर, मैंने उसी प्रकार व्यवहार करते हुए जीवन व्यतीत किया।

बुद्ध ने असंख्य युग पहले मेरे लिए भविष्यवाणी की थी। (57) [1015]

जब मैंने वह कर्म सफलतापूर्वक पूरा किया तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

मैंने अनगिनत गर्भाशयों का अनुभव किया है,

दैवीय [साथ ही] मानवीय [लोग]। (58) [1016]

देवताओं और मनुष्यों के बीच सुख और दुख का अनुभव करते हुए, जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ,

मैं शाक्यान वंश में पैदा हुआ था। (59) [1017]

सुंदर और अत्यंत धनी, प्रसिद्ध और उतनी ही गुणी; हर योग्यता से संपन्न।

मैं कुलों में बहुत सम्मानित हूँ। (60) [1018]

747 बीजेटीएस इस श्लोक को एक तारांकित फुटनोट में रखता है, यह मानते हुए कि यह इसके कई वैकल्पिक संस्करणों में आता है।

748 बीजेटीएस, पीटीएस से सहमत होते हुए इसे महा-इसे (वोक.) के रूप में प्रस्तुत करता है , लेकिन वैकल्पिक पाठ महा-इसी का संदर्भ देता है।

(नामवाचक), संभवतः बुद्ध द्वारा सुमेधा को "महान ऋषि" कहकर संबोधित करने से परेशान थे।

749 रीडिंग manāpā with BJTS for PTS manasā

750 पढ़ना यथा... पीटीएस यथा के लिए बीजेटीएस के साथ अनुरक्खंति 'सामिनो ... अनुरक्खति सामि नं ("जैसा कि हमारे गुरु रक्षा करते हैं")

धन-दौलत, शोहरत, आतिथ्य सत्कार,

और सांसारिक चीजों में लिप्त होना — ये मेरे मन को विचलित नहीं करते;751

मुझे किसी भी चीज से डर नहीं है। (61) [1019]

मुझे उपस्थित होने के लिए नियुक्त किया गया था

भगवान बुद्ध ने राजा के हरम में जो कहा था, उस पर

तब क्षत्रिय नगर में। (62)752

मैं एक नौकरानी हूं।

और [वह] जो सुख और दुख का अनुभव करती है, एक महिला753 जो तथ्यों की घोषणा करती है,

एक महिला754 जो दयालु है। (63)

मैंने पाँच अरब बुद्धों को, और नौ अरब अन्य बुद्धों को भी, विशाल दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के ऊपर देवता.755 (64)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

ग्यारह अरब [अन्य लोगों] के लिए

और पचास अरब [बुद्ध और]। (65)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (66)

बीस अरब [अन्य] बुद्ध और [एक और] तीस अरब –

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी देवता। (67)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

चालीस अरब [और बुद्धों के लिए,]

और [एक और] पचास अरब। (68)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

751 लिट., “मेरे मन में कोई हलचल नहीं है”

752 यह और इसके बाद के 19 श्लोक (कुल 20 श्लोक) बीजेटीएस में शामिल नहीं हैं। श्लोक (62) और (63) बीजेटीएस [1092]-[1093] में दिखाई देते हैं।

753 लिट., “और एक महिला”

754 लिट., “और एक महिला”

755 etesaŋ devedevānaŋ

756 अधिकारं सदा मयहं , शाब्दिक अर्थ: "मेरी सेवा निरंतर है" "मेरी सेवा दैनिक है"

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (69)

साठ अरब [अन्य] बुद्ध, [एक और] सत्तर अरब –

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी देवता। (70)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

अस्सी अरब [और बुद्धों के लिए,]

और [एक और] नब्बे अरब। (71)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (72)

लाखों-करोड़ों

जो विश्व के प्रमुख नेता थे; मैंने उन्हें व्यापक दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी देवता। (73)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

एक और नब्बे ट्रिलियन तक

जो विश्व के नेता भी थे। (74)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ (75)

महान ऋषियों को [जिनकी संख्या थी]

आठ सौ पचास ट्रिलियन, और सात सौ पचासी अरब [अतिरिक्त बुद्ध]। (76)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (77)

हे अकेले बुद्धों, वासना से मुक्त, छह सौ चालीस मिलियन; हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (78)

बुद्धों के अनगिनत अनुयायी,

मैं दोषों से मुक्त और निष्कलंक हूँ; हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (79)

मैं हमेशा शिक्षण का अभ्यास करता हूँ।

उन लोगों में से जो शिक्षाओं का अभ्यास करते हैं,759

शिक्षण का अभ्यास करते समय सहज महसूस करना,

इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में। (80)

शिक्षण-अभ्यास का अच्छी तरह से अभ्यास किया जाना चाहिए;

वह अभ्यास कुप्रथा नहीं है। [मैं] इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में शिक्षण का अभ्यास करने में सहज हूँ। (81)

पुनर्जन्मों से विरक्ति होकर, मैं हजारों भिक्षुणियों से घिरी हुई, निर्जनता (त्याग) की राह पर चल पड़ी।

कुछ भी त्यागने के बाद। (82) [1020]

अपना घर छोड़ने के बाद,

मैं बेघर हो गया।

जब आठ महीने 760 अभी बीते भी नहीं थे

मैंने चार [महान] सत्यों को प्राप्त किया। (83) [1021]

समुद्र की लहरों की तरह, लोग अनेक प्रकार के मठवासी वस्त्र और भिक्षा लेकर भोजन के लिए आ रहे हैं।

आवश्यकताएँ [साथ ही] आवास। (84) [1022]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (85) [1023]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (86) [1024]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान (महाशक्तियां) प्राप्त कर लीं।

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (87) [1025]

757 या करें: कारती से

758 सधम्म° , प्रकाशित "अच्छी शिक्षा"

759 धम्मेसु सीनानां सदा सद्धम्म-कारिनो

760 aṭṭhamāse , BJTS इसे addhamāse (“आधा महीना”) पढ़ता है

761 पीटीएस बुहुन एके के लिए बीजेटीएस के साथ बहु 'नेके पढ़ना

इस प्रकार अनेक प्रकार के दुख और अनेक प्रकार के सुख होते हैं;

अब शुद्ध जीवन प्राप्त हो चुका है।

मैंने सभी उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हैं। [1026]762

जो स्त्री स्वयं को महान ऋषि के पुण्य के लिए समर्पित करती है, उसे [उनका] साथ और [अपूर्ण निर्वाण] प्राप्त होता है। [1027]

अतीत पूरी तरह से नष्ट हो गया है, और वर्तमान और भविष्य भी; मेरे सारे कर्म नष्ट हो गए हैं:

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे दृष्टिपूर्ण।" [1028]

इस प्रकार भिक्खुनी यशोदरा ने ये श्लोक कहे।

यशोदरा थेरी763 की कथा समाप्त हुई।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> अध्याय 1: एकल छंद (अंश)
पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1994

अंतर्वस्तु

थिग 1 पीटीएस: थिग 1-18- अध्याय 1: एकल छंद (अंश)
I.1 — एक अनाम भिक्षुणी {v. 1}

सो जाओ, नन्ही थेरी, आराम से सो जाओ।
आपके द्वारा बनाए गए वस्त्र में लिपटा हुआ,
क्योंकि तुम्हारा जुनून शांत हो गया है —
जैसे अचार वाली हरी सब्जियों का एक बर्तन
उबालकर सुखा दिया गया।

I.3 — पुन्ना {v. 3}

पुन्ना, अच्छे गुणों से परिपूर्ण हो जाओ
पंद्रहवें दिन के चंद्रमा की तरह।
पूर्ण विवेक के साथ, फूट पड़ो
सामूहिक
अंधेरे का।

I.11 — मुत्ता {v. 11}

कितना मुक्त! मैं पूरी तरह से मुक्त हूँ!
तीन टेढ़ी-मेढ़ी चीजों से मुक्त किया गया:
ओखली, मूसल से
और उसका कुटिल बूढ़ा पति।

लालसा को जड़ से उखाड़ फेंकने के बाद
जिससे यह स्थिति उत्पन्न होती है,
मैं बुढ़ापे और मृत्यु से मुक्त हो गया हूँ।

I.17 — धम्म {v. 17}

भिक्षा मांगने भटकना —
कमजोर, लाठी के सहारे झुकी हुई
कांपते अंगों के साथ —
मैं वहीं जमीन पर गिर पड़ा।
शरीर की कमियों को देखकर,
उस समय मेरा मन
आजाद करना।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> अध्याय 2: छंदों के जोड़े (अंश)

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1994
थिग 2 पीटीएस: थिग 19-38- अध्याय 2: छंदों के जोड़े (अंश)
II.3 - सुमंगला की माँ {vv. 23-24}

कितना मुक्त! कितना मुक्त!

मैं पूरी तरह से मुक्त हो चुका हूँ —

मेरे मूसल से,

मेरे बेशर्म पति

और उनका धूप से बचाव के लिए शेड बनाना,

मेरा फफूंदी लगा पुराना बर्तन

इसकी पानी के सांप जैसी गंध के साथ।

घृणा और जुनून

मैंने एक झटके से काटा।

एक पेड़ की तलहटी में आकर,

मैं परमानंद में लीन होकर ध्यान करता हूँ:

"कितना आनंद है!"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> उत्तम

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1997
थिग 3.2 पीटीएस: थिग 42-44- उत्तम
मैं चार बार, पांच बार अपने घर से बेकाबू होकर भागा था।

जागरूकता की शांति प्राप्त न होने पर,

मेरे विचार बेकाबू हो गए हैं।

इसलिए मैं एक भरोसेमंद नन के पास गया।

उन्होंने मुझे धम्म की शिक्षा दी:

समुच्चय, इंद्रिय क्षेत्र और तत्व।

धम्म को सुनकर,

मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था।

मैं सात दिनों तक एक ही जगह पर बैठा रहा।

परमानंद और आनंद में डूबा हुआ।

आठ तारीख को मैंने अपने पैर फैलाए।

द्रव्यमान के फटने के बाद

अंधेरे का।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> दन्तिका और हाथी

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1997
थिग 3.4 पीटीएस: थिग 39-62- दन्तिका और हाथी
मेरे दिन भर के स्थायी अनुभवों से बाहर आते हुए

वल्चर पीक पर्वत पर,

मैंने नदी के किनारे देखा

एक हाथी

अपनी गिरावट से उबर गया।

एक व्यक्ति ने हुक पकड़े हुए अनुरोध किया:

"मुझे अपना पैर दो।"

हाथी

उसने अपना पैर आगे बढ़ाया।

मनुष्य

हाथी पर चढ़ गया।

जो अप्रशिक्षित था, अब पालतू बन चुका है

मानव नियंत्रण में लाया गया,

इसके साथ ही मैंने अपना ध्यान केंद्रित किया।

मैं जंगल में क्यों गया था?

सबसे पहले तो।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> उबिरि: तीन श्लोकों का समूह (अंश)

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1997
थिग 3 पीटीएस: थिग 51-53- उब्बिरी: तीन श्लोकों का समूह (अंश)
'जीवा, मेरी बेटी,'

तुम जंगल में रोते हो।

उब्बिरी, होश में आओ।

84,000

सभी का नाम जीवा है

उस श्मशान भूमि में जलाए गए होंगे।

आप इनमें से किसके लिए शोक मना रहे हैं?

बाहर निकलना

पूरी तरह से बाहर

तीर को देखना इतना मुश्किल है,

मेरे दिल में बसा हुआ,

उसने मुझे निष्कासित कर दिया

शोक से व्याकुल होकर

दुखी

मेरी बेटी के ऊपर।

आज — तीर हटा दिया गया है,

बिना भूख के, पूरी तरह से

असीमित —

मैं बुद्ध, धम्म और संघ की शरण में जाता हूँ।

शरण के लिए

संत।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरीगाथा >> भड्डा कपिलानी

पाली भाषा से अनुवादित: हेल्मुथ हेकर और सिस्टर खेमा © 1994
थिग 4.1 पीटीएस: थिग 63-66- भड्डा कपिलानी
वह बुद्ध का पुत्र और उनका उत्तराधिकारी है।

महान कस्सपा—उनका मन शांत और संयमित था।

उन्हें पूर्व जन्मों की दृष्टि प्राप्त होती है।

वह स्वर्ग और नरक दोनों में प्रवेश करता है।

उसने पुनर्जन्म का अंत प्राप्त कर लिया है।

और उन्होंने असाधारण ज्ञान में महारत हासिल कर ली है।

इन तीन ज्ञानों के साथ जो उसे प्राप्त थे

वह सच्चा ब्राह्मण है, जिसे त्रिविध ज्ञान प्राप्त है।

इसी प्रकार, हे कपिलाणी भद्दा ने भी अपने लिए लाभ अर्जित किया है।

उसे त्रिविध ज्ञान प्राप्त है और उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है।

मारा और उसकी सेना को बहादुरी से हराने के बाद,

यह उसके शरीर का अंतिम रूप है जिसे वह धारण करती है।

दुनिया की घोर पीड़ा देखकर हम दोनों आगे बढ़े।

और अब वे दोनों दोषों से मुक्त हैं, और उनके मन अच्छी तरह से नियंत्रित हैं।

अपने आवेशों को शांत करके, हमने मुक्ति प्राप्त कर ली है;

अपने आवेशों को शांत करके, हमने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> विमला: पूर्व वैश्या

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1998
थिग 5.2 पीटीएस: थिग 72-76-विमला: पूर्व वैश्या
मेरे रंग-रूप से मदहोश

आकृति, सौंदर्य और प्रसिद्धि;

जवानी के घमंड में चूर,

मुझे दूसरी महिलाओं से घृणा थी।

इस शरीर को सुशोभित करना

मूर्ख लोगों को भ्रमित करने के लिए अलंकृत किया गया,

मैं वेश्यालय के दरवाजे पर खड़ा था:

एक शिकारी ने जाल बिछा रखा है।

मैंने अपने गहने दिखाए,

और कई निजी अंगों का खुलासा किया।

मैंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया,

भीड़ को देखकर जोर-जोर से हंसना।

आज, दोहरे आवरण में लिपटा हुआ,

मैंने अपना सिर मुंडवा लिया है।

भिक्षा मांगने के लिए भटकने के बाद,

मैं एक पेड़ की तलहटी में बैठा हूँ

और विचारहीनता की अवस्था प्राप्त करें।

सभी मानवीय और दैवीय संबंध टूट चुके हैं।

सभी अपशिष्ट पदार्थों को त्यागने के बाद,

मैं शांत और मुक्त हूँ।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> नंद: नंद का दर्शन

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1994
थिग 5.4 पीटीएस: थिग 82-86- नंदा: नंदा की दृष्टि

"बीमार, सड़ा हुआ, अशुद्ध:

देखो, नंदा, इस भौतिक ढेर को।

अपराध पर विचार करने के माध्यम से,

अपने दिमाग का विकास करो,

इसे एक बनाओ, जो अच्छी तरह से केंद्रित हो।

जैसे यह (आपका शरीर), वैसे ही।

जैसा कि वह, वैसा ही यह।

इससे दुर्गंध आती है।

मूर्खों का आनंद।"

इस प्रकार विचार करते हुए,

दिन-रात अथक परिश्रम से

मैं, अपने विवेक के अनुसार

इसका विश्लेषण करते हुए,

देखा।

और मैं, सतर्क रहते हुए,

इसका उचित ढंग से परीक्षण किया गया।

यह शरीर—जैसा कि यह वास्तव में है—

अंदर और बाहर दोनों तरफ से देखा गया।

तब मेरा शरीर से मोहभंग हो गया।

और भीतर से निष्पक्ष:

सावधान, उदासीन,

मैं शांत हो गया था।

असीमित।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> मित्तकली

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1998
थिग 5.6 पीटीएस: थिग 92-96-मित्तकली
दृढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ना

घर से बेघर होने की स्थिति में

मैं इधर-उधर घूमता रहा।

लाभ और भेंट के प्रति लालची।

सबसे अहम गोल से चूक जाना,

मैंने एक तुच्छ पद का पीछा किया।

अपवित्रताओं के प्रभाव में

मैंने लक्ष्य छोड़ दिया

चिंतनशील जीवन का।

फिर, अपने घर में बैठे हुए,

मुझे अचानक होश आ गया:

मैं एक दुखद रास्ते पर चल रहा हूँ।

मैं के प्रभाव में हूँ

तीव्र इच्छा।

मेरा जीवन लगभग न के बराबर है।

कुचल

उम्र बढ़ने और बीमारी के कारण।

शरीर के टुकड़े-टुकड़े होने से पहले,

मेरे पास बिल्कुल समय नही है

लापरवाही के लिए।

इसे देखने के बाद, जैसा कि वास्तव में था,

समुच्चय का बढ़ना और घटना

मैं मन को मुक्त करके खड़ा हुआ।

जागृत व्यक्ति का आदेश

हो गया।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> सोना: दस की माँ

थिग 5.8 पीटीएस: थिग 102-106- सोना: दस की माँ
मैंने दस बच्चों को जन्म दिया

इस भौतिक ढेर से।

फिर उससे कमजोर होकर, बूढ़े होकर,

मैं एक नन के पास गया।

उन्होंने मुझे धम्म की शिक्षा दी:

समुच्चय, इंद्रिय क्षेत्र और तत्व।

उसका धर्म सुनकर,

मैंने अपने बाल कटवा लिए और पुरोहित बन गया।

दिव्य दृष्टि को शुद्ध करने के बाद

परिवीक्षा अवधि के दौरान,

मुझे अपने पिछले जन्मों का ज्ञान है।

जहां मैं पहले रहता था।

मैं विषयहीन ध्यान पद्धति विकसित करता हूँ।

सुस्पष्ट रूप से केंद्रित एकता।

मुझे तात्कालिकता की मुक्ति प्राप्त होती है —

आसक्ति के अभाव से, बंधनमुक्त।

पाँचों समुच्चय, जिन्हें समाहित किया गया है,

जड़ कटी हुई वृक्ष की तरह खड़े रहो।

मैं बुढ़ापे पर थूकता हूँ।

अब आगे कोई विकास नहीं हो सकता।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> भड्डा कुंडलकेश: पूर्व जैन तपस्वी

पाली भाषा से अनुवादित: हेल्मुथ हेकर और सिस्टर खेमा © 1998
थिग 5.9 पीटीएस: थिग 107-111- भड्डा कुंडलकेसा: पूर्व जैन तपस्वी
मैंने पहले भी एक ही कपड़े में यात्रा की है।

मुंडा सिर, धूल से सना हुआ,

निर्दोष में दोष ढूंढना,

जबकि त्रुटिपूर्ण स्थिति में कोई त्रुटि दिखाई नहीं देती।

जब दिन का अंतिम कार्य पूरा हो गया,

मैं माउंट वल्चर पीक गया था

और निर्मल बुद्ध को देखा

भिक्षुओं के आदरणीय संघ द्वारा।

फिर उनके सामने मेरे हाथ अंजलि मुद्रा में।

मैंने विनम्रतापूर्वक घुटने टेक दिए।

"आओ, भद्दा," उसने मुझसे कहा:

और इस प्रकार मेरा अभिषेक हुआ।

कर्ज मुक्त होकर मैंने पचास साल तक यात्रा की।

अंग, मगध और वज्जी में,

काशी और कोसला में भी,

भूमि की भिक्षा पर जीवन यापन करना।

वह आम समर्थक—वास्तव में बुद्धिमान व्यक्ति—

उन्हें अनेक पुण्य प्राप्त हों!

भद्दा को यह वस्त्र किसने दिया?

वह हर बंधन से मुक्त है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> पटाकरा

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1994
थिग 5.10 पीटीएस: थिग 112-116- पटाकारा
(मैंने सोचा:)

हल से खेत जोतना,

जमीन में बीज बोना,

अपनी पत्नियों और बच्चों का समर्थन करना,

युवा पुरुष धन इकट्ठा करते हैं।

तो ऐसा क्यों है कि मैं,

सद्गुणों में परिपूर्ण,

शिक्षक के आदेशों का पालन करने वाला,

क्या अनबाइंडिंग प्राप्त नहीं होती?

मैं आलसी या घमंडी नहीं हूँ।

पैर धोते समय मैंने ध्यान दिया

the

पानी।

और इसे ऊँचाई से बहते हुए देखना

को

कम,

मेरा हृदय शांत था

एक उत्तम नस्ल के घोड़े की तरह।

फिर मैंने एक दीपक लेकर झोपड़ी में प्रवेश किया।

बिस्तर की जाँच की।

बिस्तर पर बैठ गया।

और मैंने एक पिन लेकर बाती को बाहर निकाल लिया:

जैसे लौ का बंधन टूटना

क्या मुक्ति थी?

जागरूकता का।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> पटाकारा के तीस छात्र

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1994
थिग 5.11 पीटीएस: थिग 117-121- पटाकारा के तीस छात्र
(पटाकारा ने सिखाया:)

मूसल लेकर,

युवक मक्का पीसते हैं।

अपनी पत्नियों और बच्चों का समर्थन करना,

वे धन इकट्ठा करते हैं।

ज्ञानी पुरुष की आज्ञा का पालन करो।

ऐसा करने के बाद,

आपको कोई पछतावा नहीं होगा।

जागरूकता की शांति पर केंद्रित,

ज्ञानी व्यक्ति के आदेशों का पालन करो।

जल्दी से:

अपने पैर धोने के बाद,

एक तरफ जाकर बैठ जाओ।

ये शब्द सुनकर,

पटाकारा की बोली,

उन्होंने अपने पैर धोए

और एक तरफ हट गया।

जागरूकता की शांति पर केंद्रित,

उन्होंने प्रबुद्ध व्यक्ति के आदेशों का पालन किया।

रात के पहले पहर में,

उन्हें अपने पिछले जन्म याद आ गए।

मध्य पहर में,

दिव्य दृष्टि को शुद्ध किया।

आखिर में,

अंधकार का विशाल घेरा टूट गया।

उठकर उन्होंने उसके चरणों में झुककर प्रणाम किया।

हमने आपका आदेश मान लिया है।

जैसे तीस देवता इंद्र का सम्मान करते हैं,

युद्ध में अजेय,

हम—तीन ज्ञानवान महिलाएं,

किण्वन रहित —

हम आपका सम्मान करना जारी रखेंगे।"
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> कैंडा: भिखारी

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1994
थिग 5.12 पीटीएस: थिग 122-126- कैंडा: भिखारी
इससे पहले, मुझ पर बुरे दिन आ पड़े थे:

न पति, न बच्चे।

कोई रिश्तेदार नहीं, कोई दोस्त नहीं,

कपड़े और भोजन प्राप्त करने का कोई साधन नहीं है।

तो, हाथ में लाठी और कटोरा लेकर,

घर-घर जाकर भीख मांगना,

सर्दी और गर्मी से बुखार

मैं पूरे सात साल तक भटकता रहा।

फिर एक नन को देखकर

भोजन और पेय पदार्थ प्राप्त करना,

मैंने उसके पास जाकर कहा:

"मुझे बेघर होने के लिए आगे बढ़ने दो।"

वह, पटाकारा, सहानुभूति से,

मुझे जाने दो;

फिर, मुझे समझाते हुए,

मुझे सर्वोच्च लक्ष्य की ओर प्रेरित किया।

उसकी बातें सुनकर,

मैंने उसकी बात मानी।

उनकी सलाह व्यर्थ नहीं गई।

मैं तीन प्रकार के ज्ञान वाली महिला हूँ।

किण्वन रहित।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> पंचसाटा पटाकारा: पटाकारा के 500 छात्र

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1998
थिग 6.1 पीटीएस: थिग 127-132- पंचसाटा पटाकारा: पटाकारा के 500 छात्र
(पटाकारा बुद्ध के शब्दों को याद करते हैं:)

"तुम्हें नहीं पता"

मार्ग

उसके आने या जाने के बारे में,

वह प्राणी जो आया है

कहां से? -

जिसके लिए तुम शोक मनाते हो और उसे 'मेरा बेटा' कहते हो।

लेकिन जब आपको पता चल जाए

मार्ग

उसके आने या जाने के बारे में,

आप उसके जाने पर शोक नहीं मनाते।

क्योंकि यही उसका स्वभाव है।

प्राणियों का।

बिना पूछे,

वह वहीं से आया था।

अनुमति के बिना,

वह यहाँ से चला गया —

कहां से आ रहे हो?

कुछ दिन रुकने के बाद।

और यहाँ से एक ही रास्ता है,

वह एक और बार जाता है

वहाँ से।

मानव रूप में मरना,

वह भटकता रहेगा।

जैसा आया था, वैसा ही चला गया।

तो वहाँ क्या है?

विलाप करने के लिए?

बाहर निकलना

पूरी तरह से बाहर

तीर को देखना इतना मुश्किल है,

मेरे दिल में बसा हुआ,

उसने मुझे निष्कासित कर दिया

दुःख से व्याकुल होकर

दुखी

मेरे बेटे के ऊपर।

आज — तीर हटा दिया गया है,

बिना भूख के, पूरी तरह से

असीमित —

मैं बुद्ध, धम्म और संघ की शरण में जाता हूँ।

शरण के लिए

संत।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> वासिथि द मदवूमन

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1995
थिग 6.2 पीटीएस: थिग 133-138- वासिथी द मैडवूमन
अपने बेटे के निधन के शोक से मैं व्याकुल हूँ।

नग्न, विक्षिप्त,

मेरे बाल बिखरे हुए थे

मेरा दिमाग खराब हो गया है —

मैं इधर-उधर घूमता रहा।

सड़क के किनारे रहना,

कब्रिस्तानों और कूड़े के ढेरों में,

पूरे तीन वर्षों के लिए,

भूख और प्यास से पीड़ित।

तब मैंने देखा

वह एक अच्छी तरह से चला गया,

मिथिला शहर गया:

अनियंत्रित प्राणियों को वश में करने वाला,

स्वयंजागृत,

डरने की कोई बात नहीं

किसी भी चीज़ से, कहीं से भी।

होश में आने पर,

उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए,

मैं बैठ गया।

गौतम ने सहानुभूति से

उन्होंने मुझे धम्म सिखाया।

उनके धर्म को सुनकर,

मैं बेघर हो गया।

शिक्षक के वचनों को अपने जीवन में उतारने के लिए,

मुझे परम आनंद की अवस्था का अहसास हुआ।

सभी दुःख दूर हो गए हैं।

छोड़ा हुआ,

इस निष्कर्ष पर पहुँचाया गया,

क्योंकि मैंने समझ लिया है

जिन आधारों से दुःख उत्पन्न होते हैं

आओ, खेल में शामिल हो।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> भिक्खुनी सुजाता के अंतिम ज्ञान के छंद

पाली भाषा से अनुवादित: हेल्मुथ हेकर और सिस्टर खेमा © 1998
थिग 6.4 पीटीएस: थिग 133-138- भिक्खुनी सुजाता के अंतिम ज्ञान के छंद
सूक्ष्म पर्दों से सुशोभित,

मालाओं और चंदन से सजे हुए,

पूरी तरह से आभूषणों से ढका हुआ,

मेरे सेवकों से घिरा हुआ,

हम अपने साथ खाने-पीने का सामान ले जा रहे हैं।

कई प्रकार के खाद्य पदार्थ,

घर से निकलते हुए,

हम वह सब कुछ जंगल में ले गए।

वहाँ आनंद लेने और खेलकूद का अनुभव करने के बाद,

हमने घर की ओर अपने कदम बढ़ाए।

लेकिन रास्ते में मैंने देखा और प्रवेश कर लिया।

सकेता के पास एक मठ।

दुनिया की रोशनी देखना

मैं उनके पास गया और उन्हें प्रणाम किया;

करुणावश, उस द्रष्टा ने

फिर उन्होंने मुझे वहां धम्म की शिक्षा दी।

महान ऋषि के वचन सुनकर,

मैंने सत्य में प्रवेश किया:

धम्म भावहीन है,

मैंने अमरता के धम्म को स्पर्श किया।

जब सच्चे धम्म का ज्ञान हो गया,

मैं बेघर जीवन जीने के लिए निकल पड़ा;

तीनों सच्चे ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं।

बुद्ध की शिक्षाओं को व्यर्थ न जाने दें!
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> अनोपमा, करोड़पति की बेटी

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1995
थिग 6.5 पीटीएस: थिग 151-156- अनोपमा, करोड़पति की बेटी
उच्च पदस्थ परिवार में जन्म हुआ।

बहुत सारी संपत्ति, अपार धन-दौलत के साथ,

रंग-रूप और कद-काठी में परिपूर्ण,

मैं कोषाध्यक्ष मज्जा की पुत्री थी।

राजाओं के पुत्र मुझे ढूंढ रहे थे,

धनी व्यापारियों के पुत्र

वह मुझे बहुत याद करता था।

उनमें से एक ने मेरे पिता के पास एक दूत भेजा,

यह कहते हुए, "मुझे अनोपमा दो।"

मैं बदले में दूंगा

उसका वजन आठ गुना

गहनों और सोने में।"

लेकिन मैंने देखा है

वह एक आत्मजागृत व्यक्ति,

अद्वितीय, विश्व में उत्कृष्ट

उनके चरणों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

एक तरफ बैठ गया।

वह, गौतम, सहानुभूति से,

उन्होंने मुझे धम्म सिखाया।

और जब मैं उसी सीट पर बैठा था,

मैंने तीसरा फल प्राप्त किया

(वापसी न होने के संबंध में।)

फिर मैंने अपने बाल कटवा लिए।

और वे बेघर हो गए।

आज सातवां दिन है

क्योंकि मुझे लालसा हो रही थी

मुरझा देना।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> महा पजापति (गोतमी) थेरी: एक माँ का आशीर्वाद

पाली भाषा से अनुवादित: एंड्रयू ओलेन्ड्ज़की © 2005
थिग 6.6 पीटीएस: थिग 157-162- महा पजापति (गोतमी) थेरी: एक माँ का आशीर्वाद
अनुवादक की टिप्पणी

ऐसा माना जाता है कि इस कविता की रचना प्रजापति ने की थी, जो बुद्ध की सौतेली माँ और शाक्यों वंश की रानी थीं। उनकी छोटी बहन माया का विवाह राजा सुद्धोदन से हुआ था, क्योंकि प्रजापति स्वयं संतान प्राप्ति में असमर्थ थीं। रानी माया का प्रसव के दौरान निधन हो गया, और प्रजापति ने गौतम को अपने पुत्र के समान पाला। ज्ञान प्राप्ति के बाद, प्रजापति ने भी महल छोड़ दिया और भिक्षुणियों के संघ की प्रथम संभाव्यता बनीं।

तीसरे श्लोक से पता चलता है कि उनकी उपलब्धियों में पूर्व जन्मों का स्मरण शामिल था, जिसके द्वारा वे निरंतर पुनर्जन्म की सत्यता को अनुभवजन्य रूप से सिद्ध करने में सक्षम थीं—एक जीवन से दूसरे जीवन में "प्रवाहित होना" (संसार)। जैसा कि वे अपनी कविता में उल्लेख करती हैं, यह प्रक्रिया लालसा और "अज्ञान" से प्रेरित है। दूसरे और चौथे श्लोकों में प्रजापति इसी जीवन में निर्वाण, यानी अंतिम और पूर्ण मुक्ति की प्राप्ति की घोषणा करती हैं।

यह सोचना उल्लेखनीय है कि जब अंतिम छंद में माया को याद किया जाता है, तो लेखक के मन में माया का वह मातृत्व और बलिदान का प्रतीक नहीं होता जो बौद्ध परंपरा में बन गई थी, बल्कि एक प्रिय छोटी बहन होती है जिसकी दुखद रूप से कम उम्र में मृत्यु हो गई - बिना यह देखे कि उसका बेटा क्या बन गया था।

****

बुद्ध! महान! आपकी जय हो!

आप समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ हैं!

हे प्रभु, जिन्होंने मुझे पीड़ा से मुक्त किया है,

और भी बहुत से जीव-जंतु।

सभी प्रकार के कष्टों को समझ लिया गया है।

लालसा का स्रोत मुरझा गया है।

समाप्ति का प्रभाव मुझ पर पड़ा है

श्रेष्ठ अष्टांगिक मार्ग पर।

मैं पहले भी मां और बेटे की भूमिका निभा चुकी हूं;

और पिता, भाई — दादी भी।

वास्तविकता को न समझ पाना,

मैं शांति पाए बिना ही आगे बढ़ता रहा।

लेकिन अब मैंने भगवान को देख लिया है!

यह मेरा आखिरी संयुक्त रूप है।

जन्म की निरंतर प्रक्रिया समाप्त हो गई है।

अब और पुनर्जन्म की कोई संभावना नहीं है।

अनुयायियों की भीड़ देखें:

प्रयास करना, आत्म-संयम रखना,

हमेशा मजबूत संकल्प के साथ

बुद्धों का सम्मान करने का यही तरीका है!

-निःसंदेह इतने सारे लोगों के भले के लिए

क्या माया ने गौतम को जन्म दिया था?

कौन है जो पीड़ा के समूह को चीर देता है?

बीमारी और मृत्यु से पीड़ित लोगों में से।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> गुट्टा

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 2004
थिग 6.7 पीटीएस: थिग 163-168- गुट्टा
(बुद्ध ने मुझे उपदेश दिया:)

गुट्टा, अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हो जाओ।

जिसके लिए तुम निकले थे,

(आशा) त्यागने के बाद

अपने प्रिय पुत्र के लिए।

किसी के बहकावे में मत आओ

मन का।

मन द्वारा धोखा दिया गया,

मारा के राज्य से प्रेम करने वाले प्राणी,

इधर-उधर भटकना

अनेक जन्मों के भटकने के माध्यम से,

अनभिज्ञ।

हे नन, इन निम्न बंधनों को त्यागकर—

कामुक इच्छा, दुर्भावना,

आत्म-पहचान संबंधी विचार,

सिद्धांतों और प्रथाओं को अपनाना,

और अनिश्चितता पांचवें कारक के रूप में —

तुम नहीं आओगे

फिर से यही करना होगा।

वासना, अहंकार का त्याग करते हुए,

अज्ञानता और बेचैनी

सभी बंधनों को तोड़ते हुए

आप अंत कर देंगे

पीड़ा और तनाव का।

जन्म को त्यागकर भटकते रहना,

आगे की समझ विकसित हो रही है,

भूख से मुक्त

अभी इसी वक्त

आप आगे बढ़ेंगे

पूरी तरह शांत।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> थेरिगाथा >> किसागोतामी थेरी

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 2006
थिग 10 पीटीएस: थिग 213-223- किसागोटामी थेरी

अनुवादक का परिचय

किसा गौतमी के नाम से बौद्ध परंपरा में दो सबसे मार्मिक कहानियां जुड़ी हुई हैं। इस श्लोक की व्याख्या बताती है कि जब उनके छोटे बच्चे की मृत्यु हो गई, तो उन्होंने उसे मृत मानने से इनकार कर दिया। कई लोगों से बच्चे को जीवित करने वाली दवा मांगने के बाद भी जब उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ, तो अंततः उन्हें बुद्ध के पास भेजा गया। जब उन्होंने बुद्ध को अपनी कहानी सुनाई, तो उन्होंने बच्चे के लिए दवा देने की पेशकश की, लेकिन इसके लिए उन्हें कुछ सरसों के बीज चाहिए थे - जो भारत का सबसे सस्ता मसाला है - और ये बीज ऐसे परिवार से मिलने चाहिए थे जिसमें किसी की मृत्यु न हुई हो। वह घर-घर जाकर सरसों के बीज मांगती रहीं, और किसी ने भी उन्हें देने से इनकार नहीं किया। लेकिन जब उन्होंने पूछा कि क्या उस परिवार में किसी की मृत्यु हुई है, तो सभी का उत्तर हमेशा "हां, बिल्कुल" होता था। कुछ समय बाद, उन्हें यह बात समझ में आ गई: मृत्यु सार्वभौमिक है। बच्चे के शरीर को श्मशान में त्यागने के बाद, वह बुद्ध के पास लौट आईं और भिक्षुणी बनने का अनुरोध किया, और बाद में अरहंत बन गईं।

किसा गौतमी के नाम से जुड़े प्रामाणिक श्लोक एक अलग ही कहानी बताते हैं, जो टीका में पताकारा से जुड़ी कहानी से मिलती-जुलती है: अपने दूसरे बच्चे से गर्भवती पताकारा अपने पति और पहले बच्चे के साथ प्रसव के लिए अपने माता-पिता के घर लौट रही थी। रास्ते में एक भयंकर तूफान आ गया, और उसने अपने पति से परिवार को आश्रय देने के लिए कहा। जब वह आश्रय बनाने के लिए घास और लकड़ियाँ काट रहा था, तभी एक साँप ने उसे काट लिया और जहर से उसकी मृत्यु हो गई। बेघर और अपने पति की लंबे समय तक अनुपस्थिति से दुखी पताकारा ने बच्चे को जन्म दिया और पूरी रात अपने शरीर के सहारे बारिश और हवा से अपने दोनों बच्चों को बचाए रखा। अगली सुबह उसने अपने पति को मृत पाया। व्याकुल होकर उसने अपने माता-पिता के घर लौटने का फैसला किया। लेकिन पिछली रात की बारिश से उफनती एक नदी उसके रास्ते में बह रही थी। दोनों बच्चों को नदी पार ले जाने में असमर्थ, उसने अपने पहले बच्चे को किनारे पर ही छोड़ दिया और अपने बच्चे को गोद में लेकर उफनती धारा में से होकर नदी पार की। शिशु को नदी के दूसरे किनारे पर रखकर वह अपने पहले बच्चे को लाने के लिए वापस मुड़ी। एक बाज़ ने शिशु को देखकर उसे मांस का टुकड़ा समझकर उस पर झपट्टा मारा। यह देखकर पताकारा ने अपने हाथ उठाकर बाज़ को भगाने की कोशिश की, पर कोई लाभ नहीं हुआ: बाज़ शिशु को उठाकर ले गया। इसी बीच, उसके पहले बच्चे ने अपनी माँ को हाथ उठाते देख नदी पार करने का संकेत समझ लिया। उफनती धारा में कूदते ही उसकी मृत्यु हो गई। दुःख से व्याकुल होकर पताकारा अपने माता-पिता के घर लौटी, तो उसे पता चला कि पिछली रात के तूफान में बिजली गिरने से उसका घर जलकर राख हो गया था। उसके माता-पिता और भाई का उस समय एक ही चिता पर अंतिम संस्कार किया जा रहा था। इस क्षण वह पागल हो गई और अर्धनग्न अवस्था में इधर-उधर भटकने लगी। बुद्ध के दर्शन करने पर ही उसे होश आया। उन्होंने उसे धम्म का उपदेश दिया और अंततः उसने दीक्षा लेकर अरहंत बन गई।

यह बताना कठिन है कि टीका में इस कहानी का श्रेय पताकार को क्यों दिया गया है, जबकि मूल ग्रंथ में यह स्पष्ट रूप से किसा गौतमी की है। कुछ विद्वानों का मानना है कि पाली टीकाओं में वर्णित कहानियाँ अन्य बौद्ध परंपराओं, जैसे मूलसर्वास्तिवादिन से ली गई हैं। इस प्रकार, मूल ग्रंथों और टीकाओं में वर्णित कहानियों के बीच अंतर इस तथ्य से उत्पन्न होता है कि विभिन्न परंपराओं ने विशिष्ट कहानियों का श्रेय अलग-अलग वरिष्ठ भिक्षुओं और भिक्षुणियों को दिया है। उदाहरण के लिए, पाली मूल ग्रंथ में उस स्त्री की कहानी, जिसका परिवार एक ही दिन में नष्ट हो गया, का श्रेय किसा गौतमी को दिया गया है, जबकि जिस परंपरा से टीका ली गई है, उसमें इसका श्रेय पताकार को दिया गया है। यदि ऐसा है, तो यह देखना रोचक है कि इन कहानियों को अपनाने वाले टीकाकार फिर भी अपने मूल ग्रंथ के प्रति निष्ठावान रहे। पाली भाषा को उस टीका स्रोत के अनुरूप ढालने की कोशिश करने के बजाय, जिस पर उन्होंने आधारित पाठ लिखा था, उन्होंने दोनों स्रोतों के बीच की विसंगतियों को यथावत रहने दिया: यह उन अनेक उदाहरणों में से एक है जिनमें कैनन और टीकाओं के बीच की विसंगतियां यह दर्शाती हैं कि पाली कैनन को आगे बढ़ाने वाले भिक्षुओं ने इसे अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया, भले ही वे इससे सहमत न हों।

बाद के थेरवाद ग्रंथों ने किसा गौतमी के श्लोकों और उन श्लोकों की टीका के बीच की विसंगतियों को यह कहकर छिपाने की कोशिश की है कि "चलते-चलते, जन्म देने वाली थी" से शुरू होकर "मेरे पति की मृत्यु हो गई, मैं अमरत्व तक पहुँच गई" तक के श्लोकों का अंश वास्तव में पताकारा द्वारा बोला गया है, लेकिन यह असंभव लगता है: एक अरहंत दूसरे के वृत्तांत में दखल क्यों देगा?

बहरहाल, चाहे पटाकारा की कहानी हो या किसा गौतमी की, दोनों ही मृत्यु की सार्वभौमिकता और साधना के मार्ग की शक्ति की बात करती हैं: कि इस मानवीय संसार में, इसके सभी दुखों के बीच, शोक, बुढ़ापा और बीमारी से मुक्त होने का एक मार्ग अभी भी मौजूद है: अमरता।

****

प्रशंसनीय मित्र होना

ऋषि द्वारा इसकी प्रशंसा की गई है

विश्व के संदर्भ में।

एक प्रशंसनीय मित्र के साथ समय बिताना

यहां तक कि एक मूर्ख भी

बुद्धिमान हो जाता है।

ईमानदारी वाले लोग

इससे संबद्ध होना चाहिए।

इस तरह विवेक विकसित होता है।

ईमानदार लोगों के साथ मेलजोल रखना

इससे व्यक्ति सभी दुखों और तनावों से मुक्त हो जाएगा।

तनाव को समझेंगे,

तनाव की उत्पत्ति,

समाप्ति और अष्टांगिक मार्ग:

चार आर्य सत्य।

महिला की स्थिति तनावपूर्ण और पीड़ादायक है:

ऐसा तो उन लोगों को वश में करने वाले ने कहा है जिन्हें वश में किया जा सकता है।

सौतन होना कष्टदायक होता है।

कुछ महिलाएं एक बार बच्चे को जन्म देने के बाद,

उनके गले काट दो।

अन्य, नाजुक शारीरिक बनावट वाले

जहर लेना।

प्रसव के दौरान

दोनों (मां और बच्चा) विनाश का शिकार होते हैं।

आगे बढ़ते हुए, प्रसव होने ही वाला है।

मैंने अपने पति को मृत देखा।

सड़क पर बच्चे को जन्म देना,

मैं अभी तक अपने घर नहीं पहुंचा था।

दो बच्चों की मौत हो गई।

मेरे पति की सड़क पर मौत हो गई

मैं कितना दुखी हूँ!

मेरी माँ, मेरे पिता और मेरा भाई

एक ही चिता पर जल रहे थे।

"तुम्हारा पूरा परिवार चला गया, बहुत दुखी हो।"

आपने असहनीय पीड़ा सहन की है।

तुम्हारे आंसू बह चुके हैं

हजारों जिंदगियों के लिए।"

तब मैंने देखा,

मैं श्मशान भूमि के बीचोंबीच,

बेटों की मांसपेशियों को चबाया जा रहा है।

परिवार के मारे जाने के बाद,

सभी द्वारा तिरस्कृत,

मेरे पति की मृत्यु हो गई है।

मैं अमरता तक पहुँच गया।

मैंने यह मार्ग विकसित किया है,

महान, आठ गुना,

अमरता की ओर जाना।

मुक्ति का अहसास होने पर,

मैंने धम्म के दर्पण में झाँका है।

मैंने तीर को काट दिया है।

बोझ उतार दो,

कार्य पूरा हो गया।

मैं, किसागोटामी थेरी,

मेरा दिल पूरी तरह से मुक्त हो गया है।

मैंने यह कहा है।

टिप्पणी : टीका के अनुसार, यह बुद्ध का किसा गौतमी को दिया गया संदेश था। एसएन 13.8 और थाग 3.5 देखें।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> पुन्निका: पुन्निका और ब्राह्मण

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1995
थिग 12.1 पीटीएस: थिग 236-251- पुन्निका: पुन्निका और ब्राह्मण
(पुन्निका:)

मैं पानी ढोने वाला हूँ, ठंड लग रही है।

हमेशा पानी की ओर नीचे जाते हुए

अपनी रखेलों की पिटाई के डर से,

उनके क्रोध और शब्दों से परेशान।

लेकिन तुम, ब्राह्मण,

आपको किस बात का डर है?

कि तुम हमेशा पानी की ओर जाओगे

शरीर कांप रहा है, बहुत ठंड लग रही है?

(ब्राह्मण:)

पुन्निका, तुम तो जानती ही होगी।

आप एक कुशल कर्म करने वाले व्यक्ति से पूछ रहे हैं।

और बुराई को दूर भगाना।

जो कोई भी, चाहे जवान हो या बूढ़ा, बुरे कर्म करता है

जल से स्नान करने के माध्यम से,

बुरे कर्मों से मुक्ति मिली।

(पुन्निका:)

आपको यह किसने सिखाया?

अज्ञानी से अज्ञानी तक

'एक, जल स्नान के माध्यम से,

क्या इससे बुरे कर्मों से मुक्ति मिलती है?

उस स्थिति में, वे सभी स्वर्ग जाएंगे:

सभी मेंढक, कछुए,

सर्प, मगरमच्छ,

और पानी में रहने वाले अन्य सभी जीव।

भेड़ काटने वाले, सूअर काटने वाले,

मछुआरे, शिकारी,

चोर, जल्लाद,

और अन्य सभी बुरे काम करने वाले,

जल स्नान के माध्यम से,

बुरे कर्मों से मुक्त हो जाओ।

अगर ये नदियाँ बहाकर ले जा सकतीं

तुमने अतीत में जो बुरे कर्म किए हैं,

वे आपकी योग्यता को भी छीन लेंगे।

और फिर आप होंगे

पूरी तरह से बाहर कर दिया गया।

आपको जिस भी बात से डर लगता है,

कि तुम हमेशा पानी की ओर जाते रहते हो,

ऐसा मत करो।

ठंड से अपनी त्वचा को नुकसान न होने दें।

(ब्राह्मण:)

मैं इस दुखद रास्ते पर चल रहा हूँ, महोदया।

और अब तुम मुझे यहाँ ले आए हो

वापस कुलीन वर्ग के पास।

मैं तुम्हें यह वस्त्र जल से स्नान करने के लिए देता हूँ।

(पुन्निका:)

यह चोला तुम्हारा है। मुझे इसकी जरूरत नहीं है।

अगर आपको दर्द से डर लगता है,

अगर आपको दर्द पसंद नहीं है,

तो फिर कोई भी बुरा कर्म मत करो।

खुलेआम, गुप्त रूप से।

लेकिन अगर आप ऐसा करते हैं या करेंगे

कोई भी बुरा कर्म,

आपको दर्द से मुक्ति नहीं मिलेगी।

भले ही आप उड़कर तेजी से चले जाएं।

अगर आपको दर्द से डर लगता है,

अगर आपको दर्द पसंद नहीं है,

जागृत व्यक्ति की शरण में जाओ।

धम्म और संघ में जाओ।

इन सिद्धांतों को अपनाएं:

इससे आपको मुक्ति मिलेगी।

(ब्राह्मण:)

मैं जागृत व्यक्ति की शरण में जाता हूँ;

मैं धम्म और संघ में जाता हूँ।

मैं इन सिद्धांतों को अपनाता हूँ:

इससे मुझे मुक्ति मिलेगी।

पहले मैं ब्रह्मा का रिश्तेदार था;

अब, वास्तव में एक ब्राह्मण।

मैं तीन प्रकार के ज्ञान वाला व्यक्ति हूं।

ज्ञान में परिपूर्ण,

सुरक्षित और अच्छी तरह से धुल गया।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> अम्बपाली

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1995
थिग 13.1 पीटीएस: थिग 252-270- अम्बपाली
मेरे बाल काले थे

मधुमक्खियों का रंग

और सिरे मुड़े हुए;

उम्र बढ़ने के साथ, यह खुरदुरे भांग के पौधे जैसा दिखने लगा।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

सुगंधित, जैसे कोई सुगंधित टोकरी हो।

फूलों से भरा हुआ:

उम्र बढ़ने के साथ-साथ उसमें सीलन की गंध आने लगी।

जैसे जानवरों की खाल।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

घनी और हरी-भरी, जैसे किसी अच्छी तरह से देखभाल किया गया बाग।

शानदार बनाया गया, सिरे विस्तृत हैं

कंघी और पिन के साथ।

उम्र के साथ-साथ यह पतला होता गया

और कहीं-कहीं नंगे।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

सोने और नाजुक पिनों से सजी हुई,

यह भव्य था, और चोटियों से सुशोभित था।

अब, उम्र के साथ,

उसका सिर गंजा हो गया है।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

घुमावदार, मानो किसी कलाकार द्वारा कुशलतापूर्वक बनाया गया हो।

मेरी भौहें कभी बहुत खूबसूरत थीं।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ वे सिलवटों के रूप में नीचे लटकने लगते हैं।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

रत्नों की तरह चमकीला, शानदार

मेरी आँखें:

उम्र बढ़ने के साथ-साथ वे उतने शानदार नहीं रह जाते।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

एक नाजुक चोटी की तरह, मेरी नाक

मेरी जवानी के सुनहरे दिनों में सब कुछ शानदार था।

उम्र के साथ, यह एक लंबी मिर्च की तरह हो जाता है।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

कंगन की तरह—सुंदर ढंग से निर्मित, उत्तम गुणवत्ता के साथ—

मेरे कान कभी बहुत सुंदर थे।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ वे सिलवटों के रूप में नीचे लटकने लगते हैं।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

रंग में केले की कलियों की तरह,

मेरे दांत कभी बहुत खूबसूरत थे।

उम्र के साथ-साथ वे टूट-फूट गए हैं और पीले पड़ गए हैं।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

घने जंगल में कोयल की आवाज की तरह,

घने जंगलों की झाड़ियों से होकर गुजरना:

मेरी आवाज का लहजा मधुर था।

उम्र के साथ-साथ इसमें जगह-जगह दरारें पड़ जाती हैं।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

चिकना—जैसे कोई अच्छी तरह से पॉलिश किया हुआ शंख—

एक समय मेरी गर्दन बेहद खूबसूरत थी।

उम्र के साथ-साथ यह टूट-फूट गया है, मुड़ गया है।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

गोल दरवाजों की सलाखों की तरह—दोनों ही—

मेरी भुजाएँ कभी बहुत सुंदर थीं।

उम्र के साथ-साथ वे सूखे हुए पटाली वृक्षों की तरह हो जाते हैं।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

सोने और नाजुक अंगूठियों से सजी हुई,

मेरे हाथ कभी बहुत सुंदर थे।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ वे प्याज और कंदों की तरह हो जाते हैं।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

सूजन, गोल, सख्त और ऊंची,

एक समय मेरे दोनों स्तन बेहद खूबसूरत थे।

बुढ़ापे के सूखे में, वे लटकते रहते हैं

जैसे खाली पुराने पानी के थैले।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

जैसे सोने की चादर, अच्छी तरह से पॉलिश की हुई,

मेरा शरीर शानदार था।

अब यह बहुत बारीक झुर्रियों से ढका हुआ है।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

उनकी रेखाएं हाथी की सूंड की तरह चिकनी हैं।

एक समय मेरी दोनों जांघें बेहद खूबसूरत थीं।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ वे गांठदार बांस की तरह हो जाते हैं।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

सोने और नाजुक पायल से सजी हुई,

एक समय मेरी पिंडलियाँ बहुत खूबसूरत थीं।

उम्र के साथ, वे तिल की छड़ियों की तरह हो जाते हैं।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

मानो उनमें मुलायम रुई भरी हो,

एक समय मेरे दोनों पैर बेहद खूबसूरत थे।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ वे सिकुड़ जाते हैं और उनमें दरारें पड़ जाती हैं।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।

यह भौतिक ढेर कुछ इस प्रकार था,

अब:

एक ऐसा घर जिसका सारा प्लास्टर उखड़ गया हो।

सत्यवक्ता के शब्दों की सत्यता

नहीं बदलता।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> रोहिणी

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 2000
थिग 13.2 पीटीएस: थिग 271-290- रोहिणी
(रोहिणी के पिता:)

आप यह कहते हुए सो जाते हैं,

भिक्षुओं।

तुम उठे,

भिक्षुओं।

आप केवल प्रशंसा करते हैं

भिक्षुओं।

इसमें कोई शक नहीं कि आप होंगे

एक नन।

भरपूर भोजन और पेय

आप भिक्षुओं को दान देते हैं।

अब, रोहिणी, मैं तुमसे पूछता हूँ:

आप ऐसा क्यों करते हैं?

प्रिय भिक्षु?

उन्हें काम करना पसंद नहीं है।

वे आलसी हैं।

दूसरों द्वारा दी गई चीजों पर जीवन यापन करना,

लालसाओं से भरा हुआ,

स्वादिष्ट चीजों की चाहत:

आप ऐसा क्यों करते हैं?

प्रिय भिक्षु?

(रोहिणी:)

बहुत समय से, पिताजी,

आपने मुझसे सवाल पूछे हैं

भिक्षुओं के बारे में।

मैं आपकी प्रशंसा करूंगा

उनकी विवेकशीलता,

गुण,

प्रयास करना।

उन्हें काम करना पसंद है।

वे आलसी नहीं हैं।

वे सबसे अच्छा काम करते हैं:

वे त्याग देते हैं

जुनून और क्रोध।

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

उन्होंने खुद को मुक्त कर लिया

तीन बुरी जड़ों में से,

शुद्ध कर्म करना।

उनकी सारी बुराइयाँ

छोड़ा हुआ।

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

उनकी शारीरिक क्रिया को साफ करें,

उनकी मौखिक क्रिया भी वैसी ही है।

उनकी मानसिक क्रिया को शुद्ध करें:

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

बेदाग, सीप के समान।

भीतर और बाहर से शुद्ध,

स्पष्ट गुणों में परिपूर्ण:

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

विद्वान, धम्म का पालन करने वाला,

धर्म का पालन करने वाला, नेक और धर्मपरायण व्यक्ति।

वे लक्ष्य सिखाते हैं

एवं धम्म:

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

विद्वान, धम्म का पालन करने वाला,

धर्म का पालन करने वाला, नेक और धर्मपरायण व्यक्ति।

एकजुट विचारों के साथ

और सचेत:

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

दूर-दूर तक यात्रा करना, सचेत रहना,

बिना विचलित हुए सलाह देना,

वे अंत को पहचान लेते हैं

पीड़ा का:

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

जब वे किसी गांव को छोड़ते हैं

वे पीछे मुड़कर नहीं देखते।

किसी भी चीज में।

चिंता से कितना मुक्त

वे जाते हैं!

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

इन्हें अनाज भंडार में नहीं रखा जाता है।

बर्तन,

या टोकरी।

वे (केवल) शिकार करते हैं।

जो पहले से पका हुआ है उसके लिए:

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

वे न तो चांदी लेते हैं,

न ही सोना,

न ही पैसा।

वे जो कुछ भी उपलब्ध होता है, उसी से अपना जीवन यापन करते हैं:

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

बाहर जाने के बाद

अलग-अलग परिवारों से

और विभिन्न देशों से,

फिर भी वे कायम हैं

एक दूसरे को प्यार करें:

इसलिए मैं इसे मानता हूँ

प्रिय भिक्षुओं।

(रोहिणी के पिता:)

रोहिणी, सचमुच हमारे कल्याण के लिए

क्या आप हमारे परिवार में पैदा हुए थे?

आपको दृढ़ विश्वास है

बुद्ध और धम्म में,

और गहरा सम्मान

संघ के लिए।

आप सचमुच समझते हैं

योग्यता का यह क्षेत्र

अद्वितीय।

इन भिक्षुओं को प्राप्त होगा

हमारी पेशकश भी,

हम यहाँ व्यवस्था करेंगे

हमारा प्रचुर बलिदान।

(रोहिणी:)

अगर आपको दर्द से डर लगता है,

अगर आपको दर्द पसंद नहीं है,

शरण के लिए बुद्ध के पास जाओ।

धम्म और संघ में जाओ।

इन सिद्धांतों को अपनाएं:

इससे यह होगा

आपके अच्छे स्वास्थ्य के लिए।

(रोहिणी के पिता:)

मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ;

मैं धम्म और संघ में जाता हूँ।

मैं इन सिद्धांतों को अपनाता हूँ:

इससे यह होगा

मेरे स्वास्थ्य के लिए।

पहले मैं ब्रह्मा का रिश्तेदार था;

अब, वास्तव में एक ब्राह्मण।

मैं तीन जानकारियों वाला व्यक्ति हूं और सुरक्षित हूं।

ज्ञान में परिपूर्ण,

अच्छी तरह से धोकर साफ किया गया।
नोट : तीन अकुशल मूल शब्द हैं लोभ, घृणा और भ्रम।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> सुभा: सुनार की बेटी

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 2000
थिग 13.5 पीटीएस: थिग 339-367- सुभा: सुनार की बेटी
मैं एक बच्चा था, साफ कपड़े पहने हुए था,

जब मैंने पहली बार धम्म के बारे में सुना।

और मेरे भीतर, सजग,

यह सत्य की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था।

फिर मैं पहुंचा

अत्यधिक असंतोष के साथ

पूरी कामुकता के साथ।

खतरे को देखते हुए

आत्म-पहचान में,

मुझे केवल यही लालसा थी

त्याग के लिए।

अपने रिश्तेदारों के दायरे को छोड़कर,

गुलाम, मजदूर,

समृद्ध गाँव और खेत,

मनमोहक, आकर्षक संपत्तियाँ,

मैं आगे बढ़ा,

काफी संपत्ति का त्याग करना।

दृढ़ विश्वास के कारण बाहर निकल जाने के बाद

अच्छी तरह से सिखाए गए सच्चे धम्म में,

मेरे लिए यह उचित नहीं होगा—

शून्यता की आकांक्षा रखना —

सोना और चांदी त्यागने के बाद

उन्हें वापस ले जाने के लिए।

सोना चांदी

अवेकनिंग मत खरीदो।

शांति मत खरीदो।

यह (सोना) भिक्षुओं के लिए उचित नहीं है।

यह कुलीन वर्ग का धन नहीं है।

यह है

लालच, नशा,

भ्रम, धूल से बंधन,

संदेह, अनेक परेशानियाँ।

यहां कोई स्थायी स्थिरता नहीं है।

इस हद तक कि बहुत से पुरुष

— लापरवाह, उनके हृदय दूषित —

एक दूसरे का विरोध करते हुए, बनाना

संघर्ष, हत्या, गुलामी,

विपत्ति, हानि, शोक और विलाप।

कई विपत्तियाँ देखने को मिलती हैं

उन लोगों के लिए जो कामुकता में पूरी तरह डूबे हुए हैं।

तो, मेरे रिश्तेदार:

आप दुश्मनों की तरह क्यों सोचते हैं?

क्या तुम मुझे कामुकता से बांधने की कोशिश कर रहे हो?

आप जानते हैं कि मैं आगे बढ़ चुका हूँ,

कामुकता में निहित खतरे को देखना।

सोने के सिक्के और बुलियन

किण्वन प्रक्रिया को रोका नहीं जा सकता।

कामुकता शत्रु है।

एक हत्यारा,

शत्रुतापूर्ण, तीर और बंधन।

तो, मेरे रिश्तेदार:

आप दुश्मनों की तरह क्यों सोचते हैं?

क्या तुम मुझे कामुकता से बांधने की कोशिश कर रहे हो?

आप जानते हैं कि मैं आगे बढ़ चुका हूँ

मुंडा हुआ सिर, पैचवर्क वाले लबादे में लिपटा हुआ।

भिक्षा से प्राप्त बचा हुआ, त्यागा हुआ, इकट्ठा किया हुआ सामान

पुराने कपड़ों से बना वस्त्र:

मेरे लिए यही उचित है।

बेघर व्यक्ति की आवश्यकताएं।

महान ऋषियों ने कामुकता का त्याग किया है।

मानवीय और दिव्य दोनों।

उन्हें सुरक्षा स्थल पर रिहा कर दिया गया है।

वे अटूट सहजता के साथ पहुँच गए हैं।

तो क्या मैं संघ में शामिल नहीं हो सकता?

कामुकता के साथ, जिसमें कोई आश्रय नहीं मिलता।

यह एक दुश्मन है, एक हत्यारा है।

— कामुकता —

दर्दनाक, जैसे आग का गोला।

लालच:

एक बाधा, भयभीत, खतरे में

कांटों से भरा हुआ,

बहुत ही बेमेल,

भ्रम का एक बड़ा कारण।

कामुकता:

एक भयावह हमला,

जैसे साँप का सिर

जिसमें मूर्ख आनंदित होते हैं —

अंधा, सामान्य।

क्योंकि दुनिया में बहुत से लोग

वे कामुकता के दलदल में फंसे हुए हैं।

अनजाने में,

उन्हें जन्म और मृत्यु के अंत का एहसास नहीं होता।

बहुत से लोग इस मार्ग का अनुसरण करते हैं

खराब गंतव्यों की ओर

कामुकता के कारण,

वे स्वयं ही बीमारी को आमंत्रित कर रहे हैं।

इस प्रकार कामुकता शत्रुओं को जन्म देती है।

यह जलता है, अपवित्र हो जाता है।

यह दुनिया का चारा है,

बंधनकारी, मृत्यु का बंधन,

पागल कर देने वाला, भ्रामक, मन को उत्तेजित करने वाला।

यह मारा द्वारा डाला गया जाल है

जीवित प्राणियों के अपवित्र होने के कारण:

अनगिनत कमियों और बहुत दर्द के साथ,

बड़ा जहर,

कम आनंद देने वाला, संघर्ष उत्पन्न करने वाला,

मन के अच्छे पक्ष को सुखा देना।

मैंने इस तरह बहुत परेशानी खड़ी की है।

कामुकता के कारण,

मैं उस पर वापस नहीं लौटूँगा।

क्योंकि मुझे बंधन मुक्त करने में हमेशा आनंद आता है।

कामुकता से जूझना

ठंडे राज्य की उम्मीद में,

मैं सजग रहूँगा और आनंद प्राप्त करूँगा।

बेड़ियों के अंत में।

मैं मार्ग का अनुसरण करता हूँ —

आठ गुना, सीधा,

शोक रहित, निर्मल, सुरक्षित —

जिन पर महान द्रष्टाओं ने

पार कर चुके हैं।"

सुनहरी की बेटी सुभा को देखो।

धम्म में दृढ़ रहना,

अविचलित अवस्था में प्रवेश करना,

पेड़ की तलहटी में ध्यान करना।

उसके प्रस्थान का यह आठवां दिन है।

सच्चे धम्म के माध्यम से आत्मविश्वास से भरपूर और सुंदर।

उप्पलावन्ना द्वारा प्रशिक्षित,

वह तीन ज्ञान वाली महिला है

जिसने मृत्यु को पीछे छोड़ दिया है;

गुलामी से मुक्त, कर्ज मुक्त,

एक ऐसी नन जिसके बौद्धिक कौशल विकसित हो चुके हों,

सभी बंधनों से मुक्त हो जाओ,

उसका काम पूरा हो गया,

किण्वन रहित।

सक्का, प्राणियों के स्वामी,

अपने देव समुदाय के साथ,

अलौकिक शक्ति के माध्यम से उसके पास पहुँचते हुए,

उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है:

सुनार की बेटी सुभा।

टिप्पणी : एमएन 106 देखें। उसने अपनी इंद्रियों पर संयम प्राप्त कर लिया है, या उसने दृढ़ विश्वास, दृढ़ता, सजगता, एकाग्रता और विवेक की क्षमताओं को पूर्णतः विकसित कर लिया है। एसएन 48.10 और एएन 4.37 देखें।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> थेरिगाथा >> सुभा जीवकम्बवनिका: सुभा और लिबर्टिन

पाली से अनुवादित: थानिसारो भिक्खु © 1995
थिग 14.1 पीटीएस: थिग 366-399- सुभा जीवकम्बवनिका: सुभा और लिबर्टिन
जब भिक्षुणी सुभा जीवक के रमणीय आमों के बाग से गुजर रही थी, तभी एक व्यभिचारी (एक सुनार का बेटा) ने उसका रास्ता रोक दिया, तो उसने उससे कहा:

मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

क्या तुम मेरे रास्ते में खड़े हो?

यह उचित नहीं है, मेरे दोस्त।

कि कोई पुरुष स्पर्श करे

एक महिला जो आगे बढ़ चुकी है।

मैं गुरु के संदेश का सम्मान करता हूँ।

उस प्रशिक्षण की ओर इशारा किया गया है जो एक दिवंगत व्यक्ति ने किया था।

मैं शुद्ध हूँ, बेदाग हूँ:

तुम मेरे रास्ते में क्यों खड़े हो?

तुम्हारा मन अशांत है,

मैं—अविचलित;

आप— भावुक,

मैं— भावहीन, बेदाग,

हर जगह एक मुक्त मानसिकता के साथ:

तुम मेरे रास्ते में क्यों खड़े हो?

"तुम जवान हो और दिखने में भी बुरे नहीं हो।"

आपको आगे बढ़ने की क्या आवश्यकता है?

अपने गेरूए रंग के वस्त्र उतार फेंको —

आइए, फूलों से भरे जंगल का आनंद लें।

उनके चारों ओर से एक मधुरता झलकती है।

पराग से लदे ऊंचे-ऊंचे पेड़।

वसंत ऋतु का आरंभ एक सुखद मौसम होता है।

आइए, फूलों से भरे जंगल का आनंद लें।

फूलों से लदे पेड़ों के ऊपरी सिरे

मानो हवा में कराहना:

आपको कितना आनंद मिलेगा!

अगर आप अकेले जंगल में उतरते हैं तो?

जंगली जानवरों के झुंडों द्वारा अक्सर देखा जाने वाला क्षेत्र,

हाथियों के संभोग से विचलित और उत्तेजित:

आप जाना चाहते हैं

बिना साथी

उस विशाल, एकांत, भयावह जंगल में?

तुम सोने की गुड़िया की तरह घूमोगी,

जैसे स्वर्ग के बागों में कोई देवी।

नाजुक, चिकने कासी कपड़ों के साथ,

हे अतुलनीय सौंदर्य, तुम चमकोगी।

मैं आपके वश में रहूंगा

यदि हम जंगल में निवास करते।

क्योंकि मुझे उससे प्रिय कोई प्राणी नहीं है।

आपके मुकाबले,

हे अप्सरा, जो मृदु दृष्टि रखती है।

अगर तुम मेरी बात मानोगे, तो खुशी-खुशी मेरे घर में आकर रहोगे।

महल की शांति में निवास करते हुए,

अपने लिए महिलाओं की सेवा लें,

नाजुक काशी वस्त्र पहनें।

अपने आप को फूलों की मालाओं और क्रीम से सजाएं।

मैं आपके लिए कई प्रकार के आभूषण बनाऊंगी।

सोने, रत्नों और मोतियों से बना हुआ।

एक महंगे बिस्तर पर चढ़ जाओ,

चंदन की नक्काशी से सुगंधित,

अच्छी तरह से धुली हुई चादर के साथ, सुंदर,

ऊनी रजाई से ढका हुआ, बिलकुल नया।

जैसे पानी से नीला कमल निकलता है,

जहां अमानवीय आत्माएं निवास करती हैं,

तुम अपने अंगों को अदृश्य रखते हुए बुढ़ापे तक जाओगे।

यदि तुम पवित्र जीवन में यथावत बने रहो।

आप किसी भी सार के बारे में क्या अनुमान लगाते हैं?

यहां इस कब्रिस्तान में, जो लाशों से भरा हुआ है,

क्या इस शरीर का टूटना तय है?

जब आप मुझे देखते हैं तो आपको क्या दिखाई देता है?

तुम पागल हो गए हो क्या?

"आपकी आंखें

वे हिरण के बच्चे की तरह होते हैं।

जैसे पहाड़ों में रहने वाली किसी अप्सरा की होती हैं।

तुम्हारी आँखों को देखकर मुझे असीम आनंद मिलता है।

और भी अधिक बढ़ता जाता है।

ये नीले कमलों की पत्तियों की नोकों की तरह हैं।

आपके सुनहरे चेहरे में

— बेदाग:

तुम्हारी आँखों को देखकर मुझे असीम आनंद मिलता है।

और भी अधिक बढ़ता जाता है।

भले ही आपको बहुत दूर जाना पड़े,

मैं केवल तुम्हारी पवित्रता के बारे में सोचूंगा,

लंबी पलकों वाली निगाह,

क्योंकि मुझे इससे प्रिय कुछ भी नहीं है

आपकी आंखों से भी ज्यादा,

हे मृदु दृष्टि वाली अप्सरा।"

"तुम रास्ते से भटकना चाहते हो,"

तुम चांद को खिलौने की तरह रखना चाहते हो,

आप माउंट सिनेरू के ऊपर से छलांग लगाना चाहते हैं,

तुम जो बुद्ध के पुत्र पर बुरी नज़र रखते हो।

क्योंकि यहाँ कहीं भी कुछ भी नहीं है।

इस दुनिया में, इसके देवताओं के साथ,

वह मेरे लिए जुनून का विषय होगा।

मुझे तो यह भी नहीं पता कि वह जुनून क्या होगा।

क्योंकि रास्ते ने इसे जड़ समेत नष्ट कर दिया है।

जैसे किसी गड्ढे से निकली राख बिखरी हुई हो,

जैसे जहर का कटोरा - वाष्पीकृत हो गया हो,

मुझे तो यह भी समझ नहीं आ रहा कि वह जुनून क्या होगा।

क्योंकि रास्ते ने इसे जड़ समेत नष्ट कर दिया है।

ऐसे व्यक्ति को बहकाने की कोशिश करो जिसने इस बारे में विचार नहीं किया हो।

या जिन्हें गुरु ने निर्देश नहीं दिया है।

लेकिन इसे इसके साथ आजमा कर देखें, कौन जाने?

और आप खुद को ही नुकसान पहुंचाते हैं।

चाहे अपमानित किया जाए या पूजा की जाए,

सुख या दुख में,

मेरी जागरूकता दृढ़ है।

अनाकर्षकता को जानते हुए

मनगढ़ंत चीजों का,

मेरा दिल कहीं भी नहीं टिकता।

मैं उस एक दिवंगत व्यक्ति का अनुयायी हूँ।

अष्टमार्ग के वाहन पर सवार होकर:

मेरा तीर हटा दिया गया, अपशिष्ट मुक्त,

मुझे खाली घर में जाकर खुशी हुई।

क्योंकि मैंने अच्छी तरह से चित्रित कठपुतलियाँ देखी हैं,

लकड़ियों और रस्सियों से बांधा हुआ,

उन्हें विभिन्न तरीकों से नृत्य कराया गया।

जब छड़ें और डोरियां हटा दी जाती हैं,

फेंक दिया गया, बिखेर दिया गया, टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया,

टुकड़े-टुकड़े हो गए, कहीं नहीं मिले।

वहां मन किस चीज में अपना घर बनाएगा?

मेरा यह शरीर, जो बिल्कुल वैसा ही है,

जब धर्मों का अभाव होता है तो वह कार्य नहीं करता।

जब धर्मों से रहित होने पर यह कार्य नहीं करता,

वहां मन किस चीज में अपना घर बनाएगा?

जैसे आपने किसी दीवार पर बना भित्तिचित्र देखा हो,

पीले रंग के ऑर्पिमेंट से लिपटा हुआ,

वहां आपकी दृष्टि विकृत हो गई है।

मनुष्य के प्रति आपकी धारणा अर्थहीन है।

जैसे कोई मृगतृष्णा गायब हो गई हो,

सपने में सोने के पेड़ की तरह,

जैसे भीड़ के बीच कोई जादू का शो हो —

आप अवास्तविक चीजों के पीछे अंधे होकर भागते हैं।

सीलिंग वैक्स की गेंद के समान,

एक खोखले में स्थापित,

बीच में एक बुलबुले के साथ

और आंसुओं से भीग गया,

आंखों से निकलने वाला स्राव भी वहीं उत्पन्न होता है:

आँख के भाग

सभी को एक साथ लपेटा जाता है

विभिन्न तरीकों से।"

उसकी प्यारी आंख निकाल कर,

अनासक्त मन से

उसे कोई पछतावा नहीं था।

"लो, ये आंख ले लो। ये तुम्हारी है।"

उसने तुरंत उसे दे दिया।

उसी क्षण उसका जोश वहीं पर फीका पड़ गया।

और उसने उससे माफी मांगी।

"पवित्र जीवन के अनुयायी, सुरक्षित रहें।"

इस तरह की चीजें

ऐसा दोबारा नहीं होगा।

आप जैसे व्यक्ति को नुकसान पहुंचाना

यह धधकती आग को गले लगाने जैसा है।

ऐसा लग रहा है जैसे मैंने किसी जहरीले सांप को पकड़ लिया हो।

आप सुरक्षित रहें। मुझे क्षमा करें।

और वहां से मुक्त होकर, नन

श्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में गया।

जब उसने उसकी उत्कृष्ट योग्यता का प्रमाण देखा,

उसकी आँख बन गई

जैसा पहले था।